Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

उपन्यास साहित्य

नये विचार नई बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
162922

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167922
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१६.७.९.२२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये विचार नई बातें

(उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नये विचार नई बातें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

Central Library
167922
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167922

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 026

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-N

© प्रकाशकाधीन 1964

मो० 7065618655, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बरस, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य : 40.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
18/28, पंजाबी बाग (पूर्वी)
नई दिल्ली-110 026
फोन : 5102133

संस्करण : 2000

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110 032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

नई दिल्ली के भव्य भवनों को देखता और उनमें रहता हुआ नरेन्द्र छुट्टियों में अपने गाँव जा रहा था। पंजाब-बाम्बे मेल के फर्स्ट क्लास के डिब्बे में यात्रा करते हुए तथा अपने गाँव, वहाँ के समाज और अपने परिवार के विषय में स्मरण कर उसे अनुभव होता था, मानो बीसवीं शताब्दी से वह उन्नीसवीं अथवा अठारहवीं शताब्दी की ओर खिंचा जा रहा है। रेल के डिब्बे के गद्देदार कौच, ऐलुमीनियम के फ्रेम वाली खिड़कियाँ तथा दो अन्य सहयात्रियों को पर्ल बक की 'माई टू वर्ल्ड्स' और लिन-युत-सेन की 'चाइना टाउन' पढ़ते देख, वह समझ रहा था कि वह प्रगतिशील तथा सभ्य जनों में बैठा हुआ है। गाँव में अपने पिता के, मकान के बाहर चौपाल में खाट डाले बैठे हुक्का गुड़-गुड़ाने का दृश्य स्मरण कर वह विचार करता था कि कौन उसको वर्तमान से उठा कर भूतकाल में लिये जा रहा है।

नई दिल्ली में वाई०एम०सी०ए० के होस्टल में रहते हुए रेलगाड़ी में बैठना ही उसे प्राचीनता की ओर जाने में प्रथम चरण प्रतीत हुआ था। इस दिशा में दूसरा चरण उसे तब समझ आया, जब वह ग्वालियर स्टेशन पर बाम्बे मेल से उतर शिवपुरी की गाड़ी के फर्स्ट-क्लास के डिब्बे में जा बैठा। डिब्बे का फर्श उखड़ा हुआ था, कौच फटे-पुराने थे और उन पर बैठने से धातु के स्प्रिंग गड़ते थे। जब वह लैवेटरी में पेशाब करने गया तो उसने देखा कि कमोड गंदा है, उसका ढकना टूटा हुआ है और ऊपर टंकी में जल नदारद है। वह समझ रहा था कि वह पुरानी दुनिया में जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर क्यों? उसके मन में प्रश्न उठा। वह चाहता तो साधारण-सा झूठ बोलकर नई दिल्ली में ही रह सकता था। वहाँ पढ़ाई के अतिरिक्त भी तो कई प्रकार के आकर्षण और कार्य थे। इस पर भी वह खिचा चला जा रहा था।

गाँव में उसके माता-पिता, भाई व भाभी थे। बड़े भाई के तीन बच्चे भी थे। सबसे बड़ी तिलोत्तमा दस वर्ष की थी। उससे छोटा लड़का केशव सात वर्ष का और सबसे छोटा महेश तीन वर्ष का था। वे सब उसको अपनी ओर खींच रहे थे। इन सबसे अधिक माँ थी, मीठा बोलने वाली, एक-एक शब्द से प्रेम और स्नेह प्रकट करने वाली और सबकी सेवा में लीन। नाम था रुक्मिणी।

बच्चों में तिलोत्तमा का उससे विशेष स्नेह था। जब भी नरेन्द्र वहाँ पहुँचता, वह उसके गले से लटक जाया करती। पिछली बार जब वह गले से लटकी थी तो उसकी माँ ने ताड़ना के भाव में कहा था, "भला यह भी मिलने का कोई ढंग है, तिलोत्तमा! ये तुम्हारे चाचा हैं। हाथ जोड़ नमस्ते किया करो और फिर इनका आशीर्वाद लिया करो।"

नरेन्द्र समझ रहा था कि लड़की सज्ञान हो गयी है, परन्तु लड़की के मुख पर ताड़ना का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था। नरेन्द्र को लगा था कि लड़की के मन में उसके प्रति जो स्नेह है वह केवल मात्र हाथ जोड़ने से प्रकट नहीं हो पा रहा। नरेन्द्र ने उसकी पीठ पर हाथ फेर कर जो प्यार दिया उससे वह संतुष्ट नहीं थी।

अतः पग-पग पर नवीन से प्राचीन की ओर जाने के इस कार्य में कारण-रूप उसे अपने परिवार के प्राणियों का स्नेह ही प्रतीत हो रहा था।

रास्ते में गाड़ी में भीड़ अधिक हो गयी। पैसेन्जर गाड़ी थी। प्रत्येक स्टेशन पर ठहरती जाती थी और थर्ड-क्लास के डिब्बे खचाखच भर गये थे। एक स्टेशन पर तो सवारियाँ फर्स्ट-क्लास के डिब्बे में भी चढ़ आयीं। नरेन्द्र ने उनसे कहा भी कि यह फर्स्ट-क्लास का डिब्बा है। किन्तु लोग विवश थे। अन्य किसी डिब्बे में स्थान ही नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोग यह कह कर बाबू ! नीचे बैठ जाएँगे । डिब्बे में घुस चले आ रहे थे । इस प्रकार चार सीट के डिब्बे में बीस यात्री भर गये और फर्श पर बैठे ही यात्रा करते रहे । नरेन्द्र को यह भी प्राचीन काल की-सी ही बात प्रतीत हुई ।

महोना स्टेशन पर नरेन्द्र गाड़ी से उतरा । स्टेशन पर एक ही ताँगा था । नरेन्द्र ने उस पर अपना सामान रखवाया । ताँगे वाला, मोहसिन, उसको जानता था । उसको यह भी विदित था कि भाड़े से कुछ अधिक ही नरेन्द्र दिया करता है । क्योंकि सीट मैली हो रही थी, इसलिये नरेन्द्र के बैठने से पूर्व मोहसिन ने सीट के नीचे से फटी परन्तु धुली चादर निकाल सीट पर बिछा दी थी । यह बंधे भाड़े से अधिक मिलने के लोभ के ही कारण था ।

नरेन्द्र अपने घर पहुँचा । पुराने ढंग का होने पर भी मकान पक्का था और हवेली कहाता था । गाँव के ज़मींदार का मकान जो था । नरेन्द्र लपक कर ताँगे से उतरा तो पक्की सड़क पर से भी धूल उड़ कर उसकी पतलून पर पड़ने लगी । इस कारण वह जल्दी से भागा । मोहसिन ने नरेन्द्र का बिस्तरा और सूटकेस उठाया और बैठक में रखने के लिए ले गया ।

नरेन्द्र का पिता भवानी प्रसाद चौपाल पर खाट डाले बैठा हुक्का पी रहा था । उसके सामने धरती पर कोई काश्तकार इत्यादि नहीं बैठा था । अब काश्तकार रहे ही नहीं थे । अन्य सब ज़मींदारों की भाँति भवानी प्रसाद की ज़मींदारी भी सरकार ने ले ली थी । भवानी प्रसाद के पास अब दो सहस्र एकड़ का एक फार्म था । उस पर ट्रैक्टर चलता था और पम्प से सिंचाई होती थी। बैल थे, केवल गाड़ी में जोतने के लिये । फार्म से पैदावार ढो कर खलियान में अथवा बाज़ार में दुकानदारों के पास पहुँचाने का काम बैलगाड़ी से ही लिया जाता था ।

नरेन्द्र अपनी पतलून और कोट को धूल से बचाने के लिये घर के द्वार की ओर भागा, तो पिता को प्रणाम करना भी भूल गया । भवानी प्रसाद ने देखा तो आवाज़ दे दी, "नरेन्द्र ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नरेन्द्र ने द्वार की ओर जाते-जाते आवाज़ दी, "अभी आया पिताजी।"

वह बैठक में गया। मोहसिन ताँगे वाले ने वहाँ सामान रखा तो उसके हाथ में एक रुपया दे नरेन्द्र अपने कपड़े झाड़ने लगा। इसमें वह पिताजी की बात भूल गया। भीतर माँ को रसोईघर में देख वहाँ जा खड़ा हुआ और बोला, "माँ ! मैं आ गया हूँ।"

"आओ बेटा, नाश्ता तैयार कर रही हूँ।"

"अभी कपड़े बदलकर आता हूं।" यह कह वह अपने कमरे में चला गया। कमरा झाड़-पोंछकर साफ किया हुआ था। मेज़ पर नया मेज़-पोश बिछा था। कुर्सियों की गद्दियों पर नये गिलाफ चढ़े थे। तस्वीरें भी साफ कर रखी थीं। सब कुछ वैसा ही था जैसा वह वहाँ आशा करता था। परन्तु नई दिल्ली के मकानों जैसी सफाई और सामान वहाँ नहीं था। न वार्डरोब था, न ही फर्श पर दरी। कपड़ों के लिए दीवार पर खूंटियाँ लगी थीं। उसने पतलून-कोट उतारे और खूंटी से टाँग दिये।

अब उसने घर के नौकर भोला को आवाज़ दी। वह प्रांगण में बैठा रस्सी बट रहा था और उसने अभी तक छोटे बाबू को आये नहीं देखा था। आवाज़ सुन रस्सी छोड़ दौड़ा-दौड़ा आया। "बाबू, तुम आ गये ?"

"हाँ ?"

"माँजी सवेरे से तुम्हारी बाट देख रही हैं।"

"अबे माँजी के बच्चे ! जा बैठक से सामान उठा ला।"

भोला की समझ में अब आया कि उसे क्यों आवाज़ दी गयी थी। वह लपक कर गया और सामान उठा लाया। भोला सूटकेस को एक चौकी तथा बिस्तर को निवाड़ी पलंग पर रख खड़ा-खड़ा नरेन्द्र का मुख देखने लगा।

नरेन्द्र ने उसे इस प्रकार खड़ा देख पूछ लिया, "क्या देख रहे हो भोला ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोला नरेन्द्र के बाबा के समय का नौकर था और एक प्रकार से घर का प्राणी ही माना जाता था। वह इस घर में बचपन से नौकर हुआ था। नौकरी करते हुए ही उसका विवाह हुआ था और इसी घर में नौकरी करते-करते बाल-बच्चे हुए। मूलचन्द नाम का एक लड़का सेना में भरती हो गया था। काहन चन्द नाम का दूसरा लड़का भवानी प्रसाद के फार्म पर पम्प चलाता था। दो लड़कियों के विवाह हो चुके थे। भोला अब वृद्ध हो गया था। इस पर भी वह उनके घर पर नौकरी करता था। नरेन्द्र उसकी गोद का खेलाया हुआ था और वह उसके साथ अपने ही बच्चे का सा स्नेह रखता था।

जब नरेन्द्र ने पूछा, क्या देख रहे हो भोला, तो उसने कह दिया, "भैया, अब तो तुम सब प्रकार से लायक हो गये हो। बड़े बाबू से विवाह के लिये कहना पड़ेगा।"

"किसके विवाह के लिये कहना चाहते हो भोला।"

"नरेन्द्र भैया के।"

"धत् तेरे की! आखिर देहात में रहने वाले एक बूढ़े ही तो हो ना! तुम लोगों को विवाह और बच्चे पैदा करने के सिवा और कुछ भी आता जाता है या नहीं?"

"आता क्यों नहीं भैया! देखो, यह कमरा दो घन्टे लगा कर साफ किया है, सजाया है। क्या यह कम बात है? बड़ी बहू तो केवल बताती ही रही, यह करो, वह करो। किया तो सब भोला ने ही है।"

"ओह! तब तो तुम बहुत लायक हो गये हो। मैं समझता हूँ कि तुम्हारा एक विवाह और कर दिया जाये।"

भोला हँस पड़ा, "भैया, पहले तुम्हारा होगा। मेरा भी एक विवाह होगा पर अभी उसमें देरी है। ज्योतिषी कहता था कि मेरे मरने में अभी दस बरस हैं।"

"तो तुम मरने को विवाह समझते हो?" नरेन्द्र ने अपना सूटकेस खोल उसमें से पायजामा और कुर्त्ता निकालते हुए पूछा।

"हाँ बाबू!" भोला ने कहा, "मनुष्य के कई विवाह होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह जब पैदा होता है, जब वह पाठशाला में बैठता है, वह जब पत्नी को पाता है, उसके जब बाल-बच्चे होते हैं—ये सब विवाह मेरे हो चुके हैं। अब तो केवल मरना ही रह गया है। वह भी अपने समय पर होगा।"

"भोला, विवाह क्या होता है?"

"भैया, शादी! खुशी की घड़ी! ये सब खुशी के अवसर होते हैं।"

"और मरने पर भी खुशी होती है क्या?"

"हां! इसमें संदेह है तुमको क्या!"

"तो ऐसा करो यह खुशी का अवसर आज ही क्यों नहीं प्राप्त कर लेते। कुएँ में कूदकर मर जाओ।"

भोला हँस पड़ा। और कहने लगा, "बिना भगवान की इच्छा के किसी को भी कोई शादी का अवसर प्राप्त नहीं होता।"

"तो मेरे विवाह के लिये भी भगवान को जब मंजूर होगा तब हो जायेगा।"

"भैया, भगवान ने तो तुमको सुन्दर जवान बनाकर तुम्हारे विवाह की तैयारी पूरी कर दी है। अब तुम कहो तो बड़े बाबू से कह तुम्हारे लिए कोई लड़की मँगवा दूँ। बहिन शकुन्तला आयी थी और एक लड़की अपने ससुराल की ओर से बता रही थी।"

"भोला, अब जाओ। अपना काम करो। मेरे पास विवाह के अलावा और बहुत काम हैं।"

भोला चला गया। नरेन्द्र सोच रहा था कि वह माँ के पास जायेगा तो वह अल्पाहार करने को कहेगी और फिर वहाँ धरती पर आसन बिछा कर बैठना पड़ेगा। 'क्या मुसीबत है यह?'—वह सोचने लगा। तभी बड़े भाई की पत्नी राधा थाल में अल्पाहार का सामान सजाये हुए आ गयी।

"ओह भाभी! तुम आ गईं? कितनी अच्छी हो तुम!"

राधा ने मुस्कराते हुए कह दिया, "बातें बहुत बनाने लगे हो भैया। माँजी को प्रणाम भी नहीं कहा और भाग आये यहाँ। माँजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri नहीं आये तो उन्होंने मेरे हाथ यह कलेवा यहाँ ही भेज दिया।"

"तो भाभी," नरेन्द्र ने बात बदलते हुए कहा, "तुम लोग कलेवा कर चुके ?"

"जिसके लिये दो घंटों से माँजी लगी थीं, वह तो पहले कर ले। हम भी कर लेंगी।"

"तो भाभी तुम भी यहीं कर लो न ?"

"नहीं। हम तो तुम्हारे साथ तब बैठ कर खाएंगी, जब तुम पहले, प्रणाम करने आओगे। देखो माताजी हैं, मैं हूँ और फिर मेरी देवरानी सीता भी यहां आयी हुई हैं। सीता के बच्चे हैं और तिलोत्तमा और केशव भी हैं। ये सब कई दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"बड़ी लालसा थी मुझसे मिलने की ?"

"हां, तुम्हें संदेह है इसमें ?"

"तो दिल्ली ही आ जाते सब।"

"हां, यदि तुमने न आना होता, तो हम वहां आते ही। बहिन शकुन्तला का एक प्रस्ताव लेकर। तुम तक पहुँचाना था।"

नरेन्द्र को भोला की बात पर विश्वास आ गया। इससे उसने बात बदल कर कहा, "तो सीता भाभी भी आयी हैं ?"

"हां! इस बार सुरेन्द्र उसे अपने साथ दिल्ली नहीं ले गया। वह ग्वालियर के मकान को ताला लगा कर यहां आ गयी है।"

"तब तो मजा रहेगा। उनका कब तक यहां रहने का विचार है ?"

"यह तो उसी से पूछ लेना।"

"अच्छा ज़रा चाय पी लूं, तब आता हूँ। मांजी को प्रणाम करनी है।"

राधा चली गयी। नरेन्द्र ने मां की बनाई मिठाई, नमकीन, पूरी तथा चाय लेना आरम्भ किया। सीता भाभी के आने की बात सुन वह बहुत प्रसन्न था। सीता कभी-कभार ही महोना आया करती थी। वह प्रायः ग्वालियर में ही रहती थी। उसका पति नरेन्द्र का मँझला भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेन्द्र ग्वालियर क्षेत्र से संसद का सदस्य था और वहीं रहने का निश्चय कर, वह परिवार-सहित वहां ही रहता था।

सीता प्राय: अपने पति के साथ दिल्ली जाया करती थी। और जब सुरेन्द्र संसद के अधिवेशनों में उपस्थित होता तो सीता वहां घूमने-फिरने निकल जाया करती थी। नरेन्द्र से अक्सर उसका मेल-जोल होता था। और वह फ़ीरोज़शाह रोड पर उनके बँगले में आया-जाया करता था।

नरेन्द्र दिल्ली में 'पोलिटैकनिक' में 'इंजीनियरिंग' पढ़ता था। और वाई० एम० सी० ए० के होस्टल में रहता था। उसके वहां रहने का खर्चा तीन सौ रुपये महीना था जिसमें से कुछ तो उसका पिता और कुछ भाई सुरेन्द्र देता था। इस बार सुरेन्द्र अपनी पत्नी सीता रानी को साथ नहीं ले गया था। सीता ग्वालियर में रहते-रहते ऊब गई थी। जब उसे पता चला कि नरेन्द्र भी गर्मियों की छुट्टियों में महोना जाने वाला है तो वह पहले ही वहां चली आयी थी।

नरेन्द्र ने चाय समाप्त की और परिवार के सदस्यों से मिलने चल पड़ा। उसके मन में सबसे पहले सीता से ही मिलने का विचार आया।

: २ :

सीता जब भी अपनी सास के पास महोना आती थी, उसे बैठक के साथ का एक कमरा ठहरने के लिए दिया जाता था। सीता ने वह कमरा अपने पास से व्यय कर सजाया-सँवारा था। सोफा सैट, दरी, कालीन, तस्वीरें, पर्दे इत्यादि से उसने सुख-सुविधा-युक्त बना रखा था। नरेन्द्र वहां पहुंचा तो सीता भी चाय ले रही थी। नरेन्द्र ने बाहर से आवाज़ दी तो सीता लपक कर द्वार पर आ खड़ी हुई और पर्दा हटाकर बोली, "तो तुम आ गये। आओ भीतर आ जाओ।"

"तो तुमने चाय अभी पी नहीं?"

"अभी-अभी तो राधा देकर गयी है। तुमने पी ली है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां ! राधा भाभी तो कह रही थी कि तुम सब लोग रसोईघर में मेरी प्रतीक्षा कर रही हो ?"

"हाँ ! तिलोत्तमा कहने तो अभी आयी थी परन्तु मैं वहां नहीं गयी। मैं तो रसोईघर में बैठ खा ही नहीं सकती। वहां कुछ राख की गंध आती है। और फिर धरती पर बैठकर खाना होता है।"

"मैं भी इसी कारण नहीं गया। अब भाभी, तुम आ गयी हो। कुछ तो इनको सभ्यता से रहना सिखा दो।"

"मैं माँजी से अधिक बहस नहीं कर सकती।" दोनों सोफा पर बैठ गये थे। सीता नाश्ता कर रही थी। नरेन्द्र पेट भर खा आया था। वह बातें करने के विचार से बैठ गया था। उसका विचार था कि पहले सीता से मिलकर बड़ी भाभी राधा और माताजी के कमरों में जाकर उनसे मिलेगा। परन्तु सीता से अपने मन के विचार सुन वह उसकी बातों में रुचि लेने लगा।

सीता कह रही थी, "मांजी इतना मीठा बोलती हैं और आदर करती हैं कि उनकी किसी बात में दोष बताकर मैं उन्हें दुःखी नहीं करना चाहती। हां, इस बार राधा की आवाज कुछ मोटी हो रही है। मगर मैं तो माताजी के घर आई हूं। मुझे उससे कुछ मतलब नहीं।"

"क्यों, भाभी ने कुछ कहा है ?"

"कहा तो कुछ नहीं। अभी यह अल्पाहार लेकर आई थीं तो मैंने पूछ लिया था यह किसके लिए है। वह बोली, 'रानी जी के लिए।' मैं यद्यपि चुप रही परन्तु रानी शब्द पर उसके बल से उसमें व्यंग का भास हो रहा था। ऐसा एक-दो दिन से हो रहा है।"

नरेन्द्र को जेठानी-देवरानी के झगड़े में रुचि नहीं थी। उसने कहा, "इस बार भाभी तुम दिल्ली नहीं आई तो बड़ा फीका-फीका प्रतीत हुआ। मेरा तो विचार था कि भाभी के दर्शन करने ग्वालियर जाना पड़ेगा। अब तुम यहीं आ गई हो तो जीवन में रस आ जायेगा। शतरंज तो हुआ ही करेगी।"

"हां ! वह तो है ही। कहो कब से ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज हाँ से होगी।"

"तो निकालूं ?"

"अभी से ?"

"कुछ काम है क्या ?"

"खास काम तो नहीं। ज़रा भाभी के बच्चों को प्यार दे आऊं।"

"तो जाओ हो आओ।"

"मैं समझता हूं जैसे मेरे न जाने पर अल्पाहार यहीं आ गया वैसे ही नमस्ते लेने सब यहां आ जायेंगे।"

"तो............।" सीता आगे कुछ कह नहीं सकी।

"तो भाभी, निकालो एक बाजी हो ही जाए।"

सीता ने अल्पाहार समाप्त कर लिया था। उसने अलमारी से शतरंज का बोर्ड और मोहरे निकाले और बाजी आरंभ हो गई।

खेल में दोनों यह भूल गये कि इस घर में कोई और भी रहता है। नरेन्द्र माता-पिता, भाभी-भाई और बच्चे सबको भूल गया। सीता के दो बच्चे थे। दोनों लड़के थे। एक का नाम था लक्ष्मण और दूसरे का अर्जुन। एक चार वर्ष का था, दूसरा तीन का। वे अपने खिलौनों से खेल रहे थे। घोड़े और हवाई जहाज चला रहे थे।

अभी दूसरी ही बाजी चल रही थी कि रात के आठ बज गये। नरेन्द्र सायं पांच बजे आया था। अब रात के भोजन का समय हो गया था। भवानी प्रसाद भोजन करने रसोईघर में आया तो उसने पत्नी से पूछ लिया, "भूप कहां है ?"

"अपनी पत्नी से कुछ बतला रहा है।"

"और नरेन्द्र ?"

"सीता से शतरंज खेल रहा है।

"तो उसे भी खाने के लिये बुलाओ।"

"अभी-अभी कैलाश को भेजा था। वह जवाब लाया है कि उन दोनों की थाली लगाकर वहीं भेज दी जाये।"

"शतरंज खेल ही ऐसा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो राधा से कहती हूं कि जाकर दे आये ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत अच्छी है बेचारी राधा ।"

"परन्तु सीता तो बिल्कुल बदल गयी है । वह ऐसे बात करती है जैसे किसी राजा की रानी अपने अनुचरों से करे ।"

"हां, सुना है सुरेन्द्र ने बहुत धन कमाया है । इस समय उसके पास दो मोटर गाड़ियां तो अपने लिये हैं । वैसे ग्वालियर के देहात में उसकी बसें चलती हैं ।"

"यह देख प्रसन्नता ही होती है । परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरों को छोटा माना जाय ।"

"तो कुछ बात हुई है क्या ?"

"कुछ खास तो नहीं । जब से आयी है, अपने कमरे में खाती है । बर्तन भी भोला की पत्नी मैना उठाकर लाती है !"

"उसके यहां यही रिवाज होगा ।"

"पर मैं भी तो राजा की पत्नी हूं । दिन-भर रसोईघर में बैठी रहती हूं । राधा न होती तो मैं ऊब गयी होती । वह प्रत्येक काम में हाथ बंटाती रहती है । उसके बच्चे भी बहुत ही सुशील हैं ।"

"देख लो । दोनों लड़कों का विवाह तुम्हारी इच्छानुसार ही किया है । राधा तो गांव के मुन्शी की ही लड़की है । भूप ने पसन्द की और तुम उसे घर लाने के लिये व्याकुल हो उठीं । चाहे दहेज वगैरा कुछ नहीं मिला, पर लड़की सुन्दर, सुशील और सुघड़ मिल गयी है ।"

"राधा के विषय में तो कोई शिकायत का अवसर नहीं । वह तो इस घर में घुल मिल गयी है । पर सीता के विषय में अवश्य भूल हुई है । सुरेन्द्र जब स्वराज्य उद्‌घाटन देखने दिल्ली गया था उस समय पंजाब से लाखों की संख्या में विस्थापित लोग इधर आ रहे थे । सीता के पिता अपनी पत्नी, पुत्री और पुत्र के साथ शिवपुरी जाते मिल गये। सुरेन्द्र को लड़की का नखशिख पसन्द आ गया और वह परिवार भर को यहां ले आया ।

"वैसे तब सीता देखने में भली ही मालूम होती थी । परन्तु एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसने विवाह होते ही सुरेन्द्र को यहां से पृथक घर बनाने पर राजी कर लिया और फिर पति के धनी होने के साथ वह धीरे-धीरे हम से तटस्थ होती गयी। यहां तक कि उसके बच्चों के जन्म की सूचना भी तो उसके होने के पीछे ही मिली थी। लेकिन इस बार तो इस तटस्थता और ऊंची भावना की हद ही हो गयी है।"

इसी समय भूपेन्द्र अपनी पत्नी राधा के साथ रसोईघर में आ गया। राधा छोटा-सा घूंघट काढ़े, पिता-पुत्र को भोजन कराने में अपनी सास की सहायता किया करती थी। और जब घर के दोनों पुरुष खाना खा लेते थे तो सास-पतोहू इकट्ठे बैठ खाया करती थीं। दिन और रात दोनों के खाने के समय ऐसा ही होता था।

आज भी आते ही उसने हाथ धोए और पति और श्वशुर के लिये थाली, कटोरे और गिलास लगाने लगी। भवानी प्रसाद ने कहा, "नरेन्द्र को बुलाया था, परन्तु सुना है वह शतरंज खेलने में इतना लीन है कि उसे माता-पिता, भैया-भाभी तक से मिलने का होश नहीं।"

"भापा! मैं आज एक बात कहने का निश्चय कर के आया हूं।"

"क्या?"

"मैं कल से इस घर को छोड़ दूसरे मकान में जा रहा हूं।"

"क्यों?"

"मुझसे इस घर में हो रही अव्यवस्था अब देखी नहीं जाती।"

"क्या अव्यवस्था देखी है?

"अब इस घर में बड़े तो काम करने लगे हैं और छोटे हराम खोरी। मुझसे माताजी को सबकी सेवा करते, अब और नही देखा जाता।"

"पर बेटा!" रुक्मिणी बोली, "मैं तो यह सब सेवा के भाव से नहीं अपितु स्नेहवश करती हूँ।"

"माँ! यह तो ठीक है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि दूसरे इसको किस भाव से लेते हैं। मैं उनसे प्रसन्न नहीं और उन्हीं से पृथक मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लेना चाहता हूँ ।"

भवानी प्रसाद और रुक्मिणी दोनों भूपेन्द्र का मुख देखने लगे। भूपेन्द्र ने कुछ सोच कर कहा, "पिताजी ! आप और माता जी दोनों हमारे साथ हमारे घर में चल कर रहिये । हमें इससे अतीव प्रसन्नता होगी ।"

"और नरेन्द्र आदि को यहाँ छोड़ जाएँ ?"

"हाँ, यह बाप-दादाओं का मकान है । मैं उनको अथवा परिवार के किसी भी व्यक्ति को यहाँ आने से मना नहीं कर सकता । परन्तु यहाँ का चलन मेरी सन्तान को भी बिगाड़ने लगा है । इस कारण मैं अपनी सृष्टि पृथक रखना चाहता हूँ ।"

"और यदि नरेन्द्र और सीता वहाँ आ गये तो ?"

"उनको वहाँ घुसने नहीं दूँगा । कहूँगा, पहले सभ्यता सीखो और फिर उस घर में आने का कष्ट करो ।"

'पर मैं तो ऐसा नहीं कह सकती," रुक्मिणी ने कह दिया— "सुरेन्द्र और नरेन्द्र मेरे उतने ही लड़के हैं जितने तुम हो ।"

"माँ, हैं तो वे भाई मेरे भी, परन्तु दोनों असभ्य हो गये हैं। दोनों के चलन ठीक नहीं रहे ।

"मैं उनका भाई जरूर हूँ परन्तु मेरी लड़की अब सज्ञान हो रही है । वह दुनिया की बातों को समझने लगी है । वह नरेन्द्र से मिलने गयी थी और कहती थी कि चाचा ने तो आँख उठाकर भी मेरी तरफ नहीं देखा । मैंने नमस्ते कही तो सिर हिला कर ही उत्तर दे दिया ।

"मैं नहीं चाहता कि मेरी लड़की इसका मिथ्या अर्थ लगाये । पिताजी, मैं कल इस घर से जा रहा हूँ ।"

"परन्तु भूप, यदि तुम इस घर से चले गये तो क्या इनकी उच्छृंखलता दूर हो जायगी ? क्या तुम्हारी माता उनकी सेवा करना अथवा वे तुम्हारी माता की सेवा ग्रहण करना छोड़ देंगे ?"

"तो माताजी को भी हमारे साथ चलना चाहिये । मैं तो इसका इलाज यही समझ रहा हू ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि तुम्हारी माँ भी तुम्हारे घर चली गयी तो मुझे भी जाना होगा, क्योंकि मैं तो तुम्हारी माँ से अभी लड़ा नहीं हूँ। इस प्रकार देवर-भाभी घर में अकेले रह जाएँगे, और फिर गाँव-भर में परिवार की बदनामी होगी।"

"नहीं पिताजी, परिवार तो बदनामी से बच जायगा। हाँ नरेन्द्र, सीता और सुरेन्द्र बदनाम होंगे। हमारे उनसे पृथक् हो जाने से परिवार उनकी बदनामी से अलिप्त हो जायेगा।"

"एक बात तुम नहीं समझे।" पिता ने भूपेन्द्र की योजना का दोष बताने के लिए कहा—"माँ को साथ ले जाने पर भी तुम माँ को उनकी सेवा करने के लिए यहाँ आने से रोक नहीं सकोगे।"

इसका उत्तर राधा ने दिया, "पिताजी, प्रश्न यह है कि आप हमारे व्यवहार को पसन्द करते हैं या नापसन्द ?" घूंघट ठीक करते हुए वह बोली।

"तुम्हारी बात समझ में तो आती है परन्तु मैं यह कह रहा हूँ कि जिस उद्देश्य से तुम यह सब कुछ करने जा रहे हो वह पूर्ण भी होगा क्या ?"

"यदि आप इनसे पृथक् होना पसन्द करते हैं तो फिर माताजी को भी इनसे पृथक् होना ही होगा," राधा ने कहा।

"क्यों ?" रुक्मिणी ने पूछ लिया।

"इसलिए कि तब पत्नी की पति के प्रति निष्ठा और पुत्र के प्रति स्नेह में मुकाबिला हो जायेगा। एक ओर धर्म होगा और दूसरी ओर मन की भावना। मैं समझती हूँ कि माताजी धर्म को भावना पर उपमा देंगी।" राधा ने उत्तर दिया।

रुक्मिणी राधा की चतुराई समझ गई। उसने अपनी सास को द्विविधा में डाल दिया था। सास चुप हो गई। राधा पहले भी घर की समस्याओं का ऐसे विश्लेषण करती थी कि उसके सुझाव को सब मान जाया करते थे।

राधा के उत्तर पर भवानी प्रसाद ने बात में हस्तक्षेप करते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपना सुझाव उपस्थित किया, "अच्छा, भूप, कल सुरेन्द्र को तार दे दो कि वह तुरन्त चला आये। उसके आने पर उसकी पत्नी उसके हवाले कर देना। यदि वह यहाँ रहने और पत्नी को रखने का हठ करे तो तुम यहाँ से पृथक् चले जाना। मैं भी तुम्हारे साथ चला चलूँगा।"

राधा की विजय हो गई। अन्तर केवल यही था कि अगले दिन पृथक् मकान में चले जाने के स्थान पर एक-दो दिन पीछे की बात हो गई थी। राधा ने ससुर के चरणों में सिर नवा कर कहा, "हमें आपकी न्याय-बुद्धि से यही आशा थी। छोटे-छोटे बच्चों के कहने पर माँजी को सेवा कार्य करते देख हमें अति दुःख होता है।

: ३ :

सीता चौदह वर्ष की ही थी कि उसका विवाह हो गया था। वह पंजाब में लाहौर के समीप इच्छरा गाँव के बालकराम नाम के एक रईस की लड़की थी। सन् १९४० के मार्च मास में बालकराम की पत्नी अपने दोनों बच्चों के साथ अपने पिता के पास चली गई थी। उसका पिता रुग्ण था और चाहता था कि उसकी लड़की उसके पास आ जाये। बालकराम भी उनसे मिलने के लिए जाना चाहता था परन्तु लाहौर की अशान्त अवस्था के कारण वह जा नहीं पाया।

बालकराम की पत्नी शोभा दोनों बच्चों सीता और विनोद को लेकर देहरादून गई तो फिर लौट कर लाहौर नहीं आ सकी। जून मास में इच्छरा के प्रायः सभी हिन्दुओं के घर जला डाले गये थे; उनकी सम्पत्ति लूट ली गई थी। पुरुषों को मार डाला गया था और युवा स्त्रियों का अपहरण कर लिया गया था।

बालकराम जीवित बच निकलने में तोसफलहो गया, परन्तु उसकी पूर्ण अचल सम्पत्ति विनष्ट कर दी गई थी। बैंकों में धन था परन्तु पंजाब सरकार ने उसके प्रान्त से बाहर जाने परप्रतिबन्ध लगादियाथा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकराम जान बचा कर सीधा देहरादून पहुँचा। वहां उसका श्वशुर मरणासन्न पड़ा था। वह भी उसकी सेवा-शुश्रूषा में लग गया।

अगस्त मास के आरम्भ में बालकराम के श्वशुर का देहान्त हो गया और इसी मास में स्वराज्य मिलने की आशा में पंजाब में मार-काट, अपहरण इत्यादि बहुत बड़े स्तर पर होने लगे। बालकराम अपनी पत्नी को लेकर दिल्ली जा पहुँचा और पंजाब की अवस्था सुधरने की आशा में वहां प्रतीक्षा करने लगा।

वह लाहौर में कांग्रेस का एक उच्च कोटि का नेता था। सच्चे हृदय से गांधीजी के सिद्धान्तों पर विश्वास रखता था और समझता था कि शान्ति हो जाने पर वह वापस लाहौर में जाकर बस सकेगा तथा अपनी ज़मीन-जायदाद तथा कारोबार आदि पर अधिकार पा सकेगा। उसका विचार तो पाकिस्तान की राजनीति में भी सक्रिय भाग लेने का था।

स्वराज्य हस्तगत होने के दिन वह दिल्ली में था। १४-१५ अगस्त की रात के बारह बजे स्वराज्य समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। बालकराम एक मित्र के घर ठहरा हुआ रेडियो पर समारोह की कार्य-वाही सुन रहा था। मित्र के बच्चे प्रसन्नता से उछल-कूद रहे थे। लेकिन बालकराम गम्भीर था।

मित्र सन्तोष कुमार ने पूछा, "बालकराम, तुम इससे प्रसन्न नहीं हो?"

"प्रसन्न तो हूँ," बालकराम ने उत्तर दिया, "परन्तु मैं सोच रहा था कि पाकिस्तान में किस प्रकार का राज्य बनेगा और मैं उसमें किस प्रकार का भाग ले सकूंगा।"

"तो तुम्हारी इच्छा पाकिस्तान को अपना देश बनाने की है क्या?"

"और कर ही क्या सकता हूँ? मेरी जड़ें लाहौर, इच्छरा में लगी हैं। वहां अपनी भूमि तथा मकान है, चाहे वह जला दिया गया है। ईंटों के कई भट्टे हैं। जीवन-भर की कमाई वहां है, यहां रहकर क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करूंगा ? फिर, मैं पंजाबी हूं। इस कारण पंजाब की अवस्था सुधारने
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में यत्न करना चाहता हूं।"

किन्तु तुम यत्न कर भी सकोगे ? कल जिन्ना साहब ने अपनी एक तकरीर में कहा है कि पाकिस्तान की हकूमत शरअ् के मुताबिक तनज़ीम की जाएगी।"

R089.9143
GUR-N

"तो वह प्रजातन्त्रात्मक होगा क्या ?"

"शरअ् का प्रजातन्त्र से क्या सम्बन्ध है। अधिक-से-अधिक इस्लामी प्रजातन्त्र होगा। मेरा मतलब है कि केवल मुसलमानों को राज्य-संचालन का अधिकार होगा।"

"यह तो होगा ही। मैं सियासी तौर पर मुसलमान हो जाऊंगा।"

बालकराम का मित्र भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। बालकराम की पत्नी शोभा समीप बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। पति के उक्त कथन को सुन उसने कह दिया, "मैं पाकिस्तान वापस नहीं जाऊंगी।"

Central Library
167522
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"तो तुम हिन्दुस्तान में रहोगी ?"

"वह तो रह ही रही हूं।"

"मेरा मतलब है कि तुम मेरे साथ नहीं जाओगी ?"

"नहीं।"

"तो तुम अपने पति को छोड़ दोगी ?"

"पति से पत्नी का सम्बन्ध धर्म का ही तो है। जब धर्म ही नहीं रहेगा तो पति कैसा ?"

बालकराम अवाक् अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया। उसने वापस पाकिस्तान जाने का अपना निश्चय बदल दिया और यह विचार करने लगा कि हिन्दुस्तान में रहकर वह क्या करे। दो दिन के विचार के पश्चात् यह निश्चय हुआ कि वहां से वे सब शोभा की बड़ी बहन महिमा के घर शिवपुरी जाकर रहें और वहां से अकेला बालकराम बम्बई जाकर कोई कारोबार शुरू करे। जब वह जम जाए और अवस्था सुधर जाये तो परिवार को भी वहीं बुला ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ तारीख को उसने दिल्ली से प्रस्थान किया तो मार्ग में सुरेन्द्र से भेंट हो गई। सुरेन्द्र रेल के साथियों को दिल्ली समारोह का विवरण सुना रहा था। उसकी बातें सुन बालकराम का दीर्घ निःश्वास निकल गया। सुरेन्द्र ने इसका कारण पूछा तो बालकराम ने देश को मिलने वाले स्वराज्य का जो मोल पंजाबियों ने दिया था बता दिया। घटनाओं के नग्न चित्र का वर्णन सुन सुरेन्द्र को भी दुःख हुआ और उसने पूछ लिया, "आप किधर जा रहे हैं?"

बालकराम ने अपनी साली का शिवपुरी वाला पता दिया और बच्चों को वहां छोड़कर बम्बई जाने का अपना विचार भी बताया। इस पर सुरेन्द्र ने उसे परिवार-सहित महोना में ठहर जाने का निमन्त्रण दे दिया और उसकी सहायता करने का वचन दिया।

बालकराम महोना में ही उतर गया और भवानी प्रसाद का मेहमान बन गया। सुरेन्द्र ने अपनी मां से बालकराम की लड़की सीता से विवाह करने की इच्छा प्रकट कर दी।

रुक्मिणी ने अपने पति से सुरेन्द्र की बात कही तो उसने कह दिया, मुझसे पूछो तो मैं बिना दहेज के विवाह पसन्द नहीं करता।"

"किसलिये?"

"मैंने अपनी लड़कियों को जी भर कर दिया है।"

"तो क्या लड़के-लड़कियों की दुकान खोल रखी है आपने? लड़कियों के विवाह पर खर्च किया है तो लड़कों के विवाह पर आमदनी करेंगे।"

भवानी प्रसाद निरुत्तर हो गया तो रुक्मिणी ने कह दिया, "विवाह में मुख्य बात लड़की-लड़के की ही होती है। वैसे लड़की पढ़ी-लिखी और सुशील मालूम होती है।"

"क्या पढ़ी है?"

"लाहौर में सीनियर कैम्बरिज की परीक्षा देने वाली थी। वहां रहती होती तो अब तक पास कर लेती। अपने पिता से धाराप्रवाह अंग्रेज़ी में बातचीत करती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भवानी प्रसाद ने कह दिया, "देख लो। बहू से वास्ता तुम्हारा ही पड़ेगा।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लड़की अभी छोटी उम्र की है। घर में आकर रहेगी तो काम-काज, बोल-चाल और अपने रीति-रिवाज सिखाकर उसे राधा की भांति सुखकारक बना लिया जायेगा," रुक्मिणी ने विचार प्रकट किया था।

विवाह हो गया। परन्तु सुरेन्द्र का जीवन-कार्य अपने बड़े भाई से विलक्षण था। वह सन् १९४२ से ग्वालियर स्टेट कांग्रेस का सदस्य था। १९४६ में वह राज्य कांग्रेस का मंत्री बन गया। इस नाते वह कई बार पंडित जवाहरलाल नेहरू के सम्पर्क में आया था और इससे उनकी महत्वाकांक्षा ऊँची हो गई थी। रियासत के भारत में सम्मिलित होते ही ग्वालियर की कांग्रेस का भारत की कांग्रेस से सम्बन्ध हो गया और सुरेन्द्र अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य हो गया। १९५२ के निर्वाचनों में वह महाराजा ग्वालियर की सहायता से ग्वालियर के एक क्षेत्र से संसद का सदस्य निर्वाचित हो गया।

सुरेन्द्र का विवाह हुआ था १९४८ के जनवरी मास में और उसी वर्ष के मई मास में उसने अपना कार्य-क्षेत्र ग्वालियर बना लिया था। उन्हीं दिनों वह सीता को लेकर ग्वालियर चला गया था। इसके पश्चात् वह केवल संसद सदस्य बनने के समय ही महोना आया था। यह सन् १९५२ फरवरी का महीना था। वह सीता को भी साथ लाया था। उस समय सीता की गोद में एक वर्ष का बच्चा था।

पिता ने बहू को गोदी में बच्चा लिये हुए घर में प्रवेश करते देखा तो सुरेन्द्र से पूछ लिया, "यह कब हुआ है?"

"एक वर्ष का है।"

"तुमने इसकी सूचना भी नहीं भेजी?"

"पिताजी, यह भी कोई बताने की बात थी। सीता ने कोई नई बात तो की नहीं। जो कुछ संसार की औरतें करतीं हैं वही तो किया है। हमने इस लड़के का नाम लक्ष्मण रखा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो अपने-आप नाम भी रख लिया है ?"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां पिताजी, यह भी कोई नई बात नहीं। हां, एक नई बात मैंने की है। मैंने वह कुछ किया है जो हमारे बाप-दादाओं में से किसी ने भी नहीं किया था और उसके लिए मैं आपसे आशीर्वाद और बधाई लेने आया हूं।"

"अच्छा, भला क्या किया है तुमने ?"

"मैं भारत की संसद का सदस्य निर्वाचित हो गया हूं। महाराजा की सहायता से ग्वालियर क्षेत्र से कांग्रेस कमेटी के टिकट पर मैं अब भारत की सबसे बड़ी कानून बनाने वाली एवं शासन चलाने वाली सभा का सदस्य हो गया हूं।"

"सत्य ?"

"हां पिताजी।"

"तो तुम हम सबके लिए कानून बनाओगे !"

"हम सब मिलकर बनाएंगे।"

"भला तुम कानून कहां पढ़े हो ? तुम तो मैट्रिक भी थर्ड डिवीजन में पास हुए थे।"

"वह बात दूसरी है। अब तो मैं निर्वाचनों में फर्स्ट डिवीजन में आया हूं। मुझे लाख से ऊपर मत प्राप्त हुए हैं। मेरे सब विरोधियों की ज़मानतें ज़ब्त हुई हैं।"

"तब तो सचमुच तुम बधाई के पात्र हो। भगवान जाने यह चमत्कार तुमने कैसे सम्पन्न किया है ?"

"पिताजी ! पिछले दस वर्ष से इसके लिये यत्न कर रहा हूँ। गांव की कमेटी के लिये मत प्राप्त करने से आरम्भ कर भारत की संसद के लिये मत प्राप्त करने तक पग-पग चलता हुआ पहुँच गया हूँ।"

इस बार सीता महोना आयी तो वह मन-ही-मन अपने पति के माता-पिता का कृतज्ञ थी। उनके पुत्र से विवाह हो जाने से वह सब प्रकार से संतुष्ट एवं प्रसन्न थी।

इसके उपरान्त उसी वर्ष उसके एक लड़का हुआ। उसका नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अर्जुन रखा गया। इस बीच उसका आना-जाना दिल्ली और महोना
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में बना रहा। यह बात अवश्य थी कि ज्यों-ज्यों उसका पति धनी होता गया त्यों-त्यों ससुर के परिवार में अपने को अधिकाधिक विशेषाधिकार-सम्पन्न होता मानती गयी ।

सीता के विवाह के समय नरेन्द्र ९वीं कक्षा में पढ़ता था। जब सुरेन्द्र संसद सदस्य बना तब वह बी० एस-सी० में आगरा में पढ़ता था। जब-जब सुरेन्द्र और सीता ग्वालियर से दिल्ली जाते मार्ग में नरेन्द्र से मिलते जाते इससे सीता और नरेन्द्र का सम्पर्क बना रहा और धीरे-धीरे बढ़ता रहा। जब नरेन्द्र दिल्ली के 'पौलिटेकनिक' कालेज में इंजीनियरिंग के लिए भर्ती हुआ तो सीता से उसका सम्पर्क और भी बढ़ गया। सुरेन्द्र को संसद सदस्य के नाते जो बंगला मिला था उसमें वह प्राय: जाता रहता था।

जब वह इस बार महोना आया तो यह देख कि सीता भी वहां रहने के लिए आयी हुई है, बहुत प्रसन्न हुआ। जब सीता ने शतरंज बिछाई तो वह घर-बाहर की सुध-बुध भूल खेलने में लीन हो गया। सीता भी इस खेल में अति प्रवीण थी और दस में छ: बाजियां वही जीता करती थी।

बाजी खेलते हुए नरेन्द्र ने पूछा, "भाभी तुम दिल्ली क्यों नहीं गईं ?"

"तुम्हारे भैया कहने लगे कि अब दो-दो बच्चों की मां हो गयी हूँ इसलिए मुझे उनसे पृथक रहना चाहिये।"

नरेन्द्र इसका अर्थ समझता था। वह अब इक्कीस वर्ष का था और दिल्ली के विद्यार्थी समाज में रहते हुए उसे दो वर्ष होने जा रहे थे। इस पर उसने पूछ लिया, "भाभी तुम इससे प्रसन्न हो ?"

"नहीं नरेन्द्र, मैं तो अभी उनके साथ रहना चाहती हूँ; मैं अब बच्चे तो नहीं चाहती परन्तु इसके लिये पति से पृथक रहने के अतिरिक्त भी तो उपाय है।"

नरेन्द्र संतति-निरोध के उपायों के विषय में सुन चुका था। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बात आगे नहीं चलायी। इस समय खेल में शह पड़ गयी थी, दोनों
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का ध्यान उधर चला गया। जब खेल का यह संकट टला तो सीता ने फिर कहा, "तुम्हारे भैया की संगत से वंचित हुए तो मुझे दो वर्ष होने जा रहे हैं, पहले तो वह अर्जुन के छोटे होने की बात कहते रहे और अब तो उन्होंने साथ ले जाने से इन्कार कर दिया है।"

इस प्रकार की बातों से नरेन्द्र मन में चंचलता अनुभव करने लगा था, किन्तु फिर उसने ध्यान बाजी की ओर लगाया और सीता के बादशाह को शह दे दी। अब तो सीता ने भी ध्यान बदला, दोनों सँभल-सँभल कर खेलने लगे। बाजी नरेन्द्र हारा, इससे उसने दूसरी बाजी लगाने का अनुरोध किया। सीता मानो इसके लिये तैयार थी। बाजी फिर शुरू हुई। एकाएक सीता ने कहा, "मुझे संदेह होने लगा है कि तुम्हारे भैया ने दूसरा विवाह कर लिया है।"

"यह कैसे हो सकता है ? अब तो दूसरे विवाह का कानून नहीं रहा।"

"मगर पहली से तलाक होने पर ही तो दूसरा विवाह होगा न ? दूसरे विवाह से मेरा अभिप्राय यह है कि उन्होंने किसी अन्य औरत से सम्बन्ध बना लिया है।"

"यदि यह सिद्ध किया जाये तो तुम तलाक दे सकती हो ?"

"क्या करूँगी तलाक देकर ?"

"भाभी तुम भी नया विवाह कर सकोगी।"

"दो-दो बच्चों की मां से कौन विवाह करेगा ?"

"बच्चों का प्रबन्ध तो कोर्ट की आज्ञा से होगा और फिर कोई भी तुम जैसी से विवाह कर लेगा।"

"मुझ जैसी ! इसका क्या मतलब है ?"

"यही कि तुम अभी यौवनारम्भ में ही हो, तुम्हारी वय भी कुछ अधिक नहीं है। दिल्ली में तो तुम्हारे जितनी लड़कियां अभी कालिजों में ही पढ़ती हैं।"

"तो तुम करोगे मुझसे विवाह ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"मैं............?" नरेन्द्र भौंचक्का हो मुख देखता रह गया।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
फिर कुछ क्षण विचार कर कहने लगा, "पर भाभी तुम तो मुझे भैया कहती हो।"

"हां, लेकिन जब विवाह के अर्थ बदल गये हैं तो भैया बहिन के अर्थ भी बदल सकते हैं।"

"नहीं भाभी, मैं तो तुम्हें अपने बड़े भाई की पत्नी मान मां के समान पदवी पर मानता हूं।"

"सीता ने ही बाजी के मुहरे लगा दिये और कहा, "ठीक है नरेन्द्र, मैं भी तुम्हारे भैया को अपना पति मानती हूं। इस कारण मैं उन्हें तलाक नहीं दूँगी, समझे। यह मन के मानने की बात है।"

"तो मैं कल भैया को तार देकर यहां बुला लेता हूं।"

"क्या करोगे बुलाकर ?"

"नरेन्द्र फिर चुप रह गया। वह कह नहीं सका कि अपने बड़े भाई को क्या और कैसे कहेगा। सीता ने बाजी आरम्भ कर दी।

: ४ :

यह बाजी अभी चल ही रही थी कि कैलाश आया और कहने लगा, "चाचीजी, मां कहती हैं कि खाना तैयार है, आकर खा जाओ।"

उत्तर सीता ने दिया, "मांजी से कहो कि हमारा खाना थालियों में लगाकर यहीं भेज दें।"

कैलाश गया तो दोनों फिर खेलने लगे। बाजी अभी चल ही रही थी कि कैलाश फिर आया और कह गया, "मांजी सोने चली गई हैं। वे कहती हैं कि खाना छींके पर रखा है, जब आपको अवकाश हो तो रसोईघर में जाकर खा लें।"

"क्या ?" नरेन्द्र ने कैलाश के कथन का अर्थ समझने के लिये पूछा और घूम कर उसकी ओर देखा, मगर कैलाश भाग गया और देवर-भाभी इस बात का अर्थ समझने के लिये एक-दूसरे का मुख देखने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सीता ने मौन तोड़ा, "लगता है राधा ने विद्रोह कर दिया है।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ मालूम तो यही होता है, परन्तु रानी जी अब क्या करना चाहती हैं ?"

"भूख तो लगी है।"

"तो मैं जाता हूँ और खाना ले आता हूं।"

"हाँ जाओ।"

नरेन्द्र गया, बाजी अभी अधूरी लगी थी। वह जाते-जाते कह गया, "देखो भाभी, बाजी में हेर-फेर मत करना।"

नरेन्द्र ने देखा कि सचमुच रसोईघर में माँ नहीं हैं। छींके पर एक कटोरदान में खाना रखा था, नरेन्द्र ने कटोरदान उतारा और उसके साथ एक लोटे में जल और दो गिलास लेकर सीता के कमरे में जा पहुँचा।

वहां मेज पर भोजन लगाकर वे खाने लगे। भोजन करते हुए सीता ने कहा, "मैं यहाँ इस अवस्था में नहीं रह सकती।"

"तो क्या करोगी ?"

"कल तुम भैया को तार दे दो कि यहां चले आएँ।"

"यदि यह ठीक है कि उन्होंने किसी अन्य स्त्री से सम्बन्ध बना लिया है तो वे नहीं आयेंगे।"

"देखो तार ऐसी बनाना जिससे उन्हें लगे कि यहां बहुत अनिष्ट हुआ है। परन्तु साफ कुछ समझ न सकें। तब वे चले आयेंगे।"

नरेन्द्र यह समझ रहा था कि उसे माता-पिता और भाभी तथा बच्चों से मिलने जाना चाहिये था। उसकी इस साधारण-सी भूल ने बात बिगाड़ दी है। वह इस झगड़े में अपना ही दोष मानता था। जब उसने मन की बात बताई तो सीता ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, इसमें तुम्हारा दोष नहीं; यह सब शरारत राधा की है। उसने माँजी को सिखाया-पढ़ाया है।"

परन्तु नरेन्द्र को शतरंज का खेल आरम्भ करने पर पश्चात्ताप होने लगा। भोजन समाप्त होने पर सीता ने पुनः बाजी आरम्भ करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बात की तो नरेन्द्र ने यह कहकर टाल दिया, "बस अब कल। नींद आ रही है।"

पुरुष छत पर सोते थे और स्त्रियां प्रांगण में। नरेन्द्र भी छत पर चढ़ गया। प्रांगण में मां और राधा भाभी लेट रही थीं। सीता के लिये बिस्तर लगा था, परन्तु वह अभी आयी नहीं थी। उसके बच्चे वहीं कमरे में सो गये थे।

नरेन्द्र ने मां से कुछ नहीं कहा। वह सीधा ऊपर छत पर जा अपने बड़े भाई से बात करने के लिये बोला, "भैया मैं आ गया हूं।"

भूपेन्द्र ने अपने क्रोध को नियन्त्रण में रखते हुए कहा, "आये हुए तो तुम पांच बजे के हो। कहो, भाभी से बातें कर फुरसत पा गये हो?"

"हां भैया, उनकी बात समाप्त होने में ही नहीं आती थीं। बड़ी मुश्किल से छुट्टी पाकर आया हूं। सुनाओ सब ठीक है न?"

"तो तुम उन सबसे भी नहीं मिले। बड़े नालायक हो गये हो?"

"भाभी से तो मिल आया हूं किन्तु बच्चों से नहीं मिला, भैया नाराज़ होने की बात नहीं। शतरंज का खेल ही कुछ ऐसा है कि जब तक सुध-बुध भूलकर उसमें न जुटा जाये तब तक बाजी जीती नहीं जा सकती। भैया तुम खेलते नहीं इसी कारण इस विषय में कुछ जानते नहीं।"

"तो बाजी जीत आये हो?"

"वैसे......—।"

उसकी बात भवानी प्रसाद ने बीच में काट दी। "छोड़ो इस किस्से को, बताओ कितनी पढ़ाई और बाकी है?"

"पिताजी बस कोई दो साल बाद १९५७ के अप्रैल में अंतिम परीक्षा हो जायेगी और मैं विश्वास से कहता हूं कि इंजीनियर बन जाऊंगा।"

"कुछ इस समय तक भी सीखे हो या नहीं?"

"बहुत कुछ सीख गया हूं भापा, सिद्धान्त की बात सीख गया हूं। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सिद्धान्तों के भिन्न-भिन्न प्रयोगों का ही अनुभव प्राप्त कर रहा हूं।"

"तो ऐसा करो, कल से प्रातः अपने भाई के साथ खेत में चले जाया करो। हमने फार्म का काम यंत्रों से करने का विचार किया है। तुम जा कर योजना बनाओ कि क्या-क्या यंत्र कहां-कहां लगना चाहिये।"

"पर भापा मेरी शिक्षा कृषि-विभाग से सम्बन्ध नहीं रखती।"

"तो किससे सम्बन्ध रखती है?"

"रोड और बिल्डिंग विभाग से। सरकारी सार्वजनिक निर्माण विभाग में कार्य पाने की मुझे आशा है।"

"तो तुम पम्प, ट्रैक्टर, हारवेस्टिग मशीनों आदि से बिल्कुल अपरिचित हो।"

"बिल्कुल अपरिचित तो नहीं, हां कृषि-विभाग के विशेष ज्ञान से मेरी पढ़ाई का सम्बन्ध नहीं।"

"मगर कुछ तो समझते ही होगे।"

"हां, कुछ तो समझता हूं परन्तु मुझे अपनी पढ़ाई भी तो करनी है।"

"जैसी अब कर रहे थे।"

"नहीं, पिताजी, यह तो मनोरंजन हो रहा था। प्रातःकाल पढ़ाई करूंगा।"

"भाभी का भी मनोरंजन कर आए हो या नहीं। भूपेन्द्र ने एक व्यंग और कस दिया।

नरेन्द्र को अपने बड़े भाई से रत्ती-भर भी लगाव नहीं था और वह इस व्यंग का कटु उत्तर देने वाला ही था कि पिता ने पुनः बात संभाल ली। उसने कहा, "पर मेरा कहना है कि तुम प्रातः भाई की सहायता किया करो और मनोरंजन के समय पढ़ाई कर लिया करो।"

"परन्तु भापा।" भूपेन्द्र ने बातों का सूत्र पुनः अपने हाथों में लेते हुए कहा, "इसकी छोटी भाभी का मनोरंजन कैसे होगा, यह तो जैसा हम कहेंगे मान जायेगा।"

"उसके विषय में भी विचार कर लेंगे। देखो नरेन्द्र, कल तड़के उठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर भूप के साथ जाना।"

"अब नरेन्द्र से नहीं रहा गया। उसने कह दिया, "मैं फार्म पर नहीं जाऊंगा।"

"क्यों ?"

"मैं वहां जाना व्यर्थ समझता हूं। मुझे जीवन में फार्मिंग नहीं करता है। मेरा विचार तो किसी नगर का चीफ इंजीनियर बनने का है।"

"क्या मिलेगा वहां से ?"

"आरम्भ में पांच सौ। परन्तु मेरा वेतन दो हजार तक जा सकता है और मेरा यत्न होगा कि ऐसा शीघ्रातिशीघ्र हो।"

"बस, यह तो कुछ भी नहीं; इतना तो भूप अब भी अपने फार्म में पैदा कर लेता है।"

'परन्तु भापा, ये फार्म नहीं रहेंगे। सरकार इनको अपने अधीन कर रही है। आपके पास तीस एकड़ से अधिक भूमि नहीं रहेगी।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि आप अनायास ही धनी हो जाते हैं।"

"और तुम धनी होने के लिये डंड पेला करोगे।"

"मेरी बात दूसरी है। मैंने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की है। इसमें मेरे जीवन के अठारह मूल्यवान वर्ष लग रहे हैं।"

"वे मूल्यवान वर्ष तो लग गये और उस काल में तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे निर्वाह के लिये धन देते रहे, इसलिये उनका मूल्य तो तुमको मिल गया, शेष क्या रहा ?"

"पिताजी, आप समझते तो हैं नहीं। पुराने विचार अब नहीं चल सकते। जहाँ तक खेत का सम्बन्ध है, यह तो समझ गया कि सरकार इतने-इतने बड़े फार्म निजी सम्पत्ति में नहीं दे सकती।"

"तो यह हमको सरकार दे रही है ?"

"सरकार नहीं समाज ने दिये हैं। सरकार तो समाज की प्रतिनिधि है। समाज की सम्पत्ति गलत आदमी के हाथ में नहीं रहने दी जा सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हम गलत आदमी हैं ?"

"बिल्कुल ! आप अपने समस्त धन से समाज का क्या भला करते हैं ?"

"यही तो चाहता था कि जाकर तुम देखो कि हम क्या पैदा कर रहे हैं और उसे कहाँ व्यय कर रहे हैं। तुम अपने ज्ञान से हमें यह भी बताओ कि इस अर्जन को कैसे अधिक किया जा सके, साथ ही लोगों की भलाई हम कैसे करें ?"

"भापा ! सब व्यर्थ है, यह रहने वाला नहीं। पंडित जवाहर-लाल ने कह दिया है कि यहाँ समाजवादी समाज का निर्माण करना है। और इसका अर्थ ही यह है कि यहाँ केवल समाज ही धनवान हो सकेगा। जनता में किसी के पास निर्वाह से अधिक आय नहीं होनी चाहिये।"

'तो तुम्हारी आय दो हज़ार क्यों होगी ?"

"सरकारी कर्मचारियों की बात दूसरी है, वे तो सरकार का अंग होंगे। जो सरकार से स्वतन्त्र कारोबार करना चाहेगा, उसको निर्वाह से अधिक नहीं लेने दिया जायेगा।"

"तो सरकार के कर्मचारी ही यह धाँधली मचाने जा रहे हैं ?"

"यह धाँधली नहीं है पिताजी ! यह न्याय है। यह कर तो रही है सुरेन्द्र भैया की संसद परन्तु संसद सदस्य स्वयं तो कुछ नहीं कर सकते; करेंगे कर्मचारी ही। इस न्याय के करने में भी बहुत योग्यता की आव-श्यकता है अतः कर्मचारी अपनी योग्यता का मूल्य माँगेंगे। वह दिया जायेगा। यदि नहीं देंगे तो संसद के निर्णय केवल कागजों पर लिखे रह जाएँगे।"

'तो यह बात है, सरकारी कर्मचारी और संसदसदस्य मिलकर यह लूट मचाने वाले हैं। तभी तुम संसद सदस्य की बीवी की खुशामद में लगे हो, जिससे तुम्हें भी इस लूट में सम्मिलित होने का अवसर मिल सके।"

नरेन्द्र हँस पड़ा और कहने लगा, "यहबात सत्य है, यदि सुरेन्द्र भैया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मेरे परीक्षा पास करने तक संसद के सदस्य रहे तो मैं उनकी सिफारिश
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से शीघ्र उन्नति के मार्ग पर चल पड़ूँगा।"

"तो तुम खेत पर काम देखने नहीं जाओगे ?"

"भापा जी, खेत रहेंगे ही नहीं इसलिये इस व्यर्थ की बात पर व्यय करने के लिए मेरे पास समय नहीं है।"

"अच्छा, जाओ सोओ।"

नरेन्द्र बहुत देर तक अपने कथन और भविष्य में होने वाले परिवर्तनों पर विचार करता रहा। बहुत रात गये उसको नींद आई और अगले दिन बहुत दिन चढ़े तक वह सोता रहा।

भूप तो प्रातः चार बजे से भी पहले उठ जाया करता था। वह स्नानादि से निवृत्त हो, कलेवा कर सूर्य निकलने तक खेतों में जा पहुँचता था। गन्ने के खेत थे, गर्मी का मौसम था, खेत पानी माँग रहे थे। अतः जब भोला का लड़का पम्प चलाता तो वह फावड़ा ले खेतों में पानी के समान रूप से जाने का प्रबन्ध करने लग जाता। भूप के साथ काम करने वाले आधी दर्जन कर्मचारी और भी थे।

राधा तो अपने पति से भी पहले उठती थी और उसके लिये कलेवा तैयार कर देती थी। रुक्मिणी प्रातःकाल रसोई आदि का कार्य नहीं करती थी। यह समय वह स्नान-ध्यान में व्यय करती थी। भवानीप्रसाद भी प्रातः उठ हुक्के की एक चिलम पी शौचादि से निवृत्त हो पूजा-पाठ में लग जाता था। पूजा से छुट्टी पाकर सास-ससुर बहू का बनाया कलेवा लेते थे।

इसके पश्चात् सास गृह-कार्य देखने लगती थी और श्वशुर घर के बाहर चौपाल में खाट डाल बैठ जाता और हुक्का ताजा करवा लेता। भवानीप्रसाद जमींदारी के काल से ही अपनी आय का बहुत-सा भाग जरूरतमन्दों की जरूरत पूरी करने में व्यय करता रहता था। वैसे वह साहूकारा भी करता था अर्थात् रुपया सूद पर देता था और सूद की दर ऋण लेने वाले के आचार-विचार तथा सामर्थ्य पर निर्भर थी। वैसे दान-दक्षिणा भी चलती रहती थी। धर्मार्थ भी और अकिंचनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की सहायतार्थ भी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज भवानीप्रसाद चौपाल में आकर बैठा ही था कि भोला हुक्के का पानी बदल और चिलम भर कर ले आया। भवानी प्रसाद ने दो-तीन कश खींचकर तम्बाकू को सुलगाया तो भोला बोला, "बाबू···।"

"कहो !"

"काहन की बीवी के बच्चा होने वाला है।"

"तो करीमन दाई को बुला लाओ।"

"बाबू, वह तो गाँव छोड़ कहीं अन्यत्र चली गयी हैं। यहाँ अब सरकारी दाइयों का केन्द्र खुल गया है। बिन्दु वहाँ दिखाती रही हैं, अब वहाँ की डाक्टराइन ने कुछ दवाइयाँ और सामान लिख दिया है, वह यहाँ गाँव में तो मिलती नहीं, इस कारण या तो काहन ग्वालियर जायेगा या मैं जाऊँगा, तब आयेंगी।"

"तुम ला सकोगे ?"

"डाक्टराइन ने दुकान का नाम और पता लिख दिया है और कहा है कि वहाँ से मिल जायेगीं। आप एक दिन की छुट्टी दें तो दस बजे की गाड़ीसेजाऊँगा और कल प्रातःकालकी गाड़ी से आ जाऊँगा।"

"तो जाओ। अच्छा ठहरो ! देखूँ अगर नरेन्द्र जा सके तो उसको भेज दूँ। वह सब सामान देखभाल कर ले सकेगा।"

"नहीं बाबू ! इस गरीब के लिये छोटे बाबू को कष्ट देने की जरूरत नहीं।"

परन्तु भवानी प्रसाद के मन में कुछ और ही बात थी। उसने कह दिया, "तुम जाने के लिये तैयार हो जाओ इस पर भी नरेन्द्र को जरा बाहर बुला लाओ, यदि वह जा सके तो घर के कामकाज में विघ्न नहीं पड़ेगा।"

भोला इस बात से सकुचा रहा था, परन्तु मालिक का हुक्म था इस कारण वह पहले भीतर घर में गया। नरेन्द्र नाइट सूट पहने प्रांगण में खड़ा दाँतों को ब्रुश कर रहा था। भोला सामने हो जुहार कर उससे बोला, "बाबू बाहर पिताजी बुला रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कह रहे हैं ?"

"भैया, वह स्वयं ही बताएँगे।"

नरेन्द्र रात की बात के विषय में ही विचार कर रहा था। वह ब्रुश करता हुआ ही बाहर चला आया।

"पिताजी !" उसने कहा।

"देखो, जल्दी तैयार हो जाओ। भोला की बहू बीमार है और उसके लिये डाक्टर ने कुछ औषधि और सामान लिखकर दिया है। वह यहाँ मिल नहीं रहा, तुम दस बजे की गाड़ी से ग्वालियर जाओ और सामान खरीदकर ले आओ।"

"पर भापा, भोला स्वयं नहीं जा सकता क्या ?"

"जा तो सकता है, परन्तु एक तो वह अनपढ़ गँवार है, सब सामान ठीक-ठाक ला सकेगा अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। दूसरे घर में काम कौन करेगा ?"

"मैं नहीं जाऊँगा पिताजी !"

"कुछ काम है यहाँ क्या ?"

"मैंने अपनी पढ़ाई करनी है। इस प्रकार के कामों के लिये मैं भोला की बहू की नौकरी नहीं कर सकता।"

"यह नौकरी नहीं है बेटा, यह तो धर्मार्थ सेवा है।"

"पर मैं तो फर्स्ट-क्लास में यात्रा करता हूं, यह तो भोला को बहुत मँहगा पड़ेगा।"

"वहाँ जाने का किराया और सब वस्तुओं का दाम तो मैं देने वाला हूं।"

"आप क्यों देंगे ?"

"वह हमारा नौकर है, साधारण वेतन पाता है। इतने में वह डाक्टरी चिकित्सा नहीं करवा सकता।"

"परन्तु काहन तो पचास रुपया वेतन पाता है।"

"वह पचास रुपये से केवल दस रुपये भोला को रोटी-पानी के लिये देता है और शेष शराब में व्यय कर देता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप उसे नौकरी से निकाल क्यों नहीं देते ?"

"तो पम्प चलाने वाला कोई उससे अच्छा आदमी मिल सकेगा ?"

"आप समाचार पत्र में विज्ञापन दे दें।"

भवानी प्रसाद हँस पड़ा। इस समय भोला तैयार होकर आ गया था। भोला आया तो नरेन्द्र ने कह दिया, "भोला, मैं आज ग्वालियर नहीं जा सकता, तुम स्वयं चले जाओ।"

भोला चुप रहा। भवानी प्रसाद ने अपनी जेब से नोटों का एक बंडल निकाला और भोला से पूछा, "डाक्टराइन ने बताया है कि कितना खर्चा बैठेगा।"

"कहती थी कि तीस-चालीस रुपये लग जाएँगे।"

"अच्छा। यह लो साठ रुपये, इनको भीतर सलूके की जेब में रख लो। यदि कुछ बच जाय तो वापस कर देना।"

नरेन्द्र देख रहा था कि भोला ने रुपये लिए और जुहार कर स्टेशन की तरफ पैदल ही चल दिया।

नरेन्द्र ने पूछा, "यह साठ रुपये वापस लौटा देगा ?"

"नहीं, मैंने वापस लेने के लिए नहीं दिये।"

"तो फोकट में दे दिये हैं। जिससे इसका लड़का निश्चिन्त होकर शराब पी सके।"

"उसे तुम समझाना कि शराब पीना ठीक नहीं, परन्तु बेचारी बिन्दु का क्या दोष है इसमें, उसे तो समय पर सहायता मिलनी ही चाहिए।"

इस उदारता का अर्थ नरेन्द्र की समझ में नहीं आया, वह मन में विचार कर रहा था कि इस प्रकार का सब सामान और दवाइयाँ तो सरकार को देनी चाहिये। यह विचार करता हुआ मुख में ब्रुश चलाता हुआ वह भीतर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समय से भवानी प्रसाद घर से निकल बाहर चबूतरे पर आकर बैठता था, इसी प्रकार की याचना करनेवाले आते रहते थे। भवानी प्रसाद सबकी किसी-न-किसी प्रकार से सहायता करता रहता था। कोई उधार माँगने आता था, कोई घर में चल रहे कलह-क्लेश के सुलझाने के उपाय पूछने आता था और कोई संसार के झंझटों से ऊब राग-वैराग की बातें ही करने आ बैठता था।

इस प्रकार बैठे-बैठे और बातचीत करते हुए उस दिन ग्यारह बज गये, भीतर नई समस्या उत्पन्न हो गई थी। नरेन्द्र अभी स्नान कर अपने कमरे में जा ही रहा था कि राधा का सबसे छोटा लड़का महेश आया और बोला, "चाचा, नाश्ता तैयार है। रसोईघर में आकर खा जाओ।"

"कौन कहता है ?"

"बड़ी माँ कह रही हैं।"

"अच्छा, तुम्हारी चाची ने नाश्ता ले लिया है ?"

"वे तो अभी स्नान करने जा रही हैं।"

नरेन्द्र ने उत्तर नहीं दिया वह कमरे में जा घड़ी में समय देखने लगा, साढ़े नौ बज रहे थे। उसने कपड़े पहने और रसोईघर में जा पहुंचा, वहाँ राधा रसोई तैयार कर बर्तन समेट रही थी। रुक्मिणी रसोईघर के बाहर खड़ी कह रही थी, "सीता के लिए कलेवा कटोरदान में रखकर छीके पर रख दो। उसे जब फुरसत होगी आकर खा लेगी।

"माँ," नरेन्द्र ने कह दिया, "भूमि पर बैठकर मुझसे खाया नहीं जाता, मुझे इसका अभ्यास नहीं रहा।"

"तो अपना अल्पाहार अपने कमरे में ले जाओ और जाकर बर्तन मँजने के लिए यहाँ रख जाना। आज भोला ग्वालियर चला गया है।"

"अच्छा भाभी !" उसने राधा को सम्बोधन कर कहा, "सीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाभी और मेरा दोनों का कलेवा थालियों में लगा दो। मैं उनके लिए भी अपने कमरे में ले जाता हूँ। वे आएँगी तो वहीं खा लेंगी।"

राधा मुस्कराई और दो थालियों में अल्पाहार लगाने लगी। मां ने दो गिलासों में जल भर दिया। नरेन्द्र थालियाँ एवं गिलास लेकर अपने कमरे में चला गया।

सीता स्नान करके आई तो रुक्मिणी ने उसे बताया कि उसका अल्पाहार भी नरेन्द्र अपने कमरे में ले गया है।

"किसलिए ?" सीता ने पूछ लिया।

"उससे पूछ लेना।"

वस्त्र बदल सीता नरेन्द्र के कमरे में आई तो मेज़ पर थालियाँ रखी थीं और नरेन्द्र एक कुर्सी पर बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। सीता ने पूछा, "नरेन्द्र, कलेवा यहाँ उठा लाये हो ?"

"मुझे रसोईघर में धरती पर बैठकर खाना पसन्द नहीं, मैंने सोचा तुम भी यही पसन्द करोगी इसलिए तुम्हारा कलेवा भी अपने साथ उठा लाया।"

"परन्तु यह कब तक चलेगा ? इस प्रकार की अवहेलना सहन करने का मेरा तो स्वभाव नहीं रहा।"

"परन्तु इस छोटी-सी बात के लिए झगड़ा करना भी तो ठीक नहीं। साथ ही झगड़ा करने का कुछ परिणाम भी होगा क्या ?"

"मैं तो कहती हूं कि तुम भैया को तार दे दो।"

"यदि वे नहीं आये तो ?"

"तो भी मैं कल तक यहाँ से चली जाऊँगी।"

"तो बिना तार के ही क्यों नहीं चली जातीं ?"

"इसलिए कि तुम्हारे भैया जानते हैं कि मैं यहाँ आ गई हूं। अब उनको बताये बिना जाना ठीक नहीं। मैं तो उनको नाराज़ करना नहीं चाहती।"

नरेन्द्र ने कहा, "रात पिताजी मुझे फार्म पर जाकर देख-भाल करने के लिए कह रहे थे। मैंने इंकार कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो जिसके पास है वही तो वह किसी को दे सकता है।"

"हाँ, परन्तु मेरे खेतों पर काम न करने का कारण तो यह है कि मुझे यह लग रहा है कि खेत ही नहीं रहेंगे तो फिर उसमें समय व्यय करना व्यर्थ है।"

"पर तब पिताजी क्या करेंगे ?"

"यह सोचना उनका काम है।"

सीता गम्भीर हो विचार करती रही। जब अल्पाहार समाप्त हुआ तो सीता ने फिर कहा, "भैया को तार दे दो।"

"तो भाभी, दाम दे दो। मेरे पास तो इस समय कुछ है नहीं।"

सीता ने अपने कमरे में जाकर एक पाँच का नोट निकाल कर नरेन्द्र को दे दिया और कहा, "ज़रा ज़ोरदार शब्दों में लिखना।"

नरेन्द्र गया तो भूपेन्द्र आकर पिताजी के पास बैठ गया। भवानी प्रसाद ने पूछ लिया, "आज जल्दी ही खेत से चले आये हो।"

"हाँ भापा, काम चल रहा है। मैं सुरेन्द्र को तार देकर आ रहा हूं।"

"क्या लिख दिया है ?"

"तार बाबू को ही कह दिया था कि लिख दे। उसने लिखा है, "फौरन चले आओ कार्य अर्जेन्ट है।"

"किसकी ओर से तार दिलवाई है ?"

"आपकी ओर से।"

"ठीक है।"

"पर भापा, मैंने और राधा ने निश्चय कर लिया है कि यदि सुरेन्द्र अपनी पत्नी को लेकर चला न गया तो हम इस घर को छोड़ देंगे। भापा, मैंने एक और बात का विचार भी किया है।"

"क्या ?"

"नरेन्द्र रात कह रहा था कि खेत सरकार छीन लेगी। मैं उस अवस्था का भी विचार कर रहा हूँ, मुझे कोई ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे निर्वाह हो सके। तीस एकड़ धरती से तो हमारा निर्वाह हो नहीं सकेगा। अतः मैं गाँव में अथवा गाँव से बाहर कहीं जीविको-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पार्जन का कार्य करूंगा।"

"क्या काम करने की सोच रहे हो ?"

"राधा ने कहा है कि मैं उसके पिता से बात करूँ।"

"मुँशी रामदयाल से ?"

"जी ! जब से उनकी रियासत की नौकरी छटी है वे अपने निर्वाह-योग्य से अधिक ही पैदा कर रहे हैं।"

"मुंशी जी पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं, उनका अनुकरण तुम नहीं कर सकोगे।"

"अभी तो उनसे राय करना चाहता हूँ फिर आपसे विचार कर ही किसी काम में हाथ डालूंगा।"

"हाँ, बहुत-सी ऐसी बातें हो रही हैं जिनकी हम कभी भी आशा नहीं करते थे। यह भी असंभव नहीं कि हमारे बाप-दादाओं के काल के खेत भी छिन जाएँ। तब भी हमें जीना तो है ही, कुछ अन्य काम करना ही पड़ेगा।"

"इस वर्ष हमने दो सौ एकड़ गन्ना बोया है यदि यह सब बिक गया तो इसका तीस-चालीस हज़ार मिल जायेगा। इतने से कोई भी व्यापार किया जा सकता है, बैंक से कुछ भी निकालने की आवश्यकता नहीं रहेगी। दूसरी फसलें भी हैं, उनसे भी पर्याप्त आय की आशा है।"

"राधा बता रही थी कि उसके पिता कह रहे थे कि एक लाख रुपये लगा दिया जायें तो दो तीन हजार मासिक की आय सहज ही हो सकती है।"

भवानी प्रसाद विचारमग्न हो गया, भूप भी अपने विचारों में लीन हो गया। वह सोच रहा था कि यह जीवन का धर्म है कि मार्ग में आने वाली विघ्न-बाधाओं को दूर करता हुआ चले।

पिता-पुत्र अभी गम्भीर विचार में लीन थे कि नरेन्द्र बाजार की ओर से आता दिखाई दिया। भवानी प्रसाद के मन में यह जानने की लालसा जागी कि वह कहाँ से आ रहा है। अतः जब वह घर के भीतर जाने लगा तो भवानी प्रसाद ने आवाज़ दे दी, "नरेन्द्र इधर आओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन्द्र आया तो भवानी प्रसाद ने पूछ लिया, "कहाँ से आ रहे हो ?"

"भापा, छोटी भाभी ने भैया को बुलाने के लिए तार दिलवाया है।"

"किसलिए बुलाया है सुरेन्द्र को ?"

"वे कह रही हैं कि उनसे बड़ी भाभी का व्यवहार ठीक नहीं है। इस कारण वे यहाँ से जाना चाहती हैं।"

"क्या गलती की है राधा ने ?"

"भापा, यह मैं नहीं जानता। परन्तु मैं भी अनुभव कर रहा हूं कि मेरा भी यहाँ रहना किसी के लिए हितकर नहीं। मेरी पढ़ाई ठीक चल नहीं सकेगी, भोजन की व्यवस्था भी ठीक नहीं, रहने का स्थान तो नई दिल्ली जैसा हो हो नहीं सकता।"

"तो तुम भी जाना चाहते हो ?"

"भापा, चाहता तो हूं। परन्तु दो सौ रुपया महीना खर्चा बैठ जाएगा। कालेज खुला हो तो तीन सौ खर्च होता है। दो सौ बड़े भैया भेजा करते थे, एक सौ छोटे भैया दे दिया करते थे। वैसे तो मैंने होस्टल में अपना कमरा बन्द कर रखा है, पचास रुपया महीना उसका भाड़ा पड़ रहा है। भोजन का एक सौ रुपया और चालीस-पचास ऊपर का खर्चा होगा।"

"भूप तो कह रहा है कि जब फार्म नहीं रहेगा तो तुम्हारा दो-तीन सौ रुपया महीना वह नहीं दे सकेगा।" भवानी प्रसाद ने यह अपने मन से गढ़कर कहा।

"यह होने में तो अभी दो-तीन वर्ष लगेंगे। तब तक तो मेरी पढ़ाई समाप्त हो जायेगी।"

"हाँ, यह तो है ही। परन्तु वह तो आज से ही हाथ रोककर खर्च करना चाहता है, जिससे खेत छिनने तक उसके पास दो-चार लाख जमा हो जाय और वह किसी व्यापार में यह रकम लगा सके।"

"किस व्यापार में लगाएँगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर अभी वह विचार कर रहा है।

"पिताजी, यदि भैया मेरी राय मानें तो उन्हें व्यापार में प्रवेश नहीं करना चाहिए। व्यापार तो सब-के-सब धोखे की टट्टी हैं और यदि प्रगतिशील लोगों ने सच्चे हृदय से राज्य का संचालन किया तो व्यापार भी सरकार स्वयं करने लगेगी। छोटी-मोटी पान-सुपारी की दुकानें भले ही रह जाएँ। परन्तु कोई बड़ा व्यापार निजी क्षेत्र में नहीं रहेगा।"

"अच्छी बात है नरेन्द्र।" भूप ने वार्ता में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "यदि सरकार व्यापार भी नहीं करने देगी तो कम-से-कम एक काम तो रह ही जायेगा, हम भी डाके डालने लगेंगे।"

नरेन्द्र हँसते हुए कहने लगा, "दोनों में अन्तर है भैया। डाके डालना तो दंडनीय है।"

"परन्तु व्यापार भी तो दंडनीय होने जा रहा है। इस प्रकार दोनों को जब एक स्तर पर खड़ा किया जा रहा है तो हम भी कुछ तो करेंगे ही।"

नरेन्द्र मुस्कराते हुए बोला, "मैं यह तार की रसीद भाभी को दे आऊँ वे प्रतीक्षा कर रही होंगी।"

उसके कमरे में उसकी माता रुक्मिणी प्रतीक्षा कर रही थी।

नरेन्द्र ने प्रश्न-भरी दृष्टि में माँ की ओर देखा तो माँ ने पूछ लिया, "कहाँ गये थे नरेन्द्र?"

"माँ, छोटी भाभी ने तार दिलवाने के लिए भेजा था।"

"कहाँ तार किया है?"

"दिल्ली, भैया को। भाभी ने लिखाया है कि तुरन्त यहाँ चले आयें।"

"किसलिए?"

"भाभी यहाँ से जाना चाहती हैं। भैया से कहेंगी कि वे उन्हें दिल्ली ले जाएँ।"

"तब तो ठीक है। देखो नरेन्द्र, तुम्हें अपनी पढ़ाई में चित्त लगाना चाहिए। यही समय पढ़ने-लिखने का है, यदि इस समय चूके तो स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखो कि तुम कहीं के नहीं रहोगे। यह शतरंज तो पीछे भी खेला जा सकेगा, परन्तु पढ़ाई के लिए दूसरा समय नहीं।"

"बस आज से पढ़ाई करूँगा माँ ! तुम निश्चिन्त रहो, मैं बहुत अच्छे अंक लेकर पास हूँगा और फिर बहुत अच्छी नौकरी पा जाऊंगा।"

"तो इतना पढ़कर भी नौकरी ही करोगे ?"

नरेन्द्र समझ नहीं सका कि माँ को किस तरह समझाये कि समय आ रहा है कि जब देश की ९० प्रतिशत सज्ञान जनता को सरकार की नौकरी करनी होगी। इसमें स्त्री-मर्द दोनों सम्मिलित होंगे। वह सोच कर बोला, "माँ, मेरी पढ़ाई ही ऐसी है कि उसमें नौकरी ही की जा सकती है, अपना कुछ काम तो हो ही नहीं सकता।"

"तो तुमने ऐसी पढ़ाई पढ़ी क्यों ? कुछ ऐसा पढ़ते जिससे घर पर रहते हुए अपना स्वतन्त्र कार्य करते।"

"घर पर अब बड़ी कमाई वाले काम रहीं हो सकेंगे।"

"पर बेटा बड़े-बूढ़ों ने यह कहा है न कि उत्तम खेती, मध्य व्यापार; निकृष्ट चाकरी, भीख गँवार।"

"माँ ? यह कहावत अब झूठी हो गई है, अब तो भीख माँगना सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्य माना जाता है। प्रधानमंत्री तक अनेकानेक कार्यों के लिए चंदे माँगते रहते हैं, भीख माँगने का काम बड़े-बड़े नेताओं ने अपने हाथ में ले लिया है। जब किसी संस्था को धन की आवश्यकता होती है तो किसी नेता अथवा विख्यात पुरुष से अपील करवा दी जाती है। दूसरे नम्बर का बढ़िया काम चाकरी हो गया है। अब तो किसी को अपनी बहिन अथवा बेटी के लिए वर की आवश्यकता होती है तो वह देखता है कि लड़का कहाँ और किस काम पर नौकर है। सरकारी नौकरी को उपमा दी जाती है। रहा व्यापार और खेती। ये दोनों काम तो सरकार अति निर्धनों को और अति-मूर्खों के लिए नियत करने लगी है, कोई तीस एकड़ से अधिक भूमि नहीं रख सकेगा। इसका अर्थ निकृष्ट खेती, व्यापार गँवार।

खेतों से सौ-डेढ़ सौ रुपया महीना से अधिक आय नहीं हो सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्यापार की भी यही अवस्था होने वाली है। छोटी-मोटी दुकान हो सकें तो हो सके, सब बड़े व्यापार सरकार स्वयं चलायेगी।"

"यह चलेगा नहीं। देखो बेटा, इससे तो यह होगा कि जिनके लिये धन माँगा जायगा, वे धर्म संस्थाएँ न रहकर अधर्म संस्थाएँ हो जाएँगी। नेताओं को धन देने वाले किसी स्वार्थ-साधन के लिये ही देंगे और इस प्रकार दिया गया धन संस्थाओं की जड़ों में तेल के समान हो जायगा। धर्मार्थ दान तो किसी के माँगने से नहीं, स्वेच्छा और अन्तःप्रेरणा से देना चाहिये।"

"परन्तु भीख माँगने से मेरा अर्थ तो माँगने वाले के अपने स्वार्थ के लिये ही था, जो अपने लिये भीख माँगेगा वह गँवार माना जायेगा और यह तो महापातकी कार्य है।

"माँ! ये नेता लोग भी भीख अपने लिये ही माँगते। हैं जब यह किसी संस्था के लिये धन एकत्रित कर देते हैं तो फिर आशा करते हैं कि वह संस्था उनको मतदान के समय सहायता करेगी। वास्तव में यह दान इत्यादि के लिये अपीलें तो इनकी अपनी नेतागिरी कोकायम रखने के लिये ही होती हैं।"

रुक्मिणी इससे आगे युक्ति नहीं कर सकी, युक्ति का आधार ज्ञान होता है। उसे वर्तमान राज्य-प्रणाली का ज्ञान नहीं था, उसे यह नहीं सूझा कि वह नौकरी की और अधिक निन्दा कैसे करे, इसलिए उसने बात बदल दी।

उसने कहा, "एक बात मुझे तुमसे और कहनी है, वह यह कि तुम्हारा सीता अथवा किसी भी अन्य औरत से बहुत मेल-जोल नहीं होना चाहिये। तुम अब सज्ञान हो गये हो और तुम्हें इतनी समझ होनी चाहिये कि युवा स्त्री-पुरुष को आदर-युक्त अंतर पर ही रहना चाहिये। फिर देवर-भाभी के विषय में तो शास्त्र में और लोक में भी बहुत बातें विख्यात हैं। देखो तुम अपने कार्य पर ध्यान रखो। सीता के साथ तुम्हारी बहुत ही साधारण बातचीत रहनी चाहिये।"

नरेन्द्र को पिछली रात की सीता की बातें स्मरण हो आईं। सीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने कहा था कि जब विवाह के अर्थ बदल रहे हैं तो भाई-बहन के अर्थ भी बदल सकते हैं, सीता ने उससे यह भी पूछा था कि क्या वह उससे विवाह करेगा ? यह बात स्मरण आते ही उसे कँप-कँपी हो उठी। माँ उसे ध्यानपूर्वक देख रही थी।

तभी नरेन्द्र को एक अन्य बात भी स्मरण हो आयी। दिल्ली में शीरी नाम की एक कमसिन युवती थी। उससे उसकी विवाह-सम्बन्धी बात हो रही थी। नरेन्द्र को लगता था कि वह कुंवारी होते भी हुए अछूती नहीं हो सकती। इस पर भी वह उस पर मुग्ध था। यद्यपि उसका उससे किसी प्रकार का अनुचित सम्बन्ध नहीं था, तो भी साधारण मेल-जोल की सीमा पार हो चुकी थी। माँ की बात सुन उसके मुख पर दोषी होने की लाली दौड़ गयी थी। माँ ने इस लाली को भी देखा। उसे संदेह हुआ कि सीता ही असीता है, जिसने नरेन्द्र को पथच्युत कर दिया है। इस विचार से उसने कह दिया, "देखो बेटा संयम, से ही विद्यार्थी-जीवन चलाना चाहिये। अब दो वर्ष ही तो और हैं। बस पढ़ाई समाप्त हुई कि बहुत सुन्दर, सीता से भी बढ़कर लड़की से तुम्हारा विवाह कर दूँगी। तुम्हारी बहन शकुन्तला एक लड़की का रिश्ता लायी है। उसका कहना है कि लड़की चाँद की भाँति उज्ज्वल, लक्ष्मी की भाँति प्रभायुक्त और सरस्वती की भाँति विदुषी है।

नरेन्द्र ने कहा, "माँ, आज से ही मैं पढ़ाई में चित्त लगाऊंगा। सीता पढ़ी-लिखी स्त्री है और वह अपने धर्म को भलीभाँति समझती है। इस पर भी मैं उससे शतरंज नहीं खेलूंगा, कल भूल हो गई थी।"

नरेन्द्र से बातचीत कर माँ ने संतोष अनुभव किया और अपने कमरे में चली गयी।

उस दिन सीता और नरेन्द्र मिले। दोनों ने इकट्ठे भोजन किया और चाय भी पी। परन्तु सीता के कमरे में जाने से नरेन्द्र बचता रहा और शतरंज से बचने के लिये पढ़ाई का बहाना करता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

अगले दिन सुरेन्द्र अपनी कार में महोना आ पहुंचा। आते ही उसने सीता से मिलने का यत्न किया। अपना बिस्तर-सूटकेस बैठक में रख वह पिता को प्रणाम करने गया और उनसे यह कह दिया कि, "सीता और आपकी तारें गयी हैं इससे मैं उसका समाचार तो ले लूँ, तब आता हूं।"

सुरेन्द्र सीता के कमरे में पहुंचा तो सीता पलंग पर लेटी हुई थी। वह पति के आने का समय समीप जान विचारमग्न हो गयी थी और अपने मन की बात कहने के ढंग पर विचार कर रही थी। सुरेन्द्र ने उसे पलंग पर लेटे देखा तो पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठकर चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछने लगा, "सीता क्या बात है ? लेटी किसलिये हो ?"

"आप आ गये हैं ? सब बताऊँगी ही। पहले वस्त्र बदल चाय ले लीजिये।"

"अच्छा, भोला को आवाज़ दे दो कि मेरा सामान भीतर ले आये।"

भोला उस दिन खाली नहीं था। काहन की बहू के लड़का हुआ था। भोला अभी ग्वालियर से लौटा ही नहीं था कि बच्चा हो गया था और डाक्टराइन ने अपने पास से ही सामान और दवाइयाँ प्रयोग कर प्रसूता की सेवा कर दी थी। जाते समय कह गयी थी कि ग्वालियर से सामान आ जाये तो उसके पास उसके घर भेज दिया जाए। भोला उस समय डाक्टराइन के पास गया था।

सीता ने बताया भोला नहीं है, ड्राइवर को ही कह दीजिये कि सामान यहाँ रख जाये। सुरेन्द्र डाइवर से कहने जा ही रहा था कि नरेन्द्र एक हाथ में बिस्तर और दूसरे हाथ में सूटकेस लटकाये आ पहुँचा।

"भैया नमस्कार !" वह बोला।

सुरेन्द्र ने उसे देख पूछ लिया, "तो तुम भी यहीं हो ?"

"हाँ भैया, परसों आया था !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता ने कह दिया, "देखो नरेन्द्र ! माता जी ने इनके लिये अल्पाहार तैयार किया है, वह ले आओ।"

"तो मेरे इस समय आने की आशा की जा रही थी ?"

"मुझे तो थी ही। माँजी ने मुझसे पूछा था कि आप किस प्रकार आएँगे। रेल से अथवा मोटर गाड़ी से। मैंने बता दिया था कि अधिक आशा मोटर से आने की ही है। हमें आशा थी कि यदि प्रातः चार बजे चल पड़े तो ग्यारह बजे तक अवश्य पहुँच जायेंगे। माँजी ने कहा था कि, "अल्पाहार तो तैयार रहेगा ही। यदि देरी हो गयी तो मध्याह्न का भोजन कर लेंगे।"

सुरेन्द्र ने वस्त्र नहीं बदले उसने कहा, "चाय आ जाने दो, फिर स्नान कर दोपहर का भोजन करूँगा।"

नरेन्द्र अल्पाहार ले आया और सीता के पलंग के समीप मेज पर रख, बाहर जाने लगा तो सीता ने उसे आवाज़ दे रोक लिया। "नरेन्द्र ठहरो, इनके पास बैठ जाओ।"

नरेन्द्र बैठा नहीं वह प्रश्न-भरी दृष्टि में भाभी की ओर देखता हुआ खड़ा रह गया। इस समय सीता पलंग पर बैठी हुई थी। देखने में वह सर्वथा स्वस्थ प्रतीत हो रही थी। इससे सुरेन्द्र के मन में उठ रही आशंकाएँ शान्त हो रही थीं। सुरेन्द्र ने चाय बना ली थी, पराँठे का ग्रास खाते हुए उसने पूछा, "हाँ तो बताओ क्या बात है जो दो-दो तारें एकदम ही भेजी गयी हैं।"

"दो ? मैं तो एक ही के विषय में जानती हूँ। मैंने नरेन्द्र को तार देने के लिए कहा था। मुझे किसी दूसरे तार का पता नहीं।"

"तो तुमने किसलिए तार भेजवाई थी ?"

"मैं यहाँ रहना नहीं चाहती, ग्वालियर आपके बिना सुहाता नहीं इसलिए मैं चाहती थी कि आप मोटर लेकर आएँ और मुझे अपने पास दिल्ली ले जाएँ।"

"क्यों ? यहाँ क्या कष्ट है ?" सुरेन्द्र सीता को न ले जाने के लिए वही कारण बताने लगा था जो उसने ग्वालियर में बताया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

परन्तु नरेन्द्र के समीप खड़े होने के कारण सँभल गया इसलिए उसने
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक ऐसी बात पूछ ली जिससे वार्तालाप यौन-सम्बन्ध पर न जा सके।

"कुछ विशेष कष्ट तो नहीं, इस पर भी यहाँ न बिजली है, न नल है, न मेज-कुर्सी पर खाना होता है। मैं यहाँ नहीं रह सकती।" सीता ने उत्तर दिया।

"परन्तु यहाँ माँजी हैं, बड़ी भाभी राधा हैं और अब तो नरेन्द्र भी आ गया है। क्या इतनों की संगत बिजली और नल के अभाव की पूर्ति नहीं कर सकी ?"

"ये दो बातें सर्वथा भिन्न हैं। इनकी संगत का मुकाबिला आपकी ही संगत से हो सकता है। अतः इन दो में मुकाबिला मैं नहीं करूंगी।"

"परन्तु मैं तो दो-चार दिन में एक संसद आयोग के साथ रूस और यूरोप की यात्रा पर जा रहा हूँ।"

"तो मुझे भी साथ ले चलिये।"

"मुझे अपना तो कुछ खर्चा अपनी सरकार और कुछ विदेशी सरकारें देंगीं। लेकिन तुम्हारा खर्चा अपने पास से करना पड़ेगा। वह भी मैं कर देता, परन्तु किसी अन्य की पत्नी तो जा नहीं रही, तुम अकेली यात्रा में रस नहीं पा सकोगी।"

"पर मैं तो यहाँ नहीं रहूँगी।"

"तो तुम किसी पहाड़ पर चली जाओ।"

"वहाँ भी अकेली कैसे जा सकूँगी।"

"परन्तु यह तो सोचो कि मैं एक साथ दो स्थानों पर नहीं जा सकता। या तो रूस या योरुप जा सकता हूँ या तुम्हारे साथ किसी पहाड़ पर।"

"तो एक बात करिये। नरेन्द्र को मेरे साथ भेज दीजिये।"

"यह ठीक है, नरेन्द्र को राज़ी कर लो। मैं उसका भी खर्चा दे दूंगा।"

"बताओ नरेन्द्र !" सीता ने पूछ लिया, "दो महीने के लिए किसी पहाड़ पर चलो तो ठीक नहीं···रहेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"व्यर्थ है। इन पुराने विचार के आदमियों के पीछे लग कर ज़िन्दगी बरबाद मत करो। वे तो देवर-भाभी की बातें करने लगेंगे", सीता बोली।

"हाँ नरेन्द्र ! तुम्हें महोना में जीवन व्यतीत नहीं करना। यहाँ के दकियानूसी चलन बाहर समाज में चल नहीं रहे। दूसरे यहाँ गर्मी में तो पढ़ाई भी नहीं कर सकोगे," सुरेन्द्र ने कहा।

नरेन्द्र चुप रहा, वह निश्चय नहीं कर सका था। सुरेन्द्र अल्पाहार ले चुका था, वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "जरा पिताजी से भी पूछ आऊँ कि उन्होंने तार किस मतलब से भेजा था।"

नरेन्द्र अनिश्चित-मन वहाँ से निकल गया। सुरेन्द्र बाहर चौपाल पर चला गया। पिताजी की खाट के समीप भूमि पर चटाई के ऊपर भूपेन्द्र भी बैठा था, कुछ और भी लोग थे। सुरेन्द्र को आया देख भवानी प्रसाद ने बाहरी लोगों को विदा कर दिया और सुरेन्द्र को अपने समीप बैठा लिया। सुरेन्द्र ने पूछ लिया, "पिताजी दो-दो तार मिलने से मैं तो घबरा गया था, क्या कारण है आपके तार देने का ?"

"मुझे विदित नहीं था कि सीता ने भी तार भेजा है। मैंने तो अपने ही विचार से तुम्हें बुलाने का प्रबन्ध किया था। पीछे नरेन्द्र से पता चला कि वह भी सीता की ओर से तार दे आया है। हाँ, "मेरे तार भेजने में कारण यह है कि तुम सीता को यहाँ से ले जाओ।"

"क्यों, उसने कोई खराबी की है ?"

"वह परिवार में रहना नहीं जानती। यहाँ के बच्चे सज्ञान हो रहे हैं। उनके मन पर इसके रहने से अच्छे संस्कार नहीं पड़ रहे।"

"परन्तु कुछ बताइये भी तो कि वह क्या कर रही है, जो तहज़ीब से बईद है।"

"नहीं सुरेन्द्र। हम नहीं बताएँगे। यह सास-ससुर का काम नहीं कि पुत्र और पुत्र-वधू के व्यवहार में मीन-मेख निकालें। तुम संसद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य हो, भारत के भाग्य के विधाता ; भला तुम्हें हम क्या सीख देंगे । हम तो अपने मन की ही बात बता सकते हैं । सीता यहाँ नहीं रह सकती ।"

"अच्छी बात है। मैं दो-तीन महीने के लिए रूस और कुछ अन्य देशों को देखने जा रहा हूँ । पार्लियामेंट के अन्य सदस्य भी साथ हैं। मैं सीता को साथ नहीं ले जा सकता । इसलिए उसे मैं किसी पहाड़ पर भेज रहा हूँ, वहाँ नरेन्द्र उसके साथ रहेगा बताइये ठीक है ।"

"हाँ, नरेन्द्र की भी एक समस्या है । वह कह रहा है कि हमारी शेष भूमि भी हमसे छिन जायेगी । तुम लोग कोई कानून बनाने वाले हो क्या जिससे कोई भी व्यक्ति तीस एकड़ से अधिक भूमि जोत-बो नहीं सकेगा ? इस अवस्था में हम इतने निर्धन हो जाएँगे कि उसे दो सौ रुपया महीना खर्चा नहीं दे सकेंगे । यदि तुम्हारे पास उसको खर्चा देने की हिम्मत हो तो उसे ले जाओ । मैं तो उससे कहने वाला हूँ कि वह अपना खर्चा कम करे अन्यथा उसकी पढ़ाई में कठिनाई उपस्थित होगी ।"

"पिताजी, यह तो क़िब्ल अज़-मर्ज़-वा-वेला है । अभी तो पंडित-जी कुछ ऐसी बातें मात्र करते रहते हैं । सम्भवत: आगामी कांग्रेस के अधिवेशन में यह निश्चय हो कि देश में समाजवाद लाना चाहिए। उसके पश्चात् संसद पास करेगी कि समाजवाद लाया जाये । तदनन्तर प्रान्तों की सरकारें इस पर विचार करेंगी और तब भूमि पर इस प्रकार की कोई उच्च सीमा बाँधी जायेगी । इसमें सहज ही तीन वर्ष लग जाएँगे । तब तक तो नरेन्द्र पढ़ाई समाप्त कर लेगा । इस पर भी मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि जब तक मेरे पास एक भी पैसा है, नरेन्द्र की पढ़ाई में विघ्न नहीं पड़ेगा ।"

"तो ठीक है । नरेन्द्र कदाचित तुम्हारे साथ नहीं जायेगा । वह कह रहा था कि उसकी पढ़ाई में सीता के कारण विघ्न पड़ रहा है। वह यहाँ ही रहेगा ।"

"यदि वह जाना चाहे तो उसको जाने दीजियेगा न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवानीप्रसाद को रुक्मिणी ने पिछले दिन की नरेन्द्र से हुई बातचीत बताई थी और उसे विश्वास था कि नरेन्द्र नहीं जाएगा। इस कारण उसने कह दिया, "नरेन्द्र से पूछ लो, जाना चाहे तो जा सकता है।"

सुरेन्द्र भीतर घर में चला गया। आधे घन्टे के पश्चात् वह बाहर अपने मोटर ड्राइवर को बुलाने आया। तत्पश्चात् नरेन्द्र, सुरेन्द्र, सीता और अपना सामान लाकर मोटर में रखने लगा। फिर सुरेन्द्र, सीता, उनके बच्चे और नरेन्द्र आये और बिना किसी से राम-कृष्ण भी किये मोटर में बैठ चल दिये।

जब वे चले गये तो भवानीप्रसाद ने भूपेन्द्र से कहा, "तुम्हारी माँ तो दूसरी बात कह रही थी। वह तो कहती थी कि नरेन्द्र समझ गया है और अब वह सीता से सम्पर्क नहीं रखेगा।"

भूपेन्द्र ने कह दिया, "किन्तु मुझे तो ऐसी ही आशा थी पिताजी, यह स्त्री-चरित्र की बात तो औरतें ही समझ सकती हैं। राधा ने परसों जब नरेन्द्र को बताया कि सीता यहीं है तो वह कहने लगा कि तब तो मज़ा रहेगा। राधा तो इतने मात्र से ही समझ गई थी कि सीता यहाँ आई ही नरेन्द्र के लिए थी। दोनों में सम्बन्ध तो दिल्ली में ही बन चुका प्रतीत होता है। इस बार सुरेन्द्र सीता को दिल्ली नहीं ले गया था और वह उसकी संगत की भूखी थी। इसलिए यहाँ चली आई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि सुरेन्द्र को सीता के इस व्यवहार का ज्ञान नहीं है, तभी वह पुनः अपनी पत्नी को उसके पास छोड़े जा रहा है।"

"कुछ भी हो, नरेन्द्र का जीवन बरबाद हो रहा है।"

"बरबाद तो हो चुका। हाँ, यदि वह साथ न जाता तो कुछ बचाव की आशा की जा सकती थी।"

"अब क्या होगा ?"

"भापा, भाग्य की बात टाली नहीं जा सकती। परन्तु वर्तमान सरकार जो यह अनर्थ कर रही है इसकी प्रतिक्रिया भी होगी। पंडित भगवतीचरण कल बता रहे थे कि प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू कम्यूनिस्ट हैं। वे अपने विचारों को कभी छिपाते भी नहीं। परन्तु सुरेन्द्र जैसे लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो उनके भरोसे जनता को लूट-लूट कर अपना पेट भर रहे हैं, वे उनकी इन घोषणाओं के उलटे-सीधे मतलब निकाल जनता को धोखे में रखते हैं।"

"तो यह खेतों के लेने की बात कम्यूनिस्टों की है।"

"हाँ, भगवतीचरण जी का तो यही कहना है। वे कहते थे कि कम्यूनिस्ट यह मानते हैं कि पूर्ण सम्पत्ति जो प्रकृति ने मनुष्य को दी है और वह जो मनुष्य के परिश्रम की उपज है, सबकी मालिक समाज है। समाज का अर्थ वे शासन से लेते हैं। शासन में वे कम्यूनिस्ट पार्टी को ही सम्मिलित करते हैं। पंडितजी यह सब कुछ यहाँ एक दम तो कर नहीं सकते। इसलिए धीरे-धीरे ही करना चाहते हैं।"

"परन्तु सुना है कि पंडितजी तो समाजवाद ला रहे हैं।"

भगवतीचरण जी का कहना है कि दोनों में अन्तर नहीं है। अन्तिम उद्देश्य दोनों के समान हैं। भेद केवल गति और ढंग में है। जहाँ कम्यूनिस्ट एकदम तोड़-फोड़ कर बलपूर्वक अपनी योजना चलाना चाहते हैं, वहाँ समाजवादी धीरे-धीरे जनता को छल-कपट और चतुराई से राज़ी कर वही कुछ करना चाहते हैं।

"भगवतीचरण तो यह भी कह रहे थे कि पंडितजी हिन्दी की निन्दा भी इसी विचार से करते हैं कि कम्यूनिस्टों का पूर्ण साहित्य अंग्रेज़ी में है। हिन्दी में तो संस्कृत का सामीप्य होने से भारतीय पद्धति का व्यापक साहित्य उपस्थित है। भारतीय पद्धति के सम्मुख कम्यूनिज़्म अथवा समाजवाद टिक नहीं सकते।"

"भगवतीचरण भी तो कुछ उल्टी खोपड़ी का व्यक्ति है। उसकी कोई सुनता तो है नहीं, इस पर भी वह सरकार की निन्दा करता ही रहता है।"

"भापा, धर्म की बात आज कौन सुनता है। परन्तु इसका अर्थ तो यह नहीं हो जाता कि धर्म नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। धर्म-कर्म की बात करने वाले को उल्टी खोपड़ी का तो नहीं कहा जा सकता।"

भवानीप्रसाद अपनी युक्ति में शिथिलता को समझ गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अतः बात बदल कर बोला, "नरेन्द्र के जाने से तुम्हारी माँ को तो बहुत दुःख हुआ होगा।"

माँ का विचार आते ही पिता-पुत्र दोनों चौपाल से उठ भीतर घर में जा पहुँचे। रुक्मिणी अपने कमरे में चादर ओढ़े खाट पर लेटी हुई थी। वह इनके आने की आहट सुन मुख से कपड़ा हटा देखने लगी कि कौन है। उसकी आँखें और कपोल आँसुओं से भीगे हुए थे, वह उठकर बैठ गई और पूछने लगी, "तो नरेन्द्र को आपने रोका नहीं?"

"नहीं!" उत्तर भवानीप्रसाद ने दिया। रोकने से झगड़ा हो जाता। तिनका सर्वथा तोड़ देने के स्थान पर उसे जाने देना ही हमने उचित समझा।"

इस उत्तर को सुन वह पुनः लेट गई और मुख पर चादर ओढ़ चुप-चाप रोने लगी। इस पर भूपेन्द्र ने कहा, "माँ, नरेन्द्र के जाने का बहुत दुःख है तो मैं अभी जाकर उनकी मिन्नत-खुशामद कर उसे वापस ले आता हूँ, वे अभी ग्वालियर ही गये होंगे।"

यह सुन रुक्मिणी विह्वल हो रोने लगी। तभी राधा भी वहाँ आ गई। उसने कहा, "माँजी! हमने उन्हें यहाँ से जाने के लिए नहीं कहा था। हम तो अपने जाने की बात कह रहे थे। वे तो बहाना ढूँढ रहे थे, जाने का।"

अब भवानीप्रसाद ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "देखो भली औरत, तुम नित्य गीता का पाठ करती हुई भी उसके उपदेश को ग्रहण नहीं कर रहीं। भगवान ने तो कहा है, जिनके विषय में शोक नहीं करना चाहिए; उनके विषय में शोक करने लगी हो। ज्ञानी मनुष्य तो जो चले गये हैं अथवा जो नहीं गये, दोनों का ही शोक नहीं करते।

"साथ ही यह भी कहा है कि जो पुरुष सब कामनाओं का त्याग कर, ममता-रहित होकर, अहंकार छोड़कर, निस्पृह होकर, इस संसार में रहता है; वह ही शान्ति को प्राप्त करता है।"

"छोड़ो उनकी बात, जो गये सो गये, जो नहीं गये न जाएँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने कौन पाप किया है ? तुम किस कारण रोती हो ? अपने नित्य कर्म को छोड़ बैठोगी तो जीवन कैसे चलेगा।"

"देखो, भोला की बहू के लड़का हुआ है, ज़रा जाकर उसका समाचार ले आओ कि ठीक-ठाक तो है न ? उनको किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो वह पहुँचा दो।"

रुक्मिणी को अब वस्तुस्थिति का ज्ञान हो रहा था। उसे यह लग रहा था कि सब दोष सीता का ही है। उसने ही दोनों भाइयों को मूर्ख बना रखा है और उनको उंगलियों पर नचा रही है।

वह इसमें अपना दोष भी मानती थी। उसने एक अपरिचित परिवार की लड़की से पुत्र का विवाह कराने में सहयोग दिया था। यदि उस समय वह सुरेन्द्र को ज़रा डाँट देती और समझा देती कि जिस कुल के आचार-व्यवहार का ज्ञान न हो, उससे सम्बन्ध बनाना ठीक नहीं तो यह विवाह न होता। न ही लड़का घर से बाहर जाता और न ही यह विकट समस्या उत्पन्न होती।

वह आँखें पोंछ कर उठी बैठी और स्नानागार में जा मुख धो अपने काम-धन्धे में चित्त लगाने का यत्न करने लगी।

: ७ :

सुरेन्द्र तो संसदीय आयोग के साथ रूस को चल दिया और सीता लक्ष्मण तथा अर्जुन को लेकर नरेन्द्र की संरक्षता में नैनीताल चली गयी। नरेन्द्र कालेज खुलने तक सीता के साथ नैनीताल में रहा। जब जुलाई में कालेज खुलने का समय हुआ तो सीता ग्वालियर चली गयी और नरेन्द्र अपने होस्टल में नयी दिल्ली चला गया।

सुरेन्द्र अगस्त मास में योरुप के भ्रमण से लौटा। आयोग के अन्य सदस्य तो मास्को, लेनिनग्राड, बर्लिन, पेरिस और लन्दन तथा रोम देख वापस भारत लौट आये थे, किन्तु सुरेन्द्र रोम से काहिरा और वहाँ से पूर्वी अफ्रीका के नेरोबी इत्यादि स्थानों को देखने के लिए चला गया। वह आयोग के अन्य सदस्यों से पन्द्रह दिन पीछे दिल्ली पहुँचा। उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक [illegible] हो चुका था। उसका विचार था कि एक दो दिन संसद के अधिवेशन में उपस्थित होकर, पीछे सीता से मिलने ग्वालियर जाय। उसने अपने दिल्ली पहुँचने की तिथि और समय भी सीता को लिखे नहीं थे। वह सीधा फ़ीरोज़शाह रोड पर स्थित अपने बँगले जा पहुँचा। उसे यह देख विस्मय हुआ कि बँगले का द्वार खुला है और सीता उसमें विराजमान है।

बच्चे पिता को देख उससे चिपट गये। सीता ने हाथ जोड़ पति का अभिवादन किया और कहा, "आपने आने के विषय में लिखा होता तो मोटर ले, आपके स्वागत के लिये एरोड्रोम पर पहुँच जाती।"

"तो क्या हो जाता?" मुस्कराते हुए सुरेन्द्र ने पूछ लिया।

"एक घंटा पूर्व आपके दर्शन हो जाते यह कम बात थी क्या?"

"परन्तु मुझे तो यह भी पता नहीं था कि तुम दिल्ली में हो या ग्वालियर में अथवा अब भी नैनीताल में हो।"

"तो मेरा ग्वालियर से आपको कोई पत्र नहीं मिला?"

"नहीं। रोम में यह समाचार तो मिला था कि नरेन्द्र कालेज खुलने के कारण दिल्ली जा रहा है। उसके पीछे कोई पत्र नहीं मिला। वहाँ से मैं काहिरा, नैरोबी आदि स्थानों से होता हुआ आ रहा हूँ।"

सीता के दिल्ली आने से सुरेन्द्र प्रसन्न नहीं था। इस पर भी उसने अपनी नाराज़गी प्रकट नहीं की। सीता पति की संगत के लिये ही दिल्ली चली आयी थी। उसे भय था कि वह पति से पूछ कर दिल्ली आना चाहेगी तो उनकी स्वीकृति नहीं मिलेगी। इस कारण वह उनके पहुँचने से पहिले ही बँगला खुलवाकर वहाँ आ बैठी थी। उसे दिल्ली में आये बीस दिन हो चुके थे।

सीता को सन्देह था कि उसके पति का सम्बन्ध किसी अन्य औरत से हो गया है और इसी कारण वह उसे अपने से पृथक रखने का यत्न कर रहा है। अतएव सीता ने यही उचित समझा कि वह कुछ हठकर अपना अधिकार प्राप्त करने का यत्न करे।

जब वह दिल्ली आयी तो नरेन्द्र दूसरे-तीसरे दिन उससे मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता रहता था और छुट्टी के दिन उसे और बच्चों को लेकर घुमाने अथवा कनाट प्लेस में आवश्यक वस्तुएँ खरीदने भी ले जाया करता था।

सुरेन्द्र आया तो सीता की इच्छा पूर्ण नहीं हुई। आखिर एक दिन उसकी सुरेन्द्र से स्पष्ट रूप में बात हो ही गयी। एक रात उसने पति से कहा, "विदेश भ्रमण से लौटे आपको पन्द्रह दिन हो चुके हैं, परन्तु आपने अभी तक अपनी पत्नी के दर्शन नहीं किये इसमें कोई कारण है क्या ?"

"दर्शन तो नित्य करता हूँ, अब भी कर रहा हूँ, बताओ और क्या चाहती हो ?"

"मैं आपकी पत्नी हूँ और पत्नी पति से इससे कुछ तो अधिक चाहती ही है। मैं आज अपने मन का संशय निवारण करने का निर्णय कर चुकी हूँ।"

"क्या संशय है तुम्हें ?"

"यही कि आपने किसी अन्य स्त्री को अपनी पत्नी बना रखा है और आप मेरे अधिकार की वस्तु उसे दे रहे हैं।"

"यदि यह सत्य हुआ तो क्या करोगी ?"

"कर क्या सकती हूँ ! अपने भाग्य को कोसा करूँगी।"

"तो नरेन्द्र से काम नहीं चल रहा !"

"क्या मतलब !"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे लिये नरेन्द्र मेरा स्थानापन्न बन चुका है। मुझे इस बात का रोष नहीं। मैं तुम्हारा खर्चा वैसे ही देता रहा हूँ और देता रहूँगा, जैसे एक पति पत्नी को देता है। नरेन्द्र का भी खर्चा जब तक वह स्वयं निर्वाह योग्य पैदा नहीं कर सकता, तुम दे सकोगी। बताओ और क्या चाहती हो ;"

"मगर यह आपको किसने कहा है कि नरेन्द्र से मेरा कुछ ऐसा सम्बन्ध है ! वह तो मुझे अपनी माँ तुल्य मानता है।"

"मुझे विश्वास नहीं आता। नरेन्द्र जिस समाज का प्राणी है उसमें माँ, बहिन, मित्र, और पत्नी में कुछ अन्तर नहीं माना जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ तो मानवों में दो वर्ग ही माने जाते हैं। एक स्त्री, दूसरे पुरुष। उन्होंने मानवों का वर्गीकरण एक दूसरे ढंग से भी किया है। शोषक और शोषित। इन वर्गों के अतिरिक्त अन्य कोई वर्ग उनकी समझ में आता ही नहीं।"

"मुझे उसके समाज और समाज के विचारों का ज्ञान नहीं। मैं उसे अपना छोटा भाई मानती हूँ और वह मुझे भाभी के नाते माँ-तुल्य ही समझता है। मुझे पति से त्यक्त हुए दो वर्ष से ऊपर हो चुके हैं पहले तो आप कहते रहे कि प्रसव के पश्चात् मैं दुर्बल हो गई हूँ, फिर कहने लगे कि आप और अधिक सन्तान नहीं चाहते और अब आप ये निराधार लांछन लगा रहे हैं।"

"देखो सीता, ईश्वर की कृपा है कि मैं कांग्रेस का एक माननीय सदस्य हूँ। इसी कारण मैं संसद सदस्य बन सका हूँ और इसी कारण मुझे पचीस बसें चलाने की स्वीकृति मिली है। और तुम जानती हो कि उनसे मुझे पचास-साठ हज़ार रुपया मासिक की आय हो रही है। मैंने यह कार्य पचास हज़ार रुपया ऋण लेकर आरम्भ किया था और अब इस व्यवसाय में मेरी पूँजी चालीस लाख हो गयी है। अब मैंने एक नया काम प्रारम्भ किया है। दिल्ली के समीप किसानों से पाँच सौ और एक हज़ार रुपये प्रति एकड़ में भूमि लेकर वहाँ मकान बनाकर बेच रहा हूँ और उससे आशातीत लाभ प्राप्त कर रहा हूँ।"

"इतना कुछ प्राप्त कर यदि मैंने एक अन्य प्रेमिका रख ली है तो मैं समझता हूँ कि मैंने किसी प्रकार का पाप नहीं किया। तुम्हारा पति अपना कर्तव्य पालन कर चुका है, उसने दो सन्तान तुम्हें दे दी हैं, दोनों ही लड़के हैं। बताओ और क्या चाहती हो!"

"मैं अपने भाग का पति चाहती हूँ।"

"नई-दिल्ली में बहुत घूमते हैं। यत्न करो, कोई मिल जायेगा। मुझे अपनी प्रेमिका अधिक पसन्द है।"

सीता इतनी स्पष्ट बात सुन भौंचक्की रह गयी। वैसे अब सुरेन्द्र कभी-कभी रात को भी अनुपस्थित रहने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके कुछ दिन पश्चात् संसद का ग्रीष्म सत्र समाप्त हुआ और सुरेन्द्र ने सीता को अपना कार्यक्रम बताया । "मैं कारोबार देखने ग्वालियर जा रहा हूँ ।" वह बोला ।

"वहाँ कितने दिन रहने का विचार है ?"

"अधिक-से-अधिक एक सप्ताह ।"

"फिर ?"

"मैं उस दूसरी को लेकर कश्मीर जाऊँगा ।"

"मुझे भी साथ ले चलेंगे ?"

"ग्वालियर तक चल सकती हो । पीछे तुम वहाँ रह सकती हो ।"

"तो कश्मीर साथ नहीं ले जाएँगे !"

"नहीं । कौशल्या मानती नहीं ।"

"वह कौशल्या कौन है ?"

"बताया तो है मेरी प्रिय द्वितीय पत्नी है ।"

"यदि मैं आपके साथ कश्मीर नहीं जा सकती तो फिर ग्वालियर जाने में भी क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ।"

"तो मत जाओ, यहीं रहो । मैंने तुम्हारे नाम बैंक में दस हज़ार रुपया जमा करा दिया है । मैं समझता हूँ कि मेरे कश्मीर से लौटने तक के लिए बहुत है, बताओ ठीक है ?"

सीता चुप रही । सुरेन्द्र ग्वालियर के लिए रवाना हो गया ।

इसके कई दिन पीछे नरेन्द्र यह पता करने आया कि भैया-भाभी कहीं चले गये हैं अथवा नई दिल्ली में ही टिके हैं । वह सीता को बँगले में अकेली टिके देख चकित रह गया ।

"सुनाओ नरेन्द्र ! आजकल तुम्हारा आना-जाना कम हो गया है ।"

"हाँ भाभी, भैया के आ जाने पर मैंने समझा कि अब भाभी को देवर से शतरंज खेलने का अवसर नहीं रहेगा, इस कारण जल्दी-जल्दी आने की आवश्यकता नहीं समझी, परन्तु भैया कहाँ हैं ?"

"वे ग्वालियर गये हैं और वहाँ से उनका कश्मीर जाने का कार्यक्रम है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो भाभी, तुम भी कश्मीर जा रही हो ?"

"नहीं। उनके साथ दूसरी जा रही है।"

"दूसरी ? क्या मतलब ?"

इस पर सीता ने कौशल्या की बात बता दी। नरेन्द्र भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। सीता ने सुरेन्द्र के साथ हुआ पूर्ण वार्तालाप उसे सुनाकर कहा, "नरेन्द्र यह जीवन अब नीरस हो गया है, जीने को चित्त नहीं करता, ये दो बच्चे पीछे पड़े हैं; अन्यथा गले में रस्सी डाल उस पंखे से कब की लटक चुकी होती।"

"भाभी, इतना निराश होने की बात नहीं। एक बात बताओ, भैया खर्चा इत्यादि भी दे रहे हैं अथवा नहीं ?"

"अभी तक तो दे रहे हैं। वे प्रति मास मेरे बैंक के खाते में कुछ-न-कुछ जमा करा देते हैं। इस बार भी दस हज़ार जमा करा गये हैं। मैं कल ही अपनी बैंक की पासबुक ठीक करवा कर लायी हूँ। उसमें इस समय भी चालीस हज़ार रुपया जमा है। रुपये का अभाव उन्होंने नहीं होने दिया, परन्तु जीवन में रुपया ही तो सब-कुछ नहीं है।"

"परन्तु भाभी, पति-पत्नी के सम्बन्ध के अतिरिक्त भी तो दुनिया में बहुत कुछ है। ज़रा घर से बाहर दृष्टि दौड़ाओगी तो देखोगी कि दुनिया बहुत ही विशाल है, इसमें अगणित प्रकार के प्राणी रहते हैं। हमारे चारों ओर नित्य अनेकों रसमयी बातें हो रही हैं और हम आँखें मूँदे उनमें रहते हुए अपने को उस रस से वंचित कर रहे हैं। असीम ऐसे कार्य हैं जिनमें लगकर यह जीवन पलक झपकते ही निकल जायगा।"

सीता को सुरेन्द्र के कथन का स्मरण हो आया। सुरेन्द्र ने बताया था कि नरेन्द्र की अपनी एक समाज है और उस समाज में मानवों के दो ही वर्ग माने जाते हैं—स्त्री और पुरुष। इस पर उसने उसकी आँखों में देखते हुए पूछ लिया, "कौन कार्य है जिसमें जीवन की कटुता अनुभव किये बिना रहा जा सकता है ?"

नरेन्द्र ने आँखें मूंद कर कुछ देर विचार किया और कहा, "यदि चाहो तो मैं तुम्हारा परिचय एक स्त्री से करा सकता हूँ। वह तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीवनादर्श के विषय में कुछ बता सकोगी । कल इसी समय चल सको तो मैं आकर तुम्हें ले चलूँ ।"

"कहाँ चलना होगा ।"

"दरियागंज तक ।"

"कौन है वहाँ ।"

"यह भी कल गाड़ी में चलते हुए बताऊँगा । आज मुझे कुछ काम है, बताओ टैक्सी में चलोगी अथवा अपनी गाड़ी यहाँ है ।"

"बताओ किस समय आओगे ?"

"मैं साढ़े तीन बजे पहुँच जाऊँगा ।"

इस प्रकार नरेन्द्र ने अपनी समाज का द्वार सीता के सामने खोलने का विचार कर लिया । सीता उत्सुकता से इस नयी औरत के विषय में जानने के लिए प्रतीक्षा करने लगी ।

अगले दिन नरेन्द्र आया और सीता तथा उसके बच्चों को लेकर दरियागंज के एक बड़े से मकान पर जा पहुँचा । बच्चों को बाहर मोटर में ही छोड़ वे दोनों भीतर मकान के ड्राइंग-रूम में एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री के सामने जा खड़े हुए । उसने नरेन्द्र को एक स्त्री के साथ आया देखा तो उठ कर इनका स्वागत किया । नरेन्द्र ने भाभी का परिचय कराया, "रम्भाजी, ये हैं सीता रानी, मिसेज़ सुरेन्द्र एम० पी० । ये मेरी भाभी हैं । मैंने एक दिन आपके विषय में बताया तो ये आपके दर्शन की अभिलाषा करने लगीं, सो आज इन्हें ले आया हूँ ।"

"आओ सीताजी बैठो ।" वह सीता को दोनों बाँहों से पकड़कर एक सोफ़ा पर ले गई । वहाँ बैठाकर कहने लगी, "आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई । परन्तु आप तो अभी बहुतही कम आयु की प्रतीत होती हैं ?"

"जी ? मैं इक्कीसवें वर्ष में जा रही हूँ ।"

"और विवाह को कितने वर्ष हो चुके हैं ?"

"सात वर्ष समाप्त होने वाले हैं । ईश्वर की कृपा से दो बच्चे भी हो गये हैं···।"

रम्भा खिलखिलाकर हँस पड़ी, सीता कहते-कहते रुक गयी । वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न-भरी दृष्टि से रम्भा की ओर देखने लगी तो रम्भा ने कह दिया, "तब ता सीता रानी तुम मुझसे भी आगे निकल गई हो पर तुम इसे ईश्वर की कृपा मानती हो ? क्या उनके होने, पर किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ ?"

"लक्ष्मण के उत्पन्न होते समय तो कुछ थोड़ा-सा कष्ट हुआ था परन्तु अर्जुन के समय तो पता भी नहीं चला।"

"बहुत भाग्यवान हो सीता, परन्तु नौ मास बोझ तो ढोना ही पड़ा होगा।"

सीता इस विषय में अपना अनुभव बताने ही लगी थी कि नरेन्द्र ने पूछ लिया, "आज शीरीं कहीं गई है क्या ?"

"नहीं अभी आ रही है।" रम्भा ने सोफ़ा के साथ लगी घंटी का बटन दबाया।

दूर घंटी बजने की आवाज सुनायी दी और कुछ ही क्षण पश्चात् एक लड़की पिछले कमरे से आ गई। रम्भा ने पूछ लिया, "कितना काम हो गया है ?"

"दस पृष्ठ टाइप हो चुके हैं, आधा और है।"

"देखो यह कौन बैठा है। ये सीताजी हैं, नरेन्द्र की भाभी, एक एम० पी० की पत्नी हैं। जरा रहमान से कह दो कि चाय बना लाये।"

उस लड़की ने नरेन्द्र की ओर मुस्कराकर देखा और सिर हिलाकर संकेत कर कहा कि आ जाइये। नरेन्द्र उस लड़की के पीछे-पीछे पिछले कमरे में चला गया।

रम्भा ने कहा, "देखिए सीताजी, जीवन में यदि कुछ बोझिलपन है तो यह बच्चे पैदा करने का झगड़ा ही है। पहले नौ मास तक उन्हें पेट में उठाये फिरो, फिर जन्म दो, बहुत कम औरतें हैं जो बच्चा पैदा करते समय चीखती-चिल्लाती नहीं। यदि कोई भगवान है तो उसे इतना भी ज्ञान नहीं कि दस महीने के बच्चे के बाहर आने के लिए कितना बड़ा द्वार चाहिए। तोबा, तोबा। किस प्रकार औरतें इस मुसीबत को सहती हैं। एक बार कष्ट भोगकर भी पुनः उस रास्ते पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चल पड़ी हैं।"

"तो क्या करें ?"

"प्रोफिलैक्टक्स···।"

"परन्तु पति लोग उनको पसन्द नहीं करते।"

"तो भाड़ में जायें पति लोग। उनसे सम्बन्ध-विच्छेद किया जा सकता है।"

"और मन की इच्छाएँ ?"

"इस पर रम्भा फिर हँसी और बोली जिसे ज़रूरत होगी वह हमारी इच्छाओं का आदर करना सीख लेगा, संसार में बहुत पुरुष हैं केवल एक ही नहीं।

सीता समझ गयी कि वह औरत कुछ वैसी ही बातें कह रही है जैसी उसके पति ने नरेन्द्र की समाज के विषय में कही थीं। सीता ने कहा, "परन्तु स्त्री जीवन में स्थिरता चाहती है न ? आपके विषय में भी नरेन्द्र ने बताया था कि आप एक ब्राह्मण कन्या होने पर भी प्रेम-वश एक मुसलमान के साथ चली आयी थीं। प्रेम भी तो जीवन का एक महान् अंग है।"

अब तो रम्भा खूब हँसी। हँसते हुए उसने कहा, "दो बच्चों की माँ भी अविवाहित बच्चियों की-सी बातें करती है। प्रेम—हा—हा—। अच्छा सुनो, बताती हूँ मैं किस बात से प्रेम करती थी और वह बात जीवन में क्या भाग लेती है। मैंने मिस्टर अली को देखा था। उनकी मोटी-मोटी आँखें मुझे पसन्द आई थीं और मैं पागल हो उनके पीछे भाग आयी थी। पहले ही मास में पता चल गया कि पति-पत्नी के सम्बन्ध में आँखें कुछ भी भाग नहीं रखतीं। मुझे अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप होने लगा; आखिर उन बड़ी-बड़ी आँखों से पत्नी का क्या सम्बन्ध हो सकता था ? मैं उनसे ऊब गई।"

"परन्तु नरेन्द्र तो कह रहा था कि आपका दाम्पत्य जीवन बहुत सुख-सुविधा-युक्त व्यतीत हुआ है।"

"हाँ, बाहरी संसार की दृष्टि में। हम दोनों ने जब आपस में सम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झौता किया था कि हम पति-पत्नी बने रहेंगे। वैसे एक-दो मास पश्चात् ही हम दो मित्रों की भाँति एक-दूसरे के जीवन में सहयोग देने वाले बनकर ही रह गये थे। जहाँ तक हमारा पति-पत्नी होने का सम्बन्ध था, संसार हमें ऐसा ही समझता था। परन्तु वे भी जानते थे और मैं भी जानती थी कि हम एक-दूसरे से बँधे हुए नहीं हैं, वे एक भले आदमी थे और मैंने भी उनसे एक भली स्त्री का-सा ही व्यवहार किया है।"

"सुना है कि उनका तो स्वर्गवास हो गया।"

"वह क्या होता है ? उनका अन्त हो गया है, वे अब नहीं हैं।"

"उनकी आत्मा भी ?"

"सब कुछ, शरीर और आत्मा दोनों खत्म हो गये हैं। अब तो उनके शरीर को ज़मीन के कीड़े और मिट्टी खा चुके होंगे और हड्डियाँ भी उनकी गलना आरम्भ हो चुकी होंगी।"

"परन्तु आत्मा तो शरीर के मरने के समय उसे छोड़ जाता है। और वही तो सम्बन्ध बनाने वाला होता है।"

"देखो सीता रानी यह पुराने काल की बातें अब कोई नहीं मानता। मिस्टर अली समाप्त हुए वे अब नहीं हैं, न उनकी आँखें रहीं न उनके शरीर के अन्य अंग।"

इसी समय रहमान, एक वृद्ध खानसामा, ट्रे में चाय, मिठाई, नमकीन इत्यादि लगा कर ले आया। रहमान ने ट्रे तिपाई पर रखी तो रम्भा ने फिर घंटी बजाई। तब फिर वही लड़की शीरीं और नरेन्द्र बाहर आ गये। शीरीं के हाथ में टाइप किये कागज़ों का पुलिन्दा था। उसे देख रम्भा ने कहा, "आओ चाय पी लो।"

"रम्भा जी ? यह भाषण तो बहुत सुन्दर बना है।" शीरीं ने बैठते हुए कहा।

"हाँ ! यह अगले मास औरंगाबाद में होने वाली कान्फ्रन्स में पढ़ा जाना है। मैं उसकी सदारत कर रही हूँ।"

शीरीं बैठ गयी और सबके लिए चाय बनाने लगी। नरेन्द्र भी एक कुर्सी खींचकर उनके समीप बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर लौटते समय नरेन्द्र ने सीता से पूछा, "भाभी? कैसी लगीं मिसेज़ अली!"

वह नयी सृष्टि की जीव हैं, उन्होंने मुझे एक पुस्तक दी है और कल फिर बुलाया है। कहती थीं कि मुझे पहले किसी खास स्थान पर लेकर चलेंगीं और वहाँ से गांधी ग्राउंड में एक सभा में ले चलेंगी।"

"और तुमने कल जाना स्वीकार कर लिया है?"

"हाँ, उनकी बातों में रस तो है। सर्वथा नवीन होने से विलक्षण भी लगी हैं, परन्तु अपना-अपना दृष्टिकोण है। कह रही थीं कि दुनिया वेग से प्रगति कर रही है, इस प्रगतिशील संसार में कुछ भी स्थिर नहीं। जो भी स्थिर रहना चाहेगा वह भागती दुनिया के पाँव तले दब कर मर जायेगा।"

"और भाभी, तुम क्या समझी हो?"

"अभी समझ रही हूँ! वह कह रही थीं कि धन परिश्रम से उत्पन्न होता है। इस कारण धन का स्वामित्व परिश्रम करने वालों का है। जो बिना परिश्रम के धन प्राप्त करते हैं वे शोषक हैं, पापी हैं।"

"भाभी, तुम तो एक घंटे में ही बहुत कुछ सीख गई हो।"

सीता ने बात बदल दी। "यह शीरीं इनकी क्या लगती है?" उसने पूछा।

"इनकी पी० ए० है, स्टैनो टाइपिस्ट का काम करती है और इन्हीं के पास रहती है।"

"विवाहित है क्या?"

नरेन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा, "अभी बीस-इक्कीस वर्ष की ही तो है। इस समाज में इतनी जल्दी शादी नहीं की जाती।"

"नरेन्द्र, सच बताना! तुम इससे विवाह करोगे?"

नरेन्द्र ने गम्भीर होकर कहा, "भाभी यत्न कर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसकी नज़रों से प्रतीत होता है कि वह भी तुमसे विवाह करने की इच्छुक है।"

"भाभी, तुमतो बहुत कुछ जानती हो। भला कैसे जान लिया है यह ?"

"बताया तो है, उसकी दृष्टि से। काफ़ी सुन्दर है, सभ्य और सुशील भी प्रतीत होती है।"

"तो भाभी ने उसे देवरानी बनाने का फैसला कर लिया है ?"

"हाँ, यत्न करो, अच्छी लड़की है।"

"देखो भाभी। मेरी उससे इस विषय में बातचीत हुई है। वह मान भी गई है। परन्तु मैं विवाह करूँगा कहीं नौकरी पा जाने के उपरान्त ही।"

"कब तक नौकरी पाने की आशा करते हो ?"

"सन् '५७ में परीक्षा होगी और तब तक भैया संसद सदस्य रहे तो किसी अच्छे काम पर लगने की आशा है।"

"देखें ! तब तक तो नये निर्वाचन हो जाएँगे।"

"भैया कांग्रेस के सदस्य हैं। यदि उन्हें कांग्रेस का टिकट मिल गया तो वे निःसंदेह निर्वाचित हो जाएँगे। अभी कांग्रेस का प्रभाव प्रबल है।"

"टिकट मिलने की ही बात है ?"

"भाभी ?" एकाएक नरेन्द्र ने प्रफुल्लित मन से कहा, "तुम भी संसद की सदस्या बनने का यत्न क्यों नहीं करती ?"

"और मुझे टिकट मिल जायेगा ?"

"कांग्रेस का तो बहुत कठिन है। हाँ, यदि कहो तो एक दूसरे दल के टिकट का यत्न करूँ।"

"कौन से का ?"

"कम्यूनिस्ट पार्टी का।"

"यह खूब कही, कम्यूनिस्ट टिकट पर चुनाव लड़ूँ और फिर हार कर घर बैठ रहूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं भाभी, यह तो आवश्यक नहीं। यदि टिकट मिल जाये और क्षेत्र भी अच्छा-सा मिले तो शेष धन और जन की बात है। जन भी तो धन के अधीन हैं।"

"ठीक है, यदि टिकट मिल जाये। यदि क्षेत्र अच्छा मिले और फिर यदि धन हो और फिर जन हो। अर्थात् चार बातें, यदि पूरी हो जाएँ तो फिर निश्चय ही निर्वाचन में सफल हो जाऊँगी।"

"और यदि सेक्रेटरी अच्छा मिल गया तो उच्च कोटि की नेता बन जाओगी।"

"यह एक और यदि लगा दी? खैर, सेक्रेटरी तो शीरीं हो जायेगी लेकिन तभी, जब तुम उससे विवाह कर पाओगे। नहीं नरेन्द्र, यह यदि-यदि की दीवारें, मुझसे नहीं फाँदी जाएँगी।"

"किन्तु भाभी यत्न तो करो?"

इस चर्चा ने सीता के मन में गुदगुदी उत्पन्न कर दी। वह रात-भर बैठी मिसेज़ अली से दी गई पुस्तक पढ़ती रही। पुस्तक सरल भाषा में थी और विषय बुद्धिगम्य था।

अगले दिन दोपहर बाद तीन बजे वह अकेली ही मिसेज़ अली के घर जा पहुँची। और वहाँ उसने जब उसे सात-आठ युवक-युवतियों में बैठे बातें करते देखा तो कुछ झिझक अनुभव कर बैठक के द्वार पर ही खड़ी हो गयी। मिसेज़ अली ने उसे देखा तो आवाज़ दे भीतर बुला लिया। "आइये, आइये सीताजी। ये सब साथी हैं।"

सीता भीतर गयी तो एक युवक ने उसे अपने समीप बैठने को स्थान दे दिया। मिसेज़ अली कह रही थीं। "मैं समाजवादी दल में चली गयी हूँ, परन्तु आप सब जानते हैं कि मैं क्या हूँ। हमें कांग्रेस और साम्यवादी दल में एक पुल तैयार करना है।

"यह साम्यवादी दल उस पुल का काम करेगा। इस पुल के सुदृढ़ बन जाने पर पर डरपोक कांग्रेसियों के लिए साम्यवादी दल में आने के लिए एक सुरक्षित मार्ग बन जायेगा।"

इस पर एक युवक ने पूछ लिया, "इसमें तो सदियाँ लग जाएँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैं तो क्रांति के पक्ष में हूँ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो वीरेन्द्र, क्रांति यहाँ भारत में सम्भव नहीं। इस देश में समाज सदियों से एक ही स्थान पर खड़ी सड़ रही है, उसमें से बदबू उठ रही है। ऐसी समाज में जीवन आये बिना क्रान्ति सम्भव नहीं। और जीवन कैसे आयेगा, यही मैं बता रही हूँ, जीवन आयेगा विचार के प्रसार से और विचार-प्रसार इन समाजवादियों के द्वारा होगा। समाजवादी सब व्यवसायों और उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का प्रचार करेंगे। एक बार जनता ने राष्ट्रीयकरण की पद्धति को स्वीकार किया तो फिर समाजवाद से साम्यवाद एक ही पग रह जायेगा। उस पग को क्रान्ति से उठाना होगा, उससे पूर्व तो क्रान्ति असम्भव है।"

सीता जो उक्त प्रश्न करने वाले के समीप ही बैठी थी पूछने लगी, "परन्तु रूस में तो तानाशाह ज़ार के राज्य से सीधे क्रान्ति द्वारा साम्यवाद आया है।"

मिसेज़ अली मुस्कराईं और बोलीं, "ठीक है मगर भारत में कोई तानाशाही ज़ार रहा नहीं। वहाँ तो पंडित जवाहरलालजी हैं और वे पहले ही समाजवादी विचारधार के अनुयायी हैं। इसलिए यहाँ क्रांति ज़ार जैसे तानाशाह से आरम्भ नहीं होगी, अपितु यहाँ तो वह आरम्भ हो सकेगी पंडित जवाहरलाल सोशलिस्ट से।

"इसीलिए मैं कह रही हूँ कि पहले पंडितजी के दृष्टिकोण को पुष्ट करो। जब वे भारत में समाजवाद ले आएँगे तब हम क्रान्ति कर सकेंगे। तब तक पंडितजी के हाथ मजबूत करने चाहिए।"

"युक्ति से मिसेज़ अली की बात का उत्तर नहीं दिया जा सकता था। इस प्रकार एक अन्य युवक ने बात बदल दी। उसने पूछा, "हम पंडितजी के हाथ कैसे मजबूत कर सकते हैं?"

"उनको राष्ट्रीयकरण पर आरूढ़ रखने के लिये और राष्ट्रीयकरण के उचित परिणामों तक पहुँचने में सहायता देने से।"

"तो हम सब कांग्रेस में घुस जाएँ?"

"यही किया जा रहा है। आप प्रच्छन्न रूप से साम्यवादी रहें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रत्यक्षरूप में समाजवादी कांग्रेसी बन जाएँ।"

सरकारने राष्ट्रीयकरण का श्रीगणेश बीमा कम्पनियों को हस्तगत कर, कर दिया है। अब पंडितजी कांग्रेस में यह स्वीकार कर रहे हैं कि कांग्रेस का उद्देश्य देश में समाजवाद लाना है। तदनन्तर नये निर्वाचन होंगे। उनमें योजनाओं की सफलता के लिये कांग्रेस मत माँगेगी। योजनाओं में निजी क्षेत्र भी रहेगा और सरकारी क्षेत्र भी। इसमें जनता को धोखा देने का बहुत बड़ा अवसर बना रहेगा। अत: जिस किसी प्रकार से भी हो कांग्रेस के टिकटों पर निर्वाचन लड़िये और सफलता प्राप्त करने का यत्न करिये। यदि समाजवाद के आवरण में अभी हम यह स्वीकार करवा सकें कि सरकार की नीति राष्ट्रीयकरण की है तो बाद में हल्ला बोल कर भी हम साम्यवाद ला सकेंगे। उस समय हमारा उद्देश्य हो जायेगा संसद तोड़ कर एक दल का राज्य स्थापित करना और वह दल साम्यवादी होगा।"

जब वार्तालाप समाप्त हुआ तो मिसेज़ अली सीता को साथ ले उसी की गाड़ी में आसफअली रोड पर स्थित कम्यूनिस्ट दल के केन्द्रीय कार्यालय में जा पहुँचीं। वहाँ उसने सीता का परिचय कार्यालय के मुख्य-मुख्य कर्मचारियों से कराया, वहीं चाय पी गयी। वहाँ से उसने पार्टी के सेक्रेटरी को भी साथ लिया और सीता को विंडसर प्लेस के संसद सदस्यों के बंगले पर ले गयी। वहाँ कई लोगों से मिलाकर वह उसे गांधी ग्राउंड में ले गयी। वहाँ मजदूरों की एक सभा थी। मिसेज़ अली उस जलसे की अध्यक्ष थीं। सीता को उसने अपने समीप मंच पर ही एक कुर्सी पर बैठा लिया।

धुआँधार व्याख्यान होते रहे। जब कुछ लोग बोल चुके तो मिसेज़ अली ने सीता से कहा कि वह भी अपने विचार प्रकट करे। सीता ने कहा, "मैं तो जानती नहीं कि क्या कहना चाहिए?"

"यहाँ जानता ही कौन है? हमारे दल की अन्तरंग नीति के सिवाय केन्द्रीय समिति के कुछ सदस्यों के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। यह पब्लिक जलसा है, कुछ मजदूरों के हित की बात कह दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सीता खड़ी हो गयी और उसने रात को पुस्तक में जो विचार पढ़े
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थे वे बहुत ही संक्षेप में कह दिए। उसने कहा, "साथियो, संसार में एक महान कश-मकश चल रही है। संसार के सीमित साधनों को बलशाली धनवान अपने अधिकार में कर उनका भोग कर रहे हैं। जो श्रमिक उन साधनों को कार्य रूप में लाते हैं, उनको तो साधारण वेतन देकर टाल दिया जाता है, हमारा यह दल उन श्रमिकों का है जो पूंजीपति नहीं है। उनको उनकी मेहनत का ठीक फल मिले यही इस दल का प्रयत्न है। अतः सब श्रमिकों को संगठित होकर उस दल की प्रभुसत्ता स्थापित करने का यत्न करना चाहिए।

"एक विशाल संख्या में लोग वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ हैं। उनको धनी पूंजीपति मूर्ख बना रहे हैं, उन्हें धोखा देने वालों को हमें ज़बरदस्ती इस सम्मानित स्थान से हटाकर स्वयं प्रभुसत्ता-सम्पन्न होना चाहिए। इसलिए सब मजदूरों को संगठित होकर अपनी पार्टी के नियंत्रण में कार्य करने वाला बनना चाहिए।"

सीता ने तालियों की गड़गड़ाहट में व्याख्यान समाप्त किया। मिसेज़ अली ने कान में बधाई दी। अध्यक्षीय भाषण के उपरान्त सभा विसर्जित हुई।

सीता के साथ गाड़ी में आते हुए मिसेज़ अली ने कहा, "आज प्रातः नरेन्द्र आया था और कह रहा था कि तुम्हें संसद सदस्य बनने का यत्न करना चाहिए। मैं तुम्हारी परीक्षा लेना चाहती थी कि एकाएक व्याख्यान के लिए कहने पर तुम कैसे बोलती हो। हमारे केन्द्रीय कार्यालय के मन्त्री भी सभा में खड़े तुम्हारा व्याख्यान सुन रहे थे। मैं समझती हूँ कि तुम इस परीक्षा में पास समझी जाओगी।

'यदि तुम्हारी रुचि राजनीतिक क्षेत्र में उतरने की हो तो दो काम करो। एक तो छः मास के लिये किसी "सेल" की सदस्या बन सिद्धान्तों का प्रशिक्षण लो और साथ ही अखिल भारतीय स्तर के नेताओं से सम्पर्क बनाओ। तुम एक सुन्दर युवती हो इसलिए इस दिशा में तुम उन्नति कर सकोगी। दूसरी बात है पचास-साठ हज़ार रुपये की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इसके बिना निर्वाचन नहीं लड़ा जा सकेगा।"

सीता ने केवल यह कहा, "मन को तैयार करने का यत्न करूँगी।"

"उसके लिए मैं कल तुम्हें मिस्टर कुलकर्णी से मिला दूँगी। वह तुम्हें विंडसर प्लेस पर के सेल की सदस्यता प्रदान कर देंगे। इसमें जाते रहने से तुम मन को तैयार कर सकोगी।

: ९ :

"शीरीं!" मिसेज़ अली अपनी स्टेनोग्रफार को समीप बैठा समझा रही थी, "मैं देख रही हूँ कि नरेन्द्र तुम्हारे आगे-पीछे बहुत घूमने लगा है, क्या बात है?"

शीरीं ने आँखें नीचे किये हुए कह दिया, "वह कह रहा है कि वह मुझसे अज़हद मुहब्बत करता है।"

"और तुम?"

शीरीं ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे उसके पुर-मुहब्बत कलाम बुरे मालूम नहीं होते।"

"तो तुम उससे शादी कर लोगी?"

"कह नहीं सकती। उसके पढ़ाई खत्म करने में अभी डेढ़ वर्ष है। तब तक वह शादी नहीं कर सकता।"

"और तब तक तुम किसी और से शादी भी कर सकती हो! यही न?"

"जी नहीं। शादी के लायक तो कोई दिखाई देता नहीं। हाँ, वस्ल के लायक तो कई हैं, क्या करूँ जब वे पीछे पड़ जाते हैं तो इन्कार नहीं कर सकती। बहुत बचती रहती हूँ मगर मजबूर हो जाती हूँ, मैं प्रौफिलैक्टिस का प्रयोग भी करती रहती हूँ। मगर चूड़ीवालान से कमला जो आती है वह हामिला हो गयी है। ये प्रौफिलैक्टिक्स कभी-कभी धोखा भी दे देते हैं। मैं डरती रहती हूँ कि कहीं मेरे साथ भी ऐसा धोखा हो गया तो नरेन्द्र शादी से इन्कार कर देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"नरेन्द्र से भी ताल्लुक पैदा कर रखो, कभी ऐसी बात हो गयी तो
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कह देना कि उससे ही है।"

शीरीं ने विस्मय में मिसेज़ अली का मुख देखते हुए कहा, "वह शादी के बिना वस्ल मंजूर नहीं कर रहा, साथ ही इस किस्म के भले युवक को झूठ बोलकर फँसाने को जी नहीं करता।"

"तो अभी पैसे वालों के इखलाक के उसूल तुम दोनों के दिमाग़ से निकले नहीं। यह शादी की रस्म, यह पतिव्रत धर्म, पत्नीव्रत धर्म, यह झूठ, यह सच्च, यह धोखा, यह इन्साफ़, सब-की-सब बातें पैसे वालों ने निर्धनों को धोखा देने के लिये बना रखी हैं। पंडित, मुल्ला, पादरी सब पैसे वालों के ज़र-खरीद हैं और जिस जीर्ण बात से उनको फायदा हो उसे वे धर्म, ईमान के नाम से मुश्तहर करते रहते हैं।

"देखो शीरीं, दुनिया में सिर्फ एक ही बात है, जो करने लायक है। वह है सरमायदारों के चंगुल से बचना। इसके लिए झूठ, फरेब, धोखा, अन्याय, अत्याचार गर्ज़ कि सब किस्म के, कहे जाने वाले गुनाह भी नेकी ही बन जाते हैं।"

"मगर मौसी, वह तो पूँजीपति नहीं है। उसे धोखा देने से भला कैसे पूंजीपतियों के चंगुल से बचा जा सकता है। देखिये, वह कहता था कि शत्रु से अब दाँव-पेंच किये जा सकते हैं, परन्तु मित्रों से तो हमें रवादारी का व्यवहार रखना चाहिए। जब कभी मैं उससे वस्ल की इल्तजा करती हूँ, तो वह कह देता है कि उसके पास मेरे और मेरे बच्चे की परवरिश के लायक पैसा नहीं है। इसलिए न तो वह शादी करेगा और न ही वस्ल; मैं शरमिन्दा हो चुप कर जाती हूँ।"

यह सुन मिसेज़ अली हैरान रह गई। उसे नरेन्द्र से ऐसी अपेक्षा नहीं थी। अतः उसने शीरीं को समझाते हुए कहा, "बहुत ख़तरनाक आदमी है वह। मेरी राय मानो। उससे मेल-मुलाकात बन्द कर दो। उसके दिमाग में बीवी की और बच्चों की परवरिश करने की ज़िम्मेदारी का भूत घुसा हुआ है। वह तुम्हें धोखा देगा। मैं समझती हूँ कि उसको अभी पार्टी का टिकट नहीं मिलना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"हमारी ज़िन्दगी की फ़िलॉसोफी तो यह है कि कुदरत की एक न
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समझ आनेवाली शरारत से इन्सान बन जाता है। पैदा होने से पहले वह कुछ नहीं था और पैदा होने के बाद वह कुछ नहीं रहेगा। खुदा और रूह एक लफ़्ज़ी जाल है। कुदरत ही सब कुछ है और इसमें "सरवाइवल ऑफ दी फिटेस्ट" (जबरदस्त हो भी सकते हैं) का असूल काम करता है।

"हमको पेट भरने के लिये खुराक चाहिये। सर्दी-गर्मी से बचने के लिये कपड़े और मकान चाहिये और वासना-तृप्ति के लिये साथी चाहिये। हम एक ही किस्म का खाना रोज नहीं खा सकते, एक किस्म की पोशाक नहीं पहनते। न ही हम एक ही मकान में रहते हैं। इसी तरह हमें वासना-तृप्ति के लिये एक ही साथी पसन्द नहीं हो सकता। मुहब्बत भी सरमायेदारों का ख़याली पुलाव है।

"रही शादी की बात। यह भी जब तक चलेगी चले, नहीं चलेगी तो कोई और सावन मिल जायेगा। मेरी नज़र में तो शादी एक ऐसे साथी को पाने के लिये होती है जिसकी मदद से हम सरमायेदारों के जाल से छुटकारा पाने के अपने मकसद में कामयाब हो सकें।

"तुम अभी कमसिन हो। तुम्हारी दिमागी हालत भी एक बच्चे की सी ही है। मैं समझती हूँ कि तुमको खबरदार हो जाना चाहिये। अगर नरेन्द्र तुम्हारे उसूलों को समझ सके तो ठीक, नहीं समझ सकता तो उसके कोई सुरखाब का पर तो लगा नहीं, दुनिया में एक-से-एक लायक और खूबसूरत जवान मौजूद हैं।"

शीरीं आँखें नीचे किये यह उपदेश सुनती रही। वह अपनी मालकिन को नाराज़ करना नहीं चाहती थी। उससे उसे एक सौ रुपया महीना वेतन और रहने को स्थान तथा खाना मिलता था।

शीरीं के माता-पिता सन् १९४७ के बलवों में मारे गये थे। उस समय यह बारह साल की थी। दरियागंज के एक हिन्दू युवक ने इसे बचाया और मिस्टर अली के पास पलने के लिये रख दिया था। उस समय वह सातवीं जमायत में पढ़ती थी। मिसेज़ अली ने उसकी परव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रिश की और आगे पढ़ाया-लिखाया । शॉर्टहैंड, टाइप-राइटिंग सिखाया
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और फिर अपने ही पास नौकर रख लिया । मिसेज़ अली के पास रहते हुए शीरीं कम्यूनिस्ट पार्टी के सम्पर्क में आ गयी और अब वह इस पार्टी की टिकट रखने वाली सदस्या थी ।

नरेन्द्र से पार्टी के काम में ही उसका सम्पर्क बना और दोनों में प्रेम हो गया । इस पर भी पार्टी के वातावरण में शीरीं के लिये कुमारी रहना असम्भव ही था ।

जब नरेन्द्र ने यौन-सम्बन्ध की पवित्रता के विषय में अपने खयाल बताये तो वह प्रभावित हुई थी । परन्तु जब वह दूसरे साथियों की संगत में होती थी तो विवश हो जाती थी ।

इस समय भी मिसेज़ अली की बातों से वह अत्यन्त प्रभावित हुई और नरेन्द्र के साथ आपसी व्यवहार को कृत्रिम ही मानने लगी थी । क्योंकि इस व्यवहार में वह स्वाभाविकता और कुदरतीपन नहीं पाती थी ।

मिसेज़ अली तो सीता के आने पर उसे कुछ और लोगों से मिलाने के लिये गयी । सीता अपनी गाड़ी में आती थी, इस कारण मिसेज़ अली को भाड़े की टैक्सी नहीं करनी पड़ती थी । अत: वह सीता को अपने साथ रख, अपनी बचत करती रहती थी । बाजार से कभी चाय-पानी की आवश्यकता पड़ती तो खर्चा सीता देती थी । उस समय सीता की जेब सदा नोटों से भरी रहती थी । मिसेज़ अली कभी उधार भी माँग लेती थी । जिसके लौटाने की उसे कभी याद नहीं रहती थी और सीता को माँगने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी ।

मिसेज़ अली के साथ रहते हुए सीता को यह अनुभव हो रहा था कि वह संसद की सदस्यता की ओर प्रगति कर रही है । यूँ भी उसने कम्यूनिस्ट फिलॉसोफी का बहुत अच्छी प्रकार अध्ययन कर लिया था और वह सिद्धान्तों के विषय में बड़े-बड़े नेताओं के कान कतरने लगी थी ।

मिसेज़ अली सीता के साथ चली गयी । शीरीं को उसने एक लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का 'डिक्टेशन' दिया था, जिसे उसने अब टाइप कर तैयार रखना था। मिसेज़ अली को वह लेख मद्रास की एक कम्यूनिस्ट मासिक पत्रिका में भेजना था। वहाँ से उसे प्रति लेख का एक सौ रुपया मिला करता था। इसी प्रकार वह अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी लेख भेजती रहती थी और इनकी आय से अथवा कुछ पति से छोड़े धन से उसका निर्वाह होता था। अब सीता के रूप में उसे सोने का अंडा देने वाली मुर्गी मिल गयी थी।

शीरीं अपने नोटबुक को लेकर टाइप राइटर के सामने जा बैठी। उसने मशीन पर कागज चढ़ाया और नोटबुक को सामने रख लेख टाँकना चाहा मगर उसका जी नहीं किया। उसके मन में नरेन्द्र के विषय में विचार आने लगे थे। मिसेज़ अली के कथन का अर्थ वह यह समझी थी कि उसे नरेन्द्र से यौन-सम्बन्ध बनाने का यत्न करना चाहिए। वह सोच रही थी कि जब नरेन्द्र यह नहीं चाहता तो वह स्वयं ऐसा क्यों करे। दूसरे युवक तो उसकी मिन्नत-खुशामद करते थे, वे तो उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार भेंट इत्यादि भी देते रहते थे।

नरेन्द्र ने न तो उसे कभी लालच दिया था और न ही वासना-भिभूत कर उससे यौन-सम्बन्ध बनाने का यत्न किया था। इसके विपरीत वह सदा उसको तब तक धैर्य से प्रतीक्षा करने की प्रेरणा देता रहता था, जब तक कि वह परीक्षा पास न कर ले। वह मन में विचार करने लगी थी कि उसे ऐसे काम में क्यों लगाये, जिसे वह ठीक नहीं समझता।

मिसेज़ अली ने उससे यह भी कहा था कि नरेन्द्र इस फ़ज़ूल की बातों को बहुत महत्व देता है। इसलिए शीरीं उससे मेल-मुलाकात बन्द कर दे। शीरीं इसमें भी कोई औचित्य नहीं समझती थी। वह भला युवक यदि आता है तो आये, उसकी प्रशंसा करता है तो करे, जब वह उस प्रशंसा के बदले में कुछ माँगता ही नहीं तो फिर वह क्यों उसका साथ छोड़ दे।

नरेन्द्र उसकी रुपये-पैसे से भी सहायता करता रहता था। महीने के अन्त में उसके वेतन के रुपये प्रायः समाप्त हो जाया करते थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नरेन्द्र की जेब में उसको देने के लिए सदा रुपये रहते थे। वह उससे मिलने के लिए उसके होस्टल में जाती रहती थी। अब वह वहाँ भी अपने को इतना सुरक्षित पाती थी, मानो अपने सगे भाई के कमरे में हो।

वह सोचती थी कि इस प्रकार के व्यक्ति से लड़ने में क्या लाभ है। एक बात का उसे डर था कि कहीं नरेन्द्र को दूसरों से उसके यौन-सम्बन्ध का पता चल जाये तो वह क्या समझेगा ? इस विषय में उसे दो ही उपाय सूझते थे। एक यह कि वह दूसरों से मेल-मुलाकात बन्द कर दे और दूसरा यह कि उसे बता दे कि इस समाज में रहते हुए वह विवश है।

वह सोचने लगी कि पहले उपाय का परिणाम यह होगा कि वह पार्टी में मूर्ख समझी जायेगी और अपनी स्थिति दुर्बल बना लेगी। दूसरे उपाय का परिणाम वह यह समझती थी कि नरेन्द्र या तो उससे सम्बन्ध तोड़ विवाह के लिए किसी अन्य लड़की को ढूंढेगा अथवा उसे ही पार्टी छोड़ने के लिए कह देगा।

वह स्वयं यह निर्णय नहीं कर पाई थी कि कौन से मार्ग का अवलम्बन करे, आज मिसेज़ अली के उपदेश के पश्चात् वह अपना मार्ग ढूंढने में लगी तो लेख टाइप करना भूल गई और आँखें मूंदे अपने भविष्य के विषय में विचार करती रही।

कितनी ही देर तक टाइप राइटर पर सिर रखे वह विचारों में खोई बैठी रही। अचानक किसी के पाँव की आहट से चौंककर उसने सिर उठाया तो नरेन्द्र को अपने पास खड़ा पाया। वह अन्यमनस्क भाव में उसका मुख देखने लगी।

"क्यों, क्या बात है शीरीं ? आज कुछ परेशान मालूम होती हो ! "

शीरीं के मुख से अनायास ही निकल गया, "हाँ ! बहुत परेशान हूँ।"

'क्या मुझको बता सकोगी ? क्या मैं उस परेशानी में भागीदार बन सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शीरीं ने अब कुछ तो कह देने का निश्चय कर लिया। उसने कहा, "आपके सम्बन्ध की ही तो बात है। बैठिये, आपको बताने के लिए ही तो बेताब हो रही हूँ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन्द्र ने एक कुर्सी उसके पास रख उस पर बैठते हुए पूछा, "तो बताओ। किसी बात का फिर अभाव हो गया है क्या ? मैं···।"

शीरीं ने उसकी बात बीच में ही काट कर कहा, "अभी कल ही तो आपसे बीस रुपये लाई थी। वे सब-के-सब रखे हैं। उसमें से कुछ भी खर्च नहीं हुआ। नहीं, रुपये की बात नहीं है। बात यह है कि मिसेज़ अली यह जान गई हैं कि आप मुझसे मुहब्बत करते हैं। वे आज मुझसे पूछती थीं। मैंने अपने विषय में सब बात बता दी।"

"यह तो तुमने ठीक किया। मगर इसमें परेशानी की बात क्या है ?"

"वे यह कहती थीं कि प्रेम सरमायेदारों का ढकोसला है। हकीकत है स्त्री-मर्द का आपस में लगाव। इस लगाव में वासना-तृप्ति की इच्छा ही कारण है। अगर लगाव में यह बात न हो तो दिमाग परेशान रहता है और फिर किसी दूसरे काम में ध्यान नहीं लगता।"

"तो तुमको मिसेज़ अली का काम करने में अड़चन पड़ने लगी है ?"

"मुझे तो काम में किसी प्रकार की खराबी दिखाई दी नहीं।" शीरीं के मुख से निकलने लगा था कि इसमें कारण उसका समय-समय पर दूसरे युवकों से सम्बन्ध बनाते रहना है। वह यौन-इच्छाओं में तृप्त होती रहती है। परन्तु यह बात उसने कही नहीं। बस, उक्त बात कह वह नरेन्द्र का मुख देखने लगी।

नरेन्द्र ने भी कह दिया, "मुझको भी पढ़ाई में किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न नहीं होती। बल्कि इसके विपरीत यह हो रहा है कि जब मैं यह विचार करता हूँ कि तुम्हें सुखी और सम्पन्न करने के लिए मुझे परीक्षा में प्रथम रहना चाहिये और बहुत अच्छी नौकरी पाने का यत्न करना चाहिए, तो मैं आठ-आठ दस-दस घंटे लगातार काम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन लगा सकता हूँ । तुम्हें पत्नी के रूप में पाकर और फिर तुम्हें यह दिखाकर कि तुम एक बड़े अफसर की पत्नी हो मुझे बहुत खुशी होगी। उस खुशी की आशा में, मैं बहुत मन लगाकर पढ़ाई कर रहा हूँ ।"

"पर मैं समझती हूँ कि हम उस स्वाभाविक काम को भी साथ-साथ क्यों न करें ? यही मिसेज़ अली मुझे समझाती थीं ।" शीरीं ने प्रश्न किया ।

"मिसेज अली नहीं जानतीं । देखो शीरीं, इंतजार के बाद जब फल खाने को मिलता है तो उसका जो लुत्फ आता है वह कच्चा फल तोड़-कर खाने में नहीं आता ।"

शीरीं मन में विचार कर रही थी कि यह युवक नहीं जानता कि वह कच्चा फल नहीं है और न ही अभी तक डाल से लगा हुआ है । वह तो भूमि पर गिरा ठोकरें खा रहा है । वह फिर नरेन्द्र को सब कुछ बताने का यत्न करने जा रही थी कि इसी समय शीरीं की एक सहेली कमला आ गई ।

कमला नरेन्द्र को वहाँ बैठा देख पहले तो झिझकी, परन्तु फिर कुछ विचार कर भीतर आ गई । उसने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "मुझे दुःख है कि मैंने तुम दोनों की बात-चीत में विघ्न डाल दिया । परन्तु आज के बाद मैं कदाचित् तुमसे मिल नहीं सकूँगी । इसलिए तुमसे एक अत्यावश्यक विषय में राय करने चली आई हूँ ।"

"यह सुन नरेन्द्र उठ खड़ा हुआ । उसने कहा, "मैं तुम दोनों सहेलियों के रहस्यों में झाँकने का यत्न करना नहीं चाहता । इसलिए मैं जा रहा हूँ ।"

नरेन्द्र उठकर जाने लगा तो कमला ने कह दिया, "जाने की जल्दी न हो तो आप भी बैठिये और राय दीजिये कि मैं क्या करूँ ?"

नरेन्द्र प्रश्न-भरी दृष्टि में शीरीं की तरफ देखने लगा । इस पर शीरीं ने कह दिया, "आप भी सुन लीजिये । कदाचित् कोई अच्छा सुझाव आप ही दे सकें ।"

नरेन्द्र बैठा तो कमला ने बताया, "मेरी माँ आज मुझे डाक्टराइन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पास लेकर गई थी और उसने कह दिया है कि मेरे दिन चढ़ गये हैं। इस पर माँ ने यह निश्चय किया है कि मेरा विवाह तुरन्त कर दिया जाये। हमारे पड़ोस में एक लड़का है। चाँदनी चौक में दुकान करता है, पैसे वाला है। उससे विवाह की बात पक्की हो गई है। आज रात को विवाह हो जायेगा। उस लड़के को मेरी अवस्था का ज्ञान हो गया है। इस पर भी वह मुझसे शादी करने को तैयार है।

"समस्या यह है कि विवाह के उपरान्त वह मुझे पार्टी छोड़ने के लिए कह रहा है। बताओ क्या करूँ।"

"तो तुमने सब कुछ बता दिया है?"

"जितना आवश्यक था बता दिया है। अपने पार्टी का सदस्य होने की बात बतानी पड़ी।"

"तब तो पार्टी छोड़नी ही पड़ेगी। हम बता नहीं सकते कि हम टिकट होल्डर हैं।"

"टिकट-विकट की बात नहीं बताई। हाँ, यह बताया है कि मैं एक राजनीतिक दल में कार्यकर्त्री हूँ। वहीं एक युवक के सम्पर्क से यह हो गया है। इस पर उसने कहा कि उस दल से सम्बन्ध छोड़ना पड़ेगा। मैंने यह मान तो लिया है, परन्तु मैं चाहती हूँ कि माँ के घर से भाग जाऊँ। परन्तु कहाँ जाऊँ? शीरीं बहिन, तुम मेरे साथ पार्टी के मन्त्री के पास चलो और उससे इस विषय में सहायता दिला दो।"

शीरीं का उत्तर था, 'अगर तुम माँ का घर छोड़ने के लिए तैयार हो तो यह बात हो जायेगी।"

"तो चलो। मैं अपनी तरफ से तो घर छोड़ आई हूँ। क्योंकि पुनः घर से निकलने का अवसर नहीं मिलेगा।"

शीरीं अपनी नोटबुक मेज के दराज़ में रख टाइप करने की मशीन को बन्द करने लगी तो नरेन्द्र ने कमला से कह दिया, "कमला बहन, मैं समझता हूँ कि तुम भूल कर रही हो।"

"क्या भूल है इसमें?"

"भूल यह है कि भाग कर क्या करोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"पार्टी का काम करूँगी।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह तो इस समय गौण बात है। मुख्य बात यह है कि बच्चा कहाँ पैदा करोगी ?"

'किसी अस्पताल में। वहाँ अपना कोई झूठा नाम और बच्चे के बाप का फ़र्जी नाम लिखा दूंगी। खर्चा पार्टी देगी और बच्चा पैदा होने के बाद पालने के लिए कहीं रख दिया जायेगा।"

"इससे क्या यह अच्छा नहीं कि एक भले प्रगतिशील विचारों के पति के घर में बच्चे को जन्म दो। न झूठ बोलने की ज़रूरत है, फ़र्जी खाविंद बनाने की।"

"परन्तु हम पार्टी के लिए तो झूठ बोल सकती हैं ?"

"यदि बिना झूठ बोले काम बनता हो तो फिर झूठ बोलने की आवश्यकता ही क्या है ? देखो कमला ! मैं तुम्हारे पति की उदारता और भद्रता को देखकर यही राय देता हूँ कि तुम उसे जो वचन दे आई हो, उसका पालन करो।

"संसार का व्यापार वचनों पर ही चलता है। यदि वचन भंग करना नियम बन जाये तो संसार में एक तिनका भी नहीं टूट सकता।"

"परन्तु मैंने पार्टी में काम करने का भी तो वचन दिया हुआ है।"

"ठीक है। तुमने यह वचन तो नहीं दिया कि तुम शादी नहीं करोगी और अमुक प्रकार का काम ही करोगी। तुम पत्नी बनकर अपने बच्चों के बाप और उसके परिवार को भी तो कम्यूनिस्ट बनाने का यत्न कर सकती हो। तुम विवाहित होते हुए भी अनेक प्रकार से पार्टी का काम कर सकती हो।"

"मगर पार्टी को काम करने वाले भी तो चाहिए।"

"पार्टी को बहुत लड़कियाँ मिल जाएँगी। हमारे सेल में भी तो चार हैं। तुम नहीं रहोगी तो पार्टी डूब नहीं जायेगी। किसी के मरने से संसार शून्य नहीं हो जाता और किसी के पैदा हो जाने से भूमि का बोझा बढ़ नहीं जाता।" नरेन्द्र ने कहा।

कमला शीरीं का मुख देखने लगी। शीरीं टाइप की मशीन बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते-[illegible] नोटबुक निकाल ली और बोली, "कमला, मैं समझती हूँ, नरेन्द्रजी ठीक कह रहे हैं। तुम्हारे पति तो सचमुच अपने ही विचार के प्रतीत होते हैं। अपने जैसे विचार के लोगों को धोखा नहीं देना चाहिए। "जब तुम्हारा बच्चा बड़ा हो जायेगा और तुम्हारे पति से हिलमिल जायेगा, तब पार्टी का काम भी होने लगेगा। मैं समझती हूँ कि तुम घर लौट जाओ।"

कमला टुकुर-टुकुर मुख देखती रह गयी। इसके उत्तर में उसको कुछ नहीं सूझा। नरेन्द्र ने पुनः उठते हुए कहा, "चलो कमला, तुम्हारे घर की राह पर ले चलता हूँ। आओ, साहस पकड़ो। ऐसा अच्छा पति फिर नहीं मिलेगा।"

कमला उठकर नरेन्द्र के साथ मकान से निकल गयी। चूड़ीवालान तक जाने के लिए कमला जैसी लड़की को बहुत सहायता की आवश्यकता नहीं थी। इस पर भी नरेन्द्र ने साथ-साथ चलते हुए कहा, "मैं तुम्हारे साथ दूर तक नहीं जाऊँगा। कहीं तुम्हारे होने वाले पति ने इकट्ठा देख लिया तो व्यर्थ में सन्देह करने लगेगा। अब तुम जाओ। हाँ, अपने घर-वाले का नाम बता दो। मैं उससे सम्पर्क बनाने का यत्न करूँगा।"

"सुन्दरदास—फव्वारे के पास रेडियो की दुकान है।" कमला ने बता दिया।

: १० :

सुरेन्द्र कश्मीर से लौटा तो हवाई अड्डे से सीधा अपने फीरोजशाह रोड वाले बंगले पर जा पहुँचा। वहाँ सबसे पहला दृश्य जो उसे दिखाई दिया वह था एक आया का बच्चों को खेलाते हुए लॉन में बैठे होना।

उसने टैक्सी से उतर नौकर को आवाज़ दी, "रामदीन!"

रामदीन आया और साहब का सामान भीतर ले गया। आया भी समझ गयी थी कि घर का मालिक आ गया है। वह उठ खड़ी हुई। बच्चे भी पिता को देख उसकी टाँगों से लिपट गए। "सुनाओ लक्ष्मण!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मां किधर है ?" सुरेन्द्र ने कहा।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे गाड़ी में घूमने गयी हैं।"

"गाड़ी में ? रामदीन, गाड़ी कहाँ है ?"

मालिक ! बबुग्राइन ने अब गाड़ी चलानी स्वयं सीख ली है। उन्होंने गाड़ी चलाने का लाइसेन्स भी ले लिया है। अब तो वे गाड़ी स्वयं ले जाती हैं।"

यह सुन सुरेन्द्र मुस्करा दिया। इससे उसके मन का बोझ कुछ हल्का हो गया था। "और तुम कब से हो ?" उसने नौकरानी से पूछ लिया।

"बीस दिन हो चुके हैं। चालीस रुपये महीना, रोटी-कपड़ा पर नौकर रखा है। सप्ताह में दो बार मालिक के पास घर जाने की छुट्टी भी दी है।"

सुरेन्द्र मुस्कराया। फिर उससे पूछा, "ये बच्चे तंग तो नहीं करते ?"

"नहीं बाबू। ये बहुत ही सुशील हैं।"

सुरेन्द्र भीतर चला गया। उस समय तीन बज रहे थे। उसने आधा घंटा आराम किया और फिर वस्त्र बदल किसी रेस्टोरां में पेटपूर्ति करने चला गया।

वहाँ से वह सायं पांच बजे लौटा तो सीता मिसेज़ अली के साथ बैठी बातें कर रही थी। पति को आया देख मिसेज़ अली को ड्राइंगरूम में बैठा छोड़ सीता बाहर चली आयी। हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछने लगी, "सुनाइये, कश्मीर का ट्रिप कैसा रहा ?"

"बहुत अच्छा रहा।"

"और वह कहाँ है ?"

"कौन ? कौशल्या ? वह जहाँ थी वहाँ चली गयी है। वह यहाँ नहीं आएगी और तुम वहाँ नहीं जाओगी जहाँ वह है। परन्तु यह भीतर कौन है ?"

"एक हैं मिसेज़ अली।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"[illegible] ?"

"हाँ ! तो आप उसे जानते हैं ?"

"बहुत अच्छी तरह। चलो भीतर। ज़रा तुम्हारी नयी सहेली से भेंट कर लूँ।"

सीता पति को लेकर भीतर चली आयी। आते ही उसने कहा, "रम्भा बहिन ! देखो, इनको पहचानती हो ?"

"ओह !" सुरेन्द्र को देखते ही रम्भा फुर्ती से उठी और आगे बढ़ सुरेन्द्र से हाथ मिला बोली, "तो सीता के पतिदेव आप हैं !"

"तो इसने मेरा नाम बताया नहीं ?"

"बताया तो था परन्तु पाँच सौ से ऊपर लोकसभा के सदस्यों में एक ही तो सुरेन्द्र नहीं है। परन्तु सुरेन्द्र जी तुम बहुत ही खुशकिस्मत हो जो सीता जैसी सुन्दर पत्नी पा गये हो। यह तो बहुगुणा है। दो महीने में ही इसने इतनी उन्नति की है कि हम इसे आपके सामने लोकसभा में बैठा सकने की उम्मीद कर रहे हैं।"

"सत्य ?"

"हाँ, यत्न कर रहे हैं। अब ये अँग्रेजी में धाराप्रवाह व्याख्यान देने लगी हैं। हिन्दुस्तानी में भी खूब बोलती हैं।"

"परन्तु प्रश्न तो यह है कि ये निर्दलीय खड़ी होंगी अथवा कांग्रेस की ओर से ?"

"कम्यूनिस्ट पार्टी का टिकट दिलवाने का यत्न कर रही हूँ।"

"और तुम क्या करने जा रही हो ?"

"कुछ तो करूंगी ही।"

"किसी प्रान्त की गवर्नर···?"

"किसी की तो बनूंगी ही।"

"सत्य ?"

"तो यह कठिन है क्या ?"

"तुम्हारे लिए तो कठिन नहीं होना चाहिए।"

"बात यह है कि अब पंडितजी को नये-नये मुख देखने को मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहे हैं और सब के मुख में घी-शक्कर डालनी पड़ती है। इसलिए मेरी बारी आने में देरी लग रही है। वैसे तो मिस्टर अली से पंडितजी की बहुत घनिष्ठता थी। वे इस समय जीवित होते तो कब की विदेश में कहीं राजदूत बन चुकी होती।"

"तो तुमने सीता की भेंट प्रधानमंत्री से कराई है ?"

"हाँ, हो चुकी है। भेंट में क्या बातचीत हुई यह तो यही बतायेगी। मैं तो आजकल इससे अपने कार्य में बहुत सहायता ले रही हूँ।"

"क्या सहायता ले रही हैं ?"

"ये स्वयं ही बतायें तो ठीक होगा। बताइये कश्मीर की सैर कैसी रही ?"

"स्प्लेंडिड। मैं सोनमर्ग तक गया था। कश्मीर सचमुच देवताओं की भूमि है। स्थान-स्थान पर अप्सराओं के डेरे हैं।"

मिसेज़ अली खिलखिलाकर हँस पड़ी और उठकर बाहर जाते हुए कहने लगी, "सीता मुझे अब छोड़ने चलोगी अथवा टैक्सी मँगवा लूं।"

"अब तो आप टैक्सी मँगवा लीजिए। कल किस समय चलना होगा ?"

"मैं यहाँ ग्यारह बजे आ जाऊँगी। पहले खाना खाने चलेंगे। पीछे पार्टी कार्यालय में।"

मिसेज़ अली ने सुरेन्द्र के बँगले से विंडसर प्लेस के टैक्सी-स्टैंड पर टेलीफोन किया। टैक्सी आने पर उसमें बैठ चली गयी।

"यह औरत तुम्हें कहाँ मिल गई ?"

"नरेन्द्र ने भेंट कराई थी।"

"तब तो ठीक है। बताओ तुम प्रसन्न हो इस समाज में रहते हुए ?"

"समाज तो कीचड़ की भाँति गन्दी है, परन्तु कमल तो इसमें भी शुद्ध पवित्र रह सकता है।"

"तो तुम कमल बन रही हो ?"

"कह तो रही हूँ।"

'विश्वास नहीं आता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"समय पर आ जायेगा।"

"ठीक है। संसद सदस्य बनने की योजना तुम्हारी है क्या?"

"नहीं, नरेन्द्र की है। इस पर भी बिना आपकी स्वीकृति के तो कुछ हो नहीं सकता।"

"मेरी स्वीकृति की भला क्या आवश्यकता है? अब तो तुम मोटर चलाने लगी हो, ड्राइविंग लाइसेन्स पा गयी हो, अब जहाँ चाहो गाड़ी ले जा सकती हो। एकाध को नीचे कुचल भी सकती हो। केवल एक बात का ध्यान रखना। नीयत साफ होने का प्रमाण देती रहोगी तो दंड नहीं पाओगी। कुचले हुए के साथ सहानुभूति प्रकट करती रहोगी तो तुम्हारी नीयत पर सन्देह नहीं होगा।"

"जी, यह तो ठीक है। मगर मोटर में पैट्रोल होगा तो मोटर चलेगी ना? पैट्रोल है आपके पास।"

"हाँ, यह तो है। कितने खर्चे की बात हो रही है?"

"अभी कोई बात नहीं हुई। अभी तो मैं अंडर ट्रेनिंग हूँ। ट्रेनिंग के उपरान्त पार्टी का टिकट मिलेगा। टिकट के साथ ही क्षेत्र का भी निश्चय होगा। उस समय खर्चे वगैरा का भी निश्चय होगा।"

"देखो सीता, मेरे लिए तो राजनीति एक व्यापार है। जब से मैं इसमें सम्मिलित हुआ हूँ तभी से मैं इसको इसी रूप में देखता रहा हूँ। पहले मैं राज्य कांग्रेस का मन्त्री बना था। तब मैं महाराजा से रुपया ऐंठता रहता था। मैं निर्वाचन के लिए खड़ा हुआ था, तो महाराजा साहब से रुपया और सहायता पा गया था। इतना कि निर्वाचन लड़ कर भी तीस हज़ार बचा कर जेब में रख लिए थे। संसद सदस्य बनने के उपरान्त मैंने बसों के चलाने के परमिट लेने आरम्भ कर दिए। तुम यह सब जानती हो। यदि तुम इसी रूप में राजनीति में पदार्पण करना चाहती हो तब तो ठीक है। रुपया जितना चाहो मिल जायेगा।"

"मगर वहाँ तो देश में कम्यूनिज़्म लाने की बातें होती रहती हैं।"

"वह तो हमारे प्रधान मन्त्री ला रहे हैं। यह ठीक है कि उनके मस्तिष्क में कम्यूनिज़्म का चित्र उससे कुछ भिन्न है, जो रूस और चीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में है। इस पर भी वह होगा कम्युनिज़्म ही।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किन्तु सीता ने इस पर शंका प्रकट की। "परन्तु कम्युनिज़्म की व्यवस्था तो तब ही हो सकती है, जब पहला ढाँचा पूरी तरह नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाये। कार्ल मार्क्स ने अपनी १८७२ की विज्ञप्ति में यह कहा था कि जब तक समाज की पहली व्यवस्था को तोड़-फोड़ कर आमूल चूल नष्ट न कर दिया जाये, तब तक नई व्यवस्था स्थापित नहीं की जा सकती। लेनिन ने भी इस बात का समर्थन किया था। इसी को एंजल ने क्रान्ति का नाम दिया है। पंडितजी तो वही प्रजातन्त्रवाद और वही निजी क्षेत्र और सरकारी क्षेत्र बनाते चले जा रहे हैं।"

"तो तुम इतना पढ़ गई हो? खैर अभी कुछ और पढ़ना पड़ेगा। पंडित नेहरू यह पढ़े हैं कि कार्ल मार्क्स और लेनिन के शब्द अंतिम नहीं हैं। वे अपने को उनसे किसी प्रकार कम नहीं समझते। उनका उद्देश्य तो भारत में कम्युनिज़्म लाना ही है। परन्तु क्योंकि यहाँ ज़ोर नहीं है। न ही रूस जैसे शक्तिशाली बड़े-बड़े जागीरदार और जमींदार हैं। इस कारण यहाँ वैसी तोड़-फोड़ की आवश्यकता नहीं। साथ ही रूस में पादरियों का बहुत ज़ोर था। यहाँ के ब्राह्मण तो दान-दक्षिणा लेने वाले भिखमंगे हैं। इस कारण यहाँ के ढाँचे को बलपूर्वक तोड़ने की आवश्यकता नहीं है। बिना ढाँचे को छुए पंडितजी वही कुछ भारत में कर देना चाहते हैं जो लेनिन ने वहाँ करोड़ों की हत्या कर किया है।"

"फिर तो कम्यूनिस्ट दल की यहाँ आवश्यकता नहीं है?"

"है तो। पंडितजी सदैव तो जीवित रह नहीं सकते। उनकी मृत्यु के उपरान्त दूसरों को उनका स्थान लेना पड़ेगा। उस समय कम्यूनिस्टों को कार्य-भार सँभालना पड़ेगा।"

"मगर तब तो ये कम्यूनिस्ट आपका व्यापार चलने नहीं देंगे।"

"वे स्वयं अपना व्यापार चलाएंगे। तब तुम उनमें मेरा स्थान ले सकोगी। देखो सीता रानी! राज्य-कार्य अकिंचनों का खेल नहीं। इसको चलाने के लिए धन-वैभव, चतुराई और चपलता की सदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवश्यकता रहेगी। राज्य कांग्रेसी चलायें अथवा कम्युनिस्ट। छल-
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कपट, दग़ा-धोखा सब करने पड़ेंगे। सत्ताधीश लोगों को अपने सम्बन्धियों, मित्रों, सहायकों, पार्टी के नेताओं को प्रसन्न रखना ही पड़ेगा। नहीं तो राज्य चौपट हो जायेगा।

"इसीलिए तो कहता हूँ कि तुम कम्यूनिस्ट पार्टी का टिकट ले निर्वाचन लड़ जाओ। सब खर्चा मैं दूंगा। इतना कि तुम सब वोट खरीदना चाहोगी तो खरीद सकोगी। शर्त केवल यह है कि तुमने साधु बनकर राजनीति में नहीं रहना होगा, बल्कि एक राजनीतिज्ञ की भाँति प्रभुता सम्पन्न बन कर रहना होगा। बताओ है मंजूर ?"

"तो आप खर्चा देगें ?"

"जितना चाहो।"

"तब तो काम बन जाएगा।"

"बनाओ। एक बात और है। जिस दिन से कम्यूनिस्ट पार्टी वाले तुम्हें अपना टिकट देकर अपना प्रत्याशी घोषित करेंगे उसी दिन से तुम्हें अपना मकान पृथक् कर लेना होगा। दो भिन्न-भिन्न दलों के नेता एक मकान में नहीं रह सकते। आवश्यकता पड़ी तो तलाक भी दे देना होगा। इस पर भी हमारी राजनीति में साझेदारी रहेगा।"

"मंजूर है!"

"तो जियो, सौ-सौ वार जियो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

राधा के पिता मुन्शी रामदयाल महाराज ग्वालियर के कार्यालय में तहसील वसूल करने पर नियुक्त थे। वैसे वे महाराज और उनके महल की स्त्रियों के निजी काम-धन्धे भी करते रहते थे। वे बहुत ही ईमानदार और साधु स्वभाव के व्यक्ति माने जाते थे।

वह अपनी ईमानदारी और भलमनसाहत के कारण राज-दरबार में प्रतिष्ठा के पात्र माने जाते थे परन्तु उनकी आर्थिक अवस्था बहुत ही दुर्बल थी। स्वराज्य-प्राप्ति के पीछे जब रियासत ग्वालियर भारत सरकार ने हस्तगत कर ली तो मुन्शीजी महाराज के सामने उपस्थित हो अपनी आर्थिक दुरवस्था का वर्णन करने लगे। महाराज ने कहा, "मुन्शी साहब, मुझे तुम्हारे प्रति बहुत सहानुभूति है; परन्तु मैं स्वयं इस समय बहुत परेशानी में हूँ और नहीं जानता कि किस प्रकार अपनी मान-मर्यादा के अनुसार निर्वाह कर सकूँगा। इस पर भी यह एक सज्जन मेरे पास बैठे हैं और मुझे अपने साथ मिलकर कुछ काम करने को कह रहे हैं। कहो तो इनसे तुम्हारी सिफारिश कर दूं?"

"ये सज्जन कौन हैं?"

"हाँ! रायसाहब! अब अपनी बात इनसे कहिये।" महाराजा ने सामने बैठे आदमी से कहा।

"अंग्रेजी ढंग की पोशाक पहने एक व्यक्ति महाराज के सामने नीचे आसन पर बैठा था। उसने कहा, "महाराज, जैसी अवस्था ये अपनी बता रहे हैं उससे तो वह काम चल नहीं सकता। हम इस पूरी रियासत में दस पैंट्रोल पम्प लगवाना चाहते हैं। उनके लिए पाँच लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रुपये की जमानत चाहिए और फिर प्रभावशाली और ईमानदार व्यक्ति
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहिए। मैं यह कह रहा था कि आपकी रियासत तो गई। यदि आप व्यापार में आ जाएँ तो लगभग इतनी ही आय आप इन पम्पों से कर लेंगे। दस सोना उगलने वाले झरने लग जाएँगे।"

महाराज ने कहा, "हम क्षत्रिय हैं। व्यापार में न तो हमारी रुचि है, न ही योग्यता। इस कारण मैं तो यह काम करूँगा नहीं। यह हमारे मुन्शी हैं। बहुत ही सूझ-बूझ रखने वाले व्यक्ति हैं। इन पर कुछ कृपा-दृष्टि कर दीजिये। दस नहीं तो एक सोना उगलने वाला झरना इनको दे दीजिये। इनकी ज़मानत की रकम मैं दे दूंगा। बताइये उस पर सूद कितना देंगे ?"

"बैंक का सूद साढ़े चार प्रतिशत मिल जायेगा। पचास हज़ार नकद ज़मानत के रूप में मिलना चाहिए।"

"अच्छी बात है।" महाराज ने कह दिया, "मैं यत्न करूँगा कि इतने रुपये का चैक आपको मिल जाये। किस स्थान पर इनको पम्प देंगे ?"

स्थान का निर्वाचन ये स्वयं भी कर सकते हैं। य कहें तो मैं इनके लिए स्थान का निर्वाचन कर दूंगा। जिस दिन रुपया जमा होगा उसके तीन मास के भीतर हम इनको पम्पिग स्टेशन तैयार करके दे देंगे।"

"हमारी यह इच्छा है कि आप दोनों मिलकर स्थान का निश्चय कर लें। क्यों मुंशीजी यह ठीक है न ? इस सब कारोबार में लाभ के दस प्रतिशत के हम हिस्सेदार होंगे। घाटे में हम नहीं रहेंगे। है मंजूर ?"

इस पर फिर वही सूट-बूट धारी सज्जन बोल उठे। "श्रीमान, इस व्यापार में तो घाटे का प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ, प्रश्न है ईमानदारी और बेईमानी का। पम्पिग स्टेशन का भाड़ा सर्वथा साधारण एक सौ रुपया मासिक कम्पनी लेगी और यदि ये मेरा निर्वाचित स्थान स्वीकार करें तो सौ रुपया नित्य का लाभ तो कम-से-कम हो जायगा।"

मुन्शीजी ने महाराज की शर्त स्वीकार कर ली और तीन मास में रामदयाल का पम्प नगर के समीप आगरा-झाँसी सड़क के किनारे खुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ में तो यह पम्प सोने का झरना नहीं बना। इस पर भी तीस से पचास रुपया का नकद लाभ देने लगा, परन्तु समय व्यतीत होने के साथ जब सरकार की योजनाएँ चलने लगीं, मोटर ट्रक और मोटर कारें भाग-दौड़ करने लगीं, तो पैट्रोल, डीज़ल आदि अन्य सामान की बिक्री बढ़ने लगी और वह अकेला पैट्रोल पम्प तीन-चार सौ रुपया नित्य का लाभ देने लगा। अब मुन्शीजी के पम्प पर पाँच कर्मचारी कार्य करते थे। एक एकाउन्टेंट था। सोने के झरने वाली बात अब सिद्ध होती दिखाई देने लगी थी।

जब कांग्रेस ने आवड़ी में समाजवाद का प्रस्ताव पास किया और जोत की भूमि पर सीमा बाँधने पर बल दिया जाने लगा तो भूपेन्द्र की चिन्ता भी बढ़ने लगी। फार्म से उसके परिवार की आय चालीस से पचास हज़ार रुपया वार्षिक होती थी। इस पर वे दस हज़ार रुपया मासिक बीज, खाद, नौकरों के वेतन आदि पर व्यय कर देते थे और शेष में से प्रतिवर्ष बीस हज़ार के लगभग दान-दक्षिणा में दे देते थे। घर का खर्च बहुत कम था। अन्न-अनाज, सब्ज़ियाँ, साधारण फल, दूध, घी फार्म पर ही पैदा कर लेते थे। शेष में से घर के नौकरों का वेतन, वस्त्राभूषण और सम्बन्धियों के आने-जाने पर व्यय होता था। सब कुछ दे दिला कर पाँच से दस हज़ार तक बैंक में जमा करा देते थे।

दान-दक्षिणा का खर्चा तो तब से चल रहा था जब वे जमींदार थे। ये लोग जानते थे कि किसी काल में उन्होंने महाराज के परिवार की विशेष सेवा की थी और उसके पुरस्कार में यह जमींदारी उन्हें मिली थी। अब सरकार बदल गई थी और यह सरकार पिछली सरकार की सेवाओं को मान्यता नहीं दे रही थी। निजी फार्म को तो इस सरकार ने भी स्वीकार कर लिया था और भवानी प्रसाद ने दो सहस्र एकड़ का एक फार्म बना उस पर ट्रेक्टर और दूसरी मशीनों से खेती-बाड़ी करना आरम्भ कर दिया था। सन् १९५२ से १९५६ तक यही स्थिति रही और फार्म की आय से भवानी प्रसाद ने दान-दक्षिणा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राशि लगभग उसी स्तर पर स्थिर रखी जिस पर कि जमींदारी के काल में थी।

परन्तु अब स्थिति बदल रही थी। यदि तीस एकड़ भूमि ही जोत के लिए रह गई तो फिर यह बीस हज़ार के लगभग वार्षिक दान-दक्षिणा का चलना सर्वथा असम्भव था। साथ ही अन्य खर्चे कम करने की बात भी विचारणीय थी।

नरेन्द्र तो पिछले वर्ष ही घर से झगड़ा कर चला गया था। उसने न तो पिता से अपने लिए खर्चा माँगा और न ही पिता ने पुत्र से पत्र द्वारा पूछा कि उसे कितना कुछ चाहिए।

माँ का नरेन्द्र से विशेष स्नेह था। वह उसका समाचार पाने को सदैव लालायित रहती थी और उसने समाचार पाने का एक स्रोत बना भी लिया। राधा के माता-पिता राधा से मिलने आते रहते थे। रुक्मिणी को लगा कि उनके द्वारा वह पुत्र का समाचार प्राप्त कर सकती है। एक दिन राधा के पिता आये तो अपनी लड़की से पूछने लगे, "राधा बेटी, दिल्ली से कुछ लाना हो तो बता दो। मैं दो-दिन में जा रहा हूँ और एक सप्ताह वहाँ रह कर लौट आऊँगा।"

"वहाँ क्या काम है पिताजी ?"

"मैं अपने पम्प का छमाही हिसाब-किताब चैक करने वहाँ जाया करता हूँ। दो-दिन में जाऊँगा और उसके सात-आठ दिन उपरान्त आऊँगा।"

रुक्मिणी के कान में दिल्ली जाने की बात पड़ गई और वह सामने आ बोली, "भाई साहब ! एक काम तो मेरा है। यदि कर सकें तो कहूँ।"

"हाँ बहन, बताओ क्या काम है ?"

"वहाँ नई दिल्ली में एक वाई० एम० सी० ए० का होस्टल है। नरेन्द्र उसमें तीस नम्बर के कमरे में रहता है। यदि समय मिले तो उससे मिलकर उसका सुख समाचार लेते आना और यदि कुछ रुपये-पैसे की आवश्यकता बताये तो पता करते आना। मैं आपको एक सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रुपया दिये देता हूँ। यह उसको दे आना और कह आना कि अपने खाने-पीने का ध्यान रखे।"

"ठीक है। रुपया देने की आवश्यकता नहीं है। मैं दे आऊँगा और लौट कर ले लूँगा, प्रत्युत् उससे और अधिक के लिए पूछ लूँगा।"

वैसे राधा को विश्वास था कि नरेन्द्र को किसी प्रकार की आवश्यकता नहीं। वह जानती थी कि सीता उसका खर्चा देती होगी और सीता के पास रुपये-पैसे की कमी नहीं है। वह अपने पिता से सुरेन्द्र के कारोबार के विषय में सुनती रहती थी। उसकी पच्चीस बसें मुन्शीजी के पैट्रोल पम्प से ही पैट्रोल, मोबिलऑयल और अन्य आवश्यक सामान लेती थीं। इस कारण राधा ने कह दिया, "पिताजी उसका समाचार अवश्य लाइयेगा। माताजी की चिन्ता मिट जाएगी।"

मुन्शी रामदयाल जब लड़की से मिलकर निकला तो बाहर चौपाल पर भूपेन्द्र उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था। वह उससे किसी कारोबार के विषय में राय करने आया था।

"मुन्शीजी, एक बार आपने कहा था कि कोई कारोबार बतायेंगे। तो बताइये, मैं समझता हूँ कि उसके विषय में विचार करने का समय आ गया है।"

"भाई भूप!" मुन्शीजी ने अपने मन की बात कह दी, "मैं भी समाचार-पत्र पढ़ता रहता हूँ और मेरा भी अनुमान है कि सरकार जमींदारी मिटाने के अनन्तर बड़े-बड़े फार्मों को तोड़ने की योजना बना रही है। भूमि-विहीन किसान अभी से आशाएँ लगा रहे हैं कि इस सरकारी लूट में उनको भी भाग मिलेगा। बुद्धिमत्ता इसी में है कि आप अपने फार्म को तो ज्यों-का-त्यों सरकारी फार्म बनाने का प्रस्ताव सरकार से कर दें और उससे साझेदारी में काम करने लगें।"

"इससे हमें क्या लाभ होगा? सरकार फोकट में लाभ की हिस्सेदार बन जायेगी। मेरी योजना तो यह है कि फार्म के तीस-तीस एकड़ के टुकड़े कर नीलाम कर दूं और नकद रुपया वसूल कर किसी व्यापार में लग जाऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं भूप । यह योजना ठीक नहीं । ये तीस-तीस एकड़ के टुकड़े बिकेंगे नहीं । कोई भी ऐसा किसान, जिसके पास भूमि नहीं है; उनका दाम नहीं दे सकेगा । और जिनके पास पहले से भूमि है वे इतने बड़े टुकड़ों को ले नहीं सकेंगे । दूसरी बात यह है कि तीस एकड़ भूमि को कोई बिना मज़दूरों की सहायता के जोत-बो नहीं सकेगा और मशीनें इतनी-सी भूमि पर चलाकर लाभ नहीं दे सकेंगी । परिणाम यह होगा कि किसान निर्धन-का-निर्धन रहेगा, भूमि परती पड़ी रहेगी । फिर सरकार व्यक्तिगत किसान को धनी बनाने के लिये यह योजना नहीं कर रही । यह तो उसकी सम्पत्ति को सीमित करने का यत्न कर रही है । हाँ, यह उसको प्रसन्न करने के लिये उसकी उपज का दाम अधिक कर रही है । इससे किसान अस्थायी रूप में प्रसन्न होगा । क्योंकि अन्न-अनाज का दाम बढ़ने से सब प्रकार की वस्तुओं का दाम बढ़ेगा और उससे देश की पूरी जनता के साथ किसान की कठिनाई भी बढ़ेगी । वह उपज का दाम बढ़ जाने पर भी अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण न कर सकने के कारण दुःखी-का-दुःखी रहेगा ।"

"तो मुंशीजी बताइये न, आप क्या करने को कहते हैं ?"

"जहाँ तक फार्म का सम्बन्ध है, इसमें तीस एकड़ का अच्छा-सा टुकड़ा अपने लिये पृथक् कर लो । शेष फार्म को सरकारी फार्म बनाने का प्रस्ताव भेज दो । मैं जानता हूँ कि उस सरकारी फार्म से लाभ कुछ नहीं होगा । इस पर भी सरकार से शर्तें तय कर लो और जो कुछ भी मिल सके ले लो ।

"इसके अतिरिक्त एक काम और करो । परसों मैं ग्वालियर से दिल्ली जा रहा हूँ । शैल कम्पनी में हिसाब-किताब देखने-दिखाने । तुम भी मेरे साथ चलो । एक-दो पम्पों का ठेका तुम भी ले लो । मैं समझता हूँ सारा घाटा पूरा हो जायगा ।"

यह बता भूप की समझ में आ गयी । किन्तु उसके मन में एक संशय था । उसने भी नरेन्द्र और पिता के बीच हुई बातचीत सुनी थी और वह सोचता था कि जब सरकार बड़ी-बड़ी आय वाले व्यापारों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अपने अधीन कर लेगी तो फिर क्या होगा? उसने अपने मन का यह संशय मुंशी रामदयाल पर प्रकट किया।

मुन्शीजी ने अपनी ओर से इसका समाधान करने की कोशिश की। वह बोले, "भूप, इस संसार में स्थायी कुछ भी नहीं। इसको जगत कहते हैं। यह इस कारण कि यह गतिशील है। इसमें प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक क्रिया गति कर रही है, जो मनुष्य इस गति के साथ चल नहीं सकेंगे वे इसके नीचे आ कर कुचले जायेंगे।

"इसी कारण मैं आज की बात बता सकता हूँ। जब तक यह पता न चले कि सरकार की अगली योजना क्या होगी, तब तक अपने व्यवहार को निश्चय नहीं कर सकता। मैं इतना जानता हूँ कि मैं कोई बात देश के वर्तमान कानून के विपरीत नहीं कर रहा। और मैंने निश्चय किया है कि भविष्य में भी कानून का उल्लंघन नहीं करूँगा।"

"परन्तु मुन्शीजी। क्या कुछ ऐसा नहीं कर सकते जिससे कि सरकार की इस बेहूदगी का विरोध किया जा सके।"

मुन्शीजी हँस पड़े और बोले, "विरोध किया जा सकता है। इस विरोध का समय तो अगले वर्ष निर्वाचनों के समय आयेगा। पंडित जवाहरलाल जी की कामना है कि देश में समाजवाद की स्थापना हो। कांग्रेस के अधिकांश सदस्य समाजवाद की असलियत को जानते नहीं। वे तो समझ रहे हैं कि इस 'वाद' के आने से देश में घी और मधु की नदियाँ बहने लगेंगी। वे सब-के-सब मूर्ख हैं और जवाहरलालजी को सर्वज्ञ एव देवता मान, उसकी बात को विधाता का विधान मान स्वीकार कर रहे हैं। इससे वे समाजवाद-समाजवाद की रट अभी से लगाने लगे हैं। जिससे साधारण जनता भी तोते की भाँति समाजवाद के स्वर-में-स्वर मिलाने लगे। यदि विरोध करना है तो इस समाज के नारे को निस्तेज करो। इस नारे को निस्तेज करने के लिये जवाहरलाल जी के व्यक्तित्व का प्रभाव कम करना होगा। यदि कांग्रेस का राज्य खराब है तो इस कारण कि समाजवाद में दोष है।

"परन्तु भूप, यह अपेक्षाकृत दूर की बात है। अभी तो इस काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कोसो। इसके साथ अपने को समाजवाद की चक्की से बचाने का उपाय भी करते रहो। अन्यथा इसकी चक्की में पिस गये तो विरोध भी नहीं कर सकोगे। इसीलिये तो कहता हूँ कि जब तक धूप है सेंक लो। मेरे साथ चलो। मैं आशा करता हूँ कि कुछ तो हो ही सकेगा। कुछ रुपया साथ ले चलना। मैनेजर से कुछ लेन-देन की बात भी हो सकती है।"

"कितना ले चलूँ?" भूपेन्द्र ने पूछा।

"बैंक में कितना जमा कर रखा है?"

"साठ-सत्तर हजार तो होगा ही।"

"तो ठीक है। चैक-बुक साथ ले चलना। हमको आशा करनी चाहिये कि हम कुछ करके ही लौटेंगे।"

"भूपेन्द्र मुन्शीजी की बात समझ गया और उनके साथ दिल्ली जाने को तैयार हो गया।

: २ :

भूपेन्द्र और मुन्शी रामदयाल 'होटल इंडिया' में ठहरे हुए थे। जहाँ मुन्शीजी कम्पनी वालों से अपना हिसाब-किताब कर रहे थे वहाँ महोना के समीप बड़ी सड़क के किनारे एक पैट्रोल पम्प के लिये बात भी कर रहे थे। कम्पनी का जनरल मैनेजर मुन्शी के व्यवहार से अति प्रसन्न था। इस कारण बातचीत सुविधापूर्वक चल रही थी। ससुर-दामाद दोनों को आशा थी कि भवानी प्रसाद का परिवार जमींदारी के चक्कर से निकल व्यापार की परिधि में आ रहा है।

बातचीत इस स्तर तक पहुँच गयी थी कि जमानत की रकम जमा करा दी जाय। दो हज़ार मैनेजर के चाय-पानी के लिये नकद दे जाएँ और फिर इंस्पेक्टर के साथ मिलकर पम्प का स्थान निश्चित कर लें तो लिखा-पढ़ी हो जायेगी। वैसे स्थान के निर्वाचन में भी मुन्शीजी की सम्मति सर्वोपरि थी। मुन्शीजी का दृढ़ मत था कि किसी ऐसे स्था-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर माल लगाना चाहिये जहाँ मंडी हो । व्यापार का केन्द्र हो और उद्योगपतियों का निवासस्थान हो। ऐसे स्थान पर बिक्री बढ़ने की सम्भावना पक्की है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको दिल्ली आये चार दिन हो चुके थे और इतने दिन की कार-गुजारी पर वे बैठे विचार कर रहे थे कि एकाएक मुन्शीजी को अपनी समधिन का काम याद आ गया। वह होटल के कमरे में लेटे-लेटे उठ खड़े हुए। भूपेन्द्र ने विस्मय में मुन्शीजी की ओर देख पूछ लिया, "क्या बात है मुन्शीजी ?"

"भाई तुम्हारी माताजी का एक काम स्मरण आ गया है। चलो तैयार हो जाओ।"

"कहाँ ? क्या काम है ?"

"ज़रा नरेन्द्र से मिलकर उसका समाचार लेना है।"

भूप के मन में भी विचार आया कि यदि वह मिल जाये तो ठीक ही है। सुरेन्द्र इत्यादि का भी पता चल जायेगा। वह उठ खड़ा हुआ। दोनों ने कपड़े पहन लिये और होटल से निकल पड़े। होटल के बाहर से उन्होंने टैक्सी की और वाई० एम० सी० ए० के होटल में जा पहुँचे। सायंकाल के पाँच बजे थे। मुन्शीजी का विचार था कि नरेन्द्र कॉलेज से लौट आया होगा।

नीचे होटल के कार्यालय से तीस नम्बर के कमरे का पता पूछ वे कमरे के बाहर जा पहुँचे। कमरे के द्वार पर पर्दा लटका था और पर्दे के पीछे किसी लड़की के हँसने की ध्वनि सुनाई दे रही थी। हँसी इतनी मधुर थी, मानो घंटियाँ बज रही हों। दोनों ठिठककर खड़े हो गये। वे समझे कहीं भूल से किसी अन्य के कमरे के बाहर जा पहुँचे हैं। मुन्शीजी ने कमरे की चौखट पर नम्बर तीस देखा तो निश्चिन्त हो आवाज़ दे दी, "नरेन्द्र जी !"

भीतर हँसने की आवाज़ बन्द हुई और नरेन्द्र पर्दा हटा देखने लगा कि कौन आया है। मुन्शी रामदयाल और बड़े भाई भूपेन्द्र को खड़े देख एक क्षण के लिये तो उसे घबराहट अनुभव हुई। तदनन्तर सँभल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बोला, "भैया आओ, कैसे आये ? भीतर आइये मुन्शीजी ! आपके दर्शनों का सौभाग्य कैसे मिला है ?"

नरेन्द्र दोनों को कमरे में ले गया। नरेन्द्र द्वारा 'भैया' शब्द से आने वाले का सम्बोधन सुन शीरीं सावधान होकर एक कुर्सी पर बैठ गयी थी।

दोनों ने शीरीं को बैठे देख विस्मय से उसकी ओर देखा तो नरेन्द्र ने उसके वहाँ होने की सफ़ाई दे दी। "मुन्शीजी, यह शीरीं है। मेरी सहपाठिन और राजनीतिक कार्य में सहयोगिन।"

मुन्शीजी और भूपेन्द्र दोनों कुर्सियों पर बैठ गये और कुर्सी कमरे में नहीं थी। इसी कारण नरेन्द्र पलंग पर बैठ पूछने लगा, "भैया ! किसका धन्यवाद करूँ कि तुम यहाँ आये हो ?"

उत्तर मुन्शीजी ने दिया, "अपनी माता का। इस बार मैं दिल्ली आने लगा तो वे कहने लगीं कि मैं नरेन्द्र से मिलता हुआ आऊँ। साथ ही तुम्हारा कुशल-समाचार जान लूं अथवा किसी प्रकार की आवश्यकता हो तो वह पूरी करता जाऊँ।"

"तो माँ ने स्मरण किया है ?"

"वे तो नित्य ही स्मरण करती हैं। राधा कहती थी कि प्रातः ठाकुर जी से वर माँगते समय अपने सब सम्बन्धियों के सुखी और दीर्घ जीवन के लिये तो प्रार्थना करती ही हैं। किन्तु नरेन्द्र, तुम्हारे लिये तो वह विशेष रूप में भगवान से प्रार्थना करती रहती हैं।"

"क्या प्रार्थना करती हैं ?"

"यही कि भगवान तुमको सुमति दे। तुम अपने धर्म और जत-सत पर कायम रहो और पढ़ाई में चित्त लगा सको। परीक्षा बहुत अच्छे अंक लेकर पास करो और फिर जीवन में परम सुख भोग सको।"

"मुन्शीजी कहीं अपनी ओर से बात बनाकर तो नहीं कह रहे ?"

"नहीं नरेन्द्र। यह सब राधा ने मुझे कई बार बताया है। इस बार आने से पूर्व मैं राधा से मिलने गया था तो तुम्हारी माताजी ने स्वयं मुझे तुम्हारा पता करने के लिये और तुम्हारी ज़रूरतों के विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में जानने के लिये कहा है।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो मुन्शीजी आप और भैया चाय पीने के हक़दार हो गये हैं। बताइये यहाँ ही मँगवा दूं अथवा बाजार में किसी बढ़िया होटल में चलकर पीयेंगे।"

"मेरी इच्छा तो तुम्हारे साथ कनाट सरकस के किसी अच्छे होटल में चाय पीने की थी। मगर आप भी आई हुई हैं।" यह कह मुन्शीजी ने लड़की की ओर देख लिया।

शीरीं समझ रही थी। वह उठ खड़ी हुई। "आप अपना प्रोग्राम बनाइये मैं तो जा ही रही थी। अच्छा नरेन्द्र जी फिर कब दर्शन होंगे?" उसने नरेन्द्र की ओर घूमकर पूछ लिया।

"भाभी कह रही हैं कि मैं बम्बई निर्वाचन-क्षेत्र में एक बार चलूं और उनका कार्यालय वहाँ ठीक कर आऊँ। मैं सोच रहा हूँ कि मिसेज़ अली से तुमको छः मास की छुट्टी दिलवा दूं और तुम्हें भाभी की सैक्रेटरी बनाकर बम्बई साथ जाने का निश्चय करा दूं।"

"मैं मिसेज़ अली से छुट्टी नहीं माँग सकती। आप कहें अथवा सीता जी कहें। मुझे यहाँ से छुट्टी मिल जाये तो सीताजी के साथ चली चलूंगी।"

"मैं मिसेज़ अली पर पार्टी की तरफ से दबाव डलवा रहा हूँ। मुझे आशा है कि तुमको छुट्टी मिल जाएगी।"

"तो एक बार तो आप भी चलेंगे न?" शीरीं ने प्रश्न किया।

'केवल एक सप्ताह के लिए। यह मेरी पढ़ाई का अन्तिम वर्ष है और इसमें की गई मेहनत पर जीवन-भर की सफलता निर्भर है। इसलिए मैं कुछ अधिक समय नहीं दे सकूँगा। हाँ, निर्वाचन के दिनों में एक-दो दिन के लिए अवश्य आऊँगा।"

शीरीं गई तो तीनों उठ खड़े हुए। नरेन्द्र ने कमरे को ताला लगाया तथा मुन्शीजी और भैया के साथ चल पड़ा।

टैक्सी में बैठ नरेन्द्र ने पहला प्रश्न यही किया, "माँ ने घर की बनी मिठाई भिजवाई है या नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्शीजी ने झूठ बोल दिया, "वे तो दे रही थीं। मगर मैंने ही यह कहकर लाने से न कर दी थी कि दिल्ली की बनी मिठाई के सम्मुख उनके लड्डू स्वादिष्ट नहीं लगेंगे।

"इस पर वे कहने लगीं कि 'नरेन्द्र जब यहाँ आता है तो मेरे हाथ की बनी मिठाई बहुत पसन्द करता है।' इस पर मैंने कह दिया, 'महोना की बात दूसरी है और दिल्ली की दूसरी। जहाँ कोई पेड़ नहीं होता वहाँ एरण्ड ही प्रधान होता है।'

"इस पर उन्होंने मुझे १०० रु० दिया है और कहा है कि तुमको मिठाई खाने के लिए देता आऊँ।"

"एक सौ रुपया! एकदम मिठाई खाने के लिए!" नरेन्द्र ने हैरानी प्रकट करते हुए पूछा।

"नहीं, एकदम नहीं। यह तुम अपने पास रखो और जब तक यह चले नित्य आवश्यकता एवं इच्छानुसार लेकर खाते रहो। अभिप्राय यह कि कम-से-कम एक वर्ष तक तो माँ का स्मरण रख ही सकोगे। तब तक यदि उनके चित्त में स्नेह का ज्वार आया तो वे और रुपया मिठाई के लिए भेज देंगी।"

"तब तो ठीक है मुन्शीजी। आप दे जाइये और मैं माँजी के मन में स्नेह के दूसरे ज्वार उठने की प्रतीक्षा करूँगा। पर भैया! तुम क्या संदेश लाये हो!"

"माँजी का संदेश तो मुन्शीजी लाये हैं। मैं राधा का सन्देश लाया हूँ।"

"तो भाभीजी भी मुझे स्मरण करती हैं!"

"हाँ, वे मुझे कोसती रहती हैं कि मैंने तुम्हारी बाँह पकड़ कर तुम्हें बलपूर्वक मोटर से नीचे क्यों नहीं उतार लिया। क्योंकि तुमको सीता के साथ नहीं जाने देना चाहिये था। उसका विचार है कि सीता का साया तुम्हारे ऊपर शुभ नहीं हो सकता।"

"और भैया। तुम्हारा क्या विचार है!"

"मैं तो राधा को भ्रम में फँसा हुआ समझता था परन्तु तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कमरे में उस छोकरी को बैठे देख मुझे उसकी बात सत्य लगने लगी है।"

"उस छोकरी में क्या देखा है आपने !"

"यह अब टैक्सी में बैठे हुए नहीं, होटल में चाय पीते हुए भी नहीं बताऊँगा। हाँ, एकान्त में बैठकर अपने अन्तरात्मा को साक्षी रख कर सुनाना चाहता हूँ। इसलिए अपने होटल के कमरे में चल कर बता सकता हूँ।"

'तो उस भली लड़की को दी जाने वाली गालियाँ सुनने के लिए आपके होटल की यात्रा करनी पड़ेगी ?"

"गालियाँ तो मैं दूँगा नहीं। वह लड़की है भी नहीं, वह औरत है। हाँ, उसके चरित्र की बात जानना चाहते हो तो मेरे साथ चलो। इस पर भी मैं तुम्हें इसके लिए विवश नहीं करता।"

"देखो भैया, आप बड़े हैं। मैं आपका मान करता हूँ। इससे आप यदि मुझसे कुछ कहेंगे तो ध्यानपूर्वक सुनूंगा। परन्तु एक अपरिचित लड़की के विषय में काल्पनिक लाँछन तो आप जैसे बुद्धिमानों के लिए उचित नहीं।"

इस पर मुन्शीजी ने कह दिया, "ठीक है भूपेन्द्र। बिना प्रमाण के कुछ कहना तो शोभा नहीं देता।"

"मुंशीजी, एक बात जो कमरे में प्रवेश होते ही मैंने देखी थी उसे प्रमाण के रूप में दूँगा। यह तो नरेन्द्र बतायेगा कि वह बुद्धू बन रहा है अथवा वह तथ्य जो कि मैंने देखा मेरी बात का समर्थन कर रहा है।"

"तो भैया, कहाँ बात करोगे ?"

"किसी एकान्त स्थान पर बैठ कर। मुझे इस नगर में अपने होटल के कमरे के अतिरिक्त अन्य किसी एकान्त स्थान का पता नहीं।"

नरेन्द्र और मुन्शी रामदयाल टुकुर-टुकुर भूप का मुख देखते रह गये। इस पर भूप ने स्वयं ही बात बदल दी। मुन्शीजी, हमें वहीं चाय के लिए चलना चाहिए जहाँ आपने कल इन्सपेक्टर को चाय पिलाई थी।" वह बोला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह।" नरेन्द्र के मुख से निकल गया। उसने कहा, "मुंशीजी, आपने भैया को बिगाड़ दिया लगता है।"

"क्यों ? वह कोई वेश्यागार है क्या ?" भूपेन्द्र ने पूछा।

"नहीं वेश्यागार तो नहीं। हाँ, बहुत मँहगा स्थान है। महोना के किसान के लिए 'गेलार्ड' तो नरक का द्वार होगा।"

"हाँ, नरक का द्वार तो है।" मुंशीजी ने कह दिया, "इस विचार से कि कल तीन आदमियों की चाय पर इक्कीस रुपये खर्च हो गये थे। परन्तु कल तो हमें किसी को नरक में धकेलना था। आज तो भूप इस विचार से कह रहा है कि तुमको भी विदित हो जाय कि वह भी रुपये नाली में फेंकने की हिम्मत रखता है। उसकी जेब में भी इतना कुछ है। परन्तु मैं समझता हूँ कि तुम्हें इतनी-सी बात बताने के लिए हम उस नरक-द्वार पर नहीं जाएँगे। मैं तुम्हें वैंजर में ले जाना चाहता हूँ।"

"खैर कुछ तो आपको भैया से अधिक समझ है।"

तीनों हँसने लगे।

वैंजर पहुँच उन्होंने टैक्सी छोड़ दी और ऊपर चढ़ गये। एक कोने में बैठ चाय का आर्डर दे दिया गया और पुनः बात होने लगी। इस बार न तो नरेन्द्र ने और न ही भूप ने शीरीं के विषय में कोई बात की। बात सीता के विषय में चल पड़ी। इस बार भी बात भूपेन्द्र ने ही आरम्भ की। उसने पूछा, "क्या सीता जी निर्वाचन लड़ रही हैं ?"

"हाँ, तो भैया मेरी उस लड़की से बात-चीत का अर्थ समझ गये हैं ?"

"हाँ, आज तो देश-भर में आगामी निर्वाचनों की चर्चा है। क्या वे बम्बई जाकर निर्वाचन लड़ेंगी ?"

"हाँ, उनको कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से नॉर्दर्न ज़ोन के एक क्षेत्र में खड़े होने का टिकट मिल गया है। वे अभी से उस क्षेत्र में जाने का विचार कर रही हैं और अपना कार्य आरम्भ कर रही हैं।"

"मैंने तो सुना है कि सुरेन्द्र महोना क्षेत्र से खड़ा हो रहा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका अभी निश्चय नहीं हुआ। हाई कमांड मोल-तोल कर रहा है। भैया यत्न कर रहे हैं कि उन्हें पुराना क्षेत्र ही मिले। परन्तु हाई कमांड का विचार उनके लिए क्षेत्र बदलने का है।"

"तो पति-पत्नी दोनों लोक सभा के लिए खड़े होंगे ?"

"क्या हानि है ? देखो भैया, अब तो व्यापार में भी पति-पत्नी दोनों लग रहे हैं। यहाँ दिल्ली में तो सहस्रों दम्पती हैं, जो दोनों नौकरी करते हैं। पति-पत्नी दफ्तरों में जाते है, वेतन कमाते हैं और फिर इकट्ठे उसका भोग करते हैं।"

"और बाल-बच्चे ?"

"कइयों के माँ-बाप हैं और वे अपने नाती-पोतों की देख-रेख करते हैं। कुछ एक ऐसे भी हैं जो अपने बच्चों को पड़ोसियों के पास अथवा नौकरों की देख-रेख में छोड़ आते हैं। एक-दो उदाहरण ऐसे भी सुनने में आये हैं कि वे अपने बच्चों को घर में ताला लगा कर आ जाते हैं। उनके दिन-भर के खाने-पीने को वहाँ छोड़ आते हैं।"

"परन्तु नरेन्द्र यह लोक सभा की सदस्यता न तो कोई उद्योग-धंधा है, न ही नौकरी। इसमें यदि एक ही परिवार के, विशेष रूप में पति-पत्नी; लगें तो यह परिवारों की 'मॉनोपोली' नहीं हो जायेगी क्या ?" मुंशीजी ने प्रश्न किया।

"यह तो होता ही है। राजनीति भी एक व्यवसाय है। देखिए, जवाहरलाल नेहरू प्रधान मंत्री हैं, तो उनके परिवार के प्रायः सब-के-सब सदस्य किसी-न-किसी राजनीतिकसत्ता-सम्पन्न स्थान पर आसीन हैं। अन्य गवर्नर, मन्त्री और लोक-सभा के सदस्य भी यही कर रहे हैं।" नरेन्द्र ने आगे कहा, "जैसे एक बिसाती की दुकान वाला अपने लड़के को बिसाती की ही दुकान करवाना चाहता है। वैसे ही एक राजनीतिक जीव अपने बाल-बच्चों को इसी धंधे में ले जाना चाहता है।"

"तो यह धंधा है ?" मुंशीजी ने फिर शंका प्रकट की।

"बिल्कुल, मुंशीजी ! सब लोग इसमें इसी अर्थ आते हैं कि उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको [illegible] है । एक डॉक्टर अपने लड़के को डॉक्टर बनाना चाहता है । लड़के के लिए भी पिता का व्यवसाय करना सुगम होता है । इसी प्रकार लोक-सभा के सदस्य अपनी सदस्यता छोड़ना नहीं चाहते और अपने परिवार के लोग इसमें घुसेड़ना चाहते हैं ।''

''मुंशीजी, एक बात और है ! जैसे बिड़ला, डालमिया, टाटा आदि बड़े-बड़े उद्योगपति अपने चारों ओर अनेकानेक कम्पनियों का जाल खड़ा कर अपने को सुरक्षित करते जाते हैं, वैसे ही इस लोक-तन्त्र में मंत्रीगण अपने मित्रों, परिचितों और सम्बन्धियों को टिकट दिलवा, लोक-सभा में लाकर अपनी स्थिति को सुरक्षित कर रहे हैं ।''

''आजकल सत्ताधीश दल में लोक-सभा के लिए टिकट दिये जा रहे हैं और इसलिए कांग्रेस के उच्चकोटि के नेता एवं मंत्रीगण अपने साथियों और समर्थकों को धड़ाधड़ टिकट दिलवा रहे हैं । जिस किसी को टिकट लेना हो, वह किसी मंत्री द्वारा यत्न करे तो पा सकता है । मंत्री की सिफारिश के साथ धन, क्षेत्र में जन और जनता को उल्लू बनाने की क्षमता अर्थात् व्याख्यान देने की योग्यता भी गिनती में आती है । परन्तु इन सब के होते हुए भी सब टिकट लेने वालों को इलैक्शन बोर्ड तक पहुँचने के लिए किसी-न-किसी मंत्री का समर्थन प्राप्त होना आवश्यक है । इस प्रकार लोक-सभा के दलों में उपदल बन रहे हैं ।''

इस पर भूपेन्द्र ने कह दिया, ''नरेन्द्र तो बहुत समझदार हो गया है ।''

''हाँ भैया ! नई दिल्ली के वायुमंडल में यह सूझ-बूझ भरी पड़ी है । जो यहाँ आँखें और कान खोल कर रहता है, वह इन सब बातों को जान सकता है ।

''मैं भी तो परीक्षा पास करने के पश्चात् अपने हाथ रँगने की बात सोचता हूँ । मुझे भी पहले लोक-सभा की सदस्यता, फिर कोई मंत्री-पद और फिर कोई मंत्री से भी ऊँचा पद प्राप्त करना है और तदनन्तर लाखों पति के पद पर पहुँचने की मेरी अभिलाषा है ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
[illegible] तुम्हारी दृष्टि है ?"

"सुरेन्द्र भैया प्रधान मन्त्री के गुट के सदस्य हैं। वे दूसरे-तीसरे उनकी हाज़िरी देते रहते हैं। प्रधान मन्त्री जी के पास तो बहुत समय होता नहीं, इस कारण उनकी दृष्टि में आते रहना चाहिए और कांग्रेस की संसदीय सभा में पंडितजी का समर्थन करते रहना चाहिए। सुरेन्द्र इसी नीति पर चल रहे हैं। मेरा विचार भैया की पूँछ पकड़ वैतरणी पार करने का है।"

: ३ :

होटल इण्डिया के कमरे में बैठे हुए भूपेन्द्र अपने अनुभव की बात नरेन्द्र को बता रहा था। मुंशी रामदयाल आराम कुर्सी पर बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था।

भूपेन्द्र ने बताया, "राधा को संदेह हो गया था कि वह चौथे बच्चे की माँ बनने वाली है। इस कारण उसने गाँव के मैटर्निटी सैंटर में जाकर दिखाया। डॉक्टराइन ने बताया कि कुछ नहीं है। इस पर राधा ने कहा कि वह अब और बच्चे नहीं चाहती।

"उसकी इच्छा को सुन डॉक्टराइन ने नुस्खा लिख दिया। समय निकाल कर मैं वह नुस्खा बनवाने ग्वालियर पहुँच गया। मेरा विचार था कि किसी प्रकार की गोलियाँ होंगी जो राधा को खानी पड़ेंगी। परन्तु जब मैंने दवाई की दुकान पर वह नुस्खा दिखाया तो दुकानदार ने मुझे एक डिब्बे में कुछ पैकेट दे दिए।

"मैंने दुकानदार से पूछा, 'यह क्या है ?" तो उसने मुझे एक पैकेट खोलकर दिखाया। उसमें रबड़ की एक थैली थी। उसने मुझे उसका प्रयोग समझा दिया।

"दुकानदार से उनके प्रयोग की विधि सुन मुझे बहुत लज्जा आई और जब घर पहुँच मैंने राधा को वह सब बताया तो उसने उनके प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करने से बिल्कुल इंकार कर दिया। ये पैकेट मेरे पास अब भी रखे हैं। आज जब मैं तुम्हारे कमरे में दाखिल हुआ था तो वहाँ बैठी लड़की ने अपने थैले में से रूमाल निकाल अपना मुख पोंछा था और बालों को साफ किया था। उसके रूमाल के साथ उसके बैग में से वैसा ही एक पैकेट निकल कर उसकी कुर्सी की बगल में गिर पड़ा था और जब हम वहाँ से चलने लगे थे तो वह वहीं पर कुर्सी के समीप फर्श पर पड़ा था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो नरेन्द्र! वह कुंवारी लड़कियों के बैग में रहने वाली वस्तु नहीं है। साथ ही वह स्त्रियों के प्रयोग की भी नहीं। इसलिए मैंने कहा था कि वह लड़की नहीं, एक विवाहित स्त्री है। विवाह विधिवत् हुआ है अथवा अवैध ढंग से, मैं नहीं जानता। इस पर भी इतना समझ लो कि उस स्त्री का तुम्हारे साथ विधिवत् विवाह नहीं हुआ और वह तुमसे हँसी-ठट्ठा करती है, यह हमने कमरे के बाहर से ही जान लिया था। अब बताओ क्या कहते हो?"

इस पर नरेन्द्र गम्भीर हो विचार करने लगा। मुंशी रामदयाल मुस्कराता हुआ नरेन्द्र के मुख की बदलती हालत को देखने लगा। भूपेन्द्र ने कह दिया, "नरेन्द्र, मैं तुमको कुछ कहने अथवा मना करने वहाँ नहीं गया था। राधा सदा यह कहा करती थी कि नरेन्द्र को सीता के काले साये से बचाना हम बड़ों का काम है। मुझे इस विषय में निश्चय नहीं होता था कि उसका साया काला है अथवा सफेद। परन्तु मेरे मन की प्रतिक्रिया यह है कि राधा हम सबसे अधिक सूझबूझ वाली है।"

अब नरेन्द्र बोला, "भैया! मैं सौगन्धपूर्वक सच-सच कहता हूँ कि मुझे सीता अथवा शीरीं के विषय में ऐसा कुछ ज्ञात नहीं जिसमें मैं उनके चरित्र पर सन्देह कर सकूँ। आपने एक प्रमाण दिया है। वह सचमुच बहुत ज़बरदस्त है। मैं यहाँ से जाते ही कमरे में उस वस्तु को देखूँगा और फिर उसे शीरीं को वापस करते हुए उसकी सफ़ाई मागूँगा।

"भैया! मैं एक बात बताता हूँ, मेरा इस लड़की से पढ़ाई के उपरान्त विवाह करने का विचार है। परन्तु अब बिना उसकी संतोष-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रदर्शित हुई तो मैं विवाह की बात स्थगित रखूँगा।

"जहाँ तक भाभी सीता की बात है। वह कुन्दन की भाँति पवित्र और शुद्ध है। आप विश्वास जानो। मैं जो कुछ जानता हूँ सच्चे हृदय से कहता हूँ।"

मुंशी रामदयाल हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "भूप! मैं तुमको अपने लड़कों से कम अक्ल वाला समझा करता था। मेरा यह कहना था कि धनी बाप का बेटा होने से लोग तुम्हारी प्रशंसा करते रहते हैं। परन्तु आज तुम्हारी युक्तियुक्त बात सुन कर और तुम्हारी निरीक्षण-शक्ति देखकर तो विश्वास हो गया है कि तुम सैकड़ों में नहीं, सहस्रों में एक हो।

"और देखो नरेन्द्र! इस औरत के पंजे में मत फँसना। औरतें रोकर, आँखों में आँसू भर कर, सत्य को झूठ और झूठ को सत्य, सिद्ध करने की क्षमता रखती हैं। यदि भूप की देखी वस्तु वहाँ रखी है तो जाओ उससे कह दो कि तुम्हारे कमरे में वह कदम न रखे। उससे सफ़ाई लेने की आवश्यकता नहीं। तुम्हारे विवाह के लिए हम प्रबन्ध कर देंगे। कहो तो राधा की छोटी बहन से पक्का कर दूँ।

"राधा के विवाह के समय तो मेरी आर्थिक स्थिति दुर्बल थी। मैंने एक पैसा भी दहेज में नहीं दिया था। यदि तुम यह रिश्ता स्वीकार करो तो राधा के समय का घाटा अब पूरा कर दूंगा।"

इस पर तीनों हँसने लगे। नरेन्द्र ने कह दिया, "मुंशीजी! मैंने इस लड़की को विवाह का वचन दे रखा है। उस वचन को तोड़ने का कोई प्रबल कारण होना चाहिए। बिना प्रबल कारण के मैं पीछे नहीं हटूँगा। यदि उसकी सफ़ाई पर विश्वास न आया तो मैं माँ को पत्र लिख दूँगा और आप राधा की बहन के भूषण-वस्त्र बनवाने आरम्भ कर दीजिएगा। वैसे मैं समझता हूँ कि उसके पास उस वस्तु की अवश्य कुछ-न-कुछ सफ़ाई होगी।"

"अच्छी बात है। रमणी का विवाह अभी दो वर्ष तक करने का विचार है। वह भी पढ़ रही है। पढ़ाई समाप्त कर लेगी तब ही विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकेगा। तब तक तुमको इसके चरित्र का पूरा विवरण मिल जायगा। दहेज की रकम सदा तैयार रहती है। ईश्वर की ओर सरकार की कृपा है कि रुपया तो अब हवा में उड़ता फिरता है। पकड़ने वाला हो तो सौ-सौ के नोट तो टिड्डियों की भाँति पकड़े जा सकते हैं।" मुंशी रामदयाल ने उत्तर दिया।

नरेन्द्र भोजन से पूर्व ही होस्टल में लौट आया। बैरे को खाना कमरे में लाने के लिए कह वह अपने कमरे में पहुँच उस कुर्सी के समीप फर्श को देखने लगा जहाँ शीरीं बैठी थी। सचमुच वहाँ एक 'फ्रैन्च लैदर' गिरा पड़ा था।

वह उसको हाथ में लिए कितनी ही देर तक चिन्ता में डूबा खड़ा रहा। उसने निश्चय किया कि अगले दिन वह इसे मिसेज़ अली के सामने शीरीं को लौटा देगा। अभी वह इस विषय में योजना बना ही रहा था कि बैरा खाना ले आया। उसने 'फ्रैन्च लैदर' को तुरन्त जेब में रख छिपा लिया और खाना मेज़ पर रखवा, खाने लगा।

बैरे ने मुस्कराते हुए कहा, "बाबू साहब! वह लड़की जो यहाँ अक्सर आया करती है, आपके जाने के बाद दो बार आ चुकी है और आपके विषय में पूछ गयी है।"

नरेन्द्र ने अपने मन के भावों को छिपाने के लिए कह दिया, "आज दही है क्या?"

"है साहब!"

"तो एक प्लेट ले आओ।"

बैरा गया तो वह फिर निश्चिन्त हो खाने लगा। बैरे के लौटने से पूर्व ही शीरीं आ गयी। नरेन्द्र ने विस्मय में उसकी ओर देखते हुए पूछ लिया, "शीरीं, क्या बात है? बैरा कह रहा था कि तुम मेरे पीछे भी आई थीं?"

"हाँ!" शीरीं ने उसी कुर्सी पर बैठते हुए कहा, जिस पर वह भूप और मुंशीजी के कमरे में आने के समय बैठी थी। नरेन्द्र उस तरफ पीठ किये हुए बैठा भोजन कर रहा था। शीरीं ने कहा, "एक बात कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भूल गयी थी । ये कौन लोग थे ? आपने मेरा परिचय तो उनको दे दिया था, परन्तु उनका परिचय नहीं कराया ।"

"उनमें एक तो मेरे सबसे बड़े भाई थे । नाम है भूपेन्द्र और दूसरे उनके श्वशुर थे । वे हैं मुन्शी रामदयाल । वे हैं तो भैया के ससुर परन्तु हम सब और गाँव के लोग भी उनको मुन्शीजी कहकर सम्बोधन करते हैं । यहाँ तक कि उनके लड़के-लड़कियाँ भी उनको मुन्शीजी ही कहकर पुकारते हैं । किसी ज़माने में वे महाराज ग्वालियर के यहाँ लगान वसूली का काम किया करते थे । तभी से वे मुन्शीजी कहलाते हैं ।"

नरेन्द्र थोड़ा घूमकर बातें कर रहा था और खाना भी खा रहा था । इसी समय बैरा दही ले आया । जब नरेन्द्र उसकी तरफ मुड़ पूछने लगा, "ताजी है न ?" तो शीरीं अपनी कुर्सी के चारों ओर भूमि पर दृष्टि दौड़ा रही थी ।

नरेन्द्र ने उसको भूमि पर कुछ ढूँढते देखा तो समझ गया कि वह क्या देख रही है । इस पर भी उसने बैरे के सामने बात नहीं चलाई । उसने मुंशीजी का परिचय देते हुए कहा, "रियासत के दिनों में तो मुंशीजी तीस रुपया महीना वेतन पाते थे । रियासत गयी तो मुन्शीजी के भूखों मर जाने की आशंका की जाने लगी थी । फिर न जाने क्या हुआ कि आपको ग्वालियर में मोटर ट्रकों के अड्डे के पास एक पैट्रोल पम्प मिल गया और अब हालत यह है कि 'गेलार्ड' में चाय पीने लगे हैं ।"

"ओह ! ये कांग्रेसी हैं क्या ?"

"वे कुछ भी नहीं हैं । आजकल तो पैसे वाले हैं और बस ।"

"जब तक पंडितजी की यह मिक्स्ड इकौनोमी चलेगी तब तक यह चलेगा ही । एक ओर कुछ लोग द्रुत गति से धनी होते जायेंगे और दूसरी ओर लोग निर्धन होंगे ही ।" शीरीं बोली ।

"पर सुरेन्द्र भैया तो यह बता रहे थे कि मास्को में भी कुछ ऐसी ही स्थिति है । एक ओर तो बड़े-बड़े होटलों में दावतें खाने वाले लोग हैं । और क्रेमिलिन से आधे फर्लांग पर ही 'स्लम' (गन्दी बस्तियाँ) हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें रहने वालों के कमरों में इतने पतले पार्टिशन हैं कि एक कमरे में दम्पती के चुम्बन की ध्वनि दूसरे कमरे में सुनाई देती है।

"भैया का कहना था कि होटलों में बोल्शेविक पार्टी के उच्च अधिकारी रहते हैं और स्लम में वे जो पार्टी में सम्मिलित नहीं अथवा पार्टी में किसी प्रकार का प्रभाव नहीं रखते।

"यहाँ और रूस में अन्तर यह है कि यहाँ धनी वे हो रहे हैं, जो कांग्रेस में सम्मिलित हैं अथवा कांग्रेस का समर्थन करते हैं और वहाँ धनी वे हैं जो बोल्शेविक के उच्च अधिकारी हैं अथवा पार्टी का समर्थन प्राप्त किए हुए हैं।"

"यह तो एक बात ही हुई।" शीरीं अभी भी कुर्सी के चारों ओर देख रही थी।

नरेन्द्र ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "क्या देख रही हो यहाँ ?"

"एक वस्तु गिर गयी है। मैंने अपना बैग यहाँ बैठे हुए ही खोला था। यहाँ से जाने के पश्चात् मैंने मार्ग में पुनः बैग खोला तो वह वस्तु इसमें नहीं थी। इस कारण उसको देखने यहाँ आयी थी और अब उसको ढूंढ रही हूँ।"

"क्या कोई कीमती अँगूठी इत्यादि थी ?" नरेन्द्र ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"नहीं कुछ कीमती तो नहीं। हाँ, एक आवश्यक वस्तु तो अवश्य थी। मैं जब भी तुमसे मिलने आती हूँ उसे अपने पास रखती हूँ।"

"तो कोई तावीज इत्यादि है क्या जो मेरी रक्षा के लिए रखती हो ?"

"अब वह यहाँ नहीं दीखती, या तो कहीं अन्यत्र गिर पड़ी है या कदाचित् घर से लायी ही न होऊँ।"

"हो सकता है, यहाँ गिरी होती तो यहीं होती। तुम्हारे जाने के तुरन्त पीछे हम कमरे को ताला लगा चले गये थे और तुम्हारे आने के दो-चार मिनट पूर्व ही मैं आया था। बैरा खाना लाया ही था कि तुम आ गयी थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"परन्तु था क्या ?" नरेन्द्र खाना समाप्त कर उठ खड़ा हुआ था।

फिर वह हाथ धोने गुसलखाने में चला गया था। वहाँ जो उसने चोरी-चोरी पुनः शीरीं की ओर देखा तो पाया कि वह परेशानी से पुनः कुर्सी के चारों ओर और नीचे देख देख रही थी। नरेन्द्र हाथ धो-पोंछ कमरे में आया तो शीरीं कुर्सी से उठकर जाने के लिए तैयार खड़ी दिखाई दी। इस पर भी वह चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देख रही थी।

नरेन्द्र ने पूछ लिया, "यदि वह मेरी रक्षा का तावीज़ ही था तब तो चिन्ता की बात नहीं। यहीं कहीं होगा तो तब भी मेरी रक्षा ही किया करेगा।"

शीरीं उदास मन कमरे से बाहर निकलती हुई बोली, "बहुत विचित्र है। अच्छा बहुत देर हो रही है, मैं अब चलती हूँ।"

नरेन्द्र ने उसको जाते देखा, तो आवाज़ दे दी, "शीरीं !"

शीरीं रुक गयी। नरेन्द्र ने कहा, "मैं समझता हूँ कि तुम्हारी खोई वस्तु मिल गयी है। वह देखो !" उसने कमरे के कोने की ओर उँगली से संकेत कर दिया। शीरीं उस तरफ लपकी। उसकी वस्तु वहाँ नहीं थी। वह घूमकर बोली, "तो मुझसे···।" परन्तु नरेन्द्र उसकी वस्तु जेब से निकाल हाथ में पकड़े हुए था। उसने कहा, "यह है न ?"

शीरीं ने लपक कर 'फ्रैंच लेदर' उसके हाथ से छीन लिया और अपने थैले में रख 'गुड नाइट' कह कमरे से बाहर निकल गयी। नरेन्द्र भौंचक्का हो मुख देखता रह गया।

नरेन्द्र तो शीरीं से उस वस्तु को अपने पास रखने और फिर उसके लिए इतना परेशान होने की उससे सफ़ाई लेना चाहता था। परन्तु वह इतनी जल्दी भागी मानो उसे डाक-गाड़ी पकड़नी थी और उसके छूटने का समय हो गया हो।

नरेन्द्र इस सबका अर्थ समझने में लीन बैठा था कि बैरा बर्तन उठाने आया। वह शीरीं को वहाँ न देख विस्मय से कमरे में चारों ओर देखने लगा। नरेन्द्र को लगा कि बैरा यह देख रहा था कि उसने उस लड़की को कहीं छुपा तो नहीं रखा। बैरे के मन के इस संशय का अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मान कर नरेन्द्र लज्जा अनुभव करने लगा। बर्तन उठा बैरे ने जाने से पूर्व चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो नरेन्द्र ने पूछ लिया, "तुम भी किसी वस्तु को ढूंढ रहे हो ?"

"नहीं साहब, कुछ नहीं।" और वह कमरे से निकल गया।

नरेन्द्र को शीरीं का विचित्र व्यवहार अभी समझ में नहीं आया था। बैरे के संदेह पर तो उसकी परेशानी और भी बढ़ गई।

वह भूपेन्द्र के इस संदेह-भरे वाक्य पर कि "वह अविवाहित तो नहीं। हाँ, विवाह विधिवत् हुआ है अथवा अवैधानिक, कहा नहीं जा सकता।" विचार करता हुआ कल्पना के घोड़े दौड़ा रहा था। उसे कुछ ऐसा लगा कि शीरीं कहीं विवाह करने गयी है। इस पर उसके मन में घोर ग्लानि उत्पन्न हो गई।

रात-भर वह अपने मन में अनेकानेक दुष्कल्पनाएँ करता रहा। बहुत रात गये वह सो सका।

: ४ :

नरेन्द्र बहुत देरी से उठा। उसकी नींद खुली थी, चौकीदार के द्वार खटखटाने पर। उसने उठकर द्वार खोला तो चौकीदार ने कहा, "साहब आपका टेलीफोन पाँचवीं बार आया है। पहले तो मैंने जगाना उचित नहीं समझा, परन्तु अब टेलीफोन करने वाली ने कहा है, "जगा दो। बहुत ज़रूरी काम है।"

"टेलीफोन करने वाली ? कौन है वह ?" नरेन्द्र ने पलंग के समीप रखे सलीपर पहनते हुए पूछा।

"सीता नाम बताया है।"

"ओह ! आता हूँ।"

सितम्बर मास था और हवा में कुछ सर्दी थी। इस कारण नरेन्द्र ने अपना नाइट गाउन पहना और चौकीदार के पीछे-पीछे होस्टल के कार्यालय में जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ भाभी, क्या बात है?" नरेन्द्र ने टेलीफोन का चोंगा उठा, कान से लगाते हुऐ पूछा।

"नरेन्द्र! बहुत देर तक सोया करते हो?" सीता ने पूछा।

"रोज़ नहीं भाभी, आज ही ऐसी बात हुई है। कल रात सिनेमा देखने चला गया था। आने पर देरी तक नींद नहीं आयी।"

"अच्छा सुनो। मैं आज सायंकाल की गाड़ी से बम्बई जा रही हूँ। दो सीटें पठानकोट एक्सप्रैस में रिजर्व करवा ली हैं। एक अपने लिए और दूसरी तुम्हारे लिए। रात वहाँ से टेलीफोन आया था कि फोर्ट एरिया में एक मकान जिसमें छः कमरे, टट्टी, गुसलखाना और रसोईघर है, चार सौ रुपया मासिक भाड़े पर ले लिया गया है। अब मुझे वहाँ तुरन्त पहुँच कार्यालय खोल देना है।

"ट्रेड यूनियन के मन्त्री खड़के उस कार्यालय का उद्घाटन करेंगे। मैंने टेलीफोन पर उद्घाटन कार्यालय परसों सायंकाल के लिए पक्का कर दिया है।"

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Ha
157322

"अर्थात् आज अवश्य चलना चाहिए?"

"हाँ ऽऽ।"

"तो स्टेशन पर पहुँच जाऊंगा। किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो लेता आऊँ?"

"उससे पहले नहीं आ सकोगे?"

"कुछ आवश्यक कार्य हैं। जाने से पहले उसको पूरा करना होगा। सो अभी से भाग-दौड़ करनी आरम्भ कर दूँगा। भाभी, शीरीं का क्या हुआ?"

"वह मेरे साथ बम्बई में रहेगी। परन्तु वह दो-तीन दिन पीछे वहाँ पहुँच सकेगी। मिसेज़ अली को कुछ काम है जिसे समाप्त करने में इतना समय लग जायेगा।"

टेलीफोन बन्द हुआ तो नरेन्द्र कालेज जाने की तैयारी करने लगा। कालेज जाते समय वह शीरीं और भाभी दोनों को भूल गया।

कालेज में पढ़ाई समाप्त कर वह एक सप्ताह की छुट्टी का प्रार्थना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पत्र ले ट्यूटर के पास जा पहुंचा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्यूटर ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो नरेन्द्र ?"

"जी अपने गाँव में। माँ का संदेश आया है कि कुछ दिन के लिए पहुँच जाऊँ, कुछ पारिवारिक कार्य है।"

"छुट्टी तो मिल जायेगी। तुम्हारे लैक्चर पूरे हो चुके हैं। इस पर भी परीक्षा के समीप इधर-उधर नहीं भागना चाहिए।"

"सर ! माँ ने बहुत आग्रह किया है। इस बार माँ को कह आऊँगा कि मैं दिसम्बर की छुट्टियों में भी वहां नहीं जा सकूंगा।"

छुट्टी मिली तो वह सीधा होस्टल में पहुँचा और यात्रा के लिए सामान बाँधने लगा। समान तैयार कर उसने चाय मँगवाई। जब बैरा चाय देने आया तो नरेन्द्र ने पूछा, "वह रात वाली लड़की फिर आई थी क्या ?"

"नहीं साहब !"

नरेन्द्र ने चाय समाप्त की तो उसके मन में विचार आया कि लगे हाथ शीरीं से बात करता चले। उसने कमरे को ताला लगाया और कार्यालय में मिसेज़ अली के मकान पर टेलीफोन करने लगा। टेलीफोन की घंटी बजती रही पर चोंगा किसी ने नहीं उठाया। इसका मतलब यह था कि घर में कोई नहीं है। उस घर में नौकरों को टेलीफोन सुनने की अनुमति नहीं थी।

इससे नरेन्द्र को निराशा हुई। वह होस्टल से कनाट सरकस की तरफ निकल पड़ा। वह सोच रहा था कि शायद वे दोनों वहीं कहीं घूमती मिल जाएँ। घंटा-भर घूमकर वह लौट आया। होस्टल में पहुँच उसने एक बार पुनः मिसेज़ अली के घर टेलीफोन किया। इस बार भी वहाँ से कोई उत्तर नहीं आया तो वह अपने कमरे में जा एक पुस्तक पढ़ने लगा।

गाड़ी रात के दस बजे छूटती थी। उसने भोजन किया। पन्द्रह मिनट तक पलंग पर लेटा और फिर टैक्सी मंगवा स्टेशन पर जा पहुँचा। सीता मिसेज़ अली के साथ प्लेटफार्म पर बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रही थी। पार्टी के एक-दो कार्यकर्त्ता वहाँ खड़े थे। नरेन्द्र को कुली के
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सिर पर सामान उठवाये आते देख मिसेज़ अली ने कहा, "लो राजा साहब आ गये।"

नरेन्द्र ने यह सुन लिया था। उसने मुस्कराते हुए सिर हिलाकर उसके इस व्यंग को स्वीकार किया और डिब्बे में अपना सामान रखवाने चला गया। एक कार्यकर्त्ता उसको जगह बताने साथ चल पड़ा था।

"दादा! बहुत देर कर दी?"

"गाड़ी तो नहीं छूटी। छूटने का समय भी नहीं हुआ। फिर देर कैसे हो गयी।"

गाड़ी के अतिरिक्त मिसेज़ अली को आपसे कुछ काम मालूम होता है।"

"अच्छा?" नरेन्द्र ने कुली को दाम देते हुए कहा। तब तो ज़रूर देर हो गयी है।"

"वह डिब्बे से बाहर निकला तो सीता और मिसेज़ अली उसकी तरफ ही आती दिखाई दीं। उसने उनके समीप पहुँच सीता से कह दिया, "भाभी, मैं तो आने ही वाला था और मैंने घड़ी टेलीफोन के दफ्तर से मिला रखी है।"

उत्तर मिसेज़ अली ने दिया, "मुझे यह सब पता नहीं था। अच्छा इधर आओ।"

मिसेज़ अली उसे एक तरफ ले जाकर पूछने लगीं, "शीरीं से तुम्हारे कैसे सम्बन्ध हैं?"

"आप यह किस लिए पूछ रही हैं? उसने मेरी कुछ शिकायत की है क्या?"

"शिकायत नहीं नरेन्द्र! वह तुम्हारी प्रशंसा के पुल बाँधती रहती है। आज मैंने जब उससे तनिक गम्भीरतापूर्वक पूछा तो वह कहने लगी कि वह तुम्हारे साथ जीवन-साथी का सम्बन्ध बनाना चाहती है। इसी कारण मैं यह पूछ रही हूँ कि तुमहरे इस विषय में क्या विचार हैं?"

"उसने मेरे विचारों के विषय में नहीं बताया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो तुम्हारे विचार कुछ भिन्न हैं ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि वही बता देती तो ठीक था।"

"और तुम बताओगे तो ठीक नहीं होगा क्या ? देखो, वह कह रही थी कि तुम उससे प्यार करते रहते हो और इसी डर के मारे कि कहीं तुम्हारा प्यार सीमा से पार न हो जाय वह अपने पास प्रौफिलैक्टिक्स का सामान तैयार रखती है।"

नरेन्द्र इस बात का अर्थ समझने के लिए भूमि की ओर देखते हुए बोला, "उसे मुझसे भय करने का कोई कारण नहीं। मैंने सीमा उल्लंघन करने का कभी यत्न नहीं किया। यत्न करने का विचार भी नहीं करता। आप उसे विश्वास दिलवा सकती हैं कि मैं पशु नहीं हूँ। मैं इन्सान हूँ और अपनी ज़िम्मेदारियों को समझता हूँ।

"मौसी, एक बात उससे और कह देना, वह यह कि इतने दिन मेरे साथ मेल-मुलाकात रखने पर भी उसे मुझ पर विश्वास नहीं तो वह मुझसे मेल-जोल बन्द कर सकती है।"

इस समय गार्ड ने सीटी बजा दी। मिसेज़ अली ने मुस्कराते हुए कहा, "अच्छी बात है। अब चलो। कब तक लौटने का विचार है ?"

"कालेज से एक सप्ताह की छुट्टी लेकर जा रहा हूँ।"

"मैंने सीता को कहा था कि तुमसे अधिक तजर्बेकार व्यक्ति उसके साथ भेजे जा सकते हैं। परन्तु उन सब के अतिरिक्त वह तुमको ले जाना आवश्यक समझती है। बात भी ठीक है। देवर-भाभी की बातें कौन जान सकता है ?"

इस समय तक नरेन्द्र डिब्बे में चढ़ सीता के पीछे खड़ा हो गया था। सीता उसको छोड़ने आये हुए लोगों को नमस्कार कहने के लिये डिब्बे के द्वार में खड़ी हो गयी थी।

गाड़ी चल पड़ी तो सीता ने द्वार बन्द कर दिया। नरेन्द्र ने सीता का होल्डाल खोल बिस्तर लगाना आरम्भ कर दिया। तभी सीता ने पूछ लिया, "यह मिसेज़ अली क्या कहना चाहती थीं तुमसे ?"

"इन लोगों का ध्यान दिन-रात 'सेक्स' की बातों पर ही लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रहता है। मैं समझता हूँ कि मेरा इनकी संगत में रहना ठीक नहीं ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या !" सीता ने मुस्कराते हुए पूछा, "तो क्या यह तुमको भी 'हुक' करना चाहती हैं ?"

"कौन, मिसेज़ अली ?" नरेन्द्र खिल-खिलाकर हँस पड़ा। "नहीं भाभी ! वह तो माँजी से भी बड़ी आयु की प्रतीत होती हैं।"

नरेन्द्र ने बात बदलने के लिये पूछा, "भाभी ! तुम्हारा गर्म शाल बाहर निकाल दूं।"

"नहीं। अब तो हम गर्मी की ओर जा रहे हैं। आधा घंटा से अधिक सर्दी नहीं रहेगी।"

अब नरेन्द्र ने ऊपर के बर्थ में अपना बिस्तर ठीक करना आरम्भ कर दिया। सीता 'टायलेट क्लोज़ेट' में चली गई। जब वह रात के सोने की पोशाक पहनकर निकली तो नरेन्द्र ऊपर के बर्थ में चढ़ बिस्तर पर लेट गया था। नरेन्द्र कुछ ऐसा अनुभव कर रहा था कि वह मिसेज़ अली, शीरीं तथा और तो और सीता से भी ऐसा व्यवहार कर रहा है, मानो कुश्ती में दाँव-पेंच खेल रहा हो। तीनों अपने मन की बात छिपा, दूसरे को चित करने की चिन्ता में हैं। इस व्यवहार की तुलना वह अपनी माता, राधा भाभी और भूपेन्द्र के व्यवहार से कर रहा था। अब भी उसे यही प्रतीत हो रहा था कि उनकी बातें पुराने ढंग की असभ्यतापूर्ण और गँवारूपन की हैं और दिल्ली के इन जीवों का ढंग सभ्यतापूर्ण एवं भली-भाँति दिखावटी। भीतर कुछ, बाहर कुछ ? मुलम्मा किया हुआ है।

आज उसे मिसेज़ अली का व्यंग 'राजा साहब आ गये' 'देवर-भाभी की बातें कौन जान सकता है ?' कुछ अखरे ज़रूर थे। उसे कुछ यह भी प्रतीत हुआ कि हो सकता है, मिसेज़ अली ने प्रोफिलैक्टिक्स की बात शीरीं द्वारा पिछले रात की घटना बताने पर ही कही हो। उसे लगा कि इस सब में अवश्य कुछ प्रयोजन था। वह दाँव-पेंच से उसे किसी बात में फंसाना चाहती थी।

वह साफ शब्दों में अपने आश्वासन देने से प्रसन्न था और समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रहा था कि उसने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। साथ ही वह सोच
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहा था कि क्या शीरीं की यह सफाई कि वह उस वस्तु को उससे डर-कर अपने पास रखे रहती है, ठीक है? उसे यह सफाई सर्वथा ओछी और बे-सिर-पैर की ही प्रतीत हुई थी।

'यदि वह मेरे लिये नहीं रखे हुई थी तो किसी और से डर के मारे रखे हुए होगी? तो क्या वह दूसरों से उतनी ही समीपता का व्यवहार रखती है, जितना कि मेरे साथ रखती है?' उसको कुछ यह समझ में आया कि शीरीं की किसी अन्य के साथ उससे अधिक घनिष्ठता होगी; तभी तो उसे इस वस्तु की आवश्यकता रही है। वह यह तो जानती ही थी कि उसके साथ रहते हुए तो उसे इस वस्तु की आवश्यकता कभी अनुभव हुई ही नहीं।

इसी प्रकार के विचार करते हुए वह सो गया। प्रातः नींद खुली तो गाड़ी झाँसी के प्लेटफार्म पर पहुँच चुकी थी। बैरा बैड-टी लेकर आया था। उसने लपक कर डिब्बे का द्वार खोला और बैरे से ट्रे लेकर भीतर रख ली। सीता भी द्वार खुलने की आवाज़ सुन उठ बैठी और बोली, "चाय बना दो।"

नरेन्द्र चाय बना रहा था तो सीता ने रात की बात पुनः आरम्भ करनी चाही। उसने पूछ लिया, "नरेन्द्र! मैं तो यह समझ रही थी कि तुम शीरीं से विवाह करोगे?"

नरेन्द्र ने चाय बनाते हुए पूछ ही लिया, "भाभी, तुम उससे मेरा विवाह उचित समझती हो क्या?"

"मैंने एक दिन तुम्हें बताया था कि यह लड़की सुन्दर-सुघड़ है और मीठा बोलती है।"

"क्या ये गुण किसी पत्नी के लिये पर्याप्त हैं?"

"तो और तुम क्या चाहते हो?"

"भैया भूप परसों मिले थे और उन्होंने शीरीं को मेरे साथ देखा था। उनको भी तुम्हारी तरह यही सन्देह हुआ था कि मैं उससे विवाह करने वाला हूँ। पर उन्होंने मुझसे कहा है कि वह पत्नी बनने के योग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं है।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो जेठजी दिल्ली आये थे ?"

"हाँ, साथ में राधा भाभी के पिता भी थे। किसी व्यापार के सिलसिले में आये मालूम होते थे।"

"तो क्या अब चले गये ?"

"नहीं। कह रहे थे कि तीन-चार दिन का काम और है।"

"पूछा था, क्या काम है ?"

"उन्होंने केवल इतना बताया है कि सरकार तीस एकड़ जोत की सीमा बाँधने वाली है और भूप ने निश्चय कर लिया है कि वह कानून के भीतर रहते हुए निर्धन नहीं होगा। इसलिये वह अपना जीवन-कार्य बदल कर व्यापार में पदार्पण करने वाला है।"

"वह तब क्या करेंगे जब कम्यूनिस्ट राज्य हो जायेगा।"

"मैंने भी यह बात कही थी। उत्तर मुंशीजी ने दिया था। उन्होंने कहा था, 'तब हम कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता बन, सुख-सुविधा और वैभव से सम्पन्न हो सकेंगे। मुंशीजी कहते थे, 'देखो नरेन्द्र ! धन, मकान, स्त्री और संतान भाग्य से मिलते हैं। जब ये वस्तुएँ भाग्य में लिखी हों, तो तुम और तुम्हारी कम्यूनिस्ट पार्टी क्या, कोई भी छीन नहीं सकता। तुम लोग तो मात्र साधन हो; भाग्य को फलीभूत करने वाले।'

"मैंने पूछा, 'मुंशी जी !' तो धनी धनी ही रहेंगे ?"

"वे कहते थे, 'यह नहीं। भाग्यवान भाग्यवान ही रहेंगे और भाग्य-हीन-भाग्यहीन ही; यह कर्मफल कोई टाल नहीं सकता।"

सीता हँस पड़ी। उसने पूछ लिया, "तो तुम भी यही समझते हो ?"

"मेरे समझने की बात कहाँ से आ गई भाभी। एक बात मैं समझता हूँ कि जब तक स्टालिन अथवा लेनिन प्रधान मंत्री रहे उनको कोई हटा नहीं सका। अब ख्रुश्चेव डींगें मारता है कि वह अन्यायी और आततायी था, परन्तु उसके जीते-जी तो कोई उसका बाल-बाँका भी नहीं कर सका। इसको भाग्य की बात कहूँ या 'फ्रीक आफ नेचर' (प्राकृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घटना), मुझको मुंशीजी की बातों में तत्त्व दिखाई देने लगा है।"

"अर्थात् स्टालिन का भाग्य-भोग समाप्त हुआ तो ख्रुश्चेव आ गया है ?"

"हाँ, जब इसका भाग्य-भोग समाप्त हो जायेगा तब कोई अन्य आ जायेगा। वह इसकी हत्या कर देगा। जैसे कहा जाता है कि इसने स्टालिन की हत्या की है।"

"तो तुम भी शीरीं से विवाह नहीं करोगे ? क्योंकि जेठजी महाराज कह गये हैं कि यह तुम्हारे भाग्य में नहीं है।"

दोनों चाय पी रहे थे। नरेन्द्र ने कहा, "यह नहीं भाभी। मैं यह समझा हूँ और यही मैंने मुंशीजी की बात के उत्तर में कहा था। यदि भाग्य में शीरीं लिखी है तो मैं फिर कैसे उसे टाल सकूँगा।"

इस पर तो सीता हँस पड़ी और पूछने लगी, "मुंशाजी ने क्या कहा ?"

"वह कहने लगे थे, 'नरेन्द्र, मैं तुमको इतना भाग्यहीन नहीं मानता कि तुम इस औरत के पल्ले पड़ो।'

"मैंने कहा, 'मुंशीजी ! यह औरत नहीं है। यह अभी कुँवारी लड़की है।' इस पर वे खिल-खिलाकर हँस पड़े और बोले, "तुम अभी बिल्कुल बच्चे हो, यह विवाहिता स्त्री है। भले ही उसका विवाह विधिवत् न हुआ हो।"

इस पर सीता गम्भीर हो गई और बात बदल कर बोली, 'मैं चाहती हूँ कि तुम एक बार तो मेरे संसदीय क्षेत्र का पूरा दौरा लगा जाओ। मैं इस सप्ताह में बीस सभाएँ क्षेत्र के भिन्न-भिन्न महल्लों और चालों में रखने वाली हूँ। उन सब सभाओं में तुमको बोलना होगा। दूसरे मैं कुछ कार्यकर्त्ता वेतन पर रखने वाली हूँ। तुम उनकी परीक्षा कर नियुक्ति कर जाना।"

"यह सब कर दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूपेन्द्र को एक पैट्रोल-पम्प महोना के बाहर बस-स्टैंड और ट्रकों के समीप तथा शिवपुरी की सड़क पर मिल गया। भूपेन्द्र को इसके लिए बीस हज़ार ज़मानत और पाँच हज़ार रुपया ऊपर खर्चा करना पड़ा। पैट्रोल भरने का पम्प और उसके लिए इमारत कम्पनी ने बनवा दी और वह कम्पनी का पाँच वर्ष का किरायेदार हो गया।

यह सब प्रबन्ध कर, भूप और मुंशीजी महोना वापस लौटे। रेल में बैठे-बैठे दोनों में नरेन्द्र के विषय में बात चल पड़ी। भूपेन्द्र ने कहा, "यदि मेरे प्रमाण देने पर भी नरेन्द्र ने उस लड़की से विवाह कर लिया तो मैं समझूँगा कि वह पढ़ा-लिखा गधा है।"

मुंशीजी ने हँसते हुए कहा, "भूप! तुम अनपढ़ विद्वान् हो। दोनों बातें अनहोनी प्रतीत होती हैं। यह इस कारण कि आज पढ़ाई के अर्थ विद्या नहीं रहे और स्कूल-कालेज में न पढ़ने के अर्थ विद्या-विहीन होना नहीं है। विद्या और अविद्या स्कूल-कालेजों में पढ़ने से भिन्न बात है। विद्या मनुष्य को अपने पूर्व जन्म के संस्कारों अथवा इस जन्म की संगत से मिलती है।"

"परन्तु मुंशीजी। मेरी संगत तो भगवतीचरण जी से है और सब लोग उनको विकृत मस्तिष्क वाला मानते हैं।"

"इसी कारण कि सब लोग संस्कारों से अविद्या-अनुगामी हैं। मैं तो कहता हूँ कि पंडित को सुरेन्द्र के विरोध में संसद की सदस्यता के लिए खड़ा हो जाना चाहिए। मैं यह उसको कहने से इसलिए डरता हूँ कि मेरा तुम लोगों से सम्बन्ध है और तुम मेरे से यह सुन नाराज़ हो जाओगे।"

"परन्तु मुंशीजी। मैं तो स्वयं उनसे कहने जा रहा हूँ कि वे खड़े हो जाएँ। सुरेन्द्र कांग्रेसी है और मैं कांग्रेस का विरोध करना चाहता हूँ।"

मुंशी रामदयाल भूपेन्द्र का मुख देखते रह गये। भूपेन्द्र ने पूछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिया, "क्या विचार कर रहे हैं मुंशीजी ?"

"तुमने एक और विद्वत्ता की बात की है। मैं इससे प्रसन्न हूँ। परन्तु राधा कहती थी कि मुझे इस विषय में दखल नहीं देना चाहिए। समधीपन के विचार से मुझे मौन रहना चाहिए।"

"परन्तु यदि वे खड़े हो गये तो मैं खुलकर उनका काम करूँगा। मेरा सुरेन्द्र से कोई विरोध नहीं। मेरा तो विरोध कांग्रेस से है। यदि सुरेन्द्र को मेरे विरोध की आवश्यकता नहीं तो उसको कांग्रेस के टिकट पर खड़ा नहीं होना चाहिए।" भूपेन्द्र बोला।

"भूप ! पहले अपनी माँ और राधा से बात कर लो। पीछे मुझको भी बुला लेना। यदि तुम कहोगे तो मैं पंडित को खड़ा होने के लिए तैयार कर दूंगा। मैं उसकी बहुत दूर तक सहायता भी कर तकता हूँ।"

"मगर वह तो हिन्दू महासभा के टिकट पर खड़े होंगे।"

"कुछ भी हो। यदि वह समाजवाद का विरोध करेगा तो मैं उसे सुरेन्द्र के विरुद्ध सफल बना कर ही साँस लूंगा। परन्तु पहले अपने माता-पिता से पूछ लो। मैं राधा की सास और ससुर को नाराज़ नहीं कर सकता।"

"अच्छी बात है। मैं पिताजी से बात करूँगा। मगर बात तो नरेन्द्र की हो रही थी। वह उस छोकरी के सम्मोहन में फँसा प्रतीत होता है।"

"मुझे तो उसके मुख के बदलते रंग देख कर ऐसा लगा कि उसको तुम्हारी बात से भारी निराशा हुई है। इससे मैं समझता हूँ कि अभी उसकी अवस्था सर्वथा निराशाजनक नहीं है। भगवान को स्वीकार हुआ तो रमणी से उसका विवाह हो जायगा।"

"तो मुंशीजी आप यह सच्च हृदय से चाहते हैं।"

"क्यों, नरेन्द्र में कुछ खराबी है क्या ?"

"केवल यह कि वह नये युग का प्राणी है। इस युग में विलक्षणता यह है कि यह जड़वादी है और इसके प्राणी जन्म और मरण को अकारण और व्यर्थ की घटना मानते हैं। वे इसमें प्राणी के सुख-वैभव के अतिरिक्त अन्य कुछ प्रयोजन नहीं मानते।" भूपेन्द्र ने उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"देखो भूप, यह विज्ञान की बात है। उस विज्ञान की, जो मैं और तुम नहीं पढ़े। इसलिए इस विषय में मैं और तुम नहीं कह सकते कि वर्तमान युग के लोग ठीक कहते हैं अथवा प्राचीन युग के लोग। मुख्य बात है मन और बुद्धि की। मन संस्कारों के अधीन क्रिया अथवा प्रतिक्रियाशील होता है। बुद्धि शिक्षा और संगति का परिणाम होती है। यदि मेरा बस चला तो मैं इसके संस्कार और शिक्षा दोनों बदल दूंगा और तब यह रमणी के लिए योग्य पति हो जायेगा।"

"कैसे बदल देंगे ? इसकी सत्रह वर्ष की शिक्षा और दिल्ली वालों से रात-दिन की संगत को आप बदल देंगे और वह भी ग्वालियर में रहते हुए।"

"यही तो भगवान के अधीन है। यदि उसको स्वीकार हुआ तो इस सबके साधन बन जाएँगे। यह तो रमणी और नरेन्द्र के भाग्याधीन है।"

इस भाग्य की बात के आगे बात नहीं चल सकी। भूपेन्द्र ने घर पहुँच कर पिता से पूछा कि भगवतीचरण उपाध्याय के सुरेन्द्र के विरोध में खड़े होने की अवस्था में उनका व्यवहार क्या होगा। भवानी प्रसाद ने कहा, "ऐसा हुआ तो सचमुच हमारे लिए अति विकट समस्या खड़ी हो जायेगी।"

"मुझे तो कुछ ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होती प्रतीत हो रही है। सुरेन्द्र को इस क्षेत्र में खड़ा होने का टिकट मिल रहा है। भगवतीचरण को हिन्दू महासभा के लोग खड़ा होने के लिए कह रहे हैं।" भूपेन्द्र बोला।

"ये हिन्दू सभा वाले भला किस लिए अपनी टाँग इसमें अड़ा रहे हैं ? कितने सदस्य भेज सकेंगे वे संसद में ? पाँच-दस चले भी गये तो क्या लाभ होगा इससे ?"

"भापा, लाभ-हानि की बात तो हिन्दू महासभा वाले जानें और कांग्रेस वाले। दोनों का परस्पर का द्वेष है। आज का नहीं, यह उस काल से है जब से कांग्रेस बनी। अथवा यह कहिए कि कांग्रेस की कुनीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की प्रतिक्रिया हिन्दू महासभा है।

"भगवतीचरण बता रहे थे कि गांधीजी के नेतृत्व में जब कांग्रेस ने अहिन्दुओं को हिन्दुओं के अधिकार बाँटने आरम्भ किये तब १६२४ में हिन्दू महासभा का जन्म हुआ। उस समय तो इसमें कांग्रेस के प्रमुख हिन्दू नेता पंडित मदनमोहन मालवीयजी, डाक्टर मुंजे, डाक्टर खरे, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द प्रभृति व्यक्ति सम्मिलित थे। परन्तु उनसे भूल यह हुई कि वे कांग्रेस और हिन्दू महासभा रूपी दोनों नौकाओं में सवार होकर दासता का सागर पार करना चाहते थे। दोनों नौकाओं की दिशा भिन्न-भिन्न थी। अत: वे दोनों में से किसी पर भी सवार नहीं रह सके। जनता भी उनकी अदूरदर्शिता को देख उनके पीछे नहीं चल सकी।

"वह संघर्ष अब भी चल रहा है। अब स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् दोनों संस्थाओं में अन्तर स्पष्ट हो गया है। कांग्रेस के लिए हिन्दू नाम का प्राणी इस देश में नगण्य हो गया है। जहाँ-जहाँ हिन्दू नाम की ज्योति जल रही है, कांग्रेस वहाँ जाकर उस पर सरकारी अधिकार जमा उस ज्योति को शीतल कर देने में लगी है।

"कुछ कांग्रेसी ऐसे अवश्य हैं जो लाला लाजपतराय इत्यादि की भाँति अब भी समझते हैं कि कांग्रेस और हिन्दू सभा रूपी दोनों नौकाओं पर सवारी की जा सकती है। इसमें पंजाब और उत्तर प्रदेश के आर्य समाजी अग्रणी हैं। भगवतीचरण का विचार है कि दो भिन्न-भिन्न दिशाओं में जा रही नौकाओं में सवारी करने वाले यात्रियों की भाँति ये सागर में डूब मरेंगे। इसलिए भगवतीचरण अपनी छोटी-सी नौका में ही यात्रा करना चाहते हैं। उनका विचार है कि समय पाकर हिन्दू चेतेंगे और अपनी नौकाओं को हिन्दू महासभा के बजरे से बाँध देंगे। तब हिन्दू महासभा का महान् बेड़ा पूर्ण भारत के भाग्य को वहन करने वाला बन जायेगा।"

"भूप, तब तो बात विचारणीय हो गयी है। परन्तु एक बात है, तुम उसको यहाँ बुला लाओ। फिर बात करेंगे। यदि वह पृथक् नौका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चलाना चाहता है तो हमको समझना चाहिए कि उसकी नौका किस दिशा में चलने वाली है। यदि वह दिशा समझ में आ गयी और यह भी पता चला कि उसकी दिशा वास्तव में कांग्रेस से भिन्न है तो हम अपने परिवार की नौका उसके साथ कर देंगे। साथ ही यत्न करेंगे कि उसके बेड़े में हिन्दू समाज की सब नौकाएँ हो जाएँ।

"परन्तु पहले उससे पूछ लेने दो। मैं व्यर्थ ही अपने परिवार में झगड़ा खड़ा नहीं करना चाहता।"

भूपेन्द्र भगवतीचरण को अपने पिता के पास ले आया। उसी दिन उसने अपने ससुर मुंशी रामदयाल को भी ग्वालियर से बुला भेजा। शिवपुरी, ग्वालियर और भूपाल के कुछ हिन्दू सभाई नेता भी एकत्रित हो गये। वार्तालाप का विषय भूपाल के एक नेता कवीन्द्र बहुगुणा ने आरम्भ किया।

बहुगुणाजी का कहना था कि जब से मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण किये हैं। उन्होंने हिन्दुओं को सदा अपने से छोटा, हीन और नीच समझा है। हिन्दुओं ने पहले तो मज़हब को राजनीति से पृथक् चीज़ समझ उनको सहन किया, परन्तु उन्हें शीघ्र ही पता चल गया कि मुसलमान मज़हब और राजनीति में भेद नहीं मानते। वे मज़हब के बल पर राजनीति और राजनीति के बल पर मज़हब को चलाने का यत्न करते रहे हैं।

अपने भारतवर्ष में यह नीति नहीं थी और यहाँ के मूलवासी हिन्दुओं ने इसको न तो समझने का यत्न किया और न ही समझकर इसका विरोध करने का। परिणाम यह हुआ कि यहाँ आने वाले ही कुछ सहस्र मुसलमान आक्रमणकारी धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते नौ करोड़ हो गये। जब हिन्दुओं ने मुसलमानों के राज्य का खात्मा किया और अंग्रेजों के राज्य को भी समाप्त किया, तब ये अपने लिए पुनः पृथक् राज्य माँगने लगे। हमारे नेता राजनीति और धर्म को पृथक्-पृथक् मानने वाले मज़हब के नाम पर राज्य देने के लिए तैयार हो गये.........।"

इस समय मुंशी रामदयाल ने वक्ता को टोककर कहा, "देखिए जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आप यह भी बताईये कि पाकिस्तान न माना जाता तो क्या होता और फिर जब अंग्रेज पाकिस्तान बनाने की हठ कर रहे थे तो कैसे हम इसका बनना रोक सकते थे ?''

बहुगुणा साहब कहने लगे, 'हमारे नेताओं को पाकिस्तान के विषय को जनता के सामने रखकर मतदान की माँग करनी चाहिये थी।''

''यह विषय ही तो लार्ड वेवल ने देश के सामने रखा था। जब शिमला कॉन्फ्रेंस असफल हुई तो वेवल साहब ने नये निर्वाचन कराने के लिए कहा था कि यदि कांग्रेस अपने को मुसलमानों का प्रतिनिधि भी बतलाती है तो उसे यह बात निर्वाचनों से सिद्ध करनी चाहिए। मुसलमानों ने निर्वाचन में एक विशाल बहुमत से यह बता दिया कि वे मुस्लिम लीग की नीति का समर्थन करते हैं। मुस्लिम लीग की नीति स्पष्ट थी कि मजहब के नाम पर एक नया मुल्क पाकिस्तान बनाया जाये। ऐसी दशा में देश-विभाजन कैसे रुक सकता था ?''

बहुगुणा आगे कहने लगे, ''मुस्लिम लीग ने तो अपना मत स्पष्ट शब्दों में मुसलमानों के सामने रखा था, परन्तु कांग्रेस ने यह प्रश्न हिन्दुओं के समक्ष नहीं रखा। कांग्रेस के नेता और देश के सब-के-सब समाचार पत्र यही घोषणा करते रहे कि उस निर्वाचन में स्वराज्य लेना है। देश-विभाजन और फिर उसके कारण मुसलमानों को पूर्ण देश में से निकाल देने तथा अन्य दुष्परिणामों की बात नहीं बताई। वास्तव में कांग्रेसी नेताओं ने एक ऐसा वातावरण देश में बना दिया कि हिन्दू यही समझते रहे कि निर्वाचनों में मतदान का विषय पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भिन्न-भिन्न देश बनाना नहीं अपितु अंग्रेज से स्वराज्य लेना है।

''हकीकत यह नहीं थी। ब्रिटिश पार्लियामेंट यह घोषणा कर चुकी थी कि हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिलेगा। प्रश्न यह था कि हिन्दुस्तान के टुकड़े होंगे या नहीं। कांग्रेसियों ने और भारत के समाचार-पत्रों ने असल बात लोगों को बताई नहीं और मतदान कर लिया।

''पंजाब के एक नेता ने साहस कर कहा भी कि कांग्रेस हिन्दुओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को धोखा दे रही है। परन्तु उस पर हिन्दुओं ने जूतों की वर्षा की।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं तो यह कह रहा था कि मुसलमानों से व्यवहार करते समय मज़हब और राजनीति को भिन्न-भिन्न समझने में हम भूल कर रहे थे। यही कारण था कि हिन्दू न तो मुसलमानी काल में और न ही अंग्रेजों के काल में मुसलमानों का प्रभावशाली विरोध कर सके। दुर्भाग्य की बात है कि पाकिस्तान बन जाने के बाद भी कांग्रेसी मुसलमानों को गले से लगाये हुए हैं। ये अब भी समझ रहे हैं कि मुसलमानों से विरोध अथवा सहयोग से मजहब को पृथक् रख सकेंगे।"

"हिन्दू महासभा का यह कहना है कि हम मज़हब और राजनीति को पृथक्-पृथक् मानते हैं परन्तु हम यह भी मानते हैं कि जो लोग ऐसा नहीं मानते उनके लिये इस देश में स्थान नहीं है। मैं कहता हूँ कि मुसलमानों को जो कि मुहम्मद साहब पर ईमान न लाने वाले को काफिर मानते हैं और धन-जन और माल को लूटकर ले जाना सवाब समझते हैं, इस देश में रहने का अधिकार नहीं है।

"कांग्रेस अपने को पंथ-हीन तो मानती है, परन्तु मुसलमानों को अभिमान का स्थान देती रहती है। इसलिये हम संसद में हिन्दू महासभा के प्रतिनिधि भेजना चाहते हैं।"

इस पर भवानी प्रसाद ने पूछा, "हिन्दू राजनीति में धर्म, अर्थ और काम तो सम्मिलित हैं ही। आप यह बताइये कि देश की अर्थ-व्यवस्था के विषय में आपका क्या विचार है? इन निर्वाचनों में मुख्य बात कांग्रेस की समाजवाद की नीति के सामने की है। कांग्रेस प्रथम पंचवर्षीय योजना समाप्त कर द्वितीय पंचवर्षीय योजना को सामने रखकर निर्वाचन लड़ रही है। क्या आप भी कांग्रेसियों के १९४६ के व्यवहार की भाँति मुख्य विषय को दृष्टि से ओझल कर इस समय गौण विषय की ही रट लगाते रहेंगे।"

बहुगुणा साहब बोले, "हमारी नीति इस विवादास्पद विषय पर मौन रहना है। हम हिन्दू राज्य चाहते हैं। जब हिन्दू राज्य होगा तब ये छोटी-मोटी बातें स्वयं तय हो जाएँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह विवादास्पद बात किनके लिए है ? कांग्रेसियों के लिए अथवा हिन्दू सभा वालों के लिए ?"

"हमने अभी इस विषय पर विचार नहीं किया। हम तो यह कहते हैं कि हिन्दू महासभा समाजवाद में भी उतनी बात स्वीकार कर लेगी जितनी हिन्दू धर्म-व्यवस्था में स्वीकृति है।"

"वह क्या है, कितनी है। क्या सम्पत्ति और आय पर सीमा बाँधनी हिन्दू-धर्म-व्यवस्था में है।

बहुगुणा का मत था कि है ? परन्तु हिन्दू महासभा के कुछ अन्य नेतागण और भगवतीचरण बोल उठे कि नहीं है।

परिणामस्वरूप बातचीत में गड़बड़ मच गयी। किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सका।

: ६ :

जब हम सब लोग चले तो भगवतीचरण, रामदयाल, भवानीप्रसाद और भूपेन्द्र साथ-साथ सभास्थल से निकले। सभा गांव के शिवालय में हुई थी। भगवतीचरण ने मुंशीजी से कहा, "भवानी प्रसाद जी ने अर्थ-व्यवस्था की बात कर बना-बनाया वातावरण बिगाड़ दिया।"

"देखिए पंडितजी, ये हिन्दू महासभा वाले एक राजनीतिक दल बनाकर मैदान में आये हैं। ये एक ऐसे दल का विरोध करने की तैयारी कर रहे हैं, जिसने सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाले एक विषय पर अपना स्पष्ट मत प्रकट कर दिया है। हिन्दू महासभाई विरोध करने तो निकले हैं, परन्तु विरोधी दल की एकमात्र नीति के विषय में मौन रहना चाहते हैं। लोगों को जनता का मत माँगने का अधिकार नहीं है।"

"परन्तु मुंशीजी ! यदि इस बात की स्पष्ट घोषणा कर दी जाये कि हम समाजवाद का विरोध करते हैं तो उतने मत भी नहीं मिलेंगे जितने मिल सकते हैं।"

इस पर भवानी प्रसाद ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहा, "पंडितजी ! मत लेना आपका मुख्य काम है अथवा देश को
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उचित दिशा देना ? आप संसद में जा सकेंगे अथवा नहीं यह आवश्यक है अथवा लोगों को इस बात का ज्ञान कराना कि समाजवाद क्या है ?"

"परन्तु बाबू साहब, भगवतीचरण ने कहा, "समाजवाद के अर्थ भी तो स्पष्ट नहीं। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न अर्थ हैं इस शब्द के !"

इस समय भूपेन्द्र ने कह दिया, "पंडितजी ! मैं आपको बहुत बुद्धिमान मानता हूँ और इसी से आपकी बहुत इज्जत करता हूँ, परन्तु यह आज आप अयुक्तिसंगत बात किस प्रकार करने लगे हैं।

"आपने ही तो एक दिन बताया था कि पंडित जवाहरलाल अपने मुख से मानते हैं कि वे कम्यूनिस्ट प्रणाली के समर्थक हैं और यह समाजवाद का नारा उनका ही है। कांग्रेस के सदस्य तो प्राय: नेहरूजी के सुर-में-सुर मिलाने वाले हैं। जब यह बात है तो फिर भारत में समाजवाद के अर्थ वे नहीं होंगे क्या जो जवाहरलालजी समझते हैं ? मेरा अभिप्राय यह है कि भारत में वह समाजवाद आ रहा है जो रूस और चीन में है।

"क्या आप इस समाजवाद का विरोध करेंगे, प्रश्न यह था ? आपके बहुगुणा साहब तो इसके समर्थक हैं। इतना उन्होंने कहा है कि जितना हिन्दू धर्म को स्वीकार होगा उतना समाजवाद स्वीकार करेंगे। इससे काम नहीं चलेगा। प्रथम तो आप नहीं कह सकते कि हिन्दू धर्म में समाजवाद का कहीं नाम भी है। दूसरे यह कि जब समाजवाद की व्याख्या होगी तो उनकी ही व्याख्या मानी जायेगी जो इस विषय में व्याख्या दे रहे हैं। दस-बीस हिन्दू सभा वाले जो इस विषय पर मौन हैं, अनिश्चित हैं और कदाचित समझते भी नहीं। उनकी कोई नहीं सुनेगा।"

"परन्तु भूप भैया ! मैं तो समाजवाद का विरोध करता हूँ। मैं तो इस विषय पर मौन रहने वाला नहीं। मैं तो हिन्दू महासभा वालों की बात बता रहा था। मैंने एक बार पंडित जवाहरलाल के समाजवाद के अर्थ तुमको बताये थे। उनके अर्थ तो यह हैं कि देश में किसी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक का कुछ भी निजी अपना नहीं। यहाँ तक कि सब का परि-श्रम भी समाज की सम्पत्ति है। इस कारण समाज को अधिकार है कि जिससे जो काम लेना उचित समझे, वह उसको खाने-पीने और रहने के लिए स्थान समाज दे और बस।

"हमारी हिन्दू व्यवस्था तो यह है कि मनुष्य धर्मानुसार अर्जित करे। अपने अर्जन का मुख्य भाग देवताओं को दे अर्थात् दान-दक्षिणा में दे और शेष से अपना निर्वाह करे।

"कठिनाई यह हो जाएगी कि पंडितजी अथवा कांग्रेसी राज्य के देवता वे नहीं होंगे जो किसी हिन्दू विचार वाले के हो सकते हैं। कांग्रेसी राज्य में देवता हैं सांस्कृतिक समारोह करने वाले भाँड-भँडुए, अंग्रेजी भाषा की उच्च शिक्षा तथा शेक्सपीयर और मिल्टन का साहित्य पढ़ाने वाले स्कूल-कालेज अथवा इसी प्रकार अव्यवस्थित जड़वाद की बातें करने वाले मूढ़ नेतागण।

"यज्ञ करना किनके कल्याण के लिये है, यज्ञ करे यह धन-अर्जन वाले के विचार की बात है, न कि राज्य कर्ताओं के। यह है अन्तर समाजवाद और हिन्दू यज्ञ अर्थात् लोक-कल्याण में।

"भूप भैया, मैं तो यही प्रचार करने वाला हूँ। निर्वाचन के समर में और यदि संसद में चुन लिया गया तो लोक सभा में भी। इस विषय में मैं बहुगुणा अथवा देवगुणा के मत से बँधा नहीं।"

"तब तो ठीक है।" भवानी प्रसाद ने कह दिया, "आप खड़े हो जाइये। हम तुम्हारी सहायता करेंगे। क्यों मुंशीजी, क्या विचार है?"

मुंशी रामदयाल चलते-चलते रुक गये और बोले, "पंडितजी, अपने पर्चे दाखिल कर दीजिये और आप जब से कहेंगे, मैं महोना में आकर बैठ जाऊँगा और ईश्वर चाहे तो आपको विजयश्री के दर्शन करा ही जाऊँगा।"

"तब तो ठीक है। मैं खड़ा हो रहा हूँ। हिन्दू महासभा वाले टिकट देते हैं अथवा नहीं देते, यह मेरे विचार करने की बात नहीं। यह तो सभा के विचार की बात है। मैं तो अपने सिद्धान्तों के विचार के आधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर निछावर करूँगा।"Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तक सब भवानी प्रसाद के मकान के पास पहुँच गए थे। भवानी प्रसाद ने मुंशीजी को चबूतरे पर बैठाया और फिर चुनाव में प्रबन्ध के विषय में बातें होने लगीं।

उक्त घटना के एक सप्ताह उपरान्त सुरेन्द्र आया और पिता के पास बैठ अपने निर्वाचन के विषय में बातचीत करने लगा। वह अपनी मोटर में सीधा दिल्ली से आया था। उसका विचार पिता से बातचीत कर लौट जाने का था।

पिता ने उसे मकान के सामने मोटर से उतरते देखा तो हुक्के की नली मुख से निकाल विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। फिर यह स्मरण कर कि निर्वाचन समीप आ रहा है और उसी के सम्बन्ध में आया होगा। वह खाट से उठा और भोला को आवाज़ दी। भोला भी मोटर के आने की आवाज़ सुन बाहर देखने आ रहा था कि कौन आया है। वैसे भगवतीचरण के चुनाव में खड़ा होने से गाँव में मोटरों का आना-जाना आरम्भ हो गया था।

सुरेन्द्र हाथ जोड़ पिता को प्रणाम कर ही रहा था कि भोला आ गया। उसने सुरेन्द्र बाबू को पालागन किया और एक तरफ़ खड़ा हो गया।

भवानी प्रसाद ने कहा, "भैया का सामान उतारकर भीतर ले चलो।"

"पिताजी! मैं रहने के लिए नहीं आया। रात तक दिल्ली पहुँच जाऊँगा।"

"अच्छा भोला। माताजी से कहो कि सुरेन्द्र भैया आये हैं, उनके स्नानादि का प्रबन्ध कर दें।"

वैसे तो सुरेन्द्र खा-पीकर आया था। परन्तु वह इंकार नहीं कर सका। क्योंकि वह जिस प्रयोजन से आया था, उसकी सिद्धि में पिता को प्रसन्न करना आवश्यक था।

सुरेन्द्र को एक खाट पर बैठा, दूसरी पर स्वयं बैठते हुए भवानी प्रसाद ने पूछ लिया, "तो इस प्रकार भागते-भागते आने का क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रयोजन है।

"पिताजी! इस बार मुझे महोना का क्षेत्र लोक-सभा के चुनाव में खड़ा होने के लिये मिला है। इस कारण मैं यहाँ अपने कार्यालय के लिए उचित स्थान देखने आया हूँ।"

"तो इस बार यहाँ से चुनाव लड़ने का विचार है।" यूं तो भवानी प्रसाद यह बात भूपेन्द्र से सुन चुका था। इस पर भी वह सुरेन्द्र को बताना नहीं चाहता था कि उसे इस बात का पता है।

"पिताजी! मेरा विचार तो ग्वालियर से खड़ा होने का था। परन्तु हमारे 'हाई कमांड' ने यही क्षेत्र दिया है। इसलिए मैं विवश हूँ।"

"तो ठीक है। कार्यालय के लिये कितना बड़ा मकान चाहिए?"

"वैसे तो मैं मन में यह विचार कर आया हूँ कि इसी मकान में अपना कार्यालय बना लूं। बैठक और उसके साथ वाला कमरा, जहाँ मैं ठहरा करता हूँ, मिल जायें। यहाँ चबूतरे की बगल में टेंट लगवा दूंगा, जिसमें कार्यकर्त्ता आकर ठहर जाया करेंगे। क्षेत्र लम्बा-चौड़ा है और दो सौ से ऊपर कार्यकर्त्ता आते-जाते रहा करेंगे। एक मुंशी भी यहाँ बैठेगा। वह मेरे कहने के अनुसार कार्यकर्त्ताओं से काम लेगा।"

भवानी प्रसाद चुपचाप बात सुनता रहा। जब सुरेन्द्र अपनी योजना बता चुका तो भवानी प्रसाद ने कहा, "यह तो हो नहीं सकेगा सुरेन्द्र! कारण यह कि यहाँ से भगवतीचरण इस सीट के लिए खड़ा हो रहा है और उसने अपना कार्यालय भी यहाँ बना लिया है। कार्यालय का उद्घाटन भी महासभा के प्रधान कर गये हैं। उसके कुछ कार्यकर्त्ता इस समय भी भीतर बैठे मतदाताओं की सूचियाँ तैयार कर रहे हैं।"

सुरेन्द्र यह सूचना पा अवाक् रह गया। तभी भोला आया और कहने लगा, "माँजी कह रही हैं कि सब तैयार हैं। भैया भीतर आ जाएँ।"

सुरेन्द्र के मन में विचार आया कि पिताजी से बात करने के स्थान पर माँ की सिफारिश लगवा सके तो ठीक होगा। एक तो गाँव में इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुला स्थान और कहीं था नहीं। दूसरे पिता के घर में विपक्षी का कार्यालय होने से सभी यह समझेंगे कि घर वालों में परस्पर-विरोध है। वह अपने घर में ही कार्यालय बनाना चाहता था। अतः बिना और-कुछ कहे माँ की सिफारिश की आशा में वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "पिताजी आइये ! अब तो बात भीतर चलकर ही होगी। घर की बात बाहर करने से सार्वजनिक कथा बन जायेगी।"

पिता-पुत्र दोनों उठकर भीतर चले गए। पिता ने साथ-साथ चलते-चलते कहा, "तुम स्नान और भोजन कर लो। बात पीछे करेंगे।"

वे ड्योढ़ी में से गुज़रे तो सुरेन्द्र ने देखा कि बैठक-घर में कई लोग बैठे काम कर रहे हैं। भूपेन्द्र वहाँ बैठा था और कार्य चलवा रहा था। यह देख सुरेन्द्र ने पिता से पूछ लिया, "तो भूप भगवतीचरण को सक्रिय सहयोग दे रहा है।"

"हाँ।"

"तो महाभारत होगा ?"

भवानी प्रसाद ने उत्तर नहीं दिया। वे भीतर गये तो रुक्मिणी सुरेन्द्र के स्वागत के लिए खड़ी थी। राबा रसोईघर में सुरेन्द्र के लिये और घर-भर के लिए भोजन तैयार कर रही थी। बच्चे स्कूल गए हुए थे।

"बच्चे कहाँ हैं माताजी ?" सुरेन्द्र ने खुशामद के भाव में माँ से पूछा।

"स्कूल गए हैं बेटा। अब तो यहाँ पर हाई स्कूल बन गया है। इस कारण उनको बाहर भेजने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

"हाँ, तुम नरेन्द्र के कमरे में टिक जाओ और स्नान कर लो। भोजन का समय हो गया है।"

"मैं स्नान और अल्पाहार तो ग्वालियर में कर आया हूँ। रात दस बजे दिल्ली से चला था। प्रातः तीन बजे ग्वालियर पहुँचा। स्टेशन पर दो घंटा आराम कर और स्नानादि से निवृत्त हो छः बजे वहाँ से चल दिया था। ग्यारह बजे यहाँ पहुँच गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हूँ यहाँ, भोजन करूँगा और फिर दो बजे के लगभग यहां से लौटने का विचार है ।''

''आज रात यहीं ठहर जाओ न ।''

''आज रात क्या मैं तो कई महीने यहाँ ठहरने के विचार से आया था ।''

इस समय सभी रुक्मिणी के कमरे में चले गये थे । वहाँ साधारण दरी-चादर बिछी थी और माता-पिता के सोने के लिए तख्त लगे थे । वे उन तख्तों पर बैठ गये । बैठते हुए सुरेन्द्र ने कह दिया, ''पर माँ, यहाँ तो भूप ने पहले ही किसी को ठहरा रखा है ।''

''किसे ठहरा रखा है ?''

''पंडित भगवतीचरण जी को । वह मेरे विरोध में ही खड़ा हो रहा है ।''

''तो तुम किसी अन्य स्थान से खड़े हो जाओ । पंडितजी भी तो अपने ही हैं ।''

सुरेन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा, ''पर माँ, यहाँ से खड़ा होना अथवा किसी अन्य स्थान से खड़ा होना मेरे बस की बात तो नहीं है ।''

''तो किसके बस की बात है ?''

''यह कांग्रेस की आज्ञा है कि मैं महोना से चुनाव लड़ूँ ।''

''यह कांग्रेस भला तुमको क्यों आज्ञा देती है ?''

सुरेन्द्र हँस पड़ा । वह देख रहा था कि कितना अन्तर है दिल्ली की स्त्रियों में और उस गाँव की औरतों में । माँ यह नहीं समझ सकती कि संसदीय प्रजातन्त्र में पार्टी का कितना महत्व है । उसने माँ को समझाने के लिए कहा, ''माँ ! तुम राज्यविधि को समझ नहीं सकतीं । हिन्दुस्तान जैसे दो हज़ार मील लम्बे-चौड़े देश में दलबन्दी की आवश्यकता है । जब दल में सम्मिलित होते हैं तो उसकी आज्ञा माननी पड़ती है । मेरे दल कांग्रस ने यह निश्चय किया है कि मैं यहाँ से खड़ा हो जाऊँ ।''

''तो क्या तुम दल छोड़ नहीं सकते ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"छोड़ दूं तो निर्वाचन लड़ना कठिन हो जायेगा। कांग्रेस मेरा विरोध करने लगेगी।"

"किस लिए विरोध करेगी ? तुम बात तो वही करोगे जो कांग्रेस कहती है। देखो सुरेन्द्र ! मेरी समझ में तो कुछ ऐसा आता है कि पहले तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी योग्यता के आधार पर वोट माँगना चाहिए। इससे केवल योग्य आदमी ही जीत कर सदस्य बन सकेंगे। पीछे जब योग्य आदमी दिल्ली में इकट्ठे हों तो फिर वे दल बना लें। जिसका दल बड़ा हो जाये वह राजा बन जाये।

"दल पहले बन जाने से तो प्रत्याशियों की योग्यता-अयोग्यता गौण हो जाती है और दल के पास धन और हो-हल्ला करने की योग्यता मुख्य हो जाती है।"

सुरेन्द्र तो माँ को अनभिज्ञ देहाती औरत समझ शिक्षा देने की बात करने चला था। अब उसने देखा कि वास्तव में प्रजातन्त्र तो यही होगा। लोग अपने-अपने बल-बूते पर निर्वाचन लड़ेंगे। इसमें प्रत्याशी की योग्यता ही मुख्य बात हो जायेगी।

परन्तु उसको माँ की युक्ति में एक छिद्र दिखाई दिया। इससे वह अब भी माँ से अपनी मान्यता स्वीकार कराने की आशा से बोला, "माँ ! इस ढंग से निर्वाचन लड़ने से तो धनीमानी और स्वार्थी लोग मतदाताओं को रिश्वत अथवा कई प्रकार के प्रलोभन देकर अपने पक्ष में मत-संग्रह कर लिया करेंगे।"

रुक्मिणी निरुत्तर नहीं हुई थी, परन्तु उत्तर भवानी प्रसाद ने ही देना ठीक समझा। "सुरेन्द्र ! तुम तो भली प्रकार जानते हो कि दल-बन्दी से निर्वाचन लड़कर तुम जैसा अयोग्य, अशिक्षित और महास्वार्थी संसद की कुर्सी पर जा बैठा था। यदि तुम्हारी पीठ के पीछे कांग्रेस न होती तो न तो ग्वालियर के महाराज तुम्हारी सहायता करते, न ही, कांग्रेस की पूर्ण मशीनरी तुमको सिर पर उठाती।

"मैं समझता हूँ कि व्यक्तिगत चुनावों की अपेक्षा दलबन्दी में यह धन और धोखा अधिक कार्य करता है। अब यहाँ की बात ही देख लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम शिक्षा में, और न विद्या में भगवतीचरण से योग्य हो। इस पर भी तुम कांग्रेस के बल पर और कांग्रेस की सहायता से अर्जित धन के भरोसे एक विद्वान्, ईमानदार आदमी को पराजित करने की आशा लगा बैठे हो। दलबन्दी से योग्यता की बात गौण होकर दल की बात मुख्य हो गई है।''

''भापा, यह इसलिए कि इस दल के सिद्धान्त श्रेष्ठ हैं।''

''क्या श्रेष्ठता है इनमें ?''

''हम समाजवाद को देश में लाना चाहते हैं।''

''क्या होगा उससे ?''

''सबको भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा चिकित्सा और औषधि मिलेगी।''

''बिना मेहनत कराये।''

''मेहनत तो करनी पड़ेगी। भला बिना मेहनत के कहाँ से और कैसे देंगे ?''

''तो तुम क्या दोगे ? यह तो जो भी मेहनत करेगा उसी को देने वाला समझना चाहिए और सुरेन्द्र, तुम पाँच सौ संसद सदस्य धन-सम्पदा पैदा करने के लिए एक तिनका भी तोड़ते हो क्या ?''

''हम तो भापा सब व्यक्तियों की मेहनत को इस प्रकार सुनियंत्रित करेंगे कि उससे प्राप्त फल का ठीक-ठीक बँटवारा हो सके।

''जैसे तुम्हारे पास बांटने की अधिक बुद्धि है न ! तभी तो पिछले चार-साढ़े-चार वर्ष में तुम्हारे पास बीस-तीस लाख एकत्रित हो गया है। तुमसे अधिक बाँटने की बुद्धि तुम्हारी कांग्रेस में है। यह देश जो इंगलैंड से कई अरब पौंड का लेनदार था अब आठ वर्ष में कांग्रेस की कृपा से कई अरब रुपये का देनदार बन गया है।''

''भापा ! यह सब मिथ्यावाद आपको किसने बताया है ? यह सब गलत है ?''

''देखो सुरेन्द्र ! वह भगवान की मूर्ति स्थापित है।'' उस कमरे की बगल में रुक्मिणी का पूजागृह था। वहाँ राधा-कृष्ण की मूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित था। भवानी प्रसाद ने उसी ओर संकेत कर कहा—"उसको सबके मन का साक्षी जान सत्य बताओ, तुमने इतना कुछ पैदा करने में कितनी मेहनत की है ? तुमने पच्चीस बसों के परमिट लेकर किस-किस का हक नहीं छीना ? तुमने कितना कमा कर उसमें से कितना निर्धनों, बेकारों, विद्वानों और स्कूलों-कालिजों को दिया है ? यही धन का बँटवारा तुम करोगे ना ?"

सुरेन्द्र घबरा गया। वह ठाकुरजी से तो नहीं डरता था। वह जानता था कि ठाकुरजी तो बेचारे मुख से कुछ कहेंगे नहीं। वह तो ठाकुरजी के भक्त अपने पिता के उस प्रकार के प्रचार से घबरा रहा था। उसने कहा, "छोड़िये पिताजी इस बात को। मैं कमाता हूँ तो सरकार को कर भी देता हूँ और उस कर से सरकार स्कूल-कालेज अस्पताल और बेकारों के लिए उद्योग-धन्धे चला रही है।"

भवानी प्रसाद हँस पड़ा। वह कहने लगा, "बहुत बड़ी युक्ति दी है तुमने। देखो सुरेन्द्र ! यदि तुम पच्चीस बसों के ये परमिट न लेते और तुम्हारे स्थान पर पच्चीस आदमी परमिट लेते तो क्या सरकार को कर न मिलता। फिर उनसे प्राप्त कर से स्कूल-कालेज आदि खुलने में कठिनाई हो जाती क्या ? साथ ही उन पच्चीस परमिट होल्डरों से बेकारों को काम अधिक मिलता या अब मिल रहा है।

"इसी से तो मैं कहता हूँ कि तुम जैसे अयोग्य, युक्ति-विहीन व्यक्ति संसद में इसलिए पहुँच जाते हैं कि निर्वाचन दलबन्दी के आधार पर चल रहे हैं। तुम तो अपने अनपढ़ माता-पिता की युक्ति का भी उत्तर नहीं दे सके। तुम वहाँ क्या करते होगे ?"

"माँ, मैं तो तुमसे अपनी सिफारिश लगवाने के लिये आया था। तुमसे कहने आया था कि पिताजी से कहकर मुझको इस मकान में अपना कार्यालय खोलने की स्वीकृति दिलवा दो।" सुरेन्द्र ने पिता की बात का प्रतिकार न करते हुए माँ से कहा।

माता-पिता दोनों उसकी इस बात पर हँसने लगे। पिता तो कुछ न बोले, परन्तु माता ने कहा, "तुम मेरे पुत्र हो। सिफारिश तो तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करूँगी ही। परन्तु तुम्हारे पिता से नहीं वरन् अपने भगवान से। बेटा उसकी ही शरण में चले जाओ। वह तुम्हारी सहायता करेगा। वह तुम्हारी बुद्धि को निर्मल करेगा और फिर तुमको सफलता भी देगा।"

सुरेन्द्र को विवश हो एक दूसरे मकान में अपना कार्यालय बनाना पड़ा।

: ७ :

देश का दुर्भाग्य था कि सन् १९५७ के निर्वाचनों में देश का ध्यान कांग्रेस की समाजवादी नीति की ओर नहीं गया। देश में द्वितीय योजना चल रही थी। यह ग्यारह हज़ार करोड़ रुपये की थी और इसमें का बहुत-सा धन सरकारी उद्योग क्षेत्र में व्यय होने वाला था। यही नहीं, इस योजना में लग रहे धन का अधिकांश विदेशों से ऋण लेकर आने वाला था। कुछ धन देश का माल विदेशों में सस्ते दामों पर बेचकर, विदेशी मुद्रा अर्जित करके भी लाया जाने वाला था। इस सबसे जहाँ अस्पताल, स्कूल, कालेज, सड़कें और बाँध बनने वाले थे, वहाँ सरकारी मन्त्रियों, कर्मचारियों और सरकारी अफ़सरों आदि की जेबें भी भरने वाली थीं।

इसी कारण कांग्रेसी मन्त्री, सरकारी अफ़सर, कांग्रेसी कार्यकर्त्ता, समाचार-पत्र और ऐसे सब लोग जिनका किसी प्रकार का भी सरकार से सम्बन्ध था, गला फाड़-फाड़कर कांग्रेस एवं कांग्रेस की योजनाओं का प्रशंसा के पुल बाँध रहे थे।

कम्यूनिस्ट दल एवं कांग्रेस तो घोषणा कर रहे थे कि वह देश में समाजवाद लाने वाली है। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी भी समाजवाद की समर्थक थी। शेष रह गये हिन्दू महासभा, भारतीय जनसंघ और राम-राज्य परिषद। ये दल अपना सांझा मंच नहीं बना सके। ये देश के सामने प्रमुख समस्या, समाजवाद के विषय में स्पष्ट विचार नहीं रख सके। वास्तव में इन दलों ने इस अनर्गलवाद के विषय में कभी विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी नहीं किया था। इनके सदस्यों के इस विषय पर भिन्न-भिन्न विचार थे। अधिक-से-अधिक जनसंघ के लोग ये कहते सुने गये, "हम भी समाजवादी हैं। परन्तु हमारा समाजवाद, भारतीय समाजवाद होगा। हम भी योजनाओं के पक्ष में हैं, परन्तु हमारी योजनाएँ छोटे-छोटे उद्योगों के विषय में होंगी।" वैसे यह दल भी मानता था कि भूमि तो सरकार की सम्पत्ति है। सरकार जिससे चाहे, जब चाहे यह ले सकती है और इसके लिए वह किसी प्रकार का मुआवज़ा देने के लिये भी बाध्य नहीं। ली गयी भूमि पर यदि कुछ मुआवज़ा दिया भी जायेगा तो वह मूल्य के विचार से नहीं अपितु दया-दृष्टि के विचार से होगा।

जनसंघ का अधिक बल दिल्ली में था और हिन्दू महासभा का बल था मध्य-प्रदेश में। कम्यूनिस्ट बलशाली थे बंगल और बम्बई में। कांग्रेस का देश-व्यापी प्रभाव था।

सीता का कार्यालय बम्बई फोर्ट एरिया में स्थापित कर नरेन्द्र दिल्ली लौट रहा था। बम्बई में वह इतना व्यस्त रहा था कि उसे अपनी पढ़ाई तथा परीक्षा तक का ध्यान नहीं रहा था। वह बम्बई सैण्ट्रल स्टेशन पर फ्रंटियर मेल पर सवार होने के लिये आया तो सीता उसे स्टेशन पर पहुँचाने चली आयी। बम्बई में नरेन्द्र की कई कम्यूनिस्ट कार्यकर्ताओं से घनी मित्रता भी हो गयी थी। उनमें से भी कई उसे स्टेशन पर विदा करने के लिये आये हुए थे।

रिजर्व सीट पर बिस्तर और सूटकेस रख वह डिब्बे से बाहर आया तो सीता ने कहा, "तुम्हारे डिब्बे में कोई बालकरामजी जा रहे हैं।"

नरेन्द्र इस सूचना का अर्थ नहीं समझा। इससे वह प्रश्न-भरी दृष्टि में सीता का मुख देखने लगा। सीता ने आगे कह दिया, "कहीं वे पिताजी न हों!"

"आपके पिताजी! तब तो रास्ते में अच्छा साथ रहेगा।"

"पर मैं तो उनसे अज्ञात रहकर ही यहाँ काम करना चाहती थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तब तो ठीक नहीं हो रहा न भाभी ! तुम यहीं से चल दो। मैं बच्चा तो हूँ नहीं जो रास्ते में भटक जाऊँगा। यदि वे तुम्हारे पिताजी ही हुए तो मैं चुनाव की बात करूँगा ही नहीं।"

सीता भी कुछ ऐसा ही सोच रही थी। उसने कार्यकर्त्ताओं से कहा, "मैं समझती हूँ कि नरेन्द्रजी अब चले जाएँगे और हम सबको अपने कार्यक्षेत्र में चलना चाहिये। गाड़ी जाने में अभी आधा घण्टा है। इस समय को व्यर्थ गँवाने में लाभ नहीं।"

नरेन्द्र ने भी हाथ जोड़ सबको विदा करते हुए कहा, "तो आप सब चलिये। मैं बीच में एक चक्कर और लगाने का यत्न करूँगा।"

सब विदा होने लगे तो सीता ने कान में कह दिया, "शीरीं को जाते ही भेज देना। मिसेज़ अली ने उसे क्यों रोक रखा है ! सब बात पता कर लिखना।"

इन सात दिनों में शीरीं की ओर नरेन्द्र का विचार तक नहीं गया था। उसका नाम सुन अब वे विचार उठने लगे जो दिल्ली से चलते समय उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे।

इसी समय विदा होने से पहले कार्यकर्त्ताओं ने नारा लगा दिया, "दुनिया के मज़दूर !" सब लोग कह उठे, "संगठित हों !"

"दुनिया के मज़दूरों की, जय हो !"

एक कार्यकर्ता ने जो सीता रानी के पीछे खड़ा था घोषणा कर दी, "सीता रानी की···" सब ने समाघोष कर दिया, "जय हो !"

इस समय सीता नरेन्द्र के पास खड़ी थी। मित्र उनको घेरे हुए थे। एक वयोवृद्ध व्यक्ति इन सबके पीछे यह तमाशा देखने खड़ा हो गया। उसके साथ एक कुली सामान उठाये हुए था। वह सीता और उसके जयघोष करने वालों की ओर देखता हुआ मुस्करा रहा था। कुली ने उस वृद्ध व्यक्ति से कुछ कहा तो वृद्ध व्यक्ति ने बोगी का नम्बर पढ़ कुली को उसमें सामान रखने के लिये संकेत करते हुए कहा, "डी के डिब्बे में।"

सीता की पीठ उस व्यक्ति की तरफ थी। परन्तु नरेन्द्र उसे देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहा था और वह समझ गया था कि वही उसके डिब्बे का साथी है और सीता का पिता भी। लोग अभी नारे लगा ही रहे थे कि नरेन्द्र ने सीता की ओर देख उंगली से वृद्ध व्यक्ति की ओर संकेत कर दिया। सीता पहले ही इस सब प्रदर्शन से घबरा रही थी। वह नरेन्द्र के संकेत का आशय समझ घूमी और अपने पिता को देख मुस्कराती हुई, हाथ जोड़ उनको नमस्कार करती हुई आगे बढ़ी। अन्य कार्यकर्ता सीताजी के किसी परिचित के आने से उत्तेजित हो और भी ज़ोर से जयघोष करने लगे।

नरेन्द्र ने हाथ उठा कठिनाई से उनको चुप कराया और स्वयं आगे बढ़ हाथ जोड़कर बोला, "मौसाजी! आप भी इस गाड़ी स जा रहे हैं!"

"हाँ, तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो!"

नरेन्द्र ने गोलमोल उत्तर देने के लिये कहा, "देख लीजिये, क्या हो रहा है।"

"और सीता! तुम मज़दूरों में कब सम्मिलित हुई हो?"

सीता हँस पड़ी और बात बदलकर पूछने लगी, "माताजी कैसी हैं?"

"बहुत मज़े में हैं।"

"और विनोद?"

"बर्लिन में पढ़ रहा है।"

"क्या पढ़ रहा है?"

"यहाँ बी० एस-सी० कैमिस्ट्री में पास कर वहाँ कैमिकल टैकनोलॉजी पढ़ने गया हुआ है।"

"इससे क्या होगा?"

"कांग्रेस द्वारा चलायी गई योजनाओं की गाड़ी के चक्कों में तेल देगा।"

सीता तो समझी नहीं, परन्तु नरेन्द्र समझ गया और बोला, "यह तो आपने बहुत अच्छा किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता ने वहाँ से खिसकने का बहाना बना लिया। उसने कहा, "तो पिताजी, मैं तो चलती हूँ। नरेन्द्र को गाड़ी पर चढ़ाने आयी थी। आप कब तक लौटेंगे?"

"मेरे आने न आने से क्या होता है। तुम्हारी माँ घर पर है। तुम नहीं जा रहीं क्या?"

"जी नहीं। नरेन्द्र ही जा रहा है।"

"और तुम कहाँ ठहरी हो?"

"नरेन्द्र के भैया के एक परिचित हैं। उनके घर में। मैं माँजी से मिलने आऊँगी।"

"ठीक है, मैं तो दो सप्ताह में ही लौट सकूँगा। तब तक रहोगी तो मिलेंगे। दिल्ली में कोई संदेश भेजना हो तो बता दो। मेरा वहाँ दो-तीन दिन ठहरने का विचार है।"

"कुछ विशेष काम नहीं, नरेन्द्रजी भी आपके साथ जा रहे हैं।" बस उसने हाथ जोड़े और वहाँ से भागने की कोशिश की।

बालकराम ने बोगी के बाहर लगे लेबल पर नरेन्द्र का नाम पढ़ा तो कहा, "तुम भी डी कम्पार्टमेन्ट में हो?"

"जी!"

"बहुत खूब! आओ।" दोनों गये और दोनों ने अपने-अपने बिस्तर लगा दिए। बालकराम ने बाहर से 'गोल्ड फ्लेक' की डिब्बी तथा माचिस खरीदी और भीतर चला आया। नरेन्द्र परेशानी अनुभव कर रहा था। यदि सीता को बालकराम ने न देखा होता और कार्यकर्त्ताओं को नारे लगाते न सुना होता तो वह कोई असंगत बात करने का यत्न करता। अब तो कोई संतोषप्रद बात बताये बिना कोई चारा दिखाई नहीं देता था। फिर वह नहीं जानता था कि सीता माँ के सामने क्या और कहाँ तक अपने वहाँ होने के प्रयोजन को बतायेगी।

बालकराम ने सामने की सीट पर बैठते हुए सिगरेट जलाया और दो-तीन कश लगाकर नरेन्द्र से पूछने लगा, "तुम लोग किस कार्य से बम्बई आए हुए थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन्द्र ने [illegible] । उसने कहा, "भाभी कम्यूनिस्ट दल के टिकट पर संसद की सदस्यता की प्रत्याशी हैं। ये अपना कार्य यहाँ अपने क्षेत्र में आरम्भ करने के लिए आयी हैं। हम दोनों इकट्ठे ही आये थे। मैं तो लौट रहा हूँ, परन्तु भाभी अब निर्वाचनों तक यहाँ रहेंगी।"

बालकराम यह सूचना सुन गम्भीर होकर पूछने लगा, "मुझको तो यह पता था कि सुरेन्द्र कांग्रेस पार्टी के संसद सदस्यों में काफ़ी प्रमुख सदस्य है।"

"जी वे भी खड़े हो रहे हैं। कांग्रेस के टिकट पर अपने गाँव के क्षेत्र महोना से।"

"ओह !" बालकराम अवाक् रह गया। नरेन्द्र ने बात और स्पष्ट करने के लिए कह दिया, "भैया ने यह बात, कि उनकी पत्नी कम्यूनिस्ट दल की ओर से निर्वाचन लड़ रही हैं, हाई कमांड के सामने स्पष्ट कर दी है। पहले तो हाई कमांड ने आपत्ति उठाई थी, परन्तु पंडितजी के सिफारिश करने और भैया के इलैक्शन फंड के लिये भारी चन्दा देने और फिर उनके सफल होने की पूर्ण सम्भावना ने भैया को भी टिकट दिलवा दिया है। भाभी भी पंडितजी से मिली हैं और उनमें परस्पर बातचीत भी हो चुकी है। मेरा विचार है कि पंडितजी इस प्रबन्ध से प्रसन्न हैं।"

"विचित्र विडम्बना है ! कम्यूनिस्ट लुक-छिपकर कांग्रेस में घुस रहे हैं और पंडितजी उस पर सोशलिस्ट होने का लेबल लगाकर पार्टी में उनका स्वागत कर रहे हैं। दूसरी ओर पंडितजी अपने पक्ष के लोगों के कम्यूनिस्ट दल में सम्मिलित होने में सहायक हो रहे हैं।"

"लालाजी, यह राजनीति है। हकीकत यह है कि इस समय न तो कांग्रेस में और न ही कम्यूनिस्ट दल में पंडितजी की योग्यता का कोई आदमी है।"

"योग्यता का मत कहो नरेन्द्र ! इसके लिए उचित शब्द चतुराई है। योग्यता तो सर्वकल्याणकारी होती है और चतुराई स्वार्थमयी। पंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जवाहर[illegible] चतुर हैं। परन्तु [illegible]रखी, वह चतुराई उनको और कदाचित् उनके परिवार वालों को लाभ तो पहुँचायेगी, परन्तु यह देश के कल्याण में नहीं होगी।

"देखो, मैं काँग्रेस में एक अच्छा-खासा नेता रहा हूँ। काँग्रेस में रहते हुए कई बार जेल की यात्रा भी की है। परन्तु जब स्वराज्य मिला और पजाब के लाखों लोग उजड़ कर भारत में आये तो मैं पूर्ण कांग्रेस की नीति पर पुनरवलोकन करने के लिए विवश हो गया।

"महोना में रहते हुए और फिर बम्बई में रहते हुए चार-पाँच वर्ष तक, मैं सन् १९३१ से लेकर सन् १९५३ तक की नीतियों पर विचार करता रहा हूँ। मुझे एक ही बात समझ में आयी है कि कांग्रेस एक देश-भक्त संस्था से धीरे-धीरे एक देश-विभक्त संस्था बनती चली आयी है। और इसको वह दिशा देने वाले पंडित जवाहरलाल हैं।

"महात्मा गांधी अपने नमक-सत्याग्रह और फिर १९३२ के सत्याग्रह आन्दोलनों की सफलता से निस्तेज हो गए थे। मैं मूर्ख जनता की बात नहीं कहता, वह तो बिना विचार किए समाघोषों की शिकार रहती है। मैं कांग्रेस हाई कमांड की बात कहता हूँ। सब जानते थे और महात्मा जी स्वयं भी अनुभव करते थे कि वे जंगल में विचरण कर रहे हैं। वे अपनी नीतियों की असफलता को अनुभव करते थे, परन्तु नेतागिरि के मोह में अथवा अपने को वाक्जाल में फँसा हुआ पा, अपना मार्ग टटोला करते थे। उस समय पंडित जवाहरलाल चकाचौंध करने वाले रूस के झूठे प्रचार से प्रभावित गांधीजी का सहारा बन गये और गांधी को ऐसे मार्ग पर ले जाने लगे, जो विदेश-पूजा का था। वह राम-राम कहते हुए भोले-भाले व्यक्ति, एक विदेशी आचार-विचार और नीतियों में विश्वास रखने वाले के पिछलगू बन गए।

"उन दिनों मैं सरदार पटेल से मिला था और विदेश नीति पर कांग्रेस के प्रस्ताव को छलना प्रकट करके मैंने पूछा था कि उन्होंने इसको पारित क्यों होने दिया और गांधीजी ने इस प्रस्ताव को आशीर्वाद क्यों दिया? इस पर पटेलजी बोले, "स्वराज्य तो मिला नहीं और निकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य में मिलता दिखाई देता भी नहीं। फिर इन कागजी प्रस्तावों पर झगड़ा क्यों किया जाये ? यदि हमारे जीवन-काल में स्वराज्य मिला तो हम सब समझ लेंगे।

"सरदार का यह भी कहना था कि गांधीजी के समर्थन के पश्चात् हमारा तो साहस नहीं होता कि कुछ कह सकें। गांधीजी के कथन के विपरीत आज कुछ भी कहना अपनी राजनीतिक मृत्यु का आह्वान करना है।

"उन दिनों मुझे पंजाब के भाई परमानन्दजी से मिलने का अवसर मिला। मैं भाईजी को बहुत-से अन्य कांग्रेसियों की भांति 'क्रेक्ड ब्रेन' (विकृत बुद्धि) का व्यक्ति मानता था। जब उन्होंने कहा कि, कांग्रेस स्वयं जहन्नुम को जा रही है और साथ में देश भी। तो मेरी हँसी निकल गयी। मैंने कहा, भाईजी ! गांधी को देश ने तो नेता माना है। अब यदि वे देश को जहन्नुम में ले जा रहे हैं तो दोष देश का है, गांधीजी और कांग्रेस का नहीं।

"परन्तु पटेल इत्यादि सही दिमाग के नेताओं ने अपने राजनीतिक जीवन को धर्म और सच्चाई से भी ऊँचा समझा और इस भूल का परिणाम यह हुआ कि एक-एक कर ये सब धकेलकर कांग्रेस के प्रभाव-युक्त स्थानों से बाहर कर दिये गए हैं।

"अब जवाहरलालजी कांग्रेस में सर्वे-सर्वा हैं और वे अपनी स्थिति को बलवान बनाने के लिए अपने विचार के लोगों को कांग्रेस में आगे ला रहे हैं और अपने विरोधी दलों में भी अपने प्रभाव के लोग भेज रहे हैं।"

"परन्तु लालाजी !" नरेन्द्र ने पूछा, "यह राजनीतिक कार्य में अनीति कैसे हो गयी ?"

"यह अनीति तब हुई है, जब धर्म देश और राष्ट्र के हितों का उल्लंघन करने लगा।"

"अच्छा नरेन्द्र ! यह बताओ, चीन द्वारा तिब्बत पर अधिकार का भारत न समर्थन क्यों किया ? यह देश के साथ द्रोह नहीं है क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भारत देश के साथ रोग कैसे हो गया ? तिब्बत चीन का ही तो एक भाग है। उस पर चीनियों ने अधिकार कर लिया तो हमें क्या ?"

बालकराम ने मुस्कराते हुए कहा, "ठीक है, तुम इतिहास के विद्यार्थी नहीं हो न। तभी इस प्रकार की अनभिज्ञता प्रकट करते हो। एक तो तिब्बत चीन का भाग कभी नहीं रहा। कभी-कभी तिब्बत पर चीन का अधिकार ऐसे ही रहा है, जैसे तुर्क, मुगल और पठानों का भारत पर अधिकार रहा है। जैसे भारत, तुर्किस्तान, मंगोल अथवा पख्तूनिस्तान का भाग नहीं हो गया, वैसे ही तिब्बत चीन का नहीं हो सकता।

"हमारे देश का सम्बन्ध इससे यह है कि चीन जैसा देश हमारा पड़ौसी हो गया है और उसका विश्वास नहीं किया जा सकता। अंग्रेज ने चीन और भारत के बीच तिब्बत एक 'बफ्फर' स्टेट रखी हुई थी। केवल इतना ही नहीं, वरन् ल्हासा में अपनी सेना रखी हुई थी, जिससे चीन का साहस न हो सके कि तिब्बत को आत्मसात् करे।

"हमने न केवल तिब्बत को चीन के हवाले करने का दुःसाहस किया है, अपितु अपनी सेना, अपना व्यापार-केन्द्र और अपना प्रत्येक प्रकार का हित वहाँ से हटा लिया है।"

"मैं समझता हूँ कि पंडितजी ने यह ठीक ही किया है।"

"तुम्हारे अथवा किसी के समझने से तो कुछ बनता नहीं। चीन के व्यवहार से ही नीति के ठीक और गलत होने का अनुमान हो सकता है। अभी से चीन हमारी सीमावर्ती चौकियों को बन्द करने का यत्न करने लगा है। मान लो चीन हिमालय पार कर भारत पर आक्रमण कर दे तो क्या समझोगे ?"

नरेन्द्र हँस पड़ा। हँसकर बोला, "कैसे मान जाएँ। यह एक अनहोनी बात है।"

"क्या अनहोनापन है इसमें ?"

"हिमालय पार कर आक्रमण की बात तो समझ में ही नहीं आ सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं नरेन्द्र ! यह असम्भव नहीं। इसी हिमालय के ऊपर से कूद-कर अमेरिका वाले च्यांग काई शेक की सेनाओं की सहायता कर सके थे तो इसके ऊपर से कूद कर भारत पर आक्रमण भी हो सकता है।

"परन्तु छोड़ो इस बात को। यह पाकिस्तान वालों से प्रेम-प्रलाप के क्या अर्थ हैं ?"

"क्या अर्थ हैं ?"

"कुछ नहीं, नेहरूजी अपने प्रधानमन्त्री पद को सुरक्षित रखने के लिए यह सब कुछ कर रहे हैं। पाकिस्तान को सिर चढ़ाने से वे अमेरिका और इंग्लैंड को भयभीत रखना चाहते हैं कि वे भारत की आर्थिक सहायता करते रहें। ये अमेरिका इत्यादि के साथ मैत्री रखना चाहते हैं, जिससे रूस और चीन हमारी सहायता करते रहें और होगा यही कि चमगादर की भाँति न इधर के रहेंगे न उधर के।"

"लालाजी ! यह राजनीति है। इसी से तो कह रहा हूँ कि भारत का सौभाग्य है कि नेहरूजी जैसा नीति-कुशल प्रधान मन्त्री भारत को मिला हुआ है।"

"अच्छी बात है। ईश्वर न करे कि हम मुसीबत में फँस जाएँ। इस पर भी आज से कुछ वर्ष पश्चात् अपने देश की स्थिति का निरीक्षण करोगे तो मेरे कथन को स्मरण रखना। देश पर मुसीबत आयेगी अथवा नहीं, कहना कठिन है। हाँ, यदि इस मिट्टी के पुरुष की नीतियाँ असफल होने लगीं तो इसका हार्टफेल हो जायेगा।"

"कुछ भी हो, नेहरू जी को देश शताब्दियों तक स्मरण रखेगा।"

"यह तो ठीक है। मैं भी मानता हूँ परन्तु स्मरण तो कई प्रकार के लोगों को किया जा सकता है। शिवाजी को भी लोग स्मरण करते हैं और बंगाल के अमीचन्द्र को भी करते हैं। भगतसिंह इत्यादि क्रान्तिकारियों को भी याद किया जाता है और अवध के नवाबों को भी, जिन्होंने एक भी तीर चलाये बिना अवध अँग्रेजों को दे दिया था, भी याद किया जाता है।"

नरेन्द्र हँस पड़ा। गाड़ी चल पड़ी थी। लालाजी ने डिबिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तीन सिगरेट समाप्त कर, सीट की बैंक के साथ ढासना लगा आँखें मूंद विचार करना आरम्भ कर दिया।

नरेन्द्र का ध्यान अब शीरीं की ओर था। वह विचार कर रहा था कि उसको अब तक बम्बई आ जाना चाहिए था। वह भूपेन्द्र के कथन और फिर मिसेज़ अली की सफाई के विषय में अपने संशयों का समाधान करना चाहता था। जब वह नहीं आयी तो वह उससे दिल्ली में मिलकर सब बात जानने का विचार करने लगा था। वह सोच रहा था कि यदि भूपेन्द्र की बात सत्य हुई कि वह किसी अन्य से सम्बन्ध रखती है तो फिर उसके प्रति वह क्या व्यवहार रखे ? यों तो अपने दल के प्रमुख व्यक्तियों के यौन-सम्बन्धी विचारों को वह जानता था। वे तो इसको किसी साफ-सुथरे स्थान से एक चाय का प्याला पी लेने से अधिक महत्व नहीं देते थे। परन्तु वह इस सिद्धन्त को अपने गले के नीचे उतार नहीं सका था। वह एक ऐसी औरत को, जिसके सम्बन्ध एक से अधिक पुरुषों से हों; कैसे एक शुद्ध और साफ-सुथरे टी-स्टाल की उपमा दे सकता था ? टी-स्टाल साफ-सुथरा हो भी सकता था, परन्तु ऐसी स्त्री के विषय में यह बात माननी कठिन थी।

वह सोचता था कि टी-स्टाल पर तो चाय का प्याला मिलता है। भला एक चाय के प्याले की उपमा स्त्री से मिलने वाली सन्तान से दी जा सकती है क्या ? टी-स्टाल और अपनी जीवन-संगिनी में उसको कोई तुलना प्रतीत नहीं होती थी। इससे उसको इन नये विचारों में तथ्य प्रतीत नहीं होता था।

इस प्रकार के विचार उसके मन में उठ रहे थे कि विरार स्टेशन आ गया और वह रात का खाना खाने चला गया। बालकराम अपने थैले में से घर की पूरी और साग सामने रख खाने लगा था।

: ८ :

दिल्ली में पहुँच, सामान होस्टल में रख वह सीधा मिसेज़ अली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घर पर पहुँचा। मिसेज़ अली घर पर नहीं थीं। रहमत बैरा था। उससे पता चला कि उसी दिन सुबह फ्रण्टियर मेल से शीरीं बम्बई गयी है। मिसेज़ अली उस समय भारत के शिक्षा मंत्री मौलाना आज़ाद से मिलने गयी थीं। नरेन्द्र को ज्ञात था कि उस समय मौलाना मद्य-सेवन से धुत हुए रहते थे। इससे वह समझ नहीं सका कि इस समय उनसे भेंट का क्या अर्थ है।

वह मन से शीरीं का विचार निकाल पढ़ाई में तल्लीन हो गया। भारत-भर में निर्वाचनों की आँधी चल रह थी। देश-भर में भारी हल्ला था। समाचार पत्रों में नेताओं के नित्य वक्तव्य निकल रहे थे और प्रधान मंत्री तथा अन्य मन्त्रियों के देश-भर में दौरे लग रहे थे।

नरेन्द्र में यह गुण था कि वह अपनी पढ़ाई के समय अन्य सब बातों को अपने मस्तिष्क में से निकाल देता था। शीरीं के बम्बई चले जाने पर तो वह उसको भी भूल गया। सीता के पत्र आया करते थे, परन्तु वह उनको बिना खोले ही मेज़ की दराज में रख छोड़ता था। वह समझता था कि चुनाव आन्दोलन के विषय में लिखा होगा और इस समय उसकी इस ओर रुचि नहीं थी।

बम्बई में निर्वाचन जनवरी की अट्ठाईस तारीख को थे। इतना याद रख उसने बम्बई जाने का कार्यक्रम पच्चीस जनवरी को बना लिया और सीट रिजर्व कराने की तिथि पन्द्रह जनवरी अपनी डायरी में लिख ली।

जनवरी के आरम्भ में उसको सुरेन्द्र कनाट प्लेस में घूमते हुए मिल गया।

"भैया!" उसने आगे बढ़ पूछा, "चुनाव अभियान कैसा चल रहा है?"

"ठीक नहीं।"

"क्यों?"

"एक तो भगवतीचरण बहुत ज़बरदस्त वक्ता है। दूसरे भूपेन्द्र और मुन्शीजी उसके लिए जी-जान से यत्न कर रहे हैं। मुझे अपने धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर भरोसा था, परन्तु पंडित के हाथ भी कुबेर का धन-कोष कहीं से लग गया है।''

''तो भैया ! नेहरूजी को एक बार क्षेत्र में घुमा दो न ?''

''यही यत्न कर रहा हूँ, इसलिए यहाँ आया भी हूँ। आज सायंकाल उनसे भेंट करने का अवसर मिलेगा।''

''और ज़रा 'सोशलिज़्म' का नारा लगा दो। सब को ज़मीन, सब को मकान और सब को वस्त्र-भोजन की धूम मचा दो।''

''वही तो कह रहा था, परन्तु यह नारा ही तो मेरे विपरीत जा रहा है। भूपेन्द्र और भगवतीचरण लोगों से कह रहे हैं कि भला पाँच वर्ष में तीस लाख इकट्ठा करने वाला कैसे सब को मकान देगा ? वह झूठ बोलता है। जब घर के प्राणी ही मुझको झूठा कहने लगे तो मेरी कैसे चल सकती है।''

नरेन्द्र को अपने भाई के पराजित होने की चिन्ता कुछ मिनट तक लगी रही, परन्तु अपनी पढ़ाई में वह यह भी भूल गया।

वह बम्बई पहुँचा तो वहाँ भी धूम मची थी। सीता की मुख्य कार्य-कर्त्ता शीरीं ही थी। नरेन्द्र ने भी घूम-घूमकर देखा और सीता के विजयी होने की पूर्ण आशा देख, वह प्रसन्न था।

यह बात तो उसको सीता के विजयी होने के पीछे ही पता चली कि उसने अपने विपक्षी को रुपया देकर क्षेत्र से बाहर कर दिया था। यह चमत्कार कैसे हुआ, वह समझ नहीं सका परन्तु यह हुआ और निर्वाचन के दिन विपक्षी के एजेन्ट ही मतदान केन्द्रों पर नहीं पहुँचे।

सीता और नरेन्द्र मोटर में सवार क्षेत्रों के भिन्न-भिन्न स्थानों का दौरा कर रहे थे और अपने कैम्पों में बँट रहीं धड़ाधड़ पर्चियाँ देख सन्तोष अनुभव कर रहे थे। उसी सायंकाल गणना आरम्भ होने वाली थी और इस गणना में नरेन्द्र मुख्य एजेण्ट के रूप में काम कर रहा था।

कुल मतदान सवा दो लाख हुआ था। उसमें एक लाख सात हज़ार मत सीता को पड़े। कांग्रेसी प्रत्याशी की ज़मानत ज़ब्त हुई। उसको आठ हज़ार मत मिले थे। शेष मत दस अन्य प्रत्याशियों में बँट गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात के बारह बजे सीता के निर्वाचित होने की घोषणा हो गयी। अगले दिन सीता के कार्यालय में बधाइयों के तारों की और बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। उस सायंकाल सीता ने अपने कार्यकर्त्ताओं को एक भोज दिया। उस भोज में मुख्य-मुख्य कार्यकर्त्ता आमन्त्रित थे। भोज में मद्य का सेवन निर्बाध रूप में हुआ। नरेन्द्र भी इस भोज में गया था। भोज के आरम्भ होने से पूर्व शीरीं से नरेन्द्र की भेंट हो गयी। शीरीं उस समय तक निर्वाचन के खर्च का हिसाब-किताब बना रही थी।

नरेन्द्र ने शीरीं को एक ओर जाते हुए देख रोकते हुए कहा, "मैं कल प्रातःकाल यहाँ से जा रहा हूँ।"

"परन्तु आप देख रहे हैं कि मुझे तो सिर खुजलाने की भी फुरसत नहीं।"

"मगर जहाँ इतना काम है, वहां एक घंटे की देरी से कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। अब निर्वाचन हो गये। इतनी देरा से हानि नहीं होगी।"

"तो आप एक घंटा भर मुझसे बातें करना चाहते हैं?"

"हाँ।"

"नहीं नरेन्द्रजी, जिन्दगी का इतना समय व्यर्थ गँवाना ठीक नहीं। आप कम समय में ही बात समाप्त नहीं कर सकते क्या?"

"कर तो सकता हूँ, परन्तु तुम पसन्द करोगी?"

"काम पहले और खेल पीछे। यही तो स्कूलों के मास्टर पढ़ाया करते हैं न?"

एकाएक नरेन्द्र को स्मरण हो आया कि उसकी अन्तिम परीक्षा में दो मास रहते हैं। इस पर उसने कहा, "शीरीं, तुम ठीक कहती हो। अच्छा, तुम काम करो। मैं भी एक काम भूल गया था। अब काम समाप्त होने पर मिलेंगे।"

इतना कह वह बिना किसी प्रकार की बात किये उसके सामने से हट गया और शीरीं भी जिधर जा रही थी, चली गयी।

भोज में नरेन्द्र बैठा था, परन्तु ज्यों-ज्यों शराब की बोतलें खाली होती गयीं, पीने वालों की खरमस्ती बढ़ने लगी। किसी ने आवाज दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दी, "नाच का प्रबन्ध होना चाहिए ।"

नरेन्द्र को समझ आई कि यह आवाज़ शीरीं की है। इसके उत्तर में एक युगल किशोर जिसके घर में सीता का बहुत आना-जाना था, बोल उठा, "शीरीं जी नाचेंगी" एक दूसरा बोल उठा, "नग्न नृत्य।"

इस पर सब ने ताली बजा समर्थन कर दिया। शीरीं उठकर हॉल से भागने लगी। परन्तु युगल किशोर ने उसकी बाँह पकड़ ली। वह हँसती हुई अपने को छुड़ाने का यत्न करने लगी थी। परन्तु कई लोगों ने उसको घेर लिया था।

नरेन्द्र इससे आगे देख नहीं सका और वह उठ कर हॉल से बाहर को चल पड़ा। कुछ लोग हॉल के द्वार और खिड़कियाँ बन्द कर रहे थे। इस भोज में स्त्री-पुरुष दोनों वर्ग के लोग आये थे। नरेन्द्र को एक भी व्यक्ति इस प्रस्ताव का विरोध करता दिखाई नहीं दिया।

नरेन्द्र हॉल से बाहर चला आया। वह सीता के चुनाव कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ उसका सामान रखा था। उसने सामान उठवाया और एक टैक्सी में रखवाकर सवार हो गया।

टैक्सी वाले ने पूछा, "किधर ?" अब वह विचार करने लगा कि किधर जाए। उसने कह दिया, "किसी होटल में।"

टैक्सी वाले ने पूछा, "फर्स्ट क्लास या किसी सैकण्ड क्लास होटल में ?"

"किसी सैकण्ड क्लास होटल में।"

टैक्सी वाला सिंधी होटल में ले गया। धोबी तालाब के किनारे होटल था। वेटर से पता कर कि कमरा खाली है, वह टैक्सी वाले को भाड़ा दे सामान उठवा ऊपर चला गया। मैनेजर के कमरे में दाखिल हुआ तो सामने बालकराम को बैठे देख, वह उसका मुख देखता रह गया।

बालकराम ने नरेन्द्र को द्वार में खड़े देख पहचान लिया, "ओह नरेन्द्र ! आओ, आओ। तुम भी यहाँ पर हो ?"

नरेन्द्र ने आगे बढ़, हाथ जोड़ नमस्कार की और कहा, "तो आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यहाँ हैं क्या ?"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं—मैं इस होटल का और चार अन्य होटलों का मालिक हूँ। बताओ, यहाँ ठहरने आये हो ?" बालकराम ने वेटर को नरेन्द्र का सामान उठाये हुए आते देख लिया था।

"जी !" मुझको यह मालूम नहीं था कि यह होटल आप ही का है।"

"हाँ, पता होता तो तुम यहाँ आते ही नहीं। यही न ? सुनाओ, सीता तो निर्वाचन में सफल हो गई है।"

"जी हाँ, कांग्रेस की तो ज़मानत ही ज़ब्त हुई है।"

"और क्या खर्च करना पड़ा है ?"

"मुझे ठीक-ठीक ज्ञान नहीं। मैं परसों ही दिल्ली से आया था।"

"और आज उसने दावत में तुमको आमंत्रित नहीं किया ?"

नरेन्द्र को आशा नहीं थी कि बालकरामजी को इसका भी ज्ञान है। वह कह नहीं सका कि वह आमन्त्रित नहीं था। उसने अभी भी गोल-मोल बात करते हुए कहा, "निमन्त्रित तो था, परन्तु पिछले तीन दिन की भाग-दौड़ के कारण इतना थका हुआ हूँ कि कहीं एकान्त में सो सकने की आशा में वहाँ से भाग आया हूँ। यदि इजाज़त दें, तो कमरे में जाकर सो जाऊँ ?"

"और भोजन नहीं करोगे ?"

"हाँ, कुछ भूख भी है।"

"देखो नरेन्द्र ! तुम घर चले जाओ। सीता की माँ को फ़ोन कर देता हूँ। वह तुमको भोजन कराकर सुला देगी। तुमको यहाँ रहने की आवश्यकता नहीं है।"

नरेन्द्र के कुछ कहने से पूर्व ही बालकराम ने घंटी बजा दी और वेटर के भीतर आने पर कह दिया, "इन बाबू साहब का सामान अपनी मोटर में नीचे रख इनको घर ले जाओ।"

"माताजी को कष्ट होगा।" नरेन्द्र ने कहा।

"तो क्या हुआ ! कष्ट से डर कर भला कर्त्तव्य-पालन छोड़ा जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सकता है ? तुम चलो। मैं अभी एक घंटे में आऊँगा। यदि तब तक
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम सो न गये तो मिलूँगा।"

पहली रात मत-गणना के कारण नरेन्द्र रात-भर जागता रहा था; परन्तु दिन-भर वह सो चुका था। अब नींद का तो बहाना मात्र था। वह बालकराम के घर पहुँचा तो उसके वहाँ आने की सूचना पहले ही पहुँच चुकी थी। बालकराम ने फ़ोन कर दिया था। शोभा द्वार पर खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

वह नरेन्द्र को भीतर सीधा खाने के कमरे में ले गयी। नरेन्द्र ने देखा कि बम्बई में बालकराम के रहने का स्थान और घर का साज़ो-सामान लाखों की सम्पत्ति का है। शोभा देवी भी उस समय से, जब वह महोना में कपड़े सीकर निर्वाह करती थी, बहुत बदल चुकी थी। तब से वह अधिक स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होती थी।

भोजन कराते हुए शोभा ने कहा, "मैं और सीता के पिता भोजन कर चुके हैं। वे भोजन के पश्चात् एक बार अपने पाँचों होटलों का चक्कर लगाने जाया करते हैं। एक घंटे तक लौटेंगे। उनका फ़ोन आया था कि तुम बहुत थके हुए हो। इस कारण भोजन कराकर तुमको सुला दिया जाये।"

अब नरेन्द्र कह नहीं सका कि वह थका हुआ नहीं है। इस कारण भोजन कर वह अपने लिए निश्चित कमरे में जाकर लेट गया। इस पर भी वह सो नहीं सका।

उसने नीचे मोटर का हॉर्न सुना तो पहचान गया। वह समझ गया कि बालकराम आये हैं। उसने आँखें मूँद सोने का बहाना करना आरम्भ कर दिया।

बालकराम सीधा उसके कमरे में आया। नरेन्द्र उसके आने की आहट सुन रहा था। बालकराम ने बिजली जलायी तो नरेन्द्र ने आँखें खोल दीं।

बालकराम हँस पड़ा।

नरेन्द्र उठकर पलंग पर बैठ गया और बोला, "माताजी ने खूब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिला दिया है। इससे न केवल थकावट दूर हो गई है साथ ही नींद भी गायब हो गई है।"

"तब तो ठीक है। बताओ, सोने से पहले दूध इत्यादि कुछ लेते हो?"

"कुछ लेने का अभ्यास तो नहीं।"

"तब ठीक है। सीता की माताजी को कॉफी लाने के लिए कह आया हूँ। मुझे विश्वास था कि तुम सोये नहीं होंगे।"

"अच्छा।" नरेन्द्र ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा।

बालकराम खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "मुझे विश्वास हो रहा था कि तुम झूठ बोल रहे हो। तुम न तो थके मालूम होते थे न ही नींद में थे। जब तुम होटल से चले आये तो मैं विचार करने लगा था कि तुमने झूठ क्यों बोला। मैंने अनुमान लगाया कि तुमने सीता के भोज के विषय की बात को बदलकर थके होने के कारण वहाँ से चले आने का बहाना किया था। मेरा यह विचार है कि तुम किसी प्रकार की खराबी देख वहाँ से भाग आये हो।"

इस समय शोभा एक ट्रे में कॉफी ले वहाँ आ गयी। "तो यह अभी सोये नहीं?" उसने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"मैंने जगा दिया है।" बालकराम ने हँसते-हँसते कह दिया।

एक तिपाई पर ट्रे रख कर शोभा देवी तीन प्यालों में कॉफी डालने लगी। बालकराम ने कहना जारी रखा, "मुझको मालूम है कि पाँच सहस्र रुपये की विलायती शराब भोज के लिए खरीदी गयी है। वह वहाँ पी जा रही होगी और तुम वहाँ से भाग आये हो। तुम्हारे मुख से मद्य की गंध नहीं आ रही थी। तुम थे भी होश-हवास में।"

नरेन्द्र के मुख से अनायास ही निकल गया, "जी, आपका अनुमान ठीक है। मुझे पीने का अभ्यास नहीं। इस कारण मैं उनकी बेहूदा बातें पसन्द नहीं कर सका। इसी कारण वहाँ से चला आया था।"

"परन्तु कार्यालय छोड़ होटल का एकान्त पाने क्यों आये हो? क्या कार्यालय में तुमको एकान्त स्थान नहीं मिल सका?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन्द्र सोचने लगा कि क्या उत्तर दे। बालकराम ने उसका उदासीन मुख देखकर कह दिया, "खैर, छोड़ो इस बात को। तुमने अच्छा ही किया है, जो यहाँ चले आये हो। बताओ कल सीता से मिलोगे ?"

"जी नहीं। मैं कल आठ बजे की गाड़ी से नागपुर जा रहा हूँ।"

"क्यों, भाभी की प्रसन्नता में सम्मिलित होने को चित्त नहीं कर रहा ?"

नरेन्द्र को अब समझ आने लगा था कि बालकराम पूर्ण बात व्यंगात्मक रूप में ही कर रहा है। उसने कहा, "प्रसन्नता तो हुई है, परन्तु मैं अब शीघ्र दिल्ली जाना चाहता हूँ।"

"बिल्कुल सीधे। नागपुर के मार्ग से ?"

नरेन्द्र हँसा तो बालकराम और शोभा भी हँस पड़े। बालकराम ने कहा, "देखो नरेन्द्र। मैं जुगलकिशोर को जानता हूँ। सीता उसके हाथों में कैसे जा पड़ी है ? मैं कह नहीं सकता। परन्तु सीता को इस चुनाव में विजयी होने का दाम अपना सतीत्व तक देना पड़ा है।

"मैं उससे यह आशा नहीं करता था। यह भोज भी जुगलकिशोर का आयोजन है। खर्च तो सीता ने दिया है, परन्तु प्रबन्ध उसने किया है। आज दिन के समय जब वह शराब इकट्ठी कर रहा था तो मैं समझ गया था कि सीता और उसके साथी रात जन्नत का समां बाँधने वाले हैं।

"तुमको भोज के समय वहाँ से चले आते देख मुझे विस्मय हुआ था और अब प्रसन्नता हुई है। मैं यह कहने वाला था कि अब सीता से मिलने मत जाना। हमने उसको इस घर में आने से मना किया हुआ है।"

नरेन्द्र को बालकराम के ज्ञान पर सन्देह नहीं था। इस पर भी उसने कह दिया, "यदि आप अपनी लड़की को ठीक मार्ग पर ला नहीं सके तो मैं क्या कर सकता हूँ ? वह अब भारत संसद की सदस्या है और मैं एक साधारण विद्यार्थी।"

"ठीक है, तुम कुछ कर नहीं सकते। वास्तव में कोई भी किसी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आज के ज़माने में समझा नहीं सकता। सब बुद्धि के ठेकेदार बने घूमते
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। इस कारण भले लोगों को अपने विषय में ही सोचना चाहिये। यदि वे अपने को स्वस्थ, सबल और शुद्ध-पवित्र रख सकें तो भी बहुत है।

"अच्छा, अब सो जाओ। देखो, एक बात मैं तुमको बताता हूँ। मैं विनोद को छोड़ने बर्लिन गया था। वहाँ के लोग अपने देश का पुनः निर्माण करने में जिस प्रकार लगे हैं, वह हमारे लिए अनुकरणीय है। स्वेच्छा से, स्वतन्त्रता से और लगन से चौदह-चौदह घन्टे नित्य काम करने वाले युवक देश का 'मलबा' लेकर उससे निर्माण करने में लगे हैं। मैंने एक लड़की से जो एक फैक्टरी में 'टाइपिस्ट' थी और वहाँ से आकर हमारे होटल में चार घंटे काम करती थी, पूछ लिया, "तुम इतने घंटे काम करती हो! क्या तुमको फैक्टरी से पर्याप्त वेतन नहीं मिलता।"

"उसका उत्तर था, 'मिलता है, मैं तो धनी हो रही हूँ। परन्तु हमारे देश में काम करने के लिए बहुत अधिक है और करने वाले हाथ कम हैं। यदि हम सब-के-सब इतने घंटे काम न करें तो देश की बिगड़ी अवस्था एक शताब्दी में भी ठीक नहीं हो सकेगी।"

"मैंने एक और प्रश्न किया—पर तुम, मेरा मतलब है तुम्हारे देश के लोग इस देश को ईंट-चूने का ढेर बनाने वाले अमेरिकन और अंग्रेज़ों को कैसे पसन्द करते रहे?"

इस पर वह मेरा मुख देखने लगी। मुझे गम्भीर देख कहने लगी, 'उनका क्या दोष है? जर्मन हवाई जहाजों ने भी तो इंग्लैंड और फ्रांस को तबाह करने में कसर नहीं छोड़ी थी। दोष हमारे नेताओं का था।

"उन्होंने सीमा से अधिक लोभ किया था। जहाँ हमको स्वतन्त्रता से जीने का अधिकार है वहाँ दूसरों को भी है। हमारे नेतागण यह भूल गये थे।' फिर कुछ विचार कर वह बोली, 'हमने निश्चय किया है कि इस बार हम अपनी स्थिति सुधार कर अपने लिए ही नहीं अपितु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नरेन्द्र ! जहाँ यह बात हो रही थी, वहाँ से दो मील के अन्तर पर सीमा से पार पूर्वी जर्मनी के लोग उत्साह-हीन, निराशा-पूर्ण निर्धनता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वहाँ समाजवाद है। सबके परिश्रम और आय पर सबके काम और मनोरंजन पर राज्य का नियन्त्रण है। लोग अपने को थका हुआ अनुभव करते हैं। काम पर जाने वाले लोग कैदियों की भाँति दफ्तरों और कारखानों में जाते हैं और थके-माँदे, उदास और किसी प्रकार के उत्साह से रहित घरों को लौट आते हैं। वहाँ अभी भी मलबे के ढेर लगे हैं और युद्ध हुए ग्यारह वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी, उससे बने घाव भरे प्रतीत नहीं होते।

"यहाँ हिन्दुस्तान में तो युद्ध हुआ ही नहीं और देश हर बात में पिछड़ा हुआ है। युवक आराम, मनोरंजन, अधिकार और सुविधाओं के लिए व्याकुल प्रतीत होते हैं। इसी से कहता हूँ कि अब सो जाओ और जाकर अपनी पढ़ाई में जुट जाओ। एक-एक क्षण जो तुम अपनी पढ़ाई में लगाओगे, वह देश-निर्माण में लग रहा ही समझना चाहिए।"

: ९ :

नरेन्द्र के मन में दिल्ली जाने से पूर्व माता-पिता से मिलने का विचार आ गया।

उसके मस्तिष्क में नये विचारों और नई बातों का नशा उतर रहा प्रतीत हो रहा था। इस नशे के उतरने में शीरीं का व्यवहार और बालकराम की चेतावनी का विशेष हाथ था। उसके मन पर सुरेन्द्र के कहने का भी प्रभाव पड़ा था। उसने कहा था कि विपक्षी कह रहे हैं कि पाँच वर्ष में लाखों एकत्रित करने वाले भला सबको मकान इत्यादि कहाँ से देंगे, अन्तिम चोट पहुँची थी। पूर्वी बर्लिन और पश्चिमी बर्लिन के मुकाबिले की बात से वह ठीक उस व्यक्ति की भाँति अनुभव करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था, जिसके सिर से तीव्र मद्य का नशा ठंडे जल से स्नान करने पर उतरा हो। नशे के बाद नशे के काल की बातें स्मरण कर जैसे कोई भौंचक्का रह जाता है, वैसी ही अवस्था नरेन्द्र की थी। जब गाड़ी ग्वालियर स्टेशन पर पहुँची तो एकाएक उसके मन में विचार आया कि माँ से मिलना चाहिए। उसने अपना बिस्तर लपेटा और गाड़ी से उतर आया। सामने शिवपुरी की गाड़ी खड़ी थी। वह महोना का टिकट ले उसमें जा बैठा।

घर पहुँचा तो सबसे पहले माँ के दर्शन हुए। उसने आज हाथ जोड़ प्रणाम किया। माँ ने पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद दिया। उस दिन सुरेन्द्र के क्षेत्र में वोट पड़ रहे थे। माँ अपना मत डालने जाने के लिए तैयार खड़ी थी। वह राधा के तैयार हो, आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

"माँ, कहाँ, जा रही हो?" नरेन्द्र ने पूछा।

"आज मतदान हो रहा है, मैं मत देने जा रही हूँ।"

"ओह! आज दूसरी फरवरी है क्या?"

"हाँ.........।" इस समय राधा भी वस्त्र पहन अपने कमरे से निकल आई। नरेन्द्र ने भाभी को भी हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया। राधा ने भी मुस्कराते हुए हाथ जोड़ दिये और फिर नरेन्द्र की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि नरेन्द्र भैया पर से सीता की परछाईं हट गई है।"

नरेन्द्र को भूपेन्द्र की बात स्मरण हो आई। उसने कहा था कि सीता का साया नरेन्द्र पर कल्याणकारी नहीं हो सकता। आज वह राधा को यही कहते सुन विस्मित रह गया। वह विचार कर रहा था कि यह सीता का उस पर साया था कि उसका सीता पर साया था, जिसने पिछली बार घर में झगड़ा खड़ा किया था। वह अभी गम्भीर हो विचार ही कर रहा था कि राधा ने कह दिया, "माँजी, चलिए! मत डाल आएँ। फिर भीड़ हो जायेगी।" नरेन्द्र के मन में आया कि वह भी ज़रा तमाशा देख आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर नरेन्द्र ने कह दिया, "चलो भाभी। मैं तुमको ले चलता हूं।"

वे तीनों चल पड़े। मार्ग में नरेन्द्र ने पूछा, "कहाँ है आपका केन्द्र ?"

"शिव मन्दिर में।"

"और तुम किसको मत देने जा रही हो !"

"दे आऊँ, पीछे बताऊँगी।"

माँ ने तो कह दिया, "मैं तो सुरेन्द्र को मत दूंगी। उसके डिब्बे पर दो बैलों का चिह्न है।"

"और भाभी, तुम ?"

"मतदान के पीछे बताऊँगी।"

"वे शिव मन्दिर में पहुँचे तो पंडित भगवतीचरण और बाबू सुरेन्द्र नाथ के कैम्प लगे थे। माँ और पतोहू दोनों के पास अपने-अपने नम्बर के पर्चे थे। माँ के हाथ में बैलों के चिह्न वाला परचा था और भाभी के हाथ में हनुमान छाप वाला। दोनों प्रत्याशियों के कैम्प में गये बिना मतदान केन्द्र में चली गईं। नरेन्द्र बाहर खड़ा रह गया। दोनों कैम्पों में काम पूरे ज़ोरों से हो रहा था। पुरुषों की लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ लगी थीं। स्त्रियों की अभी पंक्तियाँ नहीं लगी थीं।

नरेन्द्र ने एक से पूछा, "किसका ज़ोर चल रहा है !"

किसी जानकार ने कह दिया, "तुम किधर हो नरेन्द्र !"

"मैं तो मतदाता नहीं।"

"तुम्हारे घर में तो फूट है।"

"कैसे कहते हो !"

"तुम्हारा बड़ा भाई छोटे का विरोध कर रहा है।"

"तो फूट हो गई, तुम मूर्ख हो।"

बात करने वाले ने कह दिया, "तो तुम कुछ नहीं जानते।" नरेन्द्र हँस पड़ा।

माँ और भाभी बाहर आईं तो नरेन्द्र उनके साथ ही लौट पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ ने पूछा, "किसकी ओर देख रहे हो !"

"माँ, दोनों के कैम्पों में भीड़ लगी है।"

"आज से दो दिन पहले पंडित का ज़ोर था, परन्तु उस दिन पंडित नेहरू आये थे और पासा पलट गया है।"

"अच्छा !"

"हाँ, भगवान ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली और पंडितजी के मुख से सरस्वती बोल उठी। उन्होंने कह दिया, "सुरेन्द्रनाथ मेरा प्रत्याशी है। उसको मेरा समर्थन प्राप्त है। "बस फिर क्या था, सब कहने लगे कि पंडितजी के कहने पर फूल चढ़ाएँगे।"

नरेन्द्र मुस्कराता रहा। उसने माँ को बताया, "माँ ! मैं बम्बई से आ रहा हूँ।"

"हाँ, तो सीता का क्या हाल है ?"

"वह जीत गई है, एक लाख वोट से।"

"तब तो मानना होगा कि भगवान सत्य ही सुरेन्द्र पर प्रसन्न हैं।"

राधा बोल नहीं रही थी। इस पर भी वह प्रसन्नवदन थी। नरेन्द्र ने उसको चुप देख पूछ लिया, "भाभी, तुम क्या समझती हो ?"

"मैंने जो समझा है वह कर दिया। मुझको पंडित भगवतीचरण देवता समझ आये हैं और मैं उनको अपना मत दे आई हूँ।"

"और माँ, तुमको पंडित राक्षस समझ आया है ?"

"नहीं, यह बात नहीं। पंडित है तो बहुत विद्वान। सुरेन्द्र तो उसके जूते की भी तुलना नहीं रखता, परन्तु नरेन्द्र ! वह मेरा बेटा है। मैं उसके विपरीत मत नहीं दे सकी।"

"पिताजी किधर मत दे रहे हैं ?"

"वे तो पंडित के ही पक्ष में हैं। वे और भूपेन्द्र बहुत प्रातःकाल के निकले हुए हैं। दोनों पंडितजी की सहायता कर रहे हैं।"

"और उन्होंने तुमको मना नहीं किया ?"

"नहीं, मैंने पहले ही कह दिया था कि मैं सुरेन्द्र के विरुद्ध मत दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो नहीं सकती। वे हँस देते थे। उन्होंने मुझको मना नहीं किया।"

"और वह बैलों वाली पर्ची किसने लाकर दी थी?"

"एक दिन सुरेन्द्र आया था और मुझको तथा सब घर वालों को लाकर दे गया था।"

"भाभी! तुमको भी दे गया था।"

"हाँ भैया! परन्तु मैंने उसको कह दिया था कि उसको घर-भर में से दो मत मिलेंगे। एक माँजी का और दूसरे भोला का। मैंने उसके पक्ष में मत देने से इंकार कर दिया था।"

और भोला की पत्नी पुत्र और पतोहू?"

"वे सब पंडितजी को मत दे रहे हैं। भोला कहता था कि सुरेन्द्र उसके हाथों में खेला है। भला मैं उसको मत क्यों नहीं दूंगा?"

नरेन्द्र इस संघर्ष को समझने का यत्न कर रहा था। एक ओर बुद्धि थी, वह भगवतीचरण के पक्ष में थी। दूसरी ओर भावना थी—पुत्र के प्रति, मालिक के प्रति और पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रति।

वह स्वयं भी विचार कर रहा था। कि सुरेन्द्र महा बेईमान आदमी है। वह निश्चित रूप से जानता था कि वह दोहरे हिसाब की किताबें रखता है और लाखों रुपये का इन्कम टैक्स बचा रहा है।

वह अभी भी अपने मार्ग में अनिश्चित मन था शीरीं की मनमोहक मुस्कान उसको याद आती थी तो वह सब बातें भूल जाता था। परन्तु जब बुद्धि से विचार करता था, तो वह उसकी सुन्दर रंग-रूप वाली नागिन से तुलना करने लगता था। इसी प्रकार वह समाजवाद और कम्यूनिजम के नारों पर मुग्ध हो जाता था परन्तु उस सब में वह वासना, उच्छृंखलता, अन्याय और स्वार्थपरता का नग्न नृत्य देख रहा था।

सायंकाल हो गया। देहाती क्षेत्र था और सब स्थानों से मतदान के डिब्बे महोना में एकत्रित होने लगे थे। भूपेन्द्र तो उस स्थान पर दो सौ लठंत लिये खड़ा था। उसको भय था कि सुरेन्द्र के वेतानधारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण्डे [illegible] करने का यत्न करेंगे । भवानी प्रसाद लौट आया था ।

नरेन्द्र ने आज पिता के चरणस्पर्श किये। "यह क्या कर रहे हो नरेन्द्र ?" पिता ने हँसते हुए पूछ लिया और उसको उठाकर गले से लगा लिया ।

"पिताजी, अपनी भूल स्वीकार कर रहा हूँ ।"

"क्या भूल की थी तुमने ?"

"छोटी भाभी के कहने पर माता-पिता की बात नहीं मानी थी ।"

"और अब उसने चरणस्पर्श करने की स्वीकृति दे दी है ।"

"उसने तो नहीं दी, परन्तु भाभी के पिता ने कुछ कहा है और मेरी बुद्धि ने उनके कथन का यह परिणाम निकाला है ।"

"सच ? तब तो हमको बालकरामजी का धन्यवाद करना चाहिए ।"

"जी, वे सत्य ही धन्यवाद के पात्र हैं । मैंने बम्बई में उनके फली-भूत होने की कथा सुनी है और उसी पर विचार करता हुआ आ रहा था कि भूपेन्द्र भैया के कारोबार का विचार आ गया । मैंने सोचा कि चल-कर देखूँ कि वे कहाँ तक पहुँचे हैं ?

"यहाँ पहुँचकर माँ को अपना मत स्नेहवश अपने पुत्र को देते देख और आपको उसे मना न करते देख चरणस्पर्श करने को जी कर आया है ।"

"तो तुम्हारी माँ ने तुमको बताया है कि उसने अपना मत सुरेन्द्र को दिया है ।"

"जी, केवल यही नहीं । बल्कि यह भी बताया है कि योग्य तो भगवतीचरणजी हैं । परन्तु पुत्र तो पुत्र ही है । साथ ही उन्होंने यह भी बताया है कि जब वे अपने मतदान के विषय में विचार आपको बताती थीं तो आप हँस देते थे, मना नहीं करते थे ।"

"देखो नरेन्द्र ! हम नियन्त्रण में विश्वास नहीं रखते । माँ की पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के प्रति ममता एक स्वाभाविक गुण है। भला मैं उसको कैसे मना कर सकता था ! मुझको अपना देश के प्रति कर्तव्य पुत्र के स्नेह से अधिक प्रिय है। यह भी एक स्वाभाविक बात है। उसने मुझे कभी नहीं कहा कि मैं अपने कर्तव्य को छोड़ पुत्र का समर्थन करूँ। यह हिन्दू जन्म-पद्धति है। हम दूसरों से वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा हम दूसरों से अपने प्रति किए जाने की आशा करते हैं।"

नरेन्द्र ने बताया, "मैं कल दिल्ली जा रहा हूँ।"

"ठीक है, पढ़ाई कैसी चल रही है ?"

"ठीक ही चल रही है।"

"अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। कहीं ऐसा न हो कि समय पर सब-कुछ विगड़ जाये।"

"दो मास हैं परीक्षा में, मैं बहुत ध्यान से रहूँगा।"

रात का भोजन हो ही रहा था कि मुन्शी रामदयाल आ गया। उसने रसोईघर के बाहर से ही आवाज़ दे दी, "बाबू साहब ! भूपेन्द्र रात को नहीं आयेगा, गणना कल आरम्भ होगी।"

"अन्य स्थानों पर काम कैसा रहा ?" भवानी प्रसाद ने पूछ लिया।

"दोनों पक्ष का ज़ोर रहा है। कहा नहीं जा सकता कि किसकी विजय होगी।"

"मुन्शीजी, देखिए नरेन्द्र आया है।"

"मुन्शी रामदयाल रसोईघर में आ गया। "नरेन्द्र ! कब आये ? तुम मतदान देखने गए थे क्या ?"

"नहीं, मुन्शीजी ! रुचि नहीं रही। बम्बई में सीता भाभी के चुनाव देख मन में इस सब काम के लिए अरुचि उत्पन्न हो गयी है।"

"तब तो तुम बधाई के पात्र हो। परन्तु नरेन्द्र, अपनी रुचि-अरुचि से क्या होता है। जब प्रजातन्त्र का युग है तो निर्वाचन भी हैं। जब निर्वाचन है तो बुरों के साथ भलों को भी पिसना है। बताओ, सीता जीत गई है क्या ?"

"हाँ मुन्शीजी ! परन्तु सीता के पिताजी मिले थे और वे कह रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थे कि इस जीत में उसकी भारी हार हुई है। वह अपनी जीवन-बाजी हार गयी है।"

"यह उसके पिता कहते थे ?"

"जी।"

"तब तो नरेन्द्र ! तुम कुछ अच्छा समाचार नहीं लाये। पहले तो सुरेन्द्र ही बाजी हारा हुआ था। अब पति-पत्नी दोनों ही हार गये हैं। बहुत ही शोचनीय अवस्था है। बालकराम वहाँ क्या करते हैं ?"

"बम्बई जाकर उन्होंने दो-तीन सौ रुपये में चाल के बाहर एक टी-स्टाल खोल लिया था। उस टी-स्टॉल से उन्नति करते-करते वे अब पाँच होटलों के मालिक हैं। एक फर्स्ट क्लास होटल है और चार सैकिण्ड क्लास हैं। कई लाख की सम्पत्ति है और डेढ़-दो लाख की वार्षिक आय है। पाकिस्तान में छोड़ी सम्पत्ति के क्लेम भी उनको मिल गए थे।

"बहुत बुद्धिमान व्यक्ति प्रतीत होता है।"

"मैंने उनसे पूछा कि यह हराम की कमाई नहीं है क्या ? वे हँस-कर बोले, 'यह भगवान की देन है।" परमात्मा ने दो हाथ दिये हैं और एक मुख दिया है। अर्थात् उसने मनुष्य में अपनी आवश्यकता से अधिक पैदा करने की सामर्थ्य दी है। यदि अधिक काम कर मैंने अधिक आय की है तो यह हराम कैसे हो गया। यह हराम है तो दोष भगवान का है।'

"मैंने कहा, पैसे के बल पर दूसरों से काम लेकर धन में वृद्धि करनी तो शोषण करना है। यह पाप नहीं क्या ? उनका कहना था शोषण तब हो, जब मैं किसी को उसके बाजार-मूल्य से कम वेतन दूं। जब मैं अपने अधीन सब कर्मचारियों को पूरा वेतन देकर भी बचा सकता हूं तो न यह शोषण है न पाप। बात यह है कि सब लोग मालिक बन नहीं सकते। उनमें योग्यता नहीं होती कि वे कारोबार चला सकें। उनका स्वभाव होता है कि दूसरों का ही हुक्म पालन करें। वे ही शोषण, पोषक, शोषित इत्यादि भ्रम-मूलक समाघोष करते फिरते हैं। वास्त-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक बात यह है कि जो जितने वेतन का अधिकारी है, उसको प्राप्त कर उन्हें दूसरों की वृद्धि पर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये। हाँ, उचित वेतन से कम देना पाप है। इसका दण्ड राज्य को देना चाहिए। मैं राज्य नियमों के अनुसार सब को वेतन देता हूँ, फिर पापी कैसे हो गया।'

"मुन्शीजी! मैं उनकी बात का उत्तर नहीं दे सका।"

"बात तो ठीक है।" मुन्शीजी ने कह दिया, "संसार में अधिक संख्या उन लोगों की है जो दास-प्रवृत्ति के हैं। वे हुक्म होने पर विचार भी नहीं कर सकते कि हुक्म ठीक है अथवा गलत है।

"देखो, आज से तीन दिन पहले यहाँ का वातावरण पंडित भगवतीचरण के पक्ष में था। दो दिन हुए नेहरूजी क्षेत्र में घूम गए और कह गए कि सुरेन्द्र उनका प्रतिनिधि है। बस, वातावरण बदल गया। जहाँ हम आशा कर रहे थे कि सुरेन्द्र पचास-साठ हज़ार से हारेगा, वहाँ अब बाजी हज़ार-दो-हज़ार की प्रतीत होती है। वह जीता तो इतने वोट से और हम जीते तो भी इतने वोट से।

"यह दसों का स्वभाव होता है कि वे मालिक का कहा मानते हैं। उस आज्ञा के उचित-अनुचित होने का प्रश्न उनके सामने आता ही नहीं।"

नरेन्द्र हँस पड़ा और बोला, "खैर, आप पंडित नेहरू को मालिक तो मानते हैं?"

"परन्तु नरेन्द्र, मैंने तो अपना वोट स्वतन्त्र रूप से पंडित भगवतीचरण को दिया है। मैं तो नेहरूजी को न तो मालिक मानता हूँ, न नेता। यह तो मैं जन-साधारण की बात कह रहा हूँ। किसी बात को वे गलत समझते हुए भी मालिक व नेता के कहने से, उसको करने वालों की बात ही में कह रहा हूँ।"

: १० :

नरेन्द्र सुरेन्द्र से मिलने नहीं गया। नरेन्द्र की रुचि नहीं थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेन्द्र को अवकाश नहीं था। वह अगले दिन महोना से चल पड़ा। उस समय तक मत-गणना चल रही थी। जाने से पूर्व नरेन्द्र ने माँ से कहा, "माँ, मैं भाभी से खर्च लेना बन्द कर रहा हूँ! तुम कुछ सहायता कर सकोगी?"

"पिताजी से क्यों नहीं माँगते?"

"माँग तो सकता हूँ, आशा है वे इंकार भी नहीं करेंगे। परन्तु मैं देखना चाहता था कि माँ का सब स्नेह सुरेन्द्र के लिए ही समाप्त हो गया है, अथवा कुछ छोटे बेटे के लिए बचा हुआ है।

समीप खड़ी राधा सुन रही थी। उसने कहा, "भैया तुमको तो खर्च चाहिए न?"

"हाँ, भाभी! अभी तक सीता भाभी तीन-चार सौ मासिक दे देती थीं। अब मैं विचार करता हूँ कि चार मास के लिए सवा सौ रुपया और कुछ ऊपर लगभग पचास रुपये मिल जाएँ तो परीक्षा समाप्त करने तक काम चल जाएगा।"

रुक्मिणी ने पूछ लिया, "और सीता से क्यों नहीं माँग रहे?"

"माँ! कुछ बात है, यदि तुम न पूछो तो ठीक है। मैं अब उससे कुछ नहीं लूँगा।"

राधा ने कुछ विचार कर कह दिया, "नरेन्द्र! तनिक ठहरो। मैं अभी आयी।"

उस समय वे घर के प्रांगण में खड़े थे। राधा अपने कमरे में गयी और दो मिनट के बाद हाथ में एक नोटों का पुलिंदा लिये आ गयी। उसने वह बंडल नरेन्द्र को देते हुए कहा, "भैया गिन लेना! मेरा विचार है कि छः सौ से कुछ ऊपर ही हैं। अपना सुख समाचार भेजते रहना।"

"ओ भोला!" राधा ने आवाज़ दे दी और जब वह आया तो बोली, "बाबू का सामान बाहर ले चलो। बाहर पंडितजी की जीप खड़ी है। ड्राइवर से कहो, इनको स्टेशन तक छोड़ आये।"

नरेन्द्र पंडितजी की जीप में चढ़ रहा था तो भगवतीचरण और मुंशी रामदयाल गणना-केन्द्र की ओर से आते दिखाई दिये। नरेन्द्र ने मुंशीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को नमस्कार की तो मुंशी ने पूछ लिया, "जा रहे हो ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ मुंशीजी !"

"अच्छा, तुमको दिल्ली में मिलूंगा।"

"परन्तु मैं वाई० एम० सी० ए० के होस्टल को छोड़ रहा हूँ।"

"क्यों ?"

"किसी सस्ते स्थान पर रहने का विचार है।"

"अरे ! क्या सुरेन्द्र की जेब एक ही इलैक्शन में खाली हो गयी है ?"

"यह तो मैं नहीं जानता। हाँ, मेरी उनके पैसे में रुचि नहीं रही।"

"तब तो और भी कारण है कि तुमसे मिला जाये। अच्छा, मैं आऊँगा।"

"परन्तु मिलेंगे कैसे ?"

"नरेन्द्र बेटा ! दिल्ली क्या तुम न्यूयॉर्क में भी चले जाओ, तो भी ढूंढ लूंगा। देखो, किसी कार्य में रुचि हो तो वह हो ही जाता है।"

जीप चल पड़ी और नरेन्द्र यथासमय दिल्ली पहुंच गया। वहाँ पहुँचते ही उसने पहला कार्य यह किया कि कॉलेज के समीप एक लॉज में एक कमरा ले लिया और एक ढाबे पर भोजन का प्रबन्ध कर लिया। इसके पश्चात् वह अपने कार्य में लग गया।

उसे दिल्ली में आये दस दिन ही हुए थे कि कॉलेज के कार्यालय का चपरासी आकर उसको कहने लगा, "साहब, आपका फोन है।"

नरेन्द्र ने कुछ विचार किया और चपरासी के हाथ में एक चवन्नी देकर कहने लगा, "कह दो कि मैं आज कॉलेज नहीं आया और बुलाने वाले के फोन का नम्बर नोट करके दे जाओ।"

चपरासी मुस्कराकर चला गया। पन्द्रह मिनट में वह में वह बुलाने वाले का फोन नम्बर ले आया। नरेन्द्र नें देखा कि नम्बर मिसेज़ अली का है। चपरासी की मौज बन गयी। नरेन्द्र के तीन-चार फ़ोन नित्य आने लगे और प्रति फोन के लिये नरेन्द्र चपरासी को चार आने देकर कभी गैर-हाजिर, कभी पढ़ाई के कमरे में, कभी दिल्ली से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इत्यादि का बहाना बना छुट्टी पाता रहता था।

फरवरी मास के अन्त में नरेन्द्र को एक ऐसे फोन से बुलावा आया कि जिसका नम्बर उसको विदित नहीं था। वह एक क्षण तक विचार करता रहा फिर यह विचार कर कि कहीं मुंशीजी का फोन न हो। वह कार्यालय में आकर पूछने लगा, "हाँ जनाब! कौन बोल रहे हैं?"

"भूपेन्द्र हूँ, आज शाम को मिल सकते हो क्या?"

"किस समय और कहाँ?"

"होटल इंडिया, कमरा नम्बर बाईस में। ठीक पाँच बजे।"

"पहुँच जाऊँगा।"

"चाय वहाँ ही पीनी होगी।"

"ठीक है।"

नरेन्द्र फोन करके घूमा तो उसके पीछे शीरीं खड़ी थी। "ओह!" अकस्मात नरेन्द्र के मुख से निकल गया।

"कहाँ जा रहे हैं?"

"क्लास-रूम में। सुन रही हो न घंटा बज रहा है?"

"कितने मिनट का पीरियड होता है?"

"पचास मिनट का।"

"तो मैं कॉलिज के बाहर तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी। देखो, अगर आज भी बदतमीज़ी की तो होटल इंडिया में ठीक पाँच बजे पहुँच जाऊँगी?"

"डाँट खाने का शौक है तो वहाँ भी चल सकती हो?"

"कौन डाँटेगा?"

"भैया हैं, वही जो उस दिन वाई० एम० सी० ए० तीस नम्बर में आये थे। उन्होंने············।" वह कहता-कहता रुक गया और बात बदलकर बोला, "अच्छा मैं पीरियड के उपरान्त मिलूँगा।"

इतना कह वह भागकर क्लास-रूम में चला गया। शीरीं उसको दो-तीन बार दिन में फोन करती रही। उसके भाई सुरेन्द्र और भाभी सीता के भी फोन आते रहे थे। ये सब वाई० एम० सी० ए० होस्टल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के चक्कर काट चुके थे। इनको पता नहीं था कि नरेन्द्र कौन से 'लॉज' में चला गया है। आज इस प्रकार शीरीं से पकड़े जाने पर उसने यह निश्चय कर लिया था कि एक बार सब से कहकर वह छुट्टी पा ले तो ठीक है।

पीरियड के उपरान्त जब वह कॉलेज के बाहर आया तो शीरीं को एक मोटर में कॉलेज के फाटक पर खड़े देख मुस्कराया। गाड़ी सीता की थी। उसने कहा, "तो तुम अभी भी सीता भाभी के साथ हो?"

"पहले भीतर बैठो।" शीरीं ने स्वयं स्टीयरिंग पर बैठते हुए कहा।

नरेन्द्र ने बैठते हुए कहा, "हाँ, तो और क्या हुक्म है?"

"तुम बदतमीज़ को तुम्हारी भाभी ने बुलाया है।"

"ओह! सीता भाभी ने?"

शीरीं ने गाड़ी चलाते हुए कहा, "हाँ और उनकी प्राइवेट सेक्रेटरी तुमको कैद कर वहाँ ले जा रही है।"

"बन्दा बँधा हुआ जा रहा है।"

"और देखो, बहुत झगड़ा किया तो ऐक्सिडेंट कर तुमको और अपने को भी खत्म कर दूँगी।"

"संसार का बहुत कल्याण करोगी शीरीं, जल्दी करो।"

"क्यों, मरने के लिए बहुत जी करता है?"

"जब तुम जैसी ऐश-पसन्द औरत मरने के लिए तैयार है तो भला मुझको क्या एतराज हो सकता है! तुमने सोचा ही होगा कि तुम्हारा क्या होने वाला है। वही नेक अंजाम मेरा भी हो जायेगा।"

"अंजाम? भला मरने के बाद क्या अंजाम होगा? यह शीरीं और नरेन्द्र, यह रंज और मजे, कुछ भी नहीं रहेंगे।"

"मैं यही तो कह रहा हूँ कि यदि यह सब-कुछ छोड़ तुम खत्म होना चाहती हो तो ज़रूर कुछ अच्छी बात ही चाहती होगी। वह नेक बात मेरे लिए भी होगी, यही तो कहा है न?"

"अच्छा चुप करो और सुनो। संसद का सैशन आरम्भ हो गया है और सीताजी अब कम्यूनिस्ट दल के नेताओं में बैठती हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें हैरानी की बात क्या है ?''

"हैरानी की बात यह है कि पार्टी की नेता पार्टी के एक टिकट होल्डर को बुला रही हैं।"

"तो टिकट लेने पर यह भी कर्तव्य हो जाता है ?"

"हाँ।"

"और यदि नेता की आज्ञा न मानूँ तो !"

"तो क्या ! तो किसी दिन खट-खट पिस्तौल की दो गोली और सब-कुछ तारीकी में गुम।"

"यह तो बहुत ठीक होगा। अपने पाप-कर्मों का प्रायश्चित हो जायेगा।"

"तो बहुत पाप किये हैं तुमने ?"

"हाँ एक महापाप भी किया है।"

"भला क्या !"

"एक बदकार औरत से मुहब्बत की है।"

"तुमको पार्टी का टिकट किसने दिया था !"

"जो देने का अधिकारी था, उसी ने। यदि उससे भूल हो गयी है तो मैं टिकट वापस कर दूंगा। उसको विदित था कि मैं किसी से प्रेम करता हूँ। उसने कहा था, "प्रेम करना गलत नहीं है। मगर वह प्रेम अपने दल के सदस्य से ही होना चाहिए।

"मुश्किल यह हो गयी है कि वह बदकार औरत, मेरी महबूबा, अपनी पार्टी की सदस्या है।"

"मगर पार्टी में तो बदकारी के मायने सिर्फ पार्टी से दगा करना है। क्या उस बदकार औरत ने पार्टी को धोखा दिया है !"

"यह तो मैं नहीं जानता। हाँ, उसने वह कुछ किया है जो समाज में बदकारी मानी जाती है।"

"हम मूर्ख समाज के विचारों को गलत मानते हैं।"

"परन्तु हमारा दल तो समाजवादी है न। भला वह समाज की बात को अमान्य कैसे कर सकता है !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम तो समाज के मायने कम्यूनिस्ट दल ही मानते हैं।"

"मगर शीरीं ! तुम्हारे न माँ-बाप हैं, न भाई-बन्धु ! इसलिए तुम्हारी वह सीमित समाज हो सकती है, परन्तु सीता की, मेरी, सुरेन्द्र भैया की तथा अन्य कई कम्यूनिस्ट टिकट-होल्डरों की तो यह बात नहीं। उनके माँ-बाप हैं, भाई-बन्धु हैं, मित्र-संगी हैं। उनका तो समाज तुमसे लम्बा-चौड़ा है।"

"उनको छोड़ना होगा, वह समाज।"

"टिकट देने वाले ने यह तो कहा नहीं था।"

"यह बात तो मान्य है। हमारे समाज का नाम 'प्रोलिटेरियेट' है हम गधों के समाज से ऊपर हैं।"

नरेन्द्र हँस पड़ा।

इस समय वे नॉर्थ एवेन्यू में पहुँच गए थे। सीता को एक क्वार्टर मिला था। वह सुरेन्द्र से पृथक् रहती थी। शीरीं ने कार खड़ी की तो नरेन्द्र उतर आया। सीता उस समय जगाधरी के पेपर मिल वर्करों से मिल रही थी।

शीरीं नरेन्द्र को अपने उस कमरे में ले गयी, जहाँ उसने अपने सोने का प्रबन्ध कर रखा था। वहाँ पलंग लगा था और एक मेज-कुर्सी थी, बस। शीरीं पलँग पर बैठ गयी, नरेन्द्र खड़ा रहा।

"बैठियेगा नहीं !"

"क्या करूँगा बैठकर। अपने 'बॉस' को सूचना कर दो कि मैं हाज़िर हो गया हूँ।"

"वह भी होगा। परन्तु पहले तो आप एक घंटा भर मुझसे बात करना चाहते हैं न !"

नरेन्द्र को बम्बई भोज से पहले की बात स्मरण हो आयी। साथ ही उसको शीरीं का उत्तर भी स्मरण आ गया। उसने वही दुहरा दिया। उसने कहा, "पहले काम पीछे खेल।"

"मैं खेल नहीं करना चाहती। मैं बिलकुल 'सीरियस' हूँ। अपने सत्य हृदय से एक घंटा बात करने के लिए तैयार हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु शीरीं ! मैं उस दिन तो खेल के लिए ही एक घन्टे की अवधि माँगता था। परन्तु तुमने मुझको अपने काम की याद दिला दी। मेरा वह काम अभी समाप्त नहीं हुआ।"

"कब समाप्त होगा ;"

"बीस अप्रेल सायं बजे। वह मेरी परीक्षा का अंतिम दिवस है।"

"परन्तु मैं यहाँ आपको खेल के लिए नहीं लायी। मैं तो आपसे एक गम्भीर विषय पर बात करने के लिए लाई हूँ !"

"तो करो, मैं सुन रहा हूँ।"

"बैठियेगा नहीं।"

"मैं थक नहीं जाऊँगा, समय व्यर्थ मत गंवाओ।"

"आपने मुझे विवाह का वचन दिया था न !"

"हाँ।"

"तो आप अपनी मंगेतर से भागते क्यों हैं !"

"इसलिए कि तुम अब मंगेतर नहीं रहीं।"

"कब टूटी है सगाई और किसने तोड़ी है !"

"तुमने शीरीं, बम्बई में भोज के दिन।"

"मुझको तो कोई ऐसी बात स्मरण नहीं। इस विषय पर मेरी आपसे कभी बात नहीं हुई।"

"मुझको तो स्मरण है। जब मैं वहाँ से चला आया था तो तुमने कुछ ऐसा किया था, जिससे सगाई रह न सकी।"

"क्या किया था !"

"तो तुम नहीं जानतीं !"

"मैंने इतनी शराब पी ली थी कि मुझे उस रात की बात ठीक-ठीक स्मरण नहीं।"

"परन्तु जिसने मुझको बताई हैं, उसने शराब की एक बूंद भी नहीं पी थी और उसको सब-कुछ स्मरण है।"

"कौन है वह !"

"नहीं बताऊँगा। मुझको भय है कि तुम अथवा तुम्हारा कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी लड़-लड़कर गोली से उसका काम तमाम न कर दे।"

"और आपको डर नहीं लगता, एक झूठ बोलने पर !"

"अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए झूठ बोलना कब मना हुआ है अपनी पार्टी में !"

"तो आप किसी उद्देश्य के लिए झूठ बोल रहे हैं !"

"झूठ नहीं सत्य कह रहा हूँ। पार्टी की बात तुम्हारे द्वारा मुझको झूठा कहने के कारण कही थी। इस पर भी शीरीं ! मैं मरने से नहीं डरता और तुमको बताता हूँ कि मैंने उस भोज में तुम्हारे व्यवहार के विषय में क्या सुना है !"

"क्या सुना है !"

"तुमने तीन बार नाच किया था। तुम्हारे नृत्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी थी। उसके पश्चात् तो वहाँ तुम्हारी संगत के लिए नीलामी होने लगी थी। दाम बहुत चढ़ने लगे तो नीलामी देने वाले परस्पर लड़ पड़े थे।"

"तो इससे मैं विवाह के अयोग्य कैसे हो गयी !"

"मैंने निश्चय किया है कि जो औरत अपनी नीलामी को देखती-सुनती रही हो, उससे मैं विवाह नहीं करूँगा।"

"क्यों ? इसमें खराबी क्या है ? मैं तो……।"

"इस समय सीता वहाँ आ पहुँची। उसने शीरीं को पलंग पर बैठे और नरेन्द्र को उत्तेजना में सामने खड़े देखा तो कह दिया, "नरेन्द्र ! यहाँ से अवकाश पा उधर आ जाना।"

"अवकाश है भाभी !" और वह कमरे से बाहर निकल सीता के साथ ड्राइंगरूम में जा पहुँचा। शीरीं दोनों के पीछे-पीछे थी।

वहाँ कौच पर बैठे सीता ने पूछा, "तुम फोन पर बात क्यों नहीं करते थे।"

"भाभी ! मेरे पास अवकाश नहीं था। मैंने अपनी अंतिम परीक्षा देनी है और वह अब बिलकुल समीप आ गई है।"

'देखो मैं तुमको एक बात बताने वाली थी। रूस की सरकार एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दर्जन हिन्दुस्तानी इंजीनियरों को ट्रेनिंग के लिए रूस में ले जाना चाहती है। मैंने तुम्हारे नाम का सुझाव दिया था और रूसी दूतावास के अधिकारी तुमसे बात करना चाहते हैं। बताओ, कब जा सकोगे वहाँ ?"

"बीस अप्रैल के बाद।"

"इसको तो अभी दो मास के लगभग हैं।"

"हाँ, उससे पूर्व मुझे एक क्षण के लिए भी अवकाश नहीं है।"

"शीरीं से बात करने का भी नहीं।"

"नहीं भाभी, मैंने उसको भी कह दिया है। उस दिन से पूर्व मुझको किसी भी काम के लिए आवश्यक नहीं।"

इस पर शीरीं ने कह दिया, "परन्तु दीदी ! ये आज होटल इंडिया में पाँच बजे चाय के लिए जाने वाले हैं।"

"वहाँ क्या है ?" सीता ने प्रश्न-भरी दृष्टि से शीरीं की ओर देखा !

"वहाँ इनके एक भाई ठहरे हैं।"

"ओह ! तो जेठजी हैं। क्या कहना चाहते हैं तुमको ?"

"मुझको मालूम नहीं। मेरा विचार है कि पिताजी ने मेरे खर्च के लिये रुपये भेजे हैं।"

"तो अब तुम उनसे खर्च लेने लगे हो !"

"पिताजी से नहीं भाभी ! राधा भाभी ने कुछ दिये हैं। मेरा विचार है कि पिताजी को पता चला होगा और उन्होंने भी भेजे होंगे।"

"तो तुम फिर उनके चंगुल में फँस गये हो !"

"हाँ, एक के चंगुल से निकला तो दूसरे ने फँसा लिया है।"

इस पर तो सीता के माथे पर त्योरी चढ़ गयी।

"देखो भाभी ! मतलब की बात हो जाये तो ठीक है।"

"मैं तो चाहती हूँ कि तुम कल रूसी दूतावास में चले जाओ। बताओ, किस वक्त जा सकोगे ! मैं फोन से उनको सूचित कर दूंगी।"

"ठीक है। कल चार बजे के पश्चात् और छः बजे से पूर्व, जब वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहें मैं उपस्थित हो जाऊँगा।"

सीता ने फोन उठाया और समय साढ़े चार बजे का निश्चय कर दिया।

"तो अब मैं जाऊँ!" नरेन्द्र ने पूछ लिया।

वास्तव में वहां से छुट्टी पाने के लिए ही उसने रूसी दूतावास में जाना स्वीकार किया था। सीता ने एक छण तक विचार किया और कह दिया, "अच्छा, जा सकते हो। शीरीं तुमको तुम्हारे ठहरने के स्थान पर गाड़ी में छोड़ आयेगी। साथ ही यह कल तुम्हें तुम्हारे निवास-स्थान से रूसी दूतावास में ले जायगी। समझे! अब जाओ।"

नरेन्द्र ने घड़ी में समय देखा, उस समय तीन बजे थे। भूपेन्द्र से मिलने जाने में अभी दो घन्टे थे। इससे वह उठ कर निकल आया। शीरीं भी उसके साथ थी। शीरीं समझ रही थी कि उसको नरेन्द्र के निवास स्थान का पता मिल जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

सुरेन्द्र महोना के क्षेत्र से दो सौ मतों से जीत गया। इस बीच में जहाँ पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रभाव का हाथ था, वहाँ मत-गणना करने वाले के पंडित भगवतीचरण के पक्ष के पाँच सौ वोट अवैध करना भी कारण था

इस परिस्थिति में सुरेन्द्र को भय था कि यदि भगवतीचरण ने निर्वाचन रद्द की याचिका कर दी तो उसका निर्वाचन भी रद्द हो सकता है। इस परिस्थिति में वह अब पंडित से किसी प्रकार का समझौता कर लेना चाहता था।

इस बात की घोषणा होते ही कि वह निर्वाचन में दो सौ मतों से विजयी हुआ है, वह अपने पिता के घर को चल पड़ा। भवानीप्रसाद, पंडित भगवतीचरण और भूपेन्द्र के पास बैठा चुनाव के परिणामों पर विचार कर रहा था।

सब मतदान केन्द्रों का परिणाम भूप और पंडित भगवतीचरण पढ़-पढ़कर भवानी प्रसाद को सुना रहे थे। पूर्ण परिणाम को सुन भवानी प्रसाद ने कहा, "पंडितजी! मैं आपकी इस विजय पर आपको बधाई देता हूँ।"

"परन्तु इस विजय से कार्य-सिद्धि नहीं हुई।"

"यह तो मत-गणना करने वाले अधिकारी के कारण है। यदि उसने इतने मत रद्द न किये होते तो कार्य-सिद्धि का भी अवसर मिल जाता।"

"तो आपका अभिप्राय यह है कि इस गणना को रद्द करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
याचिका उपस्थित कर दूँ ?

"नहीं। इसकी आवश्यकता नहीं।"

"क्यों नहीं ? भापा !" भूपेन्द्र ने पूछ लिया।

"मुझे मुकद्दमों में विश्वास नहीं। मैं तो निर्वाचन का एक ही प्रयोजन समझता था। वह यह कि जनता की ज्ञान-वृद्धि हो। वह तो हो गई। जब हमने कार्यारम्भ किया था, लोग कांग्रेस को ही देश हित में एक संस्था मानते थे। अब निर्वाचन के अन्त पर हमने पचास प्रतिशत लोगों को कांग्रेस की मिथ्यावादिता का भास करा दिया है। शेष पचास प्रतिशत में बहुत हैं, जो हमारी बात की यथार्थता को मानते हैं। परन्तु जवाहरलाल की प्रतिष्ठा के लिए अपने मत सुरेन्द्र को दे आये हैं।"

"यह तो मैं भी समझ गया हूँ। हमसे एक भूल हुई है कि हमने जवाहरलाल की प्रतिष्ठा के ढोल का पोल नहीं खोला। यदि ऐसा भी किया होता तो कदाचित् सुरेन्द्र जीत न सकता।"

सुरेन्द्र बैठक के द्वार पर खड़ा यह अन्तिम बात सुन रहा था। उसने बैठक में प्रवेश करते हुए कह दिया, "पंडितजी ! इस अवस्था में मत-गणना करने वाला पाँच सौ के स्थान दस हज़ार मत रद्द कर देता।"

"तो ये मत-पत्रक जानबूझ कर रद्द किये गये हैं ?" भवानी प्रसाद ने पूछ लिया।

सुरेन्द्र ने बैठते हुए कहा, "हाँ, साथ ही यह भी समझ लीजिए कि मत-पत्रक का रद्द करना भी तो इसी कारण हुआ है कि आप जीत रहे थे। जितने मत आपके अधिक होते थे, उतने ही मत-पत्रक रद्द करने की आवश्यकता होती थी।"

"तो यह बात थी ?" भूपेन्द्र ने पूछ लिया।

"हाँ भैया ! यह राजनीति है। इसमें सब-कुछ क्षम्य है।"

"तब तो इलैक्शन पिटीशन अवश्य होनी चाहिए।"

"क्या लाभ होगा ? मैं इसका निर्णय करने में पाँच वर्ष निकाल दूँगा। तब तक नया निर्वाचन सिर पर आ जायेगा। देखो भैया ! मैं तब तक इस निर्वाचन में व्यय किया धन पैदा कर लूँगा और नये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निर्वाचन के लिए और एकत्रित कर लूंगा। घाटे में तुम लोग रहोगे।"

इस पर तो भगवतीचरण इत्यादि मुख देखते रह गये। सुरेन्द्र ने एक बात और बता दी, "इस मत-गणना करने वालों की भूल से मेरी जीत रद्द हो सकती है, परन्तु मैं निर्वाचन लड़ने के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। इसमें मेरा दोष सिद्ध नहीं हो सकता।"

"आपकी याचिका का निर्णय साढ़े चार वर्ष से पहले नहीं हो सकता। अधिक-से-अधिक आप एक-आध वर्ष के लिए लोकसभा में जाकर बैठेंगे और तब तक नये निर्वाचनों का समय आ जायगा।"

भूपेन्द्र ने उत्तेजित हो कह दिया, "कुछ भी हो पिटीशन होनी ही चाहिए।"

"पंडितजी! कितना रुपया व्यय किया है?" सुरेन्द्र ने पूछ लिया।

"अभी गिनती नहीं की।"

"देखिये, मैं बताता हूँ। मेरा दो लाख व्यय हुआ है। आपका भी इतना कुछ ही हुआ होगा। मैंने तो लोकसभा की सदस्यता के कारण लाखों कमाये हैं और जब तक आप पिटीशन जीतेंगे लाखों और कमा लूंगा। आपका तो खर्च-ही-खर्च होगा। अगले निर्वाचन में आप आज से अधिक निर्धन होंगे।"

भवानी प्रसाद ने बात बदलने के लिए कह दिया, "सुरेन्द्र! तुम्हारे आने से पूर्व मैं पंडितजी को बधाई दे रहा था। वह इस कारण कि वास्तविक जीत उनकी हुई है, तुम्हारी नहीं।"

"इस पर भी पिताजी! लोक-सभा में जाकर बैठूंगी मैं।"

"हाँ, वह तो इस कारण कि हम तुम्हें और तुम्हारे धन को पराजित करके भी पंडित नेहरू के प्रभाव को पराजित नहीं कर सके। हमें उसको प्रभावहीन करना चाहिए।"

"ठीक है पिताजी। मेरा और सब कांग्रेस वालों का प्रयत्न अब यह होगा कि पंडित नेहरू का प्रभाव बढ़े। आगामी पाँच वर्ष में हम भारतवर्ष की एक-एक पाई नेहरूजी के प्रभाव को बढ़ाने में व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे। आपका इस दिशा में सब प्रयत्न विफल जायेगा।"

"अच्छी बात, देखेंगे। अब तुम माँ से मिल लो। वह तुम्हारी प्रतीक्षा में मिठाई लिए बैठी है।"

सुरेन्द्र ने कह दिया, "सुना है माँ ने अपना मत मुझको दिया है। मैं उसका धन्यवाद करने ही आया हूँ। हाँ, पंडितजी से एक बात कह लूँ तो भीतर जाऊँगा। पंडितजी मुझे आपके इतने धन व्यय हो जाने का बहुत शोक है। यद्यपि इसमें मेरी भूल नहीं। भूल तो आपकी ही है। परन्तु आपकी इस पूर्ति की सामर्थ्य मुझमें है। आप मुझसे मिलिये। मैं आपको इस घाटे की पूर्ति का मार्ग बता दूँगा। साथ ही उस मार्ग पर चलने में सहायता भी कर दूँगा।"

इतना कह सुरेन्द्र उठा और भीतर चला गया। जब वह चला गया तो भवानी प्रसाद ने कहा, "पंडितजी, क्या सत्य ही आपने इतना कुछ खर्च किया है?"

"जी नहीं, इस पर भी खर्च अनुमान से कुछ अधिक ही हो गया है। मैं दस हज़ार खर्च करने का विचार रखता था, वह खर्च हुआ है। उसके अतिरिक्त भूपेन्द्र ने कुछ व्यय किया है। साथ ही मुन्शीजी ने भी व्यय किया है। सब मिल-मिलाकर पच्चीस और तीस हज़ार के भीतर हो गया होगा।"

"तो मेरी एक बात मानिए। सुरेन्द्र से मिलकर धनोपार्जन में उसकी सहायता ले लें। भूपेन्द्र इलैक्शन रद्द की याचिका की धमकी देता रहेगा। तुम उससे मिलते रहो और हो सके तो रुपया कमाने की योजना सुन लो। हो सके तो रुपया अर्जित करो और आगामी निर्वाचनों में सुरेन्द्र से फिर लड़ो।"

नहीं बाबू साहब! ऐसा नहीं होगा। मैं उसके द्वारा धन पैदा करना पाप मानता हूँ। वह कोई ऐसी ही योजना बतायेगा जैसी वह स्वयं चला रहा है। मुझसे वह पाप कर्म नहीं हो सकेगा। यदि भगवान की इच्छा हुई तो मैं स्वयं ही अपनी कमाई से पुनः निर्वाचन लड़ने की शक्ति पा जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेन्द्र माँ के पास गया तो वह उसको पूजा-गृह में ले गई और ठाकुरजी के सामने बैठाकर वहाँ घिसकर रखे चन्दन से उसको तिलक लगाकर बोली, "यह इन मुरली वाले की ही कृपा से तुम विजयी हुए हो। इनका मन से धन्यवाद करो बेटा।"

सुरेन्द्र देख रहा था कि घर में एकमात्र सहायक उसकी माँ ही है। इस कारण उसको नाराज़ न करने के विचार से वह मुस्कराता हुआ हाथ जोड़ ठाकुर जी के सामने बैठा रहा।

माँ उठकर बाहर गई और रसोईघर से मिठाई ले आई। उसका मुख मीठा करा कहने लगी, "देखो बेटा सुरेन्द्र! सीता को तुमने बहुत छूट दे रखी है, यह ठीक नहीं है।"

"पर माँ! पिताजी ने तुमको भी तो छूट दे रखी है। वे स्वयं भगवतीचरण की सहायता करते थे और तुम्हें मुझे मत देने की छूट दे रखी थी और फिर जब वे मुझ पर मुकद्दमा करने का विचार कर रहे हैं और तुम्हें मुझको तिलक करने की स्वीकृति दे रखी है।"

"परन्तु बेटा! यह तो विचार-भेद की बात है। इसका सम्बन्ध विवाह बन्धन से नहीं। मैं तुम्हारे पारिवारिक जीवन की बात कह रही हूँ। वह पत्नी के कर्तव्यों का उल्लंघन कर रही है।"

"यह किसने कहा है तुमको?"

"नरेन्द्र को सीता के पिता ने कहा है। देखो बेटा! घर की स्त्रियाँ दूषित हो जाती हैं, तब वर्णसंकर सन्तान उत्पन्न होने लगती है। इससे कुल नष्ट हो जाता है।"

सुरेन्द्र को तो सीता के विषय में पहले नरेन्द्र के साथ अनुचित सम्बन्ध का सन्देह था। यद्यपि सीता ने इस बात से इंकार किया था, परन्तु उसका सन्देह बना ही हुआ था। अब बालकराम के इस लांछन से उसको यह समझ आया कि सीता का सम्बन्ध नरेन्द्र के अतिरिक्त लोगों से भी बना है।

वह स्वयं अपने व्यवहार पर विचार करता था। उसने उसको छोड़ रखा था। इस कारण वह समझता था कि कैसे वह उसको मना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर सकेगा ? इस पर भी उसने माँ से यह कहकर बात टालने का यत्न किया, "माँ ! लालाजी से पता करूँगा और यदि यह बात सत्य हुई तो उससे सम्बन्ध विच्छेद…………।"

तुरन्त माँ ने अपना हाथ सुरेन्द्र के मुख पर रख उसको आगे कहने से रोक दिया। माँ ने कहा, "नहीं बेटा ! यह हमारे कुल की रीति नहीं। स्त्रियों को तलाक नहीं दिया जाता। यह तो उसको अनाचार करने की स्वीकृति देना है। मेरा कहा मानो। उसको अपने घर में समेट कर रखो।

"देखो तुम्हारे बाबा थे, वे रसिक प्रकृति रखते थे। उनकी कई रखैल थीं। परन्तु अपनी पत्नी को छोड़ने के लिए वे कभी भी तैयार नहीं हुए। सुना है कि एक बार उनके ससुर अपनी लड़की अर्थात् तुम्हारी दादी को अपने घर ले गये और फिर उसको भेजते ही नहीं थे। इस पर वे ससुराल गये और बलपूर्वक पत्नी को उठाकर ले आये और फिर उसको अपने पिता के घर जाने ही नहीं दिया।

"मेरे विवाह और घर में घुल-मिल जाने के समय तुम्हारी दादी पर्याप्त आयु की हो गई थीं। पैंतालीस से ऊपर की रही होंगी। मैंने जब पूछा कि इस प्रकार बलपूर्वक उठाये जाने पर उनको कैसा अनुभव हुआ था। वे बोलीं, ऊपर से मैं रोती थी और मन में अति प्रसन्न थी। मैंने पूछा, आप रोती क्यों थीं ? वे कहने लगीं, लोक दिखावे के लिए वास्तव में पत्नी को अपने पति के घर से अधिक सुख कहीं नहीं मिलता।"

"इसलिए मैं कहती हूँ कि सीता पर नियन्त्रण रखो। तुमने उसको दूसरे दल से निर्वाचन लड़ने की स्वीकृति दे कर भूल की है।"

सुरेन्द्र माँ की बातों का खण्डन करना नहीं चाहता था। वह समझता था कि माँ को बहुत-सी बातें उसके विषय में, राजनीति के विषय में अथवा संसार में हो रही प्रगति के विषय में, ज्ञात नहीं। माँ को उन सब बातों को समझा सकने में संदेह भी करता था। इस कारण वह इतना कह, "अच्छा माँ, देखूँगा कि क्या किया जा सकता है ? "वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घर से निकल आया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने बाहर चौपाल पर पंडित भगवतीचरण को पुनः उससे मिलने का निमन्त्रण दिया और अपनी मोटर में सवार हो चल दिया।

: २ :

दिल्ली पहुँच सुरेन्द्र को पता चला कि सीता अभी बम्बई से नहीं लौटी। उसने अवकाश पा नरेन्द्र को वाई० एम० सी० ए० के होस्टल में फोन किया। वहाँ से पता चला कि नरेन्द्र होस्टल छोड़ गया है। इस पर उसने उसके कॉलेज और मिसेज़ अली से उसके विषय में पूछना आरम्भ कर दिया। कॉलेज से तो सदा उसको यह उत्तर मिलता रहा कि वह वहाँ नहीं है अथवा क्लास-रूम में है और मिसेज़ अली से उसको यह समाचार मिला कि वह वहाँ आता ही नहीं।

इसके कुछ दिन पीछे संसद का सत्र आरम्भ हो गया। वहाँ उसको कम्यूनिस्ट ब्लाक में सीता बैठी दिखाई दी। उसको आश्चर्य हुआ कि सीता बम्बई से लौटी तो घर पर ही नहीं आई।

बैठक के पश्चात् 'लोबी' में वह सीता से मिला और पूछने लगा, "तुमने यहाँ आने की सूचना भी नहीं दी ?"

"आवश्यकता नहीं समझी।"

"कहाँ ठहरी हो ?"

"नॉर्थ एवेन्यू में मुझको बँगला मिला है।"

"तो तुम मुझसे मिलने आओगी अथवा मैं वहाँ आऊँ।"

"कुछ काम है क्या ?"

"हाँ, नरेन्द्र का कुछ पता है ?"

"उसको फ़ोन किया था। होस्टल वह छोड़ गया है और कॉलेज में वह मिला नहीं।"

"इतना तो मैं भी जानता हूँ।"

"तो मैं और अधिक नहीं जानती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"हो खूब मज़े में हो ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता इसका अर्थ समझने का यत्न करने लगी। वह मौन अपने पति का मुख देखने लगी। फिर एकाएक जाने के लिए तैयार हो बोली, "अच्छा, कभी आ जाइयेगा। तब बताऊँगी कि कौन अधिक मज़े में है।"

सुरेन्द्र नॉर्थ एवेन्यू में सीता के बँगले पर पहुँचा। सीता वहाँ मिसेज़ अली से बातें कर रही थी। शीरीं अपने कमरे में कुछ टाइप कर रही थी। जब सुरेन्द्र बैठक घर में पहुँचा तो सीता ने उसको देख कह दिया, "आप ज़रा बाहर बैठिये। मैं इनसे एक आवश्यक बात कर रही हूँ।"

बाहर तो शीरीं का ही कमरा था। दोनों एक-दूसरे को जानते थे। सुरेन्द्र ने उसके कमरे में प्रवेश करते हुए पूछ लिया, "अरे! तुम यहाँ क्या कर रही हो ?"

"ओह!" शीरीं ने काम से मुख उठाते हुए पूछ लिया, "और आप कैसे आये हैं ?"

"अपनी पत्नी से मिलने के लिए।"

"मगर वे तो यहाँ हैं नहीं ?"

"उन्होंने कहा है कि बाहर प्रतीक्षा करूँ और बाहर तो यही स्थान है।"

"तो बैठ जाइये।" उसने पलंग की ओर संकेत कर दिया। वहाँ कोई अन्य कुर्सी नहीं थी।

सुरेन्द्र पलंग पर बैठ गया और शीरीं टाइप की मशीन पर खट-खट करने लगी। सुरेन्द्र ध्यानपूर्वक शीरीं की रूप-रेखा देखने लगा। उसको वह सीता और कौशल्या से भी सुन्दर दिखाई दे रही थी। वह लालसाभरी दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था।

एक घंटा-भर व्यतीत हो गया। शीरीं का काम भी समाप्त हो गया था। परन्तु अभी तक सीता भीतर खाली नहीं हुई थी। मिसेज़ अली भी बाहर नहीं निकली थीं। शीरीं ने काम समाप्त किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कागज़ एकत्रित कर भीतर ले गयी तो सुरेन्द्र ने उसको कह दिया,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मालूम होता है कि सीताजी भूल गयी है कि उनको कोई यहाँ बैठा प्रतीक्षा कर रहा है। ज़रा स्मरण करा दीजियेगा।"

शीरीं मुस्कराई और भीतर चली गयी। शीरीं की मुस्कराहट बहुत ही लुभायमान थी। इस पर तो सुरेन्द्र अपने हृदय में विशेष स्पन्दन अनुभव करने लगा। उसको सीता विस्मरण होने लगी।

शीरीं पन्द्रह मिनट में लौटी और कहने लगी, "सीता जी से मिलने के लिए पार्टी के कुछ लोग आये हुए हैं और उन्होंने कहा है कि मैं आप के लिए इसी कमरे में चाय का प्रबन्ध कर दूं। ठीक है न?"

सुरेन्द्र शीरीं से परिचय बढ़ाने में इस प्रस्ताव पर प्रसन्न था, परन्तु प्रत्यक्ष में विस्मय प्रकट करता हुआ शीरीं का मुख देखता रह गया। शीरीं ने कहा, "मैं बैरा को चाय लाने के लिए कह आई हूँ। आधा घंटा लग जायेगा। आप आराम से तशरीफ रखिये।"

"इस शर्त पर कि तुम भी यहाँ चाय पियोगी?"

"जी, यह तो फायदे की बात ही है। मैं आपका साथ दूंगी।"

चाय आई, तिपाई और कुर्सियाँ लग गईं और दोनों चाय पीने लगे। जब बातें होने लगीं तो समय व्यातीत होने में देर नहीं लगी। आधा घंटा गया, फिर एक घंटा दो घंटे। शीरीं अव्वल दर्जे की फ्लर्ट थी। सुरेन्द्र ने समझा कि वह तो एक सरल चित्त शिकार है। उसने शीरीं को अपने फ़ीरोज़पुर वाले क्वार्टर पर कभी आने का निमंत्रण दे दिया। शीरीं खिलखिलाकर हँस पड़ी।

इस समय सीता और बहुत से लोग गोल कमरे से निकल आये। मिसेज़ अली भी उनमें थीं। जब ये लोग चले गये तो सीता शीरीं के कमरे में आ गई और शीरीं से पूछने लगीं, "बहुत ज़ोर-ज़ोर से हँस रही थीं। क्या बात थी?"

"कुछ-नहीं दीदी! इनकी बातें गुदगुदी पैदा करने लगी थीं।"

"गुदगुदी?"

"हाँ दीदी! मेरे दिल में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तब तो ठीक है।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आइये।" सीता ने सुरेन्द्र को ड्राइंग-रूम में आने का निमंत्रण दे दिया।

सुरेन्द्र ने एक सोफ़ा पर सीता के समीप बैठते हुए कहा, "बहुत प्रतीक्षा कराई है।"

"मेरा विचार था कि आपसे रात के भोजन पर बात-चीत ठीक रहेगी। इस कारण शीरीं को कह दिया था कि आपको बातों में लगा रखे।"

"और उसने बातों के साथ चाय आमलेट भी खाने को दिया है।"

"तब तो आपको उसे इनाम देना चाहिए।"

"मैंने उसको एक दिन, रात के खाने पर आने का निमन्त्रण दिया है। मुँह माँगा इनाम दे सकूँगा।"

"मगर·········।" सीता कहती-कहती रुक गई।

"मगर क्या ?"

"यही कि वह नरेन्द्र की मंगेतर है।"

"ओह !"

"हाँ, और आप विचार करके ही उस पर हाथ डालियेगा।"

"मैं तो तुमसे बहुत कुछ बातें करने के लिए आया हूँ और······।"

"और क्या ?"

"यही कि रात यहाँ ही सोने के विचार से आया था।"

"क्यों, —कौशल्या कहाँ है ?"

"वह कलकत्ता गई हुई है और अब नहीं लौटेगी।"

"बहुत शोक है। मगर मुझको तो अब फुरसत नहीं। मैं कल अपना प्रथम भाषण लोक-सभा में करने वाली हूँ।"

"सच ! तब तो मैं उसकी तैयारी में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

"आप क्या सहायता करेंगे ? मेरा व्याख्यान तो तैयार हो गया है। वह पार्टी के लीडरों ने स्वीकार भी कर लिया है। अब तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दो-तीन बार पढ़ स्मरण करने की बात रह गई है। रात खाना खाने के पश्चात् ही यह करने का विचार है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसी में तो मैं सहायता करने की बात कर रहा हूँ।

रात सुरेन्द्र सीता के क्वार्टर पर ही रहा। इसके पश्चात् उसने सीता को अपने बँगले में आने का निमन्त्रण दे दिया। सीता का कहना था, "हमें पृथक्-पृथक् ही रहना चाहिए। हम दो परस्पर-विरोधी दलों में सम्मिलित है।"

"मगर क्या वे परस्पर-विरोधी हैं? क्या कांग्रेस अब सोशलिज़्म लाने वाली संस्था नहीं है?"

"यह तो अपने नेताओं से पूछ लीजिए।"

"पूछा है, उनका विचार कुछ ऐसा है कि अन्तर सोशलिज़्म लाने की गति में है। जब गति तीव्र होती है तो उसकी क्रांति कहते हैं, जब यह धीरे-धीरे हो तो यह प्रगति कही जाती है। जब लोगों को समझा-बुझा और प्यार से कार्य किया जाये तो यह सोशलिज़्म कहा जाता है और जब बलपूर्वक अपनी बात चलाई जाये तो यह कम्युनिज़्म कहा जाता है।

"देखो सीता! मैं कांग्रेस के जिजर ग्रुप में सम्मिलित हो गया हूँ। और यह बात उसी ग्रुप के नेताओं को बता रहा हूँ। उस ग्रुप को पंडित जवाहरलालजी का आशीर्वाद प्राप्त है।"

सीता हँस पड़ी और पूछने लगी, "रात जो कुछ आपने किया है, प्रगति थी अथवा क्रांति?"

"वह कम्युनिज़्म था। तुम तो इच्छा करती नहीं थी। जो कुछ हुआ, बलपूर्वक हुआ। यह कम्युनिज़्म मुझको माताजी ने सुझाया था। उन्होंने मेरे बाबा की एक कथा बताई थी। मेरी दादी बाबा की रसिकता से जब, अपने बाप के घर चली गई थी और उनके बाप उनके पति को घर आने नहीं देते थे। बाबा एक दिन ससुराल गये और बलपूर्वक अपनी पत्नी को उठाकर अपने घर ले आये।

माँ का कहना था कि मेरे बाबा का व्यवहार मेरी दादी को पसन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आया था। मैं विचार करता था कि यह कम्यूनिज़्म है। सत्ताधारी नेता अपनी इच्छा बलपूर्वक जन-जन पर थोपते हैं और जनता इससे प्रसन्नता अनुभव करती है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कल मेरे मन में आया कि अपने बाबा के कम्युनिज़्म पर मुझको भी आचरण करना चाहिए, सो कर दिया है। अब मैं कहता हूँ कि चलो मेरे बँगले पर, नहीं तो एक दिन मोटर लेकर आऊँगा और जबरदस्ती पकड़ कर ले जाऊँगा।"

"सीता ने मुस्कराते हुए कहा, "आज सन् १९५७ में यह नहीं हो सकेगा। आपके बाबा के पुराने काल की बात चल नहीं सकेगी।"

"रात तो चल गई थी। बताओ, नाराज़ हो मुझसे? पुलिस में रिपोर्ट तो नहीं लिखाओगी?"

सीता हँस पड़ी और बोली, "मुझको कुछ रुपयों की आवश्यकता है। मेर बैंक-बॅलेंस पतला पड़ गया है।"

"तो आज शीरीं को भेज देना। एक चैक उसके हाथ भेज दूँगा।"

: ३ :

जिस दिन नरेन्द्र को शीरीं पकड़ कर लाई थी, उस दिन तक सीता और सुरेन्द्र के सम्बन्ध पुनः घनिष्ठ हो चुके थे। यह सुरेन्द्र का ही सुझाव था कि नरेन्द्र को विदेश भेज दिया जाये। इसके लिए सीता ने पार्टी के नेताओं की सहायता से रूसी दूतावास में बातचीत की थी और एक छात्रवृत्ति का प्रबन्ध हो गया था।"

जब शीरीं नरेन्द्र को मोटर गाड़ी में बैठाकर उसका 'लॉज' देखने चली तो मार्ग में उसने पुनः अपने मन की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "यदि कोई लड़की सुन्दर हो और कुछ मूर्ख लोग उसके सौन्दर्य के कारण उसको नीलाम की वस्तु समझ बोली देने लगें, तो लड़की का क्या दोष है? यह तो लड़की से विवाह करने वाले के लिए गर्व की बात हो सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"मगर शीरीं ! तुम लड़की हो क्या ? मैं तो तुमको एक विवाहित
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्त्री ही समझता हूँ।"

"तो मेरा विवाह हुआ देखा है आपने ?"

"हाँ, उस दिन जब तुम्हारे बैग से वह गिर पड़ा था ! वह प्रमाण था कि तुम्हारी शादी कहीं हो चुकी है।"

"मिसेज़ अली ने आपको बताया तो था, कि वह मैंने आपके डर से रखा हुआ था।"

"हाँ, बताया तो था, मगर मुझको उसके कहने पर यकीन नहीं आया। इसके विपरीत तुम्हारे उस वस्तु को पाते ही भागना तो यह ज़ाहिर करता था कि तुम अपने पति के पास भागी जा रही थीं।"

शीरीं चुप कर मोटर चलाती रही। नरेन्द्र ने कहना जारी रखा, "और मिसेज़ अली का तुम्हारी सफाई पेश करना, तुम्हारा मुझे मिलने से बचना और भोज में तुम्हारा मुझसे बात करने के लिए भी समय न पाना, यही ज़ाहिर करता था कि तुमको मुझसे अधिक योग्य पति मिल गया है और तुमको एक विवाहित स्त्री समझ मैंने तुमको छोड़ दिया था।"

"और अब जो मैं आपको यह सब कुछ कह रही हूँ, इसमें क्या समझे हैं ?"

"यही कि या तो तुम विधवा हो गई हो, या तुमको तलाक मिल गया है। हाँ, एक बात और हो सकती है कि तुम अपने पति से बेवफ़ाई करने पर तुल गई हो।"

शीरीं हँसी, फिर एकाएक चुप कर गई। उसकी हँसी शुष्क, नीरस और कानों को चुभने वाली लगी थी। उसे स्वयं को भी, वह हँसी नहीं, बल्कि रोना-सा प्रतीत हुआ था।

वह सामने देखते हुए मोटर चला रही थी। नरेन्द्र उसके मुख के बदलते रंगों को देख रहा था। एकाएक शीरीं ने मोटर की गति हल्की कर दी और सड़क के एक तरफ धीरे-धीरे चलाते हुए कहा, "आप रूस जा रहे हैं क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"कैसे कह सकता हूं ! अभी तो कल मेरा इंटरव्यू होने वाला है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वे निर्णय करेंगे कि क्या मैं रूस में जाकर शिक्षा पाने के योग्य भी हूँ अथवा नहीं। तदनन्तर जाने न जाने का पता चलेगा।"

"वह तो पता है। रूसी सरकार के लिए एक अथवा अधिक में अन्तर नहीं पड़ता। अन्तर पड़ जाएगा एक लड़की के लिए जो यहाँ दिल्ली में रहती है।"

"कौन है वह, जिसको मेरा रूस जाना हितकर प्रतीत नहीं हो रहा है ?"

"वही, जिसको आप लड़की नहीं मानते और उसको विधवा हो गई, तलाक ज़ुदा, या बेवफा कह रहे हैं। मगर वह आपका भारत में ही रहना पसन्द करती हैं।"

"ओह ! तब मुझको रूस न जाने के लिए कह रही हो ? सिर्फ इसलिए कि मैं यहाँ रहता हुआ तुमसे शादी करूँगा। ठीक है न ?"

"शादी के लिए कोशिश कर सकूँगी और आपके चले जाने पर कोई दूसरा है जिसको मुझसे शादी करने में सहूलियत पैदा हो सकती है।"

"देखो शीरीं ! मैं तुमसे शादी नहीं करूँगा। इसका मेरे रूस जाने न जाने से कोई सम्बन्ध नहीं है। हाँ, तुम दूसरे प्रत्याशी के विषय में विचार कर लो। मैं नहीं समझ सका कि उसका मेरे देश से बाहर जाने के साथ क्या सम्बन्ध है।"

"मैं समझाती हूँ। एक साहब हैं, जो लोक-सभा के सदस्य हैं। उनको मेरी रूप-राशि पसन्द है और वे ये जानते हैं कि मेरी मँगनी हो हो चुकी है। आपके यहाँ रहते वे मुझको खरीद नहीं सकते। उन्होंने आपकी भाभी सीता रानी से षड्यंत्र कर एक ओर रूसी सरकार से आपके लिए वज़ीफा दिलवाया है और दूसरी ओर भारत सरकार से आपका नाम रूस जाने वाले तुलेबा की फहरिस्त में लिखवाय है।"

"और मेरी गैरहाजिरी में तुम उसके हाथ बिक जानेवाली हो ?"

"तो खाऊँ-पीऊँगी कहाँ से ? मिसेज़ अली मुझसे नाराज़ हो गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। मैं उनके घर पर आने वाले नौजवनों के लिए एक ज़बरदस्त कशिश थी। सीता रानी चाहती हैं कि मैं उन लोक-सभा के मेम्बर साहिब से सम्बन्ध बना लूं। वे मुझको अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करना चाहती हैं और मैं अब बक़ाया ज़िन्दगी में दूसरों की दुकान की 'शोविंडो' बनना नहीं चाहती।"

"और क्या बनना चाहती हो?"

"एक बाइज्ज़त शादीशुदा ख़ातून।"

"जिससे अपने खाविंद के साये के नीचे गुलछर्रे उड़ा सको।"

"नहीं; अब आयन्दा ऐसा नहीं करूँगी। मैं वायदा करती हूं।"

नरेन्द्र इस सब वार्तालाप का उद्देश्य समझ नहीं सका। वह यह तो जानता था कि ये प्रगतिशील लड़के और लड़कियाँ शादी किसी भी तरह से बन्धन नहीं मानते। वह यह जानता था कि इनके गोल में भी कुछ लोग हैं जो शादी कर एक स्थिर जीवन को उपमा देते हैं। मगर ऐसे लोग पार्टी में छोटे स्तर के समझे जाते हैं और फिर ये लोग प्रायः बड़ी आयु में जाकर ही ऐसा करते हैं। युवावस्था में यौन-सम्बन्धी स्वतन्त्रता उनकी परम-प्रिय वस्तु है।

इस समय वे कश्मीरी गेट के भीतर डाकखाने के सामने पहुंच गए थे। नरेन्द्र ने शीरीं से कहा, "बस मोटर रोक लो।"

"किसलिए?"

"मैं यहाँ ही उतरूँगा।"

"मगर मैं तो आपको आपके निवास-स्थान तक ले जाने के लिए भेजी गई हूँ।"

"मैं अपना निवास-स्थान तुम और तुम्हारे संगी-साथियों को बताना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि परीक्षा तक मुझे शांति से रहने दिया जाय।"

"तब तो मुझे पुनः आपको नॉर्थ एवेन्यू में वापस ले जाना पड़ेगा।"

"तो यह सीता भाभी की आज्ञा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी ।"

"और तुम उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकतीं ?"

"यह हमारे दल की एक विशेषता है । हम अपने नेता के हुक्म के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते । टिकट होल्डर और बे-टिकट वालों में यही तो फर्क है ।"

नरेन्द्र यह जानता था । इससे यह विचार करने लगा कि वह क्या करे ? उसने कहा, "यह दल के नेता का हुक्म तो नहीं हो सकता कि मेरा पीछा किया जाये । हाँ, तुम्हारे अन्नदाता का हुक्म हो सकता है । मेरा मतलब है सीता भाभी का ?"

शीरीं मुस्कराई और कहने लगी, "मुझको दल के सेक्रेटरी ने सीताजी की नौकरी के लिए भेजा है । इस वजह से सीताजी का हुक्म मानना दल के सेक्रेटरी का हुक्म ही है । हाँ, दल के सेक्रेटरी की आज्ञा है कि मैं आपसे शादी कर सकती हूँ । उस हालत में मेरा यह फर्ज़ हो जायेगा कि मैं आपके हुक्म को मानूं ।"

"और यदि शादी के बाद सेक्रेटरी महोदय का यह हुक्म हो गया कि मुझको छोड़ किसी अन्य का घर बसाने चली जाओ, तो क्या करोगी ?"

"जब तक मैं दल में हूँ तब तक उनका कहा मुझको मानना होगा ।"

"तो सुन लो, मैं तुमसे तब तक शादी नहीं कर सकता, जब तक तुम पार्टी की टिकट होल्डर हो ।"

"मगर आप भी तो पार्टी के टिकट होल्डर हैं । आप उनके हुक्म के खिलाफ कुछ नहीं कर सकेंगे ।"

"मुझे अभी तक इस सम्बन्ध में कोई आज्ञा नहीं हैं । जब होगी तो समझ लूंगा ।"

"यह हुक्म तो आज ही हो सकता है ।"

"हाँ, परन्तु तब तक तो मैं स्वतंत्र हूँ । शादी के सम्बन्ध में सेक्रेटरी को मैंने स्वयं ही कहा था कि मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ । सेक्रेटरी ने केवल यह कहा था कि तुम भी पार्टी की मेम्बर हो इस कारण पार्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को कोई आपत्ति नहीं हो सकती ।"

"मगर जब मैंने आपसे शादी की बात की थी तो उनका कहना था कि हमारी शादी पार्टी को मंजूर है।"

मुझको तो इसके सम्बन्ध में कोई आज्ञा अथवा सूचना नहीं। इस कारण मैं अभी तक किसी प्रकार से भी तुमसे शादी के लिए मजबूर नहीं।"

"मगर शादी तो मैं आपसे यों भी करना चाहती हूँ।"

"तो कर लो अगर कर सको तो।"

"मगर आप तो उसके कोशिश करने में भी रुकावट डाल रहे हैं।"

"कैसे ?"

"अपने रहने की जगह छुपाकर।"

"वह तो इम्तिहान के दिनों तक है।"

"अच्छा वायदा करिये कि इम्तिहान के बाद मुझको मौका देंगे कि मैं आपको शादी के लिए राज़ी कर सकूँ।"

"यह वायदा कर सकता हूँ। मगर याद रखो, तुमको कोशिश करने के लिए मौका देने का वायदा है, शादी का वायदा नहीं।"

"यह मैं समझ गई हूँ। तो आप रूस नहीं जाएँगे न ? आपके जाने से तो मौका मिलने में रुकावट पैदा हो जायेगी।"

"यह मैं कल रूसी दूतावास वालों से बात करके ही बता सकता हूँ।"

"तो मैं उसके बाद आपको कहाँ मिल सकूँगी ?"

"सीता भाभी से पूछ लेना। उनको मैं सब बता दूंगा।"

"आप अपना रहने का स्थान तो बता दीजिये। मैं आपको तंग नहीं करूँगी।"

"यह भी कल सीता भाभी से पूछ लेना।"

विवश शीरीं को गाड़ी खड़ी करनी पड़ी। नरेन्द्र गाड़ी से उतर हैमिल्टन रोड की तरफ चल पड़ा। कुछ दूर तक शीरीं मोटर में उसका पीछा करती रही। मगर जब वह एक गली में घुस गया तो मोटर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पीछा करना कठिन हो गया। वह अब नई दिल्ली की तरफ लौट गई।

: ४ :

नरेन्द्र रूसी दूतावास में जाने का विचार नहीं रखता था। इससे शीरीं और सीता को मन से निकाल वह अपने 'लॉज' में पहुंचा। उस समय अभी चार बजे थे। इस कारण आधा घंटा वहाँ बैठ, अपनी किताबों को देखता रहा। ठीक साढ़े चार बजे वह अपने कमरे को ताला लगा कश्मीरीगेट के टैक्सी स्टैंड पर पहुंच टैक्सी ले नई दिल्ली में होटल इंडिया जा पहुंचा। वहाँ भूपेन्द्र के साथ मुन्शी रामदयाल उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

दोनों नरेन्द्र को साथ लेकर वैंजर में चाय पीने चले गये। वहाँ चाय का आर्डर देकर भूपेन्द्र ने बात आरम्भ कर दी, 'हम यहाँ अपने व्यापार के सम्बन्ध में आये थे। मेरा विचार है कि महोना में एक दूसरा पैट्रोल-पम्प भी ले लूं। हमने एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी रजिस्टर्ड करा ली है और उसके अधीन आगरा से झाँसी तक बहुत से पेट्रोल-पम्पों को लेने का विचार है। इसी सम्बन्ध में हम जनरल मैनेजर से बातचीत करने आये हैं।

"यहाँ आकर तुम्हारा समाचार लेने के लिए तुमसे मिलने की इच्छा हुई तो तुमको बुला लिया है।"

"भैया!" नरेन्द्र ने कहा, "मैं सब प्रकार से ठीक हूं। परीक्षा की तैयारी चल रही है आशा है, बहुत अच्छे अंक लेकर पास कर लूंगा।"

"और फिर क्या करने का विचार है?" मुंशीजी ने पूछ लिया।

"एक इन्जीनियर के लिए नौकरी के अलावा और कोई चारा नहीं और भैया! मैं बताता हूं कि भारत में ज्यों-ज्यों सोशलिज्म बढ़ेगा किसी के लिए भी सरकारी नौकरी के अलावा जीवन का कोई उपाय रह नहीं जायेगा।"

"मगर नौकरी को तो शूद्र का कार्य समझते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ समझिए, यह होगा और कुछ ही वर्षों में हो जायेगा। यदि पंडित जवाहरलाल दस वर्ष तक जीवित रहे तो यहाँ सिवाय बोझा ढोने वाले कुलियों के शेष सब लोगों को किसी-न-किसी प्रकार से सरकार अथवा दूसरे मालिकों के सेवादार होना पड़ेगा। उससे पाँच वर्ष के भीतर मालिक स्वयं नौकरी करने लगेंगे और उनके सेवक दुहरी सेवा में जकड़ दिये जायेंगे। कोई ऊँचे दर्जे का काम रह ही नहीं जायेगा, जो सीधा अथवा उल्टे ढंग से सरकार के अधीन न हो जाये।"

इस समय चाय और खाने का सामान आ गया। नरेन्द्र चाय बनाने लगा तो मुंशीजी ने कह दिया, "इस पर भी नरेन्द्र, जब तक हम स्वतन्त्र रह सकते हैं, तब तक तो रहना चाहिए और फिर कौन कह सकता है कि इन दस-पन्द्रह वर्षों में क्या नहीं हो सकता? इस संसार में कुछ भी निश्चय नहीं। रूस की ही बात देख लो। जब से ख्रुश्चेव वहाँ का सर्वोच्च नेता बना है, रूस के द्वार खुल रहे दिखाई देने लगे हैं।"

"मुंशीजी, ये सब बाहरी बातें हैं। रूस में ऐसी पीढ़ी पैदा हो गई है जो नौकरी करने में ही अपना कल्याण मानने लगी है। इस कारण द्वार खुले हों या बन्द हों, जो जेल जाने से मुहब्बत करने लगते हैं वे वहाँ से भागते नहीं। यह तो ऐसे ही हैं जैसे समाज में किसी रीत-रिवाज का स्वभाव पड़ जाने पर लोग स्वेच्छा से उस रीति-रिवाज की कठोरता को सहन करने लगते हैं। केवल सहन ही नहीं करते अपितु उस कठोरता से मुहब्बत करने लगते हैं।"

मुन्शी रामदयाल मुस्कराता हुआ नरेन्द्र को युक्ति करते सुन रहा था। उसने उसकी बात सुनकर कह दिया, "मगर हिन्दू समाज के रीति-रिवाज तो अब टूट रहे हैं न?"

"यह इस कारण कि हिन्दू समाज समाप्त हो गया है।"

"किसने समाप्त किया है हिन्दू समाज को?"

"योरुप के ज्ञान ने।"

चाय पीते हुए मुन्शीजी ने बताया, "नहीं, ऐसा नहीं है। योरुप का ज्ञान अथवा किसी अन्य लोक का ज्ञान भी यह न कर सकता, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवों में एक गुण न होता। वह गुण है बुद्धि रखने का। ब्राह्मणों ने हिन्दुओं की बुद्धि को ताला लगा रखा था, परन्तु वे ऐसा सदा के लिए नहीं कर सके। अंग्रेजी प्रभाव से पहले ही इस देश में एक महान् बुद्धि-शील व्यक्ति स्वामी दयानन्द उत्पन्न हो गये थे और उन्होंने हिन्दुओं की प्रत्येक रीति-रिवाज और मान्यता को बुद्धि की कसौटी पर कसने को कहा था। उन्होंने अनेक हिन्दुओं अथवा अहिन्दू मान्यताओं को बुद्धि की कसौटी पर कसकर मिथ्या एवं अहितकर सिद्ध कर दिया था।

"यही बात रूस तथा अन्य कम्युनिस्ट देशों में होने वाली है। वहाँ के नेताओं ने वहाँ की जनता की बुद्धि को ताले लगा रखे हैं, परन्तु मानव-बुद्धि अपना मार्ग उन तालों को तोड़कर अपना मार्ग बना लेगी। तब मानव फिर स्वतन्त्रता से जीविकोपार्जन करने में सबल हो सकेगा।

"हमारा यह प्रयत्न है कि वह काल शीघ्रातिशीघ्र आ सके। हम समझते हैं कि पहले तो हम यत्न करेंगे कि वह दस-पन्द्रह वर्ष की अवधि, जो तुम कह रहे हो; लम्बी-से-लम्बी हो जाये और तब तक मानव समझ जाये कि यह बन्धन जो कुछ अदूरदर्शी लोगों ने निर्माण किये हैं, मानव-कल्याण में नहीं हैं। समाज में शूद्रों की भी तो आवश्यकता है। परन्तु सब शूद्र-ही-शूद्र हो जाएँ, यह अवस्था असह्य हो जायगी।"

"परन्तु मुन्शीजी! आप एक इन्जीनियर को शूद्र क्यों कहते हैं? एक हज़ार से दो हज़ार वेतन लेने वाले को भी शूद्र कहने लगे तो फिर शूद्र कोई घृणा करने योग्य नाम नहीं रह जायगा।"

"देखो नरेन्द्र! शूद्र उस व्यक्ति को कहते हैं जो अपने कार्यों में स्वतन्त्र न हो। उस कार्य के हानि-लाभ का वह स्वयं जिम्मेदार न हो। उनका कार्य किसी बड़े अधिकारी की आज्ञा के अधीन हो और उसके गुण-अवगुण का दायित्व भी बड़े अधिकारी पर हो। यदि इस प्रकार के शूद्र समाज में एक सीमा से अधिक हों जाएंगे तो वह समाज रसातल को चला जायगा।

"मगर हम यह मानते हैं कि मानव चिरकाल तक इस प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक दासता को स्वीकार नहीं कर सकता। वह सब ऐसी स्थिति में ले जाने वाले नेता को अस्वीकार कर देगा। तब भी नेता ने नेतागिरि न छोड़ी, तो जनता उसको समाप्त कर देगी। इतिहास इस बात का साक्षी है। बड़े-बड़े युद्ध और क्रान्तियाँ इसी कारण हुई हैं कि एक अथवा अनेक नेताओं ने किसी क्षेत्र में समाज को बाँध रखने का यत्न किया था।

"देखो, हमारा एक प्रस्ताव है। हम लगभग चालीस-पचास लाख की पूँजी से एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी चलानेवाले हैं और हम चाहते हैं कि तुम उसकी मैनेजरी स्वीकार कर लो। हम तुमको सरकारी नौकरी से अधिक वेतन देने का विचार रखते हैं।"

"कौन-कौन होगा उस कम्पनी में ?"

"एक तो मैं हूँ, दूसरे भूपेन्द्र है, तीसरे बाबू भवानी प्रसाद हैं, चौथे भगवतीचरण हैं, पाँचवें तुम्हारी माताजी हैं, छठे मेरा लड़का मणीन्द्र है और सातवीं रमणी है। दस-दस हज़ार के हिस्से हैं।"

"और जनरल मैनेजर को क्या देने का विचार है ?"

"अभी तो सात सौ रुपया मासिक देंगे, परन्तु हमारी योजना के पूर्ण विकास पाने पर वेतन, पाँच सहस्र प्रतिमास तक हो सकेगा।"

"भारत के प्रधान मन्त्री के बराबर ?"

"नहीं, अभी नहीं। प्रधान मन्त्री को तो टैक्स देना नहीं पड़ता। उसे अन्य भी कई प्रकार की सुविधाएँ हैं। उतना कुछ हम नहीं देसकेंगे।"

नरेन्द्र विचार करता था कि यह जनता का शोषण नहीं क्या ? फिर विचार करने लगा कि जो अपने अधीन कर्मचारियों को इतना अधिक वेतन दे सकते हैं, वे भला कैसे शोषक हो गये ? इस पर उसके मन में प्रश्न उठा कि इनकी कम्पनी में न्यूनातिन्यून वेतन कितना होगा। उसने पूछा तो मुन्शीजी ने बताया, "एक मापदंड तो सरकारी है। उसके अनुसार काम सीखने वाले को चौवन रुपये और शिक्षित कर्मचारी को कम-से-कम एक सौ रुपया। इतना तो मैं अभी भी देता हूँ। मेरे पम्पों पर एक चपरासी को सौ रुपया मिलता है।"

"परन्तु मुन्शीजी ! आपके कर्मचारी भी तो शूद्र ही होंगे। भला क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर होगा आपकी कम्पनी की नौकरी में और सरकारी नौकरी में ?"

"सरकारी नौकरी चौबीस घंटे की होती है। कोई नौकरी बिना अधिकारी से छुट्टी लिए स्टेशन छोड़ नहीं सकता। वह नौकरी के समय के बाद काम भी नहीं कर सकता। यहाँ तक कि वह बिना स्वीकृति के किसी व्यवसाय में निष्क्रिय पत्तीदार तक नहीं हो सकता।

"फिर वह किसी राजनीतिक दल की कार्रवाइयों में अथवा किसी ऐसी संस्था में जिसको सरकार पसन्द नहीं करती, सम्मिलित नहीं हो सकता।"

"सरकार से इतर कम्पनियों की नौकरी में ऐसा कोई भी प्रतिबन्ध नहीं होता। सबसे बड़ी बात यह है कि जब देश का पूर्ण रोज़गार सरकार के हाथ में हो जायगा तब कोई भी कर्मचारी सरकारी नौकरी के अतिरिक्त कहीं नौकरी पा नहीं सकेगा। इस कारण उसकी मानसिक दासता की पराकाष्ठा हो जाएगी।"

"मुन्शीजी! यदि मैं इस कम्पनी की नौकरी अस्वीकार करूँ तो?"

"तो कुछ नहीं। हमने तो तुम्हारे लिए दासता से मुक्त रहने का द्वार खोला है। तुम उस द्वार से निकल मुक्ति पाना चाहते हो अथवा नहीं, यह तुम्हारे विचार करने की बात है।"

"तो मुझे कुछ विचार करने का अवसर दीजिये। अभी दो मास तक तो मुझको विचार करने के लिए अवकाश भी नहीं।"

"ठीक है। यह तो मैंने इस दृष्टि से बात की थी कि तुमको सरकारी नौकरी में जाने से पहले उसके विकल्प का ज्ञान रहे।"

इस समय तक चाय समाप्त हो चुकी थी। अब बातों का सूत्र भूपेन्द्र ने अपने हाथों में लेते हुए कहा, "नरेन्द्र! माँ ने एक संदेश भेजा है। वे चाहती हैं कि तुम्हारी सगाई कर दें। विवाह तो तुम्हारे कामधन्धा पा जाने पर होगा। वे सगाई कर देना चाहती हैं। क्या विचार है?"

"मैं लड़की देखे बिना सगाई स्वीकार नहीं करूँगा। भैया, तुमने राधा भाभी को देखकर पत्नी बनाना स्वीकार किया था। सुरेन्द्र भैया ने भी देखकर विवाह किया था और मैं आप बड़ों के पद-चिह्नों पर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चलना चाहता हूँ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो है ही। माँ ने एक अति सुन्दर, सुशील, सच्चरित्र और शिक्षित लड़की का निर्वाचन किया है। एक अति धनवान, उच्च प्रतिष्ठित परिवार की कन्या बहिन शकुन्तला ने भी बताई है। इस कारण माँ का कहना है कि यदि तुम कहो तो इन दोनों को तुम्हें दिखाने का प्रबन्ध कर दिया जाये।"

"पर भैया! इतनी जल्दी मचाने की क्या आवश्यकता है?"

"वह इस कारण कि उस रबड़ के थैलों वाली औरत से तुमको सुरक्षित रखा जा सके।"

इस पर नरेन्द्र गम्भीर हो गया। उसने कहा, "भैया! माँ से कह देना कि बिना उसके पसन्द किये मैं किसी को पसन्द नहीं करूँगा।"

"तो उसके पसन्द किये जाने की अभी कुछ भी आशा है?"

"वह अपने पूर्व व्यवहार पर पश्चात्ताप करती है।"

"देख लो। माँ और हम लोग तुम्हें सम्मति देने वाले ही हैं। विवाह तुम्हारा होना है।"

"आप लोगों की सम्मति पर आदर-युक्त विचार करूँगा और हाँ, "नरेन्द्र ने बात का विषय बदलते हुए कहा, "एक बात माँ से और कह देना वह यह कि मुझे रूस जाकर और अधिक पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिलने की बातचीत हो रही है। यदि मैं गया तो विवाह वहाँ से लौटने पर ही हो सकेगा।"

"तो यह उस लड़की से विवाह करने का इनाम होगा क्या?"

"नहीं भैया! वह तो मुझको रूस जाने से मना कर रही है।"

इस पर बात मुन्शीजी ने समाप्त कर दी, "अच्छा नरेन्द्र! दोनों प्रस्ताव तुम्हारे सामने हैं। एक तो हमारी कम्पनी की मैनेजरी और दूसरे एक सुन्दर, उस औरत से अधिक सुन्दर, लड़की से सगाई। दोनों प्रस्तावों पर विचार कर बताना। जब भी लड़की देखने का विचार हो माँ को पत्र लिख देना, प्रबन्ध हो जायगा। हाँ, यदि हमारी कम्पनी की नौकरी करनी होगी तो रूस जाना कठिन हो जायगा। हम मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का निश्चय कम्पनी की रजिस्ट्री होते ही करना चाहेंगे और निश्चय के
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक महीने के भीतर ही काम पर हाज़िर होना होगा।"

बात समाप्त हुई।

: ५ :

नरेन्द्र जब अपने कमरे में पहुंचा तो अपने स्वभाव-वश अपने अध्ययन में लगकर शीरीं और मुन्शीजी की कम्पनी को भूल गया। उसको माँ के प्रस्ताव का भी होश नहीं रहा।

वह रूसी दूतावास के अधिकारियों से भेंट करने नहीं गया। वहाँ से सीता को फोन आया, कि उस द्वारा प्रस्तावित विद्यार्थी नहीं आया। इस पर सीता को जहाँ विस्मय हुआ वहाँ क्रोध भी आया। उसने पहले शीरीं से ही पता किया, "शीरीं! नरेन्द्र ने अपनी आगे शिक्षा के लिये रूस जाने अथवा न जाने की कुछ बात की थी।"

"नहीं दीदी! मुझसे कोई बात नहीं हुई।"

"और तुम्हारे विवाह की बात?"

"बस इतनी ही कि उनके पास पढ़ाई के अलावा किसी भी मज़-मून पर सोचने की फुरसत नहीं।"

"बहुत ही मूर्ख है वह? इंटरव्यू के लिए भी नहीं गया।"

"दीदी! यह इंटरव्यू दो मास के लिए रुक नहीं सकता?"

"भला नई दिल्ली की परीक्षा का क्या महत्व है? मॉस्को की डिग्री के सामने?"

"तो उनको समझाइये।"

"तो तुम किस मर्ज़ की दवा हो?"

"वे खुद इतने पढ़े-लिखे अक्लमन्द हैं। मैं किस बाग की मूली हूँ।"

"किसी भी काम की हो! हो बहुत खूबसूरत।"

शीरीं चुप रही। सीता ने नरेन्द्र की शिकायत सुरेन्द्र से भी की। सुरेन्द्र भी अपनी योजना को असफल देख क्रुद्ध हो उठा। उसने शीरीं के सामने ही नरेन्द्र की निन्दा करनी आरम्भ कर दी और अंत में कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिया, "यदि विदेश नहीं जाएगा ता यहाँ पर किसी अच्छी नौकरी के लिए [illegible] करना होगा । ऐसी हालत में मैं उसकी सहायता कैसे कर सकूँगा ?"

"तो उसको समझाइये ?"

"अच्छी बात है । पता करो, वह कहाँ रहता है ?"

"शीरीं को उसका पता करने भेजा था, मगर वह उसको चकमा देकर भाग गया ।"

"बहुत ही बेवकूफ है । इतनी खूबसूरत लड़की और कहाँ मिलेगी उसको ?"

"आजकल वह अपनी बड़ी भाभी के प्रभाव में है । राधा उसको खर्चे के लिए रुपये देती है ?"

"तो यह बात है ! मगर वह किसलिए उसको रुपया देती है ?"

"भगवान जाने । उस दिन जेठजी दिल्ली आये हुए थे और वह उनसे मिलने गया था ।"

"तब तो वह गया ! मैं उसकी सहायता नहीं कर सकूंगा । हमारे घर वालों को निर्धन होना मंजूर है तो क्या किया जा सकता है । पहले तो एक कांग्रेसी के निर्वाचन में खुलकर विरोध करना और फिर पंडित नेहरू की निन्दा करना तथा समाजवाद को बुरा बताना । ये सब लक्षण पतन-काल के हैं ।"

"उनकी बात छोड़िये । नरेन्द्र से मिलकर उसको समझाने का यत्न करिये ।"

"सुरेन्द्र नरेन्द्र के कॉलेज में जा पहुंचा । वह क्लास-रूम में था । सुरेन्द्र उसके कमरे से निकलने की प्रतीक्षा करने लगा । वह निकला तो बाँह से पकड़, सुरेन्द्र उसको अपनी मोटर में लेकर अपने क्वार्टर में जा पहुँचा ।

उसे बैठाकर चाय पानी पिलाया और फिर पूछने लगा, "तुम्हारी बुद्धि क्यों भ्रष्ट हो गई है ?"

"भैया, बिल्कुल निर्मल है । यह भ्रष्ट नहीं हुई ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"तो रूसी दूतावास में इन्टरव्यू के लिए क्यों नहीं गये ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं परीक्षा के पहले इस [illegible] कामों में समय गँवाना नहीं चाहता।"

"तो रूस में शिक्षा के लिए जाना व्यर्थ की बात है ?"

"भैया, किसी बात की सार्थकता अथवा व्यर्थता तो समय-समय पर बदलती रहती है। अप्रैल बीस तारीख तक अपनी परीक्षा के अतिरिक्त अन्य सब-कुछ व्यर्थ ही दिखाई देता है।"

"परीक्षा पास करके क्या करोगे ?"

"कोई अच्छी-सी नौकरी करूँगा।"

"अरे मूर्ख ! यदि रूसी शिक्षा प्राप्त कर सकोगे तो भारत की 'प्लेनिंग' में सक्रिय भाग ले सकोगे। तब इस परीक्षा के उपरान्त की नौकरी उसके सम्मुख कुछ भी गणना नहीं रख सकेगी।"

"मैं यह जानता हूँ और इसके लिए यत्न दो मास पीछे करूँगा।"

"तुम्हारी बुद्धि भूपेन्द्र ने मलिन कर दी मालूम होती है।"

"मलिन तो नहीं कह सकता। परन्तु भैया उसने कुछ कहा है जिसका प्रभाव मन पर हुआ है।"

"क्या कहा है ?"

"उसने एक मार्ग बताया है जिससे मैं बिना रूस गये उतनी ही उन्नति कर सकता हूँ।"

"कौन-सा मार्ग बताया है ?"

"एक फर्म का नाम बताया है जो मुझे भी, यदि परीक्षा में मेरी स्थिति अच्छी रही तो, वह कुछ दिला देगा, जो किसी काल में यहाँ के वाइसराय को मिलता था।"

"ओह ! तो ऐसा मालूम होता है उसने टाटा को खरीद लिया है। और तो भारत में कोई ऐसी कम्पनी दिखाई देती नहीं, जो अपने किसी भी कर्मचारी को इतना कुछ दे सके। परन्तु मैं समझता हूँ कि वह तुमको चकमा दे रहा है। यदि किसी प्रकार भी हेरा-फेरी से वह तुमको कोई अच्छी-सी नौकरी दिलवा भी दे तो न तो यह नौकरी स्थायी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सकती है न ही वह देश के हित में।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया ! देश का हित किस बात में है ?"

"समाजवाद में। इसमें हम किसी को भी बहुत धनवान होने की स्वीकृति नहीं दे सकते। उद्योग-धन्धों में, राजकीय क्षेत्र में घुसकर काम करना और उसकी उन्नति और विकास में सहायक होना ही देश का हित है।"

नरेन्द्र को मुंशीजी की बात स्मरण हो आई। उसने कह दिया, "मुझे तो राजकीय क्षेत्र की उन्नति में देश का कल्याण दिखाई नहीं देता।"

"वाह ! बहुत बड़े अर्थशास्त्री बन गये हो ? जो सब दुनिया ठीक समझ रही है वही तुमको गलत दिखाई दे रहा है।"

"देखो भैया ! एक तो सब दुनिया ऐसा नहीं समझती। इंगलैंड, अमेरिका, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, डैनमार्क, बेलजियम, इटली, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अफ्रीका के तथा दक्षिणी अमेरिका के सब देश, जापान, दक्षिणी कोरिया, आदि देशों में अभी न तो समाजवाद है न ही राजकीय उद्योग-क्षेत्र को भला समझा जा रहा है। शेष रह गये रूस, चीन और इनके पिट्ठू देश। इनकी आभ्यन्तरिक दशा भी तो ठीक नहीं। यह मिथ्यावाद आपको किसने सिखाया है ? मैं भारत का भी इसमें कल्याण नहीं समझता।

'भैया ! एक बात मैं पूछूं ?"

"हाँ पूछो।"

"यदि आपके सब बसों के परमिट रद्द कर दिये जाएं, आपके दिल्ली के सब मकान जब्त कर लिए जायें और आपको कह दिया जाये कि किसी नौकरी के लिए मुकाबिले की परीक्षा में बैठ जाओ तो बहुत बुरा होगा न ?"

"क्या बहकी-बहकी बातें करते हो। एक मुकाबिले की परीक्षा तो मैं दो बार उत्तीर्ण कर चुका हूँ। ये बसों के परमिट और मकान उसी के प्रतिकार में ही तो हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया ! उन परीक्षाओं में तो सिफारिश से पास हुए हो न ? एक में राजा साहब की सिफारिश लगी थी और दूसरी में श्री पंडित जवाहर लाल जी की। इस पर भी राजा साहब की सिफारिश बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई थी। तब आपके विपक्षी की ज़मानत ज़ब्त हुई थी। पंडितजी की सिफारिश में तो आप विपक्षी से कुछ ही अंक अधिक लेकर उत्तीर्ण हुए थे। "परन्तु ये परमिट और कोटे तो उस परीक्षा के फल नहीं हो सकते।"

"नहीं, तुम नहीं जानते। प्रजातन्त्र राज्यों का यह नियम है कि जो सत्ताधारी दल में होते हैं वे ही राजा होते हैं। भारत में कांग्रेसी ही राजा हैं और राजा के भोग के लिए ही राज्य होता है।

"सब स्थानों पर यही हो रहा है। इसी कारण तो निर्वाचनों में दलों का संघर्ष इतना प्रबल होता है। किसी काल में राजा परस्पर राज्य के लिए युद्ध लड़ा करते थे। अब राजनीतिक दल भी युद्ध करते हैं। अन्तर केवल यह है कि युद्ध-क्षेत्र मतदान केन्द्र होते हैं। शस्त्रास्त्र वह प्रचार होता है, जिससे मत प्राप्त करने का यत्न होता है। इस युद्ध में भी भेदिये और पंचमांगिये प्रयोग किये जाते हैं। धोखा, रिश्वत, धूर्तता सब इस युद्ध में भी वैसे ही चलता है जैसे युद्ध-क्षेत्र में चला करते थे।"

नरेन्द्र को यह सब कुछ ज्ञात था। वह सीता के चुनाव अभियान में यह सब कुछ होता देख आया था। उसको विश्वास हो रहा था कि शीरीं और अन्य कई लड़कियों को विपक्षी के सेनाध्यक्षों को कर्तव्य-च्युत करने के लिए प्रयोग किया गया था। यह सब कुछ सुन वह मौन हो गया।

सुरेन्द्र अपनी राजनीतिक फिलॉसोफी का प्रभाव नरेन्द्र पर जानने के लिए उसके कहने की प्रतीक्षा करने लगा। जब वह भूमि पर देखता हुआ मौन बैठा रहा तो वह स्वयं ही कहने लगा, "तो कब जाओगे रूसी दूतावास में ?"

नरेन्द्र को शीरीं का कहना स्मरण हो आया। उसने कहा था कि एक एम० पी० है जिसको उसकी अनुपस्थिति में, उससे शादी करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में सहूलियत पैदा हो सकेगी। एकाएक नरेन्द्र ने सिर उठाकर पूछ लिया, "भैया! शीरीं को तुम अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बना रहे हो?"

सुरेन्द्र विस्मय में नरेन्द्र का मुख देखने लगा। नरेन्द्र ने उसके मुख पर विस्मय को देखा तो कह दिया, "तो वह ठीक कह रही थी?"

"तो उसने तुमको यह बताया है?"

"हाँ।"

"मैं उस जैसी चतुर योग्य स्टैनो को अपने पास रखने का यत्न कर रहा हूँ परन्तु सीता उसको छोड़ना नहीं चाहती और आजकल मैं सीता को नाराज़ नहीं कर सकता।"

"तो सीता भाभी से आपकी सुलह हो गई है?"

"वह झगड़ा तो लोक दिखाया था। वैसे प्रत्यक्ष में हम अभी भी लड़े हुए हैं। परन्तु वह और मैं यथार्थ में एक खेल खेल रहे हैं। वैसे वह और मैं एक ही पक्ष में हैं।"

"और विपक्षी कौन है?"

"जनता! हम दोनों ने जनता को तीन गोलसे हराया है। दो गोल मैंने किए हैं और एक गोल सीता ने।"

नरेन्द्र हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "तो ऐसा प्रतीत होता है कि शीरीं आजकल आप दोनों का काम करती है।"

"हाँ, मैं भी कभी-कभी उससे काम ले लेता हूं। आज वह मेरे रेलवे बजट पर बोलने के लिए स्पीच तैयार कर रही है।"

"ठीक है, तो क्या अब मैं जाऊँ?"

"तुमने बताया नहीं कि रूसी-दूतावास में कब जाओगे?"

"सीता भाभी से बात करूँगा, वे समय निश्चित कर देंगी।"

"हाँ, अब जा सकते हो।"

नरेन्द्र ने सुरेन्द्र की मोटर निकलवाई और अपने-निवास-स्थान पर चला गया। यह भूल नरेन्द्र नेकर दी, मोटरड्राइवर नरेन्द्र केमकानऔर उसके कमरे का नम्बर देख आया और उसने सुरेन्द्र को बता दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन्द्र अभी भी रूसी दूतावास में नहीं गया। वह परीक्षा की तैयारी में लीन रहा। अप्रैल बीस को सायँ पाँच बजे वह परीक्षा देकर अपने 'लॉज' में पहुंचा तो अपने कमरे में जा विचार करने लगा कि कहाँ जाये। वह दिल्ली से भाग जाना चाहता था। उसका विचार था कि शीरीं उसके लॉज का पता नहीं जानती। वह समझता था कि यही कारण है कि वह पिछले एक महीना से उससे भेंट नहीं कर सकी। इस कारण वह उसको तथा सीता इत्यादि को बताये बिना दिल्ली से भाग जाना चाहता था। राधा भाभी के दिये रुपयों में से उसके पास अभी भी एक सौ रुपये के लगभग थे। वह समझता था कि ये शेष रुपये उसको वापस कर दे और महोना में जाकर परीक्षाफल की प्रतीक्षा करे।

इस विचार के आते ही वह उठा और अपना सामान समेटने लगा। उसने अपने मैले और धुले कपड़े सूटकेस में डाल लिये, अन्य छोटा-मोटा सामानभी उसमें रखा और बिस्तर बाँधने लगा। वह अभी बिस्तर बाँध नहीं पाया था कि उसको अपने पीछे शीरीं के खिलखिला कर हँसने का शब्द सुनाई दिया। वह चौंककर पीछे घूमा तो शीरीं ने कह दिया, "भागता चोर पकड़ा गया, ठीक है न ?"

नरेन्द्र ने शीरीं को कुर्सी पर बैठने के लिये कहा और अपने बिस्तर के कपड़े होल्डाल में तह जमाकर रखते हुए पूछने लगा, "यहाँ का पता कैसे पा गयी हो शीरीं ?"

"चालीस दिन से बीस अप्रैल चार बजे की प्रतीक्षा कर रही थी। ठीक चार बजे यहाँ पहुँच नहीं सकी। मोटर गाड़ी आपके भाई साहब के लोक-सभा से लौटने पर ही मिल सकी है।"

नरेन्द्र अभी भी बिस्तर में सामान रख रहा था। उसने घूमकर कुर्सी पर बैठी शीरीं की ओर देख पूछ लिया, "तोतुम अब सुरेन्द्र भैया की नौकरी करने लगी हो। सीता भाभी का काम छोड़ दिया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, दोनों का काम करना पड़ता है। एक मज़ेदार बात बताऊँ?"

"क्या?"

"कई बार ऐसा हो चुका है कि दोनों की स्पीचें एक-दूसरे पर घोर कटाक्ष करने वाली, इसी 'ब्रेनवेव' से निकलती हैं।" शीरीं ने अपनी खोपड़ी को छू दिया।

नरेन्द्र हँस पड़ा तो शीरीं भी हँसने लगी। इस पर शीरीं लपक कर आधे तैयार होल्डाल पर जा बैठी और उसने नरेन्द्र के गले में बाँह डाल दी। यह सब इतना आकस्मिक था कि नरेन्द्र पकड़ा गया। परन्तु तुरन्त ही सँभल उसने अपने को उसकी बाँहों से छुटकारा पाने के लिए कह दिया, "क्या कर रही हो? कमरे का द्वार खुला है। कोई भी भीतर आ सकता है।"

विवश शीरीं को उसे छोड़ना पड़ा। नरेन्द्र ने कह दिया, "मैं सामान बाँध भाभी से मिलने के लिए जा रहा था। विचार था कि तुम वहाँ मिल जाओगी।"

"और मैं यहाँ ही मिलने चली आयी हूँ।"

"ज़रा उठो न, मैं बिस्तर का काम खत्म करूँ तो चलेंगे। पहले कहीं चाय पीयेंगे और पीछे भाभी-भैया से मिलने चलेंगे। मैं रात की गाड़ी से महोना जा रहा हूँ।"

"वहाँ क्या है?"

"माँ हैं, पिताजी तथा भाभी-भैया हैं। साथ ही परीक्षा की थकावट दूर करने के लिए कहीं पहाड़ पर जाना चाहता हूँ। पिताजी से कुछ रुपये मिल गये तो कश्मीर जाने का विचार है।"

"रुपये तो यहाँ भी मिल सकते हैं। मगर मुझको साथ ले चलना होगा।"

"तुमको तो विवाह के बाद ही साथ ले जा सकता हूं।"

"वह क्या होता है? विवाह तो उस समय ही हो जायेगा जब हम दोनों इकट्ठे रहना आरम्भ कर देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उससे पूर्व माता-पिता और सगे-सम्बन्धियों के सामने वचन-बद्ध होना है और सरकार से नियम विधि-विधान के अनुसार भी वचन-बद्ध होना है।"

"क्या ज़रूरत है इसकी। देखिये, मेरे पास इस जेब में चार-पाँच हज़ार रुपये हैं। बजाय महोना जाने के हम कश्मीर जा सकते हैं। सीता जी तथा सुरेन्द्र जी को भी बताने की आवश्यकता नहीं।"

"इतना रुपया कहाँ से चुरा लाई हो शीरीं ?"

'यह चोरी का नहीं है। हाँ, ठगी कही जा सकती है। परन्तु यह तो दुनियाँ में सब कर रहे हैं।"

"कैसे सब ठगी कर रहे हैं? मान लो, मैं किसी स्थान पर नौकरी कर हज़ार रुपया वेतन पाता हूँ, तो यह ठगी कैसे हो गयी ? और ऐसे अनेकों हैं जो धन पैदा कर रहे हैं।"

"छोड़ो इस बात को। इस समय तो कश्मीर का कार्यक्रम बना सकते हैं।"

"मगर मैं इस चोरी के धन का प्रयोग नहीं करूँगा।"

"ओह ! तो दिमाग में ईमानदारी का तूफान उठ रहा है ?"

"हाँ, शीरीं। जरा कुर्सी पर हो जाओ तो होल्डाल लपेट लूं।"

शीरीं उठकर कुर्सी पर बैठ गयी और नरेन्द्र ने बिस्तर लपेट बाँध दिया। इसके उपरान्त उसने ताला उठाया और कहा, "चलो, चाय पीने चलें।"

शीरीं कमरे के बाहर निकली तो नरेन्द्र ने कमरे को ताला लगा दिया और उसे वहीं प्रतीक्षा करने को कह वह 'लॉज' के मालिक के कमरे में चला गया। उसने उसको कह दिया, "मैं रात कमरा खाली करके जा रहा हूँ। आप अपना हिसाब बनाकर तैयार रखियेगा।"

"कब तक लौट रहे हैं ?"

"ठीक सवा आठ बजे आऊँगा और सामान उठाकर चल दूंगा।"

"हिसाब तैयार रहेगा।"

दोनों नई दिल्ली वैंजर में चाय पीने जा बैठे। चाय पीते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीरीं ने पूछा, "तो क्या फैसला किया है ?"

"देखो शीरीं ! मैं हिन्दू तरीके से विवाह करूँगा । मेरे विवाह में मेरे माता-पिता बैठेंगे । दोनों भैया, भाभी भी आशीर्वाद देने आएँगे । यह इस तरह नहीं हो सकता, जैसे तुम कहती हो । यदि ऐसे ही होना होता तो पिछले तीन वर्ष तक तपस्या करने में कुछ भी प्रयोजन नहीं था ।"

"मगर क्या वे आपका मुझसे विवाह स्वीकार कर लेंगे और उसमें आकर बैठेंगे ?"

"मैं कहूँगा तो वे इंकार नहीं करेंगे । मुझको यदि संदेह है तो सुरेन्द्र भैया से आशीर्वाद मिलने में है । मगर जब परिवार के अन्य लोग मान जाएँगे तो मुझे उनकी चिन्ता नहीं ।"

"सुरेन्द्र भैया पर संदेह क्यों ?"

"तुमने ही तो एक दिन बताया था कि एक एम० पी० हैं, जिनको तुमसे शादी करने की सहूलियत तब हो सकती है जब मैं रूस चला जाऊँ?"

"और यह आपको किसने बताया है कि वे आपके भाई सुरेन्द्र हैं ?"

"तो वह कोई और है ?"

"वे तो एक मिनिस्टर हैं ।"

"ओह ! तो उसको छोड़ मुझ गरीब के पीछे क्यों पड़ी हो ?"

"आपसे उन्स हो गयी है ।"

"यह बूर्जुआ खयाल कहाँ से घुस आये हैं तुम में ?" नरेन्द्र ने मुस्कराते हुए पूछ लिया ।

"मैं अब कम्युनिस्ट नहीं रही ।"

"ओह ! कब से ?"

"जब से आप शादी की रस्म के लिए हठ करने लगे हैं ।"

दोनों हँसने लगे । नरेन्द्र ने कह दिया, "तब तो ठीक है । मैं आज महोना जा रहा हूं । माता-पिता से राय कर तुमको पूरे कार्यक्रम की सूचना दूंगा । मैं समझता हूं कि हमारा विवाह महोना में ही होगा । तुमको सीता भाभी वहाँ ले आएँगी । बस, विवाह हो जायेगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीरीं इस प्रबन्ध से प्रसन्न थी। चाय के उपरान्त नरेन्द्र सीता के क्वार्टर पर गया। वहाँ खानसामा ने बताया कि फीरोज़शाह रोड की तरफ गयी हैं। साहब का फोन आया था कि उनकी गाड़ी शीरीं लें गयी है और उनको गाड़ी चाहिये। इस पर वे अपनी गाड़ी लेकर ले चली गयी हैं।

वहाँ से दोनों फिर फीरोजशाह रोड पर सुरेन्द्र के क्वार्टर पर गये। पति-पत्नी दोनों कहीं गये हुए थे। अब नरेन्द्र ने शीरीं को वहाँ ही छोड़ा और खुद टैक्सी ले, अपनी लॉज पर जा पहुंचा।

महोना में नरेन्द्र की प्रतीक्षा हो रही थी। भवानी प्रसाद का विचार था कि भूपेन्द्र को स्वयं जाकर नरेन्द्र को ले आना चाहिए। मुन्शीजी का विचार था, घबराने की आवश्यकता नहीं। देखना चाहिए कि वह स्वेच्छा से क्या करता है।

अतः भूपेन्द्र नरेन्द्र को लेने नहीं गया। घर-भर ने यह निश्चय कर रखा था कि राधा की छोटी बहन रमणी का विवाह नरेन्द्र से हो जाना चाहिये। साथ ही सब यह भी जानते थे कि वहाँ एक मुसलमान लड़की है जो उसके पीछेपड़ी है। यद्यपि भूप ने उसके बदचलन होने का प्रमाण नरेन्द्र को दे दिया था, परन्तु नरेन्द्र ने कहा था कि वह लड़की अपने किये पर पश्चात्ताप कर रही है। इस पर भी मुन्शी रामदयाल का विचार था कि जब नरेन्द्र के सामने दोनों प्रस्ताव हैं और दोनोंमें विकल्प है तो उसको स्वयं ही निश्चय करने देना चाहिये। उस पर दबाव डाल कर किसी प्रकार का निश्चय कराने से तो पीछे पछताना भी पड़ सकता है।"

रुक्मिणी को तो विश्वास था कि नरेन्द्र उस मुसलमान लड़की से विवाह नहीं करेगा और अपना वचन पूरा करेगा कि माँ द्वारा पसन्द की गई लड़की को देखे बिना वह विवाह का निश्चय नहीं करेगा। राधा ने माँ के इस विश्वास में कारण पूछा तो माँ ने कह दिया, "मैं अपने भगवान से उसको सुमति देने की प्रार्थना करती रहती हूँ। भगवान ने मुझसे कभी विश्वासघात नहीं किया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुक्मिणी की [illegible] की बात सुन सब हँस देते थे। परन्तु जब इक्कीस तारीख को दस बजे के लगभग नरेन्द्र ताँगे से उतरा तो भवानी प्रसाद देखता रह गया। उसको रुक्मिणी के विश्वास की बात स्मरण हो आयी, तो वह लपककर भीतर गया और रुक्मिणी को आवाज़ देने लगा, "ए भूप की माँ !"

"हाँ।" रुक्मिणी ने रसोईघर में से उत्तर दिया।

"नरेन्द्र आ गया है।"

"मैं उसके लिए अल्पाहार तैयार कर रही हूँ। उसको कहिये कि स्नान कर तैयार हो जाये।"

"ओह !" भवानी प्रसाद को रुक्मिणी की इस निश्चयात्मक बुद्धि पर विस्मय हुआ।

मोहसिन ताँगेवाला सामान बैठक में रखकर चला गया। नरेन्द्र ने भीतर आ पिता के और फिर माँ के चरण-स्पर्श किये। राधा भी अपने ससुर की आवाज़ सुन अपने कमरे से निकल आयी थी। नरेन्द्र ने उसके भी चरण छुए तो माँ ने कह दिया, "नरेन्द्र, पहले इधर आओ।"

"किधर माँ ?"

रुक्मिणी उसको लेकर पूजा वाले कमरे में ले गयी और उसको ठाकुरजी के सामने बैठाकर बोली, "नरेन्द्र शीश झुकाओ ठाकुरजी के सामने।"

नरेन्द्र को ठाकुरजी पर विश्वास नहीं था, परन्तु वह माँ के स्नेह और ममता को ठेस पहुंचाना नहीं चाहता था। इस कारण उसने ठाकुरजी के सामने बैठ माथा टेक दिया।

"बस, अब ठीक है। अब जाओ, स्नानादि कर लो।"

"माँ स्नान कर आया हूँ। ग्वालियर स्टेशन पर स्नान कर चाय ले ली थी।"

"तब ठीक है ! ठहरो," माँ ने ठाकुरजी के सामने कटोरी में घिसकर रखे चन्दन को अँगूठे पर लेकर नरेन्द्र को तिलक कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नरेन्द्र खिलखिला कर हँस पड़ा । उसने पुनः माता के चरण स्पर्श कर दिये । वह उठा और अपने कमरे में चला गया । वहाँ भोला उसका सामान रख रहा था । भोला ने नरेन्द्र के माथे पर चन्दन का तिलक लगा देख प्रसन्नता अनुभव करते हुए कहा, "भैया ! इस तिलक से वहुत सुन्दर लगते हो ।"

नरेन्द्र मन में विचार करता था, भला यह बूढ़ा सौन्दर्य के विषय में क्या समझता है ? इस पर भी वह सामने लगे दर्पण में अपना मुख देखे विना नहीं रह सका । उसने देखा वास्तव में उसके मुख की शोभा बढ़ गयी है । वह एक सुन्दर युवक तो था ही । चंदन का तिलक सत्य ही उसके मुख को एक विशेष शोभा प्रदान कर रहा था । यह देख भोला की तरफ घूमा तो भोला की आँखों में एक विशेष चमक देख उसका मुख निहारने लगा ।

भोला ने कहा, "माँजी को विश्वास था कि भैया आज आ रहे हैं । इस कारण वे घड़ी में नौ वजे का समय देख स्वयं रसोईघर में जाकर भोजन करने में लग गईं ।"

"वहू ने कहा, 'माँजी ! अल्पाहार तो हो चुका ।' इस पर वे कहने लगीं, 'नरेन्द्र आ रहा है ।' वहू ने कहा, 'देखें, कोई चिट्ठी तो आई नहीं ।' इस पर माँजी मुस्कराती हुई कहने लगीं, 'कुछ भी हो । वह दस वजे की गाड़ी से आ रहा है ।' "

"और तुम आ गये हो ! भगवान का धन्यवाद है ।"

नरेन्द्र को दो वर्ष की बात स्मरण आ रही थी । वह मध्याह्नोत्तर की गाड़ी से आता हुआ विचार कर रहा था कि वह नवीन युग के उज्ज्वल वातावरण से पुराने गर्त में आ रहा है । आज भी वह नवीन से पुरातन की ओर ही आया है । परन्तु क्या यह गर्त है ? वह शीरीं के बन्धन का मुकाबिला कर रहा था, माँ के ममता के वन्धन से । शीरीं का उसके गले में वाँह डाल उसको परास्त करने का मुकाबिला किया था, माँ के उसके माथे पर चन्दन का तिलक देने से ।

वह दोनों भावों में समता और अन्तर की विवेचना करने लगा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कमरे में कुर्सी पर बैठा वह सोच रहा था, 'एक नवीन युग की बात थी, दूसरी पुराने युग की। एक शरीर की बात थी, दूसरी मन की भावना की। एक स्वार्थयुक्त थी, दूसरी निःस्वार्थमयी। एक वासनामय थी, दूसरी कल्याणमयी।'

इस समय माँ थाल में पूरी-हलुवा, भाजी चटनी अचार आदि लिये हुए उसके कमरे में आ गई। "माँ! मैं तो रसोईघर में ही आ रहा था।"

"तुमको भूमि पर बैठकर खाने से कष्ट होता है न?"

"नहीं माँ! मैं वहाँ ही आ रहा हूँ। मैंने अपना स्वभाव बदललिया है।"

वह उठा, उसने अपने यात्रा के कपड़े बदले और धोती, कुर्त्ता पहन थाल उठा रसोई घर में जा बैठा। माँ अभी भी चूल्हे के समीप बैठी पूरी निकाल रही थी।"

माँ नरेन्द्र को वहाँ बैठा देख प्रसन्न थी। माँ ने कहा, "भूमि पर बैठकर खाना अथवा कुर्सी-मेज पर खाना मैं एक ही समान समझती हूँ। अपनी-अपनी सुविधा की बात है।"

"पर माँ! तुम्हारी सुविधा भी तो देखनी है।"

माँ नरेन्द्र में यह परिवर्तन देख फूली नहीं समा रही थी। नरेन्द्र ने पूरी खाते हुए ही पूछ लिया, "माँ! भोला कह रहा था कि तुमने प्रातः राधा भाभी से कहा था कि तुमको मेरे इसी गाड़ी से आने की सूचना थी। मैंने तो सूचना भेजी नहीं थी, भला किसने दी थी यह सूचना?"

"ठाकुर जी ने मेरे मन में यह बात चुपके से कह दी थी कि तुम आज ही दस बजे की गाड़ी से आ रहे हो।"

'ठाकुर जी ने? पर माँ वे तो बोलते नहीं।"

"बोलते हैं नरेन्द्र! मुख से नहीं, मैं बताती हूँ। भगवान सर्वव्यापक हैं। वे तेरे हृदय में हैं, मेरे हृदय में और ठाकुरजी में भी उनका वास है। ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं प्रातःकाल तुम मेरे विषय में विचार कर रहे होगे। तुम्हारे हृदय में बैठे भगवान को तुम्हारे विचार का पता चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। मैं उस समय पूजा पर बैठी भगवान का चिन्तन कर रही हूँगी। मेरी आत्मा उसमें लीन हुई तो तुमने जो कुछ विचार किया होगा वह भगवान ने मेरे हृदय में कह दिया। समझे हो ?"

"कुछ नहीं समझा माँ।"

"तुम बुद्धि से समझने का यत्न करते हो, तभी आत्मा की बात समझ नहीं पाते। बुद्धि के अतिरिक्त भी आत्मा देखता, सुनता, बोलता सूँघता और स्पर्श करता है। तुमने कभी उस द्वारा सुनने अथवा देखने का यत्न नहीं किया। इसी कारण तुमको बात समझ में नहीं आ रही।"

: ७ :

अगले ही दिन मुन्शी रामदयाल आया तो नरेन्द्र के विवाह की चर्चा चल पड़ी। मुन्शीजी ने पूछ लिया, "नरेन्द्र भैया! उस दिल्ली वाली छोकर से पिण्ड छूटा है अथवा नहीं ?"

"मुन्शीजी, आपने लगभग एक वर्ष हुआ है, होटल इंडिया में बैठे एक प्रस्ताव किया था। आप राधा भाभी के विवाह पर दहेज न देने की कमी पूरा करना चाहते थे न ?"

"रमणी की बात कर रहे हो ?"

"हाँ, मुन्शी जी ! यही तो आपने कहा था।"

"तो उसको देखोगे ?"

"रमणी को क्या देखूँगा। वह देखी-भाली ही है।"

"तो है स्वीकार ?"

"इसी कारण तो परीक्षा से अवकाश पाते ही चला आया हूँ।"

"रुक्मिणी बहिन !" मुन्शी जी ने कह दिया, "अब तुम मंजूर करो तो बात बने।"

"नरेन्द्र के पिताजी ही इसमें कहने का अधिकार रखते हैं।" रुक्मिणी ने अपने पति की ओर देखते हुए कह दिया।

भवानीप्रसाद ने कह दिया, 'लड़कों के विवाह के विषय में अन्तिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाग्दान रुक्मिणी का ही होना है। जब वह मान रहे हैं तो मैं समझता हूँ कि मुन्शी जी शकुन-मात्र कुछ अभी दे जाएँ। सगाई और विवाह तो सुरेन्द्र के सामने ही हो सकेगा।"

मुन्शी जी ने अपनी जेब में हाथ डाला और उसमें से एक सौ एक रुपया निकालकर कहा, "नरेन्द्र ! तनिक पूजा-गृह में चलो तो।"

सब उठ पूजा-गृह में जा पहुंचे। भवानी प्रसाद, भूपेन्द्र, रुक्मिणी और राधा थे।

पूजा-गृह में पहुँच मुन्शी जी ने नरेन्द्र को सामने बैठाकर तिलक कर दिया और फिर उसकी झोली में एक सौ एक रुपये के नोट रख कर उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "भगवान तुमको धन-धान्य से सम्पन्न करे, जिससे तुम अपने, अपनी पत्नी, अपने बाल-बच्चों, अपने भाई-बन्धुओं, अपने गाँव, प्रदेश और देश-कल्याण में, सहायक हो सको।

"देखो नरेन्द्र ! हम मानव हैं और मानव हमारी बिरादरी है। उसके सुखी रहने से ही हम सुखी रह सकते हैं। अतः हमारा यत्न यही होना चाहिए कि हमारी बिरादरी उत्तरोत्तर अधिक और अधिक सुखी होती रहे।

"बेटा ! सुखी रहो।"

इस प्रकार नरेन्द्र के जीवन की एक समस्या को सुलझाने की दिशा मिल गई। समय पाकर महोना मोटर एण्ड एसेसरीज (प्राइवेट) लिमिटेड की रजिस्ट्री हो गयी और नरेन्द्र को इसकी जनरल मैनेजरी के रूप में काम करने का प्रस्ताव हो गया।

मुन्शी रामदयाल इस कम्पनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर थे और सातों भागीदार इसके डाइरेक्टर थे। कम्पनी के जनरल मैनेजर को ही डाइरेक्टरों के बोर्ड का सेक्रेटरी बनना था।

नरेन्द्र की सगाई का शकुन हुए एक मास हो चुका था। इस काल में नरेन्द्र गाँव में ही रहा था और अपने भविष्य के विषय में चिन्तन करता रहा था। उसके दृष्टिकोण के बदलने में, जहाँ सीता के पिता बालकराम के कथन का भारी हाथ था, वहाँ मुन्शी रामदयाल के इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कथन का भी हाथ था कि निजी क्षेत्र के कर्मचारी को अपनी सामर्थ्यानुसार नियत घण्टों के पश्चात् भी कार्य करके अपनी आय में वृद्धि करने का अवसर है। उसे अपने विचारानुसार किसी भी दल अथवा सभा-समाज में रहने और कार्य करने का अधिकार है। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह एक मालिक को छोड़ दूसरे मालिक की नौकरी भी कर सकता था। सरकारी क्षेत्र में तो कर्मचारी आठ घण्टे कार्य कर शेष समय में न तो अपनी आय-वृद्धि, न ही मानसिक अथवा सामाजिक उन्नति के लिए कुछ कर सकता था।

इस चिन्तन को दिशा देने में पंडित भगवतीचरण भी सहायक मिल गये। नरेन्द्र जब से अपने गाँव में आया था, वह प्रातःकाल भ्रमण के लिये खेतों में निकल जाया करता था, भूपेन्द्र अपना फार्म सरकार को देना चाहता था, परन्तु उसके प्रस्ताव का कोई उत्तर नहीं आया था। इस कारण उसने अपने घर की आवश्यकताओं के लिये तीस एकड़ भूमि जो कुएँ के समीप थी, रख, शेष के टुकड़े-टुकड़े कर बहुत ही सस्ते दामों पर बेच दी थी। इस कुएँ पर पम्प लगा था जो बिजली से चलता था। भोला का लड़का काहनचन्द अभी भी इस पम्प पर काम करता था। इस कुएँ पर गाँव के लोग प्रातःकाल स्नानादि के लिये एकत्रित हो जाते थे। नरेन्द्र भी प्रातःकाल का भ्रमण कर वहाँ पहुँच जाता था। भगवतीचरण से उसकी वहीं पर ही भेंट होने लगी थी।

भगवतीचरण को तो यही विदित था कि नरेन्द्र के विचार साम्यवाद के अनुकूल हैं। इससे वह नरेन्द्र से नोक-झोंक करता रहता था। पहले तो नरेन्द्र उसकी बातें सुन मुस्करा दिया करता था, परन्तु कुछ ही दिनों में दोनों में खुलकर बातें होने लगीं।

नरेन्द्र के मस्तिष्क से साम्यवाद का भूत तो निकल चुका था; परन्तु वह अभी तक समाजवाद के एक रूप को चित्त से निकाल नहीं सका था। भूपेन्द्र के फार्म के टुकड़े बिक चुके थे और उन टुकड़ों पर खरीदने वालों ने हल चलाकर बुआई कर दी थी। इस समय मध्य प्रदेश सरकार का नोटिस भूपेन्द्र को मिला कि वह अपना समूचा फार्म सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कृषि-विभाग वालों के हवाले कर दें। इस नोटिस की बात नरेन्द्र को भी मालूम हुई तो वह हंस पड़ा। इससे अगले दिन पंडित भगवतीचरण ने नरेन्द्र से कहा, "देखा है नरेन्द्र, समाजवाद की विशेषता ? भूपेन्द्र ने सरकार से यह प्रस्ताव किया था, सन् १९५६ के जनवरी मास में और अब है मई सन् १९५७ का अन्त। अर्थात् सरकार को भूपेन्द्र के प्रस्ताव पर विचार करने में एक वर्ष और चार महीने लगे हैं। इतने काल में हमने उस दाम से दुगुने मूल्य पर जनता में भूमि बेच दी है। एक सहस्र आठ सौ नव्वे एकड़ भूमि हमने दो लाख तीस हज़ार में बेच दी है। सरकार को यह सब भूमि इस पर की सब मशीनरी सहित एक लाख रुपये पर देने का प्रस्ताव किया था। भूप ने सितम्बर, १९५६ में यह नोटिस भी दे दिया था कि चूंकि सरकार के कृषि विभाग का कोई उत्तर नहीं मिला, इस कारण वह अपनी भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में अन्य ग्राहकों के पास बेच रहा है। इस पर भी सरकार के कान पर जूं नहीं रेंगी। भूपेन्द्र ने उस रुपये से अपनी मोटर एसेसरीज़ की कम्पनी के हिस्से खरीद लिये हैं। अब सरकार की कुम्भकरण की नींद खुली और भूमि माँग रही है।"

"हाँ पंडितजी ! कल डाइरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर आया था और वह भूमि देखना चाहता था, जिसके विषय में भैया ने प्रस्ताव किया था। जब भैया ने बताया कि भूमि बिक गयी है तो वह उनको डाँटने लगा कि सरकार से प्रस्ताव करने के पश्चात् वह ऐसा नहीं कर सकता था। भैया ने कहा, 'मुझे आपके किसी ऐसे कानून का ज्ञान नहीं है। यह तो अब बिक गई। साथ ही मैंने आपको रजिस्टर्ड नोटिस देने के उपरान्त ही यह बेची है।"

डाइरेक्टर महोदय का कहना था, 'यह बेचना अनियमित है। इस पर भैया बोले, तो मुझपर दावा कर दिया जाय।"

पंडित भगवतीचरण ने कहा, "नरेन्द्र, हकीकत यह है, 'अंधी मुर्गी और खस-खस के चोंगा की कहावत चरितार्थ की जा रही है।"

"परन्तु पंडितजी, एक बात तो हमको भी समझनी चाहिये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी काम जल्दी-जल्दी हो ही नहीं सकते। अनेक अधिकारियों और कार्यालयों से मंजूरी लेनी पड़ती है।"

"यह तो ठीक है नरेन्द्र ! परन्तु व्यापार-जैसे सतर्क रहने वाले कार्य में ऐसी संस्था को दखल देना ही नहीं चाहिये ! जो काम शीघ्र करने का हो वह सरकार करे ही क्यों ? किसी वेद में लिखा है कि सरकार व्यवसाय करे।"

"तो कौन करे ?"

"जो पहले करता था। जब से ज़मींदारी टूटी है, तुम्हारे पिता ने फार्म भूपेन्द्र के हाथ में दे रखा था और पाँच वर्ष में जहाँ भूपेन्द्र ने स्वयं लाखों कमाये हैं, वहाँ गाँव की सम्पन्नता में भी भारी सहयोग दिया है। फार्म में भी भारी प्रगति की थी। वह मशीनरी जो सरकार को फोकट में दी जाने वाली थी, उसको भूपेन्द्र ने पचपन हज़ार रुपये में बेच दिया है। यह सब फार्म की उपज में से ही बनी थी।"

"परन्तु, "नरेन्द्र का कहना था," समाज के हित में है कि कुछ बड़े-बड़े फार्म सरकारी क्षेत्र में किये जाएँ।"

"क्या हित है इसमें ? जो लोग 'फार्म लें अथवा न लें' का निर्णय करने में डेढ़ वर्ष निकाल सकते हैं, वे भला खेती-बाड़ी क्या करेंगे और फिर उसकी उपज कब बेचेंगे ? कागज़ी घोड़े दौड़ाते हुए ही वर्ष व्यतीत हो जाया करेंगे और अन्न गोदामों में पड़ा-पड़ा सड़ जाया करेगा।"

नरेन्द्र विचार कर रहा था कि जब भूपेन्द्र भैया का फार्म ठीक चल रहा था, उपज बढ़ रही थी तो फिर उसको सरकार के लेने की क्या आवश्यकता थी।

उसके मन में यह विचार उठा था कि सरकार इसके लाभ को लोक के कल्याण के कार्य में व्यय कर सकती है। उसने अपने मन की बात बताई तो भगवतीचरण ने पूछ लिया, "लोक कल्याण क्या होता है ?"

"यही अस्पताल खोलना, स्कूल-कॉलेज बनाना, सड़कें और तालाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तैयार करवाना। जिनसे जनता को सुख पहुँचे वह लोक-कल्याण होता है।"

"और लोगों से कर लेकर सरकार क्या करे? यह लोक-कल्याण के लिये नहीं क्या? क्या यह सरकार के आत्म-कल्याण के लिये है?"

"पंडितजी, यह पर्याप्त नहीं।"

"तो कर बढ़ाया जा सकता है। वैसे तो सरकार प्रतिवर्ष अधिक और अधिक कर ले ही रही है, साथ ही कृषि अथवा व्यापार करने में सरकार को कुछ लाभ होगा भी क्या? मैं समझता हूँ कि इस खेत से सरकार उतना लाभ भी नहीं कर सकती, जितना भूपेन्द्र लगान देता था। भूपेन्द्र इस खेत का लगान लगभग तीस हज़ार रुपया देता था।"

नरेन्द्र को समझ आ रहा था कि सरकार व्यवसाय में व्यक्तिगत प्रयास का मुक़ाबिला नहीं कर सकती। इस पर भी वह यह समझ नहीं सका था कि लाभ की रकम को एक व्यक्ति के हाथ में देने से अधिक हित हो सकता है, अथवा सरकार के हाथ में।

इस विषय में उसने अपना संदेह प्रकट किया तो भगवतीचरण ने ग्राम-सुधार समिति के कार्य की ओर नरेन्द्र का ध्यान आकर्षित कर दिया। गाँव की समिति का एक अधिकारी था। उसके अधीन चार लड़कियाँ और तीन पुरुष कार्यकर्त्ता थे। लड़कियाँ गाँव की स्त्रियों में नये विचार भरने के लिये नियुक्त थीं और पुरुष, गाँव के पुरुष-वर्ग सामाजिक कार्यों में उत्साह भरने के लिये थे।

नरेन्द्र को इस विषय में एक घटना का वृत्तांत अपने घर में ही मिला था। भोला का लड़का काहनचन्द मद्य का सेवन कर अपना अधिकांश वेतन उसमें फूँक देता था। एक दिन एक ग्राम-सेविका काहन की स्त्री बिन्दू से मिलने आयी और उसकी दुर्व्यवस्था का वृत्तांत सुन उसको अपने पति को तलाक देने की प्रेरणा देने लगी। यह प्रेरणा कई मास तक चलती रही और एक दिन वह अपने मायके जाने के बहाने घर से गई और शिवपुरी के जिला हाकिम के पास तलाक का आवेदन-पत्र दे आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काहन और भोला को पता तब चला, जब काहन को सरकारी नोटिस मिला कि वह शिवपुरी के जज के सामने उपस्थित होकर बताये कि क्यों न उसकी पत्नी के तलाक की प्रार्थना स्वीकार की जाय।

काहन नोटिस और अर्जी-दावा लेकर बाबू भवानी प्रसाद के पास आया। दावा पढ़ा गया तो काहन मुख देखता रह गया। भवानी प्रसाद ने पूछ लिया, "काहन ! बिन्दु कहाँ है ?"

"बाबू साहब मक्का पीस रही है।"

"तो वह शिवपुरी में यह प्रार्थना-पत्र देने गयी थी क्या ?"

"उसने मुझसे इस विषय में कभी नहीं कहा।"

"तो बुलाओ उसे।"

बिन्दु भवानी प्रसाद के सामने छोटा-सा घूंघट काढ़े आकर बैठी बाबू साहब ने पूछ लिया, बिन्दु, "यह क्या है ?"

"क्या है ?" उसने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया।

भवानी प्रसाद ने अर्जी-दावा पढ़कर सुनाया और कहा, "इसके नीचे लिखा है कि बिन्दु, पत्नी काहनचन्द वल्द भोला कहार मार्फत भवानी प्रसाद रईस महोना।"

"पर मैंने यह नहीं कहा था।"

"तो तुमने क्या कहा था ?"

"इन्दु मुझसे मिलने आया करती थी और मेरे पति की बातें करके मुझसे सहानुभूति प्रकट किया करती थी। एक दिन उसने कहा था कि मेरा जीवन सुधर जायेगा यदि मैं उसके साथ एक दिन शिवपुरी चलूँ। मैं अपनी माँ के घर जा रही थी कि वह मेरे साथ इक्के पर बैठ गई और मुझको शिवपुरी ले गई। वहाँ एक कागज़ पर मेरा अँगूठा लगवाया, मुझको एक कमरे में ले गयी। वहाँ ऊँचे कठघरे में बैठे एक आदमी ने मुझसे पूछा, "क्यों औरत तुम्हारा घरवाला शराब पीता है?"

"हाँ हज़ूर, मैंने सच बात बता दी कि हज़ूर पीता है। इस पर उसने फिर पूछा, वह तुमको पीटा भी करता है ?"

"मैंने हाँ कहा। वह बोला, 'तुम उससे तंग हो क्या ?' मैंने कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कौन रोज पीटा जाना पसन्द करता है।"

"बस बाबू साहब ! यही बात हुई और मुझको इन्दु मेरी माँ के घर छोड़ आयी।"

"देखो बिन्दु ! इसमें लिखा है कि तुम काहन को छोड़ना चाहती हो।"

"यह कैसे हो सकता है ?"

"हो तो सकता है, यदि तुम चाहो तो।"

"तो मैं क्या करूँगी ? कहाँ जाऊँगी ?"

"तुम दूसरा खाविन्द कर सकती हो और वह दूसरी पत्नी ला सकता है।"

"राम राम ! यह तो अनर्थ हो जायेगा। नहीं जी, मैं यह नहीं चाहती। मैंने यह कहा भी नहीं।"

"तो क्या चाहती हो तुम ?"

"यह शराब न पियें और गाँव की बदमाश औरतों के पास न जाएँ।"

भवानी प्रसाद और सब जो वहाँ उपस्थित थे, हँसने लगे। भवानी प्रसाद ने शिवपुरी के एक वकील के द्वारा बिन्दु से पुनः प्रार्थना-पत्र दिलवा दिया कि अब उसकी अपने पति से सुलह है और अब वह उसको पीटता नहीं। इस प्रकार मुआमला रफा-दफा किया गया। पीछे पता चला था कि इन्दु का काहन से अनुचित सम्बन्ध था।

नरेन्द्र को इस घटना और अन्य बातों के ज्ञान से यह समझ आया था कि सरकार जैसी संस्था, ऐसे लोक-कल्याण के कार्य, जिनका मानसिक प्रवृत्तियों से सम्बन्ध हो, करने में सर्वथा असमर्थ है।

सरकार व्यवसाय नहीं कर सकती, सरकार मानसिक सुधार नहीं कर सकती, सरकार निर्माण-कार्य का नियोजन भी ठीक नहीं कर सकती। तो फिर यह क्या कर सकती है ? यह प्रश्न कई दिन से उसके मन में उठ रहा था। आज भगवतीचरण की बातों से यह विचार फिर उसके मन में उत्पन्न होने लगा था। उसने पूछ लिया, "पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पंडितजी ! यदि सरकार यह न करे, वह न करे, तो क्या करे ?"

"सरकार तीन काम कर सकती है। देश की विदेशियों से रक्षा, दूसरे, भले लोगों की गुंडों से रक्षा और तीसरे, अपाहिज वृद्ध, विधवा और यतीमों का पालन-पोषण। यह भी यदि धर्मात्मा लोगों के द्वारा कराये तो बहुत अच्छा है।"

"और बेकारों को काम ?"

"हाँ, यह भी है। परन्तु इसमें सरकार का प्रयत्न दो दिशाओं में ही होना चाहिये। एक तो व्यवसायिक शिक्षा के विकास की ओर और दूसरा अधिक-से-अधिक कामों को निर्माण करने में।"

"परन्तु बिना सरकार के व्यवसाय और उद्योग में पदार्पण किये, यह किस प्रकार किया जा सकेगा ?"

"इसके लिये सरकार को स्वयं उद्योगादि के क्षेत्र में आने की आवश्यकता नहीं। निजी क्षेत्र के विकास से यह कार्य और भी अधिक सुविधा और सुगमता से हो सकता है। देखो नरेन्द्र ! हम एक कम्पनी खोल रहे हैं। उसमें हम भी तो कर्मचारी रखेंगे। हाँ, अन्तर इतना होगा कि हम सब-के-सब कर्मचारी मेहनत और ईमानदारी से काम करने वाले रखेंगे और यदि यह कम्पनी सरकार की हो जाये तो सरकार इनमें कांग्रेसियों को भरती कर देगी। ठीक वैसे ही जैसे रूस अथवा चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को गैर सदस्यों पर उपमा दी जाती है।"

: ८ :

कम्पनी की रजिस्ट्री की सूचना मिलने पर कम्पनी के संगठन का काम आरम्भ हो गया। सातों पत्तीदार एक चित्त हो विचार करने लगे कि कम्पनी का मैनेजिंग डाइरेक्टर कौन हो। सर्वसम्मति से मुन्शी रामदयाल मैनेजिंग डाइरेक्टर नियुक्त हुए। तदनन्तर जनरल मैनेजर और डाइरेक्टरों के सेक्रेटरी केबोर्ड के सेक्रेटरी के लिये नियुक्ति का प्रश्न उपस्थित हुआ। रामदयाल का सुझाव था कि नरेन्द्र को इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्थान पर कार्य करने का अवसर दिया जाये। उसके अस्वीकार करने पर विज्ञापन द्वारा प्रार्थना-पत्र मँगवाये जाएँ।

नरेन्द्र से पूछने के लिये भूपेन्द्र को कहा गया। भूपेन्द्र नरेन्द्र के पास पहुँचा। नरेन्द्र बाहर चौपाल पर हाथ में एक काग़ज़ लिए खड़ा था जब भूपेन्द्र वहाँ पहुँचा।

"क्या है नरेन्द्र ?" भूपेन्द्र ने पूछ लिया।

"भैया ! तार है।"

"पढ़ो तो, किसका है और क्या लिखा है ?"

नरेन्द्र ने तार का भावार्थ भैया को सुना दिया, "भैया ! तार सुरेन्द्र भैया का है। लिखा है मेरा परीक्षा-फल घोषित हो गया है और सात सौ पचपन अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ हूँ। मैं अपने विषय में प्रथम रहा हूँ।"

"तो प्रसन्न हो ?"

"भैया ! मैं कुछ ऐसे ही परिणाम की आशा करता था।"

"मैं तुमसे एक बात करने आया हूँ।"

"आपकी कम्पनी की बैठक समाप्त हो गई क्या ?"

"नहीं, वह चल रही है। उसीसे सम्बन्धित बात है।"

"हाँ, तो क्या कहते है आप ?"

दोनों चौपाल पर रखी खाट पर बैठ गये। भूपेन्द्र ने कहा, "कम्पनी का सर्वसम्मति से यह निर्णय है कि नरेन्द्र को मुख्य प्रबन्धक के कार्य पर नियुक्ति-प्रस्ताव दिया जाये। सो वह प्रस्ताव मैं तुमसे करने आया हूँ और तुम्हारा उत्तर उन तक ले जाना चाहता हूँ।"

"भैया ! एक बात में संकोच होता है।"

"किस बात से ?"

"यही कि सब घर के प्राणी हैं। इस कारण घर वालों की नौकरी सुखकारक होगी क्या ? साथ ही मुझसे कार्य में त्रुटि होने पर आप लोगों के सामने कठिनाई उपस्थित हो जायेगी। विशेष रूप में रमणी भी तो डाइरेक्टर है। वह बेचारी क्या कहेगी, जब मैं भूल से कम्पनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की हानि कर दूंगा।

"देखो नरेन्द्र ! हम सब अपने को ईमानदार व्यक्ति मानते हैं और तुमको भी इसी श्रेणी में समझकर यह दायित्वपूर्ण स्थान तुमको दे रहे हैं। हम सब यह जानते हैं कि हम परस्परसहयोग से कार्य करेंगे।"

"तुम्हारी होने वाली पत्नी का एक भागीदार होना, हम इस बात की गारंटी समझते हैं कि तुम कम्पनी के कार्य को विशेष ध्यान लगा कर करोगे।"

"देख लें, मेरी राय मानें तो दो दिन तक इस विषय पर और विचार करके किसी प्रकार का अन्तिम निर्णय लें तो ठीक होगा।"

अगले दिन सुरेन्द्र का एक और तार आया, "नरेन्द्र ! तुरन्त दिल्ली चले आओ। एक अति आकर्षक प्रस्ताव है।"

नरेन्द्र ने तार पिताजी एवं भूपेन्द्र को दिखाया तो भवानी प्रसाद का कहना था कि तुम जा सकते हो। उसकी भी सुन लो, तब निश्चय करना। यहाँ हम तुमको निश्चय करने के लिये एक सप्ताह और दे सकते हैं।

भूपेन्द्र का विचार था कि यह सुरेन्द्र को और अधिक व्याख्या से लिखने के लिये कहे। नरेन्द्र ने देखा कि वह सड़क के चौराहे पर पहुंच गया है। उसके लिये निश्चय करने की बात यह है कि वह सरकारी क्षेत्र में पदार्पण करे अथवा निजी क्षेत्र में। प्रश्न यह नहीं कि वहाँ क्या मिलेगा। एक सीमा से अधिक वेतन पर जाकर यह बात गौण हो जाती है कि वह कितना अधिक है। तदनन्तर कार्य की श्रेष्ठता का प्रश्न रह जाता है।

उसने पिताजी को केवल यह कहा, "मैं सुरेन्द्र भैया को पत्र लिख रहा हूँ। उस पत्र को मैं आपको सुनाकर भेज दूंगा।"

वह अपने कमरे में गया और उसने एक कागज लेकर लिख दिया, "भैया ! आपकी जो मुझ में रुचि है, उसके लिये मैं बहुत आभारी हूँ। परन्तु मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं सरकारी नौकरी नहीं करूँगा। मैंने सरकारी नौकरी और किसी व्यक्तिगत कम्पनी अथवा फैक्टरी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी में [illegible] है और मुझको [illegible] में कार्य अधिक आकर्षक प्रतीत हुआ है। इस कारण मैं तब ही दिल्ली आ सकता हूँ जब आप लिखें कि आपने कौन से और कहाँ के प्रस्ताव को मेरे लिये आकर्षक समझा है।"

नरेन्द्र ने यह पत्र पिताजी को सुनाया तो उन्होंने पूछ लिया, "कब तक यहाँ से उत्तर की आशा करते हो ?"

'पत्रोत्तर आने में तीन दिन लगने चाहिएँ और यदि एक सप्ताह तक भी उत्तर नहीं आया तो मैं अपना निर्णय करने में स्वतन्त्र हूंगा।"

"ठीक है, हम अपनी कम्पनी की असली बैठक एक सप्ताह पश्चात् करेंगे।"

परन्तु इस बात के निर्णय में इतनी देरी नहीं लगी। अगले ही दिन सीता और शीरीं मोटर में वहाँ आ पहुँचीं।

रुक्मिणी को यह बात पसन्द नहीं आई। इस पर भी वह आये हुओं को घर से निकाल नहीं सकी। सीता ने अपना कमरा खुलवा लिया और उसमें दोनों, सीता और शीरीं सामान रख, स्नानादि का प्रबन्ध करने लगीं। वे पिछली रात दो बजे की चली हुई दिन के ग्यारह बजे बारी-बारी से मोटर चलाती हुई वहाँ पहुँची थीं।

रुक्मिणी ने दोनों के लिये भोजन तैयार कर दिया और भोजन पर सब एकत्रित हो सीता के आने का प्रयोजन जानने की प्रतीक्षा करने लगे।

बात सीता ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "यह लड़की मेरे सेक्रेटरी के रूप में काम करती है। इसका परिचय मुझको नरेन्द्र द्वारा ही हुआ था। पिछले निर्वाचनों के अवसर पर नरेन्द्र के कहने पर ही मैंने इसे नौकर रखा था।

'नरेन्द्र ने इससे विवाह का वचन दिया हुआ है। परीक्षा के पश्चात् दिल्ली से आते समय नरेन्द्र ने इसको कहा था कि काम लगते ही वह इससे विवाह कर लेगा। आपके सुपुत्र, लक्षमण के पिता ने, नरेन्द्र के लिये भारत के नियोजन कार्यालय में एक नौकरी सुरक्षित करवा ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । वेतन एक सहस्र रुपया मासिक से आरम्भ होकर दो सहस्र तक हो जायगा, इसके अतिरिक्त देश-विदेश में भ्रमण का अवसर मिलेगा ।

"हम इसलिये आये हैं कि नरेन्द्र से कहकर सगाई की बात हो जाये और फिर विवाह की तिथि भी निश्चय कर दी जाये ।"

रुक्मिणी को यह तो विदित था कि एक लड़की नरेन्द्र के पीछे लगी हुई है । परन्तु नरेन्द्र ने यह नहीं बताया था कि वह दिल्ली से आते समय किसी प्रकार का वचन उसे दे आया है। इसकारण कुछ कहने से पूर्व उसने नरेन्द्र को वहीं बुला लेना उचित समझ उसने राधा को कहा, "देखो, नरेन्द्र अपने कमरे में हो तो उसको बुला लो ।"

सीता ने अपनी बात और आगे कह दी । यह लड़की नरेन्द्र को कई पत्र लिख चुकी है, परन्तु नरेन्द्र ने उनका उत्तर नहीं भेजा । इससे हमको संदेह हो गया है कि यहाँ उसको बहकाया जा रहा है ।"

"अच्छा, नरेन्द्र को आ जाने दो । बात हो जाती है ।"

नरेन्द्र पंडित भगवतीचरण के साथ मुन्शीजी के घर गया हुआ था । उसको सीता और शीरीं के आने का पता नहीं था वहाँ मुन्शी रामदयाल कम्पनी के कार्य के विषय में अपनी योजना बता रहा था । नरेन्द्र योजना से अति प्रभावित हो रहा था । इस समय इन्होंने पाँच पैट्रोल पम्प ले रखे थे । उन पर दो लाख रुपये से ऊपर पूंजी लगी थी । ग्वालियरमें वे एक मोटर मरम्मत करने की वर्कशाप खोलने का विचार रखते थे । इसके लिये ज़मीन और ईंट, लोहा, सीमेंट तथा उसमें लगने वाली मशीनें ली जा चुकी थीं । तीन लाख रुपया व्यय हो चुका था और एक लाख काम चालू करने के लिये पृथक् रखा था । इसके अतिरिक्त उनके कार्यक्रम में एक साइकल बनाने की फैक्टरी भी थी । इस कार्य के लिये मशीनरी के लिये पत्र-व्यवहार हो रहा था । सरकार की ओर से इसकी स्वीकृति मिल चुकी थी ।

ये योजनाएँ अभी बताई ही जा रही थीं कि भोला आया और बोला, "नरेन्द्र भैया ! माँजी बुला रही हैं ।"

"क्या कहती हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मझली बहू और उसके साथ एक दूसरी औरत मोटर में आयी हैं।

"सीता भाभी ?"

"हाँ।"

नरेन्द्र गम्भीर हो गया। वह समझ गया कि दूसरी औरत शीरीं भी हो सकती है। मुन्शी जी ने नरेन्द्र को गम्भीर भाव धारण करते देखा तो पूछ लिया, "क्या बात है नरेन्द्र ?"

"मुन्शी जी ! वही लड़की आयी मालूम होती है जिसको आपने वाई० एम० सी० ए० होस्टल में देखा था।"

"ओह ! तो चलो मैं भी चलता हूँ।"

"आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। मैं उससे निबट लूंगा।"

"नहीं नरेन्द्र ! तुम समझ नहीं सकते कि यह क्या गड़बड़ कर सकती है।"

नरेन्द्र चला तो मुन्शी जी भी अपने सब कागज-पत्र बन्द कर उसके साथ चल पड़े। सीता इत्यादि भोजन समाप्त कर बैठक में आ गई थीं। मुन्शी रामदयाल बाहर चोपाल पर भवानी प्रसाद के पास बैठ गया और नरेन्द्र बैठक घर में जा पहुँचा।

नरेन्द्र ने मुस्कराते हुए सीता भाभी को प्रणाम कर दिया और फिर शीरीं को आदाब-अर्ज कर माँ की ओर देख पूछ लिया, "हाँ माँ, क्या कहती हो ?"

"बहू कह रही है कि इस लड़की को तुम वचन दे चुके हो कि इससे विवाह करोगे।"

"माँ ! ऐसी कोई बात नहीं हुई। मैंने इतना अवश्य कहा था कि यहाँ माँ है, पिता, भाई और भाभी हैं। ये लोग मेरा विवाह मान जाएँगे तो मैं विवाह कर लूंगा।"

"और तुमने इतना भी तो नहीं बताया ?" माँ ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछ लिया।

"मैंने बड़े भैया को बताया था। मुन्शी जी को मेरे इससे विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के प्रस्ताव का ध्यान था। उन दोनों ने इससे विवाह को उचित नहीं माना। बड़े भैया नहीं माने तो मैंने आगे बात नहीं चलाई।"

"और भूपेन्द्र ने बात क्यों अस्वीकार कर दी है?"

"बड़े भैया इसके विषय में कुछ जान गये थे, जिससे उन्होंने मुझको इससे विवाह करने से मना कर दिया है।"

"इससे तुमको कुछ पत्र लिखे थे क्या?"

"हाँ माँ! पिछले दो माह में इसके छः-सात पत्र आये हैं, परन्तु मैंने उन पत्रों को खोला ही नहीं। मेरा विचार था कि उनको मैं जब दिल्ली जाऊँगा तो लौटा दूँगा।"

"अब बताओ लड़की, तुम क्या चाहती हो?"

"इन्होंने यह कहा था कि ये अपने माता-पिता को कहेंगे तो आप मान जाएँगे।"

"परन्तु माँ! जब भाई नहीं माने तो मैंने पिताजी को कहना व्यर्थ माना और फिर इसके पत्रों का उत्तर भी नहीं दिया।"

"परन्तु आपका सम्बन्ध मुझसे तो अपना कुदरती परिणाम पैदा करने वाला है।" शीरीं ने छूटते ही कह दिया।

"क्या सम्बन्ध था मेरा तुम्हारे साथ?"

"जो एक लड़के का लड़की से होता है?"

इस पर तो नरेन्द्र तमककर उठ पड़ा। फिर वह अपने पर नियन्त्रण कर पुनः बैठ बोला, "माँ, यह सरासर झूठ बोल रही है।"

"मैं ख़ुदा की कसम खाकर कहती हूँ कि मेरे पेट में इनका बच्चा है।"

सब स्तब्ध मौन बैठे थे। नरेन्द्र ने सीता की ओर देख पूछा, "भाभी! तुम क्या कहती हो?"

"मैं कुछ नहीं जानती। इसने मुझको यही कुछ बताया है और मैं इसको लेकर यहाँ आ गई हूँ। यह तो तुम दोनों ही बता सकते हो कि सत्य क्या है और झूठ क्या है?"

"नरेन्द्र।" माँ ने डाँटकर कहा, "ठीक और सत्य बात बताओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखो, झूठ बोलने वाले को घोर नरक की यन्त्रणा सहन करनी पड़ती है। परमात्मा सबके, सब कामों का साक्षी है। वह माँ के सामने झूठ बोलने को कभी क्षमा नहीं करेगा।"

"माँ, मैं अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मेरा इस औरत से ऐसा सम्बन्ध कभी नहीं रहा, जिसका यह परिणाम हो सकता था।"

"ठीक है!" रुक्मिणी उठ पड़ी और सीता से बोली, "बहू! इसको यहाँ से ले जाओ और इसको अपने पाप-कर्मों में लिप्त होने का फल भोगने दो।"

"पर माँ जी! यह पुलिस में रिपोर्ट लिखायेगी तो भारी बदनामी होगी और नरेन्द्र का भविष्य मलिन हो जायेगा।"

"जो इसका मन करे कर ले। जो होगा वह सहन करना पड़ेगा।"

इतना कह रुक्मिणी उठकर बैठक से बाहर निकल गई। राधा दया-भाव से शीरीं की ओर देख रही थी। नरेन्द्र ने सीता को सम्बोधन कर कहा, "भाभी! इसे तुरन्त यहाँ से ले जाओ। नहीं तो बहुत बुरा होगा।"

"क्या होगा?" सीता ने घूरकर नरेन्द्र की ओर देखते हुए पूछ लिया।

"होगा यह कि मुझको बाबू बालकराम और सेठ जुगलकिशोर को बुलाना पड़ेगा और तुम दोनों के चरित्र का काला चिट्ठा अदालत में उपस्थित करना होगा।"

"बहुत बदतमीज़ हो रहे हो नरेन्द्र?"

"भाभी! बदतमीज़ी इसने आरम्भ की है और तुम इसकी सहायता करने की धमकी दे रही हो।"

शीरीं उठी और सीता की बाँह पकड़ उठाते हुए बोली, "चलो दीदी! सब कलई दिल्ली की अदालत में खुलेगी।"

दोनों मोटर में जा बैठीं। भोला उनका सामान उठा मोटर में रखने के लिए ले गया। दोनों मध्याह्न दो बजे के लगभग महोना से विदा हो गईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

इस सब समय में मुन्शी रामदयाल बाहर चौपाल पर बैठा रहा। भवानी प्रसाद भी वहाँ बैठा था। भूपेन्द्र कम्पनी के काम से ग्वालियर गया हुआ था। जब सीता और शीरीं चली गईं तो मुन्शी जी ने नरेन्द्र से पूर्ण वृत्तान्त जानने के लिए समीप बैठ पूछ लिया, "नरेन्द्र ! क्या करने आई थीं ये ?"

"मुन्शी जी ! सामान्य त्रिया-चरित्र था। कहती थीं कि उसको मुझसे गर्भ ठहर गया है और मुझको उससे विवाह कर लेना चाहिये।"

मुन्शी जी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और तुमने उसके वे-बाप के लड़के का बाप बनने से इंकार कर दिया है ?"

"जी ! मैंने अभी अपने बीवी-बच्चों के पालन-पोषण की सामर्थ्य तो पैदा नहीं की और दूसरों की पत्नियों और बच्चों का बोझा सिर पर कैसे ले सकता था ?"

"एक बात कर सकते थे !"

"क्या ?"

नरेन्द्र और भवानी प्रसाद मुन्शी जी के कथन का अर्थ नहीं समझ और विस्मय में उनका मुख देखते रहे। मुन्शी जी ने बिना पूछे ही अपने कहने का अभिप्राय समझा दिया, "मैं समझता हूं कि उसके पेट में बच्चा वगैरह कुछ नहीं। वह ब्लैक मेलिंग करने आयी थी। उसको यहाँ मकान में सात-आठ महीने बन्द कर दिया जाता तो उसकी इस छलना का भंडा फूट जाता।"

"कुछ नहीं कहा जा सकता मुन्शी जी ! सम्भव है कि इसके गर्भ में बच्चा हो। यह अछूती तो है नहीं।"

"चाल-ढाल से तो वह हामला मालूम नहीं होती थी। फिर ऐसी औरतों के भाग्य में माँ बनना होता ही नहीं। मेरा तो मन कहता है कि यह तुमको ठगने आई थी।"

मुन्शी जी का अनुभव भवानी प्रसाद जी से कुछ अधिक ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उनकी बात का खण्डन करना [illegible] नहीं था। इस पर भी भवानी प्रसाद ने कहा, "मैं तो नरेन्द्र की बुद्धि पर विस्मय करता हूं कि वह किन-किन की संगत में घूमता रहा है। नरेन्द्र! इस घटना ने मेरे मन में तुम्हारी सूझ-बूझ पर संदेह बढ़ाया ही है।"

"पिताजी! मैं दिल्ली की सुन्दर भव्य इमारतों और वहाँ के लोगों की टीप-टाप देख चकाचौंध हो रहा था। मेरे मस्तिष्क में नये ज़माने की नई बातों ने विभ्रम उत्पन्न कर रखा था। इस पर हमारे प्रधान मन्त्री की 'एटॉमिक-एज़ एटॉमिक-एज़' की सतत घोषणा ने मुझमें पुराने जमाने और उसकी बातों के लिये घृणा उत्पन्न कर दी थी। मैं तो पालथी मार भोजन करने को भी नफरत से देखने लगा था। मुझको भाभी का घूंघट और माँ की पूजा मूर्खों की बातें समझ आने लगी थीं।

"भापा! पिछले एक मास में मैंने पंडित भगवतीचरण जी से इतना कुछ सीखा है कि मुझको दिल्ली के लोग सिर के बल चलते दिखाई देने लगे हैं।"

"ओह! भला क्या सीखा है। ज़रा हमको भी बता दो?"

"यही कि जो कुछ नया दिखाई देता है, वह शरीर पर नये वस्त्र हैं। शरीर तो वही-का-वही है। मनुष्य करोड़ों वर्षों से ऐसा ही चला आता है। उसके शरीर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वस्त्रों के फैशन और शृंगार का ढंग बदल गया है। यह तो सदा बदलता रहता है। परंतु मनुष्य का शरीर वैसे का वैसा ही, इन्द्रियों का समूह मात्र है। इसमें कामना अर्थात् भोग-विलास की इच्छा तो वैसी-की-वैसी ही बनी है जैसी राम के काल में थी अथवा उससे भी पहले थी।

भापा, उन्होंने एक बात और बताई है। वे कहते हैं कि शरीर के भीतर दो पदार्थ और हैं, वे हैं मन और आत्मा। उनमें परिवर्तन होता है। परन्तु उनका इन भव्य इमारतों, इन वस्त्रों, फैशन के सामान तथा सड़कों, रेलगाड़ियों इत्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं। बड़ी-बड़ी और सुन्दर इमारतों में अथवा सुन्दर फैशन वाले कपड़ों में भी कलुषित मन और आत्मा देखी गई हैं और सरल साधारण ढंग से रहने वालों में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उन्नत मन और आत्मा मिलता है।"

"और इस मन और आत्मा में परिवर्तन किस प्रकार आते हैं?" मुन्शी जी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "यह भी पंडित जी ने बताया है अथवा नहीं?"

"बताया है, वे कहते थे कि मन में अच्छे-बुरे संस्कारों से परिवर्तन आता है और आत्मा में परिवर्तन परमात्मा से संगत उत्पन्न करने से आता है।"

"अच्छे-बुरे कर्म क्या होते हैं?" मुन्शी जी का अगला प्रश्न था।

"यह भी उन्होंने बताया है। उनका कहना है कि जो कर्म ज्ञान-विज्ञान की ओर ले जाते हैं वे अच्छे हैं। उन्होंने गीता का एक श्लोक सुनाकर उसकी व्याख्या की थी। वे कहते थे कि सब कर्मों से वे कर्म श्रेष्ठ हैं जो मनुष्य को ज्ञान की ओर ले जाते हैं। सब कर्मों का अन्त ज्ञान में होना चाहिये। ऐसे कर्मों से जो संस्कार बनते हैं, वे श्रेष्ठ हैं।"

"और ज्ञान क्या है?"

'ज्ञान को उन्होंने दो श्रेणियों में बाँटा था। एक को ज्ञान कहते हैं, वह जो भौतिक संसार के विषय में वास्तविकता प्रकट करता है। इसमें फिज़िक्स, कैमिस्ट्री, मकैनिस, ज्योमेट्री, एलजेबरा इत्यादि ज्ञान की बातें आ जाती हैं और दूसरी श्रेणी में अध्यात्म विद्या आती है। इसमें आत्मा-परमात्मा का ज्ञान है। दोनों ही प्राप्त करना शुभ हैं।"

मुन्शी जी ने कह दिया, "नरेन्द्र! तुम तो एक ही महीने में बहुत कुछ जान गये हो।"

"मुझको उनकी बातें इसलिए ठीक समझ आयी हैं कि उन्होंने मेरे ज्ञान को, जो मैंने स्कूल और कॉलेज में पढ़ा है गलत नहीं बताया। हाँ, उनको अधूरा बताया है और मुझे उस अधूरे को पूर्ण करने का ढँग भी उन्होंने बताया है।"

मुन्शी जी की शीरीं के व्यवहार की विवेचना से भवानी प्रसाद को शान्ति ही हुई थी और नरेन्द्र के विचारों में परिवर्तन हुआ जान उसे प्रसन्नता हुई थी। उसने पूछ लिया, "अब यह जानकर कि सुरेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने कौनसी नौकरी तुम्हारे लिए चुनी है, तुमने क्या निश्चय किया है?"

"पिता जी ! नौकरी किस कार्यालय में है और कितने वेतन की है, इसका प्रश्न नहीं था। मैंने तो पत्र में यह लिखा था कि मुझे निजी क्षेत्र में नौकरी अधिक आकर्षक जान पड़ती है। इस बात का उत्तर सीता भाभी नहीं लाई।"

"तो तुम सुरेन्द्र के उत्तर की प्रतीक्षा करोगे ?"

"भैया के विचारों को जानते हुए मुझे समझ आ रहा है कि उनका उत्तर क्या होगा। यदि उसमें कोई नवीन बात नहीं तो मेरा निश्चय हो चुका है। इस पर भी दो-चार दिन और प्रतीक्षा कर लेने में हानि नहीं।"

पत्रोत्तर के स्थान सुरेन्द्र स्वयं आया। नरेन्द्र का पत्र जाने के चौथे दिन सुरेन्द्र स्वयं अपनी मोटर भगाता हुआ वहाँ आ पहुँचा।

माँ ने सुरेन्द्र को खाना-खिला, सब परिवार के सदस्यों के सामने ही पूछ लिया, "कैसे आना हुआ है सुरेन्द्र ?"

"मैं यह देखने आया हूँ कि नरेन्द्र पर किसकी कुशिक्षा का प्रभाव हो रहा है। इतनी मेहनत और लगन से की गई पढ़ाई को वह गन्दी नाली में किसके कहने पर बहाने जा रहा है ?"

"बताओ नरेन्द्र !" पिता ने स्वयं उत्तर देने के स्थान नरेन्द्र को बात करने में प्रोत्साहन देते हुए कह दिया।

नरेन्द्र ने कह दिया, "भैया ! गन्दी और पवित्र के विशेषण तो सुगमता से बदले जा सकते हैं, परन्तु इस विवाद में न पड़ते हुए मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपके सत्ताधारी दल के समाजवाद की प्रतिक्रिया यहाँ महोना में हुई है। मैं उस प्रतिक्रिया में सहयोग देने के लिए यहाँ ही रह जाने का विचार बना रहा हूँ।

"जब आपने यह निश्चय किया था कि राजे-महाराजे नहीं रहेंगे तो मुंशी जी ने चालीस रुपये की नौकरी छोड़कर व्यापार में पदार्पण कर लिया। परिणाम यह हुआ है कि वे अब कई लाख की सम्पत्ति के स्वामी हैं। आपकी कांग्रेस पार्टी ने यह निश्चय किया है कि तीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एकड़ से अधिक भूमि किसी के पास नहीं होगी तो भूपेन्द्र भैया ने अपना फार्म बेचकर तीन लाख के लगभग एकत्रित कर, दो पैट्रोल-पम्प ले लिये हैं और उनसे तीन-से-चार सहस्र प्रतिमास की आय करनी आरम्भ कर दी है। आपने पंडित जवाहरलाल की मतदाताओं से सिफारिश लगाकर और गणना करने वाले अफसर को रिश्वत देकर निर्वाचन जीत लिया है तो पंडित भगवतीचरण जी के मस्तिष्क में आपसे भी अधिक धनी बनने की योजना बन गई है। अब गाँव के ये तीनों महानुभाव मिलकर एक कम्पनी रजिस्टर करवा रहे हैं। कम्पनी की पूँजी पचास लाख रखी गयी है और उसमें वे झाँसी से आगरा तक पैट्रोल-पम्प लेने का, एक मोटर मरम्मत करने का कारखाना खोलने का, एक साइकल फैक्ट्री आरम्भ करने का विचार बना बैठे हैं। कम्पनी का काम चालू हो रहा है और मैंने यह उचित समझा है कि उनको इस प्रयास में सहयोग दूँ। मैं इस कम्पनी का जनरल मैनेजर बनाया जा रहा हूँ।"

"और क्या वेतन देंगे ये ?"

यह अभी निश्चय नहीं हुआ। मैं एक बात समझ रहा हूँ कि उतने वेतन से अधिक जितने से सुविधाजनक निर्वाह हो सके, कुछ भी मिल जाये, कोई अन्तर उत्पन्न नहीं करता। उसके पश्चात् विचारणीय बात यह हो जाती है कि कौन काम अपने लिये और समाज के लिये कल्याण-कारी होगा। मुझको यह समझ आ रहा है कि निजी क्षेत्र में कार्य सर-कारी क्षेत्र से अधिक कल्याणकारी होगा।"

"वाह ! यही तो देखने आया हूँ कि कौन मूर्ख तुमको यह सबक सिखा रहा है ?"

"इस सबका श्रीगणेश तो भैया, तुमने ही किया था ! जब रूस से लौट तुमने बताया था कि क्रेमिलिन से दो फर्लाङ्ग से भी कम अन्तर पर मॉस्को में भी 'स्लम' अर्थात् गन्दी और अपर्याप्त साधनों वाली बस्तियाँ हैं, तो मुझको राजकीय उद्योगों की सफलता पर सन्देह हो गया था। अड़तीस वर्ष के समाजवादी राज्य और करोड़ों मनुष्यों की हत्या कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
[illegible] भी नहीं कर सका तो फिर वह अन्त काल तक भी कुछ नहींकर सकेगा। उसकेउपरांत आपके ससुर लाला वालकराम ने बताया कि बर्लिन के आधे भाग में तो जग-मग-जगमग और आनन्द तथा सुख व्याप्त है और आधे समाजवादी बर्लिन में निर्धनता, कठोरता, शोक, उत्साहहीरता और निराशा तथा अँधेरा विराजमान है। इस सबक पर मुलम्मा चढ़ा है, यहाँ पंडित भगवतीचरणजी के कथन से। उन्होंने बताया है किमनुष्य में एक आत्मा नाम की वस्तु है। वह स्वतन्त्रता-प्रिय है। उस पर नियन्त्रण करने से उसका घोर पतन हो जाता है और दुख की सृष्टि होने लगती है।

"इन तीनों महानुभावों के कथन पर मैंने मनन किया है और भैया, तुमको तथा दूसरे शिक्षा देने वालों को मैं मूर्ख नहीं, बुद्धिमान समझकर ही उनसे शिक्षा ग्रहण कर रहा हूँ। मैं समाजवादी सरकार की नौकरी करना नहीं चाहता।"

'मगर नरेन्द्र!" सुरेन्द्र ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, "यह निजी क्षेत्र तो एक दिन शून्य कर दिया जायेगा। इस समय सरकार इन पूँजीपतियों को जो कुछ छूट दे रही है। यह ऐसे ही है जैसे बिल्ली चूहे को थोड़ा छोड़कर फुदकने देती है और फिर पकड़ लेती है। चूहे का अंत तो बिल्ली के पेट में जाने से ही होता है।"

"पर भैया! यह इस बात की युक्ति नहीं कि समाजवाद ठीक है। यह तो केवल यह प्रकट करता है कि तानाशाह अपनी तानाशाही तल-वार के बल पर चलाना चाहता है और तानाशाहों का अन्त तो उनकी मौत में ही होता है।"

"परन्तु यह तानाशाही कैसे हो गई? कांग्रेस देश में सार्वजनिक निर्वाचनों से राजगद्दी पर बैठी है।"

"परन्तु भैया! वह तो तुम जानते हो कि निर्वाचन कैसे जीते गये हैं? नेताओं के मिथ्या वचन, प्रत्याशियों के धन-बल, सरकारी अधि-कारियों के राज्य-बल और फिर सुन्दरी-सुरा के प्रभाव से। मैं सीता भाभी के निर्वाचनों को भली भाँति देख आया हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो भैया ! मेरा निर्णय पक्का है। मैं पोलर एसेसरीज लिमिटेड की नौकरी करूँगा।"

"और शीरीं का विवाह ?"

"वह कुँवारी नहीं है। उसका विवाह कहीं हो चुका है और भैया ! तुम तो जानते हो कि विवाहिता से विवाह करना दण्डनीय है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेच्य विषय

संसार में एक नई विचारधारा चल पड़ी है और यह कहा जा रहा है कि दुनिया अब उस ओर चलेगी। हिन्दुस्तान में इस नयी विचार-धारा के प्रबल वकील श्री जवाहरलाल नेहरू रहे हैं। उन्होंने अपनी विख्यात पुस्तक "डिस्कवरी ऑफ इण्डिया" में लिखा भी है—

A study of Marx and Lenin produced a powerful effect on my mind and helped me to see history and current affairs in a new light.

"कार्ल मार्क्स और लेनिन के अध्ययन ने मेरे मन पर एक प्रबल प्रभाव उत्पन्न किया है। इसने मुझको इतिहास और वर्तमान समस्याओं को एक नई रोशनी में समझने में सहायता दी है।"

आगे चलकर आप पुन: लिखते है :

But despite of all these developments and possible distortions of the original passion for human betterment, I had no doubt that the Soviet Revolution had advanced human society by a great leap and had lit bright flame which could not be smothered, and that it had laid the foundation for that new civilization, towards which the world would advance.

…इन घटनाओं और मनोवृत्ति के प्रारम्भिक उद्‌गारों की विकृति के होने पर भी, मुझे कुछ भी संदेह नहीं कि सोवियत क्रांति ने मानव समाज को एक बड़ी छलाँग भर आगे किया है और इसने एक ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रज्जवलित की है जो अब बुझ नहीं सकेगी। इसने उस नवीन सभ्यता की नींव रखी है, जिधर दुनियां चलेगी।

यह है संकेत उन नये विचारों का, जिनका उल्लेख इस पुस्तक में किया है।

यों तो इस विचार-धारा का बीजारोपण मार्क्स से पहले भी कुछ यूरोपियन नास्तिक मीमांसकों ने किया था, परन्तु उस मीमांसा को मनुष्य की अकिंचन समाज के हाथ में देने का श्रेय कार्ल मार्क्स को ही दिया जा सकता है। लेनिन ने उस मीमांसा को प्रयोग करने का व्यावहारिक ढंग बताया है।

संक्षेप में ये विचार इस प्रकार हैं—१. मनुष्य के जन्म से पूर्व और मरण के उपरान्त कुछ नहीं; २. इस जीवन को अधिक-से-अधिक सुखमय बनाने का ही यत्न करना चाहिये; ३. निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उपाय कुछ भी हो सकते हैं; ४. उद्देश्य समाज का विकास और उत्थान है; ५. व्यक्ति तो समाजरूपी यन्त्र का एक नगण्य अंश है; ६. समाज का प्रातिनिध्य शासन करता है; ७. समाज में रहते हुए शासन को अधिनायक (Dictator) मानना होगा; ८. आर्थिक सुविधाएं ही मानव के जीवन का परम लक्ष्य है; ९. धर्म, कर्म, सभ्यता, संस्कृति, रस्म, रिवाज, विवाह, पुत्र, कलत्र तथा अन्य सम्बन्ध अर्थ की धुरि पर चलते हैं; १०. कानून, धर्म, व्यवस्था, शान्ति सब समाज के अभ्युदय के निमित्त ही हैं।

संक्षेप में यह है नयी विचार-धारा की रूप-रेखा। इसी की विवेचना इस पुस्तक का विषय है।

विचारों की विवेचना तो कर्मों से होती है। उन कर्मों से जो विचाराधीन किये जाते हैं। इसी कारण पुस्तक का नाम है—नये विचार नई बातें। यहां बातों से अभिप्राय कर्म से ही है। अतः नये विचारों से कर्म भी नये उत्पन्न हुए प्रतीत होते हैं।

वास्तव में इनमें नयापन कुछ भी नहीं। वही राग और द्वेष का नाटक है, जो सृष्टि के आरम्भ से चला आता है। आज से पांच सहस्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वर्ष पूर्व कृष्ण ने मानव कर्मों के मूल में रजोगुण को ही कारण लिखा था। कृष्ण ने कहा था—

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम ।।

रजो गुण से उत्पन्न काम-क्रोध मनुष्य से सब पाप और अनर्थ कराते हैं।

काम का अर्थ है कामना अर्थात् इच्छाएँ। जब इच्छाएँ पूर्ण नहीं होतीं तो क्रोध उत्पन्न होता है और इस क्रोध के अधीन सब प्रकार के पाप कर्म होते हैं।

कार्ल-मार्क्स और इसी की श्रेणी के मीमांसक प्रायः अपूर्ण कामनाओं की प्रतिमूर्ति थे। इससे क्रोध में भर कर इन्होंने ऐसी-ऐसी बातें की हैं जो इस संसार में घोर पाप-कर्म के करने वाली हो रही हैं।

इसी की एक छोटी-सी झलक इस पुस्तक में पाठकों को दिखाने का यत्न किया है।

इस अनर्थ का प्रतिशोध क्या है ? श्रीकृष्ण कहते हैं—

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा सस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ।।

आत्मा से बुद्धि पर नियंत्रण कर मनुष्य अपने-आप को काबू में रखे और महान् शत्रु काम को छोड़ दे।

यह है उपाय जिससे सुख और शांति की उपलब्धि होती है। धनी-निर्धन, मालिक-सेवक, राजा-प्रजा कोई भी हो, जब तक अपनी कामनाओं को नियंत्रण में नहीं रखता तब तक न अपने में, न ही अपने चारों ओर संसार में सुख तथा शान्ति की आशा रख सकता है।

कामनाओं पर विजय पाने से ही सुख की सृष्टि सम्भव है। कामनाओं की प्राप्ति से तो ये अधिक भड़कती हैं और अधिक तथा और अधिक उत्पन्न होती हैं।

यह प्रक्रिया आदि काल से चल रही है। यह नवीन नहीं है और उस पुराने काम-क्रोध से बातें भी पुरानी-सी ही हो रही हैं। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अज्ञानियों को ये विचार नये प्रतीत होते हैं और घटनाएं भी नवीन ही दिखाई देती हैं।

है वही बात—

संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

शेष तो पुस्तक उपन्यास है। पात्र तथा स्नान काल्पनिक हैं। किसी के मान-अपमान से इसका सम्बन्ध नहीं।

—गुरुदत्त

Central Library
167922
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167922

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-N आगत संख्या 167922

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar